राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ३५

कवि हेमरतन कृत

गोरा बादल पदमिणी चउपई

सम्पादक

डॉ० उदयसिंह भटनागर, एम० ए०, पी-एच० डी०

प्राध्यापक, हिंदी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२३	भारतराष्ट्रीय शकाब्द	प्रथमावृत्ति ७५०
खिस्ताब्द १९६६	१८८८	मूल्य– ५.००

मुद्रक– १. मूल पाठ–निर्णयसागर प्रेस, बम्बई ।

२. शेष–श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

सञ्चालकीय वक्तव्य

कोई ५० वर्ष पूर्व, जब हम पाटण के जैन-भण्डारों का अवलोकन कर रहे थे तब हमें हेमरत्न की इस रचना का प्रथम परिचय प्राप्त हुआ। मेवाड़ और चित्तौड़ के प्राचीन इतिहास को जानने की हमारी रुचि बचपन से ही बनी हुई थी। हमने हेमरत्न की इस रचना को भी प्रकाश में लाने का तभी मनोरथ कर लिया था। अपने देश के प्राचीन इतिहास के अज्ञात, अप्रकाशित, एवं अलभ्य ऐसे साधनो को-प्रबन्धो, ग्रन्थो, शिलालेखों, प्रशस्तियो आदि को प्रकाश में लाने का हमारा सतत लक्ष्य रहा और इस दृष्टि से आज तक अनेकानेक अप्रकाशित ऐतिहासिक साधन-सामग्री को प्रकाशित करने का प्रयत्न भी करते रहे हैं।

सवत १९३९ मे उदयपुर में राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में हमारा आना हुआ और हमने राजस्थान के प्राचीन इतिहास की सामग्री का अन्वेषण, सशोधन, प्रकाशन आदि कार्य के विषय में भी अपने राजस्थानी बधुओ को समयोचित प्रेरणा दी। उसके बाद तुरन्त ही, प्रो० श्री उदयसिंहजी भटनागर बम्बई मे हमारे पास भारतीय विद्या-भवन के एक शोधकर्ता विद्याभिलाषी के रूप में पहुंचे। मैंने इनको उसी समय पद्मिनी की चउपई जैसी रचना का अध्ययन और अनुसन्धान करने का सुझाव दिया। मेरे पास जो इसकी प्रतिया थी वे इनको दी। इन्होने कार्य प्रारम्भ किया, परतु बाद मे ये वहा से चले गये और अपने अन्य कार्य-क्षेत्र में लग गये। सन् १९५० में जब राजस्थान के इस 'प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान' की मूल रूपरेखा बनी तो हमने इस प्रकार के राजस्थान के प्राचीन इतिहास के अनेक ग्रन्थ प्रसिद्धि मे लाने का कार्यक्रम बनाया। कान्हडदे प्रबन्ध, क्यामखां रासा, लावा रासा, वीरमायण, मुहता नणसी री ख्यात, बांकीदास री ख्यात व सूरजप्रकाश आदि ग्रन्थ इसी कार्यक्रम के अनुसार यथा-समय प्रकाशित किये गए। प्रस्तुत 'पदमिणी चउपई' भी उसी कार्यक्रम मे सम्मिलित थी। डॉ० भटनागर ने इस बीच अपना कार्य चालू रखा और उन्होंने इस रचना पर पी-एच० डी० की पदवी प्राप्त करने के लिये विस्तृत निबन्ध भी तैयार किया। जब मैंने पहले-पहल इनको यह कार्य करने की प्रेरणा दी थी उसके कोई १२ वर्ष अनन्तर ये मुझे जयपुर में मिले। मैंने इनके कार्यों को देखा और सूचित किया कि यदि ये इसकी सुसपादित प्रति तैयार कर सके तो उसको 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' द्वारा प्रकाशित कर दिया जाय। इन्होने सहर्ष स्वीकार किया और तदनुसार मैंने तत्काल इसको बम्बई के सुप्रसिद्ध निर्णयसागर प्रेस मे [illegible] दिया। परन्तु श्री भटनागरजी को कुछ निजी

कठिनाइयो मे उलझे रहना पडा, अत: इसका मुद्रण-कार्य बहुत धीरे धीरे चला। आखिर में, फिर १२ वर्ष वाद अब यह ग्रन्थ छपकर पूरा हुआ है और राजस्थानी साहित्य एव इतिहास के प्रेमियो के करकमलो में उपस्थित हो रहा है।

हमारी मूल योजना तो थी कि हम इस हेमरत्न की रचना के साथ, लब्धोदय, भागविजय आदि की रचनाओ को भी एक ही सग्रह के रूप में प्रकाशित करें और उनका तुलनात्मक विवेचन भी उपस्थित किया जाय। परन्तु, उक्त रूप से हेमरत्न की रचना ही को पूर्ण होने में असाधारण विलम्ब हुआ देखकर हमे उक्त विचार को स्थगित रखना पडा। तथापि, हमें यह देख कर वहुत सतोष हुआ कि बीकानेर-निवासी नाहटा बधुओ के सदुद्योग से लब्धोदय-रचित पद्मिनी चउपई की भी एक सुन्दर आवृत्ति प्रकाशित हो गई है।

डॉ० भटनागरजी ने प्रस्तुत सस्करण को सुसपादित करने के लिए वहुत ही परिश्रम उठाया है। भिन्न-भिन्न प्रतियो के विविध पाठो का संकलन और सन्निवेश वडे अच्छे ढग से किया है। जिस प्रकार, इस ग्रन्थमाला मे प्रकाशित 'कान्हडदे प्रवन्ध' का उत्कृष्ट सस्करण हमारे परमप्रिय विद्वान् मित्र प्रो० के बी व्यास ने प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार डॉ० भटनागर ने प्रस्तुत 'गोरा बादल पदमिणी चउपई' का यह सुन्दर सस्करण तैयार किया है। इस प्रकार की प्राचीन कृतियो के प्रमाणिक सस्करण तैयार करने वालो के लिए डॉ० भटनागर का यह सम्पादन आदर्श माना जाना चाहिए।

हम इसके लिए डॉ० भटनागरजी का अपना हार्दिक अभिवादन करते हैं। प्रस्तुत 'पदमिणी चउपई' की मूलभूत आदर्श प्रति जो सवत् १६४६ मे लिखी हुई है वह स्वय वनेडा निवासी स्वर्गीय वैरिस्टर श्री रविशकरजी देराश्री ने हमे जयपुर में दिखाई थी। हमारा विचार था कि उस प्रति के आद्यन्त पत्रो के ब्लॉक वना कर इस पुस्तक में दे दिए जावे, परन्तु वहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी स्व० देराश्रीजी के वशजो से हमें यह सुविधा प्राप्त नही हुई। आशा है राजस्थानी-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् इस प्रकाशन का यथोचित समादर करेंगे।

मुनि जिनविजय

चैत्र शुक्ला ६ (रामनवमी) स० २०२३
दिनाक ३१ मार्च, १९६६
राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान
जो ध पु र

प्रस्तावना

आभार निवेदन

सन् १९४०-४१ में मैंने उदयपुर मे और उसके आसपास के गांवों तथा ठिकानो मे प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज कर लगभग २००० ग्रन्थो के विवरण लिये थे। इस खोज मे मुझे पद्मिनी की कथा से सम्बन्धित अनेक रचना-प्रतियाँ देखने को मिली। इसी समय आचार्य मुनि जिनविजय जी से मेरा सम्पर्क हुआ। दो वर्ष तक बम्बई मे भारतीय विद्या भवन मे उनके साथ रह कर विद्याभ्यास कर ज्ञान से लाभान्वित हुआ। 'पदमिनी चउपई' भी उस कार्य-क्रम का एक प्रधान अग रहा। इसका एक आलोचनात्मक संस्करण तैयार करने की प्रेरणा मुनिजी से प्राप्त हुई और इस कार्य को मैंने बम्बई मे रहकर पी-एच० डी० के लिये थीसिस के रूप मे अंग्रेजी में तैयार किया। हिन्दी के प्रति विशेष आग्रह होने के कारण मन न माना। मैंने बम्बई विश्वविद्यालय से हिन्दी मे थीसिस प्रस्तुत करने की आज्ञा माँगी, पर आज्ञा न मिली; हाँ, इस बात की आज्ञा तो मिली कि मैं उसे हिन्दी में लिखित किसी अन्य–जो लेना चाहे उस–विश्वविद्यालय को प्रस्तुत करूँ तो बम्बई विश्वविद्यालय को कोई आपत्ति नही होगी। कार्य शिथिल पड़ गया। इस बीच हिन्दी मे पुन. थीसिस लिखने के पूर्व किसी विश्वविद्यालय की खोज का प्रश्न सामने आ गया। कार्य चलता रहा। नवीन सामग्री नवीन अनुभवो के साथ जुड़ती रही। राजस्थान विश्व-विद्यालय स्थापित हुआ। १९६२ मे मैंने 'हेमरतन कृत पदमिणि चउपई–एक परिपूर्ण आलोचनात्मक सस्करण तथा उसकी भाषा—राजस्थानी वि० स० १६४५–का वैज्ञानिक अध्ययन'–थीसिस प्रस्तुत किया। वह स्वीकृत हो गया और मुझे पी-एच० डी० की डिग्री भी प्राप्त हो गई।

यह सब हुआ मुनिजी की प्रेरणा, प्रोत्साहन और प्रबोधन से। आभार मुझे प्रकट करना है—पर किन भावनाओ मे, किन शब्दो मे ? एक शिष्य जिसके पास वाणी नही, शब्द नही–वह अपनी वाणी की कगाली को भी प्रकट करने में असमर्थ है, आभार तो उसके लिये बहुत भारी है—बलिहारी गुरु आपणे, जिन गुरु दियो बताय।"

काम कुछ जटिल हो गया—अनेक संकट और कठिनाइयां, जीवन की ऊबडखाबड भूमियो के बीच जीवन और मरण, ये सब—

डेहली डोर सावाण सराचा, कटक तणा सिणगार ।
घडिया जोणी, साँढ पलाणी, पूठ परठिया भार ॥

और मैं चला । कथा कुछ दुखद हो गई ।

बडोदा विश्वविद्यालय मे जाने के पश्चात् मुनिश्री ने फिर स्मरण दिलाया कि तुझे यह करना है; और इसके प्रकाशन का आश्वासन भी मुझे मिला । हेमरतन की जितनी प्रतियाँ मुझे बम्बई तक प्राप्त हुईं उनका उपयोग मैंने बम्बई मे ही कर लिया था । इसके बाद मुझे इसकी एक प्राचीनतम प्रति मिल गई जिसने इस सस्करण का आधार प्रस्तुत किया । अब प्रेस-प्रति तैयार करने मे फिर से उतना ही कार्य बढ गया जितना किसी आलोचनात्मक सस्करण का आरम्भ से अन्त तक होता है । अत. जितना-जितना काम होता जाता उतना-उतना मै मुनिजी को भेजता जाता और वह छपता जाता । इसी बीच मे अनेक वाधाए उपस्थित हुईं । मेरी पत्नी की निराशाजनक अवस्था ने मेरे सयम और मानसिक सन्तुलन को बिलकुल नष्ट कर दिया । मुनिजी की प्रेरणा और उनके उत्साहवर्द्धन ने इस कार्य को समाप्त करने मे सहायता की । प्रूफ देखने तथा मूल पाठो को सुधारने का कार्य भी मुनिजी को ही करना पडा । कार्य समाप्त हो गया और इधर पत्नी की जीवन लीला भी समाप्त हो गई ।

भूमिका का कार्य रुक गया । प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन रुक गया । अत. इसका प्रकाशन देर से हो रहा है । आशा है पाठक मेरी विवशता को समझेंगे ।

मुनिजी इस अवस्था मे भी अपने कार्य मे सलग्न रहते हैं । अपने कार्य मे व्यस्त रहते हुए भी उन्होने मुझे प्रेरणा दी, उत्साहित किया और मार्ग-दर्शन भी । उनकी मुझ पर कृपा है, उनका आभारी हूँ । एक शिष्य पर गुरु की कृपा का भार तो जीवन भर ही रहता है, वह तो उसकी सम्पत्ति है, उसका प्रदर्शन कर वह उसको लौटाना नही चाहता ।

वैशाखी
मगलवार, १३ अप्रेल, १९६५
विक्रम-विश्वविद्यालय, उज्जैन ।

उदयसिंह भटनागर

प्रस्तुत संस्करण

पद्मिनी की कथा को लेकर जायसी कृत 'पदमावत' हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मे बहुत प्रसिद्ध है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी की अन्य रचनाओ के साथ इसका भी उद्धार किया। 'मिश्रबन्धु विनोद' तथा शुक्लजी के 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मे लब्धोदय (लक्षोदय) कृत 'पद्मिनी चरित्र' की सूचना मिलती है। इधर नागरी प्रचारिणी पत्रिका के पुराने अको मे जटमल नाहर कृत 'गोरा बादल की कथा' के गद्य मे लिखे जाने के विषय मे भी विवाद चला था। राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज मे मुझे अपनी यात्रा मे इन रचनाओ की अनेक हाथ-पडतो की छान-बीन मे हेमरतन कृत 'गोरा बादल पदमिणि चउपई' के साथ भागविजय (और सग्रामसूरि) कृत 'गोरा बादल पदमिणि चउपई' की भी अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुईं। इन सब मे जायसी को छोड कर अन्य सभी रचनाओ के मूल मे हेमरतन की रचना ही आधार रूप मे बनी है। हेमरतन ही इस रचना का मूल लेखक है।

वि० स० १६४५ मे हेमरतन ने अपने इस काव्य की रचना की थी। वि० स० १६८० मे जटमल नाहर ने हेमरतन की रचना का एक विकृत रूप 'गोरा बादल की कथा' नाम से प्रस्तुत किया था। यह रचना गद्य मे न होकर पद्य मे लिखित है। फिर वि० स० १७०६ मे लब्धोदय ने हेमरतन की रचना को ही गेय रूप प्रदान कर 'पद्मिनी चरित्र' नाम से विविध ढालो मे ढाला। वि० स० १७६० मे भागविजय ने और उसके कुछ वर्ष पूर्व सग्राम सूरि ने इसके परिवर्तित और परिवर्द्धित सस्करण तैयार किये। इस प्रकार पद्मिनी की कथा को लेकर रचित काव्यो को निम्न लिखित वर्गों मे रखा जा सकता है

१ **अज्ञात वर्ग :** सम्भवत. बैन अथवा अन्य कोई चारण कवि। बैन का उल्लेख जायसी ने 'पदमावत' मे किया है–'कथा अरम्भ बैन कवि कहा'। इसी प्रकार हेमरतन की रचना मे 'हेतमदान कविमल्ल भणि' (२१।१५४) आया है।

२ **जायसी वर्ग :** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'पदमावत' के प्रथम सस्करण मे अपने पूर्व के चार सस्करणो का उल्लेख किया है। उक्त सस्करण को उन्होने प्रामाणिक हस्तलिखित प्रतियो के आधार पर तैयार किया था। इसके पश्चात् डा० माताप्रसाद गुप्त और डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के दो भिन्न (पर दूसरा पहले पर आधारित) प्रामाणिक सस्करण प्रकाशित हुए। मैंने इस सस्करण मे तुलना के लिये इन तीनो का उपयोग किया है।

३. हेमरतन वर्ग : इस लेखक की अनेक रचनाएँ खोज मे प्राप्त हुई। प्रस्तुत रचना 'पदमिणी चउपई' की ही अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुई। उनमे से निम्न लिखित प्रतियाँ महत्वपूर्ण है—

(१) श्री रविशंकर देराश्री (बनेड़ा) की प्रति—उक्त प्रति की एक फोटो प्रति श्री देराश्री ने मुझे उपयोग के लिये दी थी। इसमे रचना-काल वि० स० १६४५ दिया गया है और लिपिकाल १६४६। इसमे प्रशस्ति सहित कुल ६१८ छन्द है। पर यह हेमरतन की मूल प्रति नही है और न स० १६४६ मे लिपीकृत मूल प्रति ही। इसमे जो क्षेपक दिये गये है उनसे लगता है कि यह उक्त सवत १६४६ मे लिखित किसी हाथ-पड़त की प्रतिलिपि है। फिर भी यह मूल रचना के सबसे अधिक सन्निकट है और पाठ भी सबसे अधिक शुद्ध और मौलिक है।

(२) मुनि श्री जिनविजयजी की दो प्रतियाँ—पहली प्रति मे रचना-काल सं० १६४५ और लिपिकाल सं० १६६१ है। इसका आकार १० इच लम्बा और ४·५ इच चौडा है। इसमे २० पत्र और ६५४ छन्द है। पाठ की दृष्टि से उक्त भाषा के विकसित रूपों का प्रयोग इसमे मिलने लगता है। दूसरी प्रति जो ऊपरवाली (पहली) प्रति के अधिक सन्निकट है, वि० स० १७२९ की लिखित है। इसका आकार पौने दस इंच लम्बा और साढे चार इन्च चौड़ा है। २९ पत्रो पर ६५१ छन्द है। इसमे पहली प्रति की भाषा के अधिक विकसित रूप मिलते हैं।

(३) वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर की प्रति:—यह प्रति वि० सं० १७८५ मे ढाका मे लिखी गई थी। इसका आकार ६ इच लम्बा और ५ इच चौड़ा है। इसमे १०२ पत्रों पर ६७५ छन्द दिये हैं। यह प्रति खण्डित है और आरम्भ के ६१ छन्द नष्ट होगये हैं। क्षेपक तथा पाठा-न्तर होने पर भी इसके छन्द मूल छन्दो के अधिक सन्निकट हैं।

(४) अन्य प्रतियो मे माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर की कुछ प्रतियां और ऑरिएन्टल इन्स्टीटचूट, बडोदा की प्रतियां भी उल्लेखनीय हैं। ये पाठ की दृष्टि से उतनी शुद्ध नही है। गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद, भाण्डारकर इन्स्टीट्यूट, पूना, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में भी इसकी प्रतियाँ सुरक्षित हैं।

४ जटमल वर्ग . इसकी अनेक प्रतिया मिलती हैं। कुछ में पाठान्तर और भाषान्तर भी हो गया है। ऐसी ही एक प्रति की नकल मुनि जिनविजयजी के

सग्रह मे भी है। यह उन्होने अपनी बीकानेर यात्रा मे लिखवायी थी। इसका एक प्रकाशित सस्करण भी मिलता है। कुछ हस्तलिखित प्रतियो के आधार पर प० अयोध्यानाथ शर्मा ने इसका सम्पादन कर तरुण भारत ग्रन्थावली, दारागंज, प्रयाग मे प्रकाशित करवाया था। प्रकाशित रचना खड़ी बोली के अधिक निकट है जो हस्तलिखित प्रतियो से भिन्न है।

५ **लब्धोदय वर्ग :** इस वर्ग की चार प्रतिया उल्लेखनीय हैं—

(१) सवत् १७५३ की लिखित प्रति:—इसमे ७८० छन्द हैं। इस समय यह उदयपुर के सरस्वती सदन में सुरक्षित है।

(२) स० १७६१ की लिखित प्रति:—इसका आकार ६"×६ २" है। यह माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीडर (उदयपुर के पास) में सुरक्षित है। इसमें ६१ पत्र और ८११ छन्द हैं।

(३) सवत् १८२३ की लिखित प्रति:—यह सरस्वती सदन, उदयपुर में सुरक्षित है। इसमें ८०३ छन्द हैं।

(४) संवत् १८६५ की लिखित प्रति—यह भी माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीडर के सग्रह में हैं। इसका आकार १३ ५"×८·५" है। इसमें ८०० छन्द हैं। लिपि अधिक भ्रष्ट है।

६ **भागविजय वर्ग :** इस वर्ग में केवल वे ही रचनाएँ ली गई हैं, जिनमे सग्राम सूरि के क्षेपक भी सम्मिलित हैं। ऐसी कोई प्रति नही मिलती जिसमे केवल संग्राम सूरि अथवा केवल भागविजय के ही क्षेपक हो। इस वर्ग की निम्नलिखित प्रतिया महत्वपूर्ण हैं।

(१) माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीडर की दो प्रतियां—इनमे पहली वि० स०१७६० की लिखित है और दूसरी सवत् १७७१ की। इनमे पहली प्रति लेखक की मूल हाथ-पड़त लगती है और दूसरी उसी की प्रतिलिपि। पहली का आकार १०"×४" है। इसमे ३१ पृष्ठ और प्रशस्ति सहित ६१६ छन्द हैं। दूसरी का आकार १०"×४.५" हैं। इसमे ३८ पत्र हैं और ६१७ छन्द हैं।

(२) आॅरिएन्टल इन्स्टीट्यूट बडौदा की स० १७८३ की लिखित प्रति:—इसका पाठ अधिक शुद्ध नही हैं।

प्रस्तुत सस्करण के लिये हेमरतन वर्ग और भागविजय वर्ग ही अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं। जायसी और जटमल की रचनाएँ प्रकाशित हैं। लब्धोदय

के 'पद्मिनी चरित्र' के एक स्वतन्त्र सस्करण का प्रकाशन अपेक्षित है। भागविजय की रचना हेमरतन की रचना का ही परिवर्तित और परिवर्द्धित सस्करण होने के कारण पाठालोचन और पाठशोधन के लिये उसका उपयोग करते हुए उसको नीचे पाठान्तर मे रखा गया है। इस प्रकार उपर्युक्त प्रतियो मे जिनका प्रयोग प्रस्तुत सस्करण मे किया गया है उनका नामकरण निम्न प्रकार से किया गया है—

१. A प्रति – हेमरतन वर्ग की प्रति सख्या १ देराश्रीवाली प्रति वि० स० १६४६ की लिखित।

२ B प्रति – हेमरतन वर्ग की प्रति सख्या २ मे उल्लिखित पहली प्रति वि० स० १६६१ की लिखित।

३ C प्रति – हेमरतन वर्ग की प्रति सख्या २ मे उल्लिखित दूसरी प्रति वि० स० १७२९ की लिखित।

४ D प्रति – हेमरतन वर्ग की प्रति सख्या ३ मे उल्लिखित वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर की वि० स० १७८५ की ढाका मे लिखित खण्ड प्रति।

५ E प्रति – भागविजय वर्ग की प्रति सख्या १ में उल्लिखित पहली प्रति वि० स० १७६० मे रचित और लिखित मूल प्रति।

उपर्युक्त प्रतियो के छन्दो की तुलना और निरीक्षण से एक उलझन उपस्थित हुई। प्रत्येक प्रति मे क्षेपकों के अतिरिक्त अनेक सुभाषित, उक्तिया, और प्रसगानुसार अन्य अनेक कवियो की रचनाओ के उद्धरण भी थे। इन सभी पर एक ही क्रम में छन्द सख्या अकित थी। यहा तक कि सबसे प्राचीन स० १६४६ की लिखित प्रति में भी यही स्थिति थी। इधर कई प्रशस्तियो के अनुसार हेमरतन के मूल छन्दो की सख्या ६१६ (षटसित षोडस) होनो चाहिये, जब कि प्रत्येक प्रति में छन्द इससे अधिक सख्या मे थे। स० १६४६ वाली प्रति में भी यही स्थिति वर्त्तमान थी। प्रत्येक प्रति के छन्दो की पारस्परिक तुलना और सूक्ष्म निरीक्षण से हेमरतन के मूल छन्दो की खोज मे बहुत सहायता मिली। इस तुलना से प्रत्येक प्रति की छन्द सख्या की स्थिति निम्नलिखित देख पडती है :—

प्रति	स्वीकृत छन्द	अस्वीकृत छन्द	प्रति के मूल छन्द
A	६०४	६	६१०
B	६१२	४२	६५४
C	६०९	४२	६५१
D	६०९	६६	६७५
E	५६२	३०२	८६४

स्वीकृत मूल छन्द इस प्रकार हैं—

A	प्रति में मूल स्वीकृत (हेमरतन कृत) ६१६	छन्दो में से	१२	छन्द	कम	हैं	(६१६-६०४)
B	,,	,,	,,	४	,,	,,	(६१६-६१२)
C	,,	,,	,,	७	,,	,,	(६१६-६०६)
D	,,	,,	,,	७	,,	,,	(६१६-६०६)
E	,,	,,	,,	५४	,,	,,	(६१६-५६२)

प्रत्येक प्रति मे जो छन्द कारण विशेष से क्षेपक माने गये हैं, उन्हें नीचे टिप्पणी मे दे दिया गया है। प्रत्येक प्रति के स्वीकृत तथा अस्वीकृत छन्दो मे कई छन्द पूर्ण नही हैं। कही-कही क्षेपक रूप मे एक एक अर्द्धाली जोडी गई है और कही क्षेपको मे मूल छन्द का कोई अश है। अत. प्रत्येक प्रति मे इस स्थिति की सूचना यथास्थान दे दी गई है।

छन्द-निर्णय के पश्चात् पाठ-निर्णय भी आवश्यक है। प्रस्तुत प्रतियो में कोई भी प्रति हेमरतन की मूल प्रति नही है। न तो किसी मे हेमरतन द्वारा रचित पूरे ६१६ छन्द ही हैं और न कोई भी प्रति क्षेपको से सर्वथा मुक्त ही है। पर विभिन्न प्रतियो मे से हेमरतन के ६१६ छन्द अवश्य निकल जाते हैं। ऐसी स्थिति मे उनके पाठो की समस्या सामने आ जाती है। अत पाठ सशोधन के लिये निम्नलिखित आधार निश्चित किये गये—

१. **प्रतियों की प्राचीनता का आधार :** सामान्य रूप से सब से प्राचीन प्रति को आधार मान कर पाठ-निर्णय करने की एक शैली परम्परा से चली आती है। परन्तु कभी-कभी प्राचीनतम प्रति भी लिपिकार के आग्रह से मुक्त नही होती। ऐसी स्थिति मे वह उतनी सहायक नही होती जितनी अन्य प्रतियाँ। यहाँ A प्रति मूल रचना के एक वर्ष पश्चात् लिखित प्रति की प्रतिलिपि है। परन्तु यह भी पाठान्तरो और क्षेपको से मुक्त नही है। अन्य प्रतियो में पाठान्तर अधिक होने पर भी कही-कही पाठ-निर्णय मे उनसे बडी सहायता मिली है। इस दृष्टि से E प्रति उल्लेखनीय है जिसमे सबसे अधिक पाठान्तर और क्षेपक होते हुए भी अनेक स्थलो पर A प्रति से मेल खाने से वह पाठ-निर्णय मे सहायक हुई है, जैसे—

A	B	C	D	E
अबकइ	अबकइ	अवकिइ	अबकै	अबकइ
आजूणउे	आजूणउे	आजूणो	आजूणो	आजूणउे
आणिसृ	आणिसि	आणिसि	आणिसु	आणिसु

२. मूल छन्दों की प्रतिशत सख्या का आधार : प्रत्येक प्रति मे मूल छन्दों की सख्या निकाल कर उसका निश्चित मूल छन्दों से प्रतिशत निकालने पर प्रतियों की क्रमगत श्रेष्ठता स्थापित हो जाती है और उसके आधार पर भी पाठ-निर्णय किया जाता है। पर कभी-कभी प्राचीन प्रति मे मूल छन्दो की संख्या कम होने पर पाठ-निर्णय मे कठिनाई होती है। उक्त रचना मे यही स्थिति है।

प्रति मे सब से कम मूल छन्द हैं :—

A	प्रति मे	मूल	६१६ मे से	६०४	छन्द होने से	उनका	प्रतिशत	९८ ०५
B	,,	,,	,,	,, ६१२	,,	,,	,,	९९ ३५
C	,,	,,	,,	,, ६०९	,,	,,	,,	९८ ८६
D	,,	,,	,,	,, ६०९	,,	,,	,,	९८ ८६
E	,,	,,	,,	,, ५६२	,,	,,	,,	९१ २३

इस दृष्टि से A प्रति में ९८·०५ प्रतिशत होने से उसकी स्थिति B (९९·३५ प्र श.) और C तथा D (९८-८६ प्र श.) के नीचे आ जाती है। पर क्षेपको और पाठान्तरो का प्रतिशत उसकी स्थिति को बहुत ऊपर उठाये रहता है।

३. क्षेपकों और मूल छन्दों के अनुपात का आधार : प्रत्येक प्रति मे क्षेपको और मूल छन्दो का अनुपात निम्न प्रकार से है :

प्रति	कुल छन्द	— मूल छन्द	+ क्षेपक-मूल	छन्दो का प्रतिशत	क्षेपको का प्रतिशत
A	६१०	— ६०६	+ ४	९९·१५	००·९८
B	६५४	— ६१२	+ ४२	९३·६१	०६·४२
C	६५१	— ६०९	+ ४२	६३ ५५	०६ ४५
D	६७५	— ६०९	+ ६६	९०·२२	०९·७७
E	८६४	— ५६२	+३०२	६५ ४२	३४ ९५

४. प्रत्येक प्रति मे मिलनेवाले पाठान्तरों की प्रतिशत संख्या का आधार : पाठ-निर्णय के लिये भिन्न पाठो और पाठान्तरो के तुलनात्मक अध्ययन मे प्रत्येक प्रति और उसके पाठो की प्रामाणिकता सिद्ध हो जाती है और उससे पाठ-संशोधन तथा मूल पाठो के निर्णय मे सुगमता हो जाती है। इन पाठो में से १००० ऐसे पाठ चुने गये जिनके विविध प्रतियो मे भिन्न पाठ अथवा पाठान्तर मिलते है। उसके आधार पर भी प्रतियो की प्रामाणिकता क्रमबद्ध कर पाठ-निर्णय मे सहायता ली गई। इस प्रकार प्रत्येक प्रति में पाठान्तरो का जो प्रतिशत प्राप्त हुआ वह इस प्रकार है–

A प्रति मे	१०००	शब्दो में	१७	पाठान्तर हैं	= १.७	प्रतिशत
B ,,	,,	,,	५८७	,,	= ५८.७	,,
C ,,	,,	,,	६८६	,,	= ६८.६	,,
D ,,	,,	,,	७३२	,,	= ७३.२	,,
E ,,	,,	,,	८४४	,,	= ८४.४	,,

५ **ऐतिहासिक आधार** · प्रतियों मे आनेवाले कुछ ऐतिहासिक तथ्य भी पाठ-निर्णय में सहायक होते हैं। उक्त प्रतियो मे दिये गये ऐतिहासिक उल्लेख ग्रन्थ के रचनाकाल तथा लिपिकाल प्रमाणित करने मे सहायक हुए हैं। इनके आधार पर प्रतियो की प्राचीनता और कालगत भाषा-प्रवृत्तियो की खोज करने में सहायता मिली है। ये उल्लेख विशेष रूप में इन प्रतियों की प्रशस्तियो में मिले हैं। A प्रति की प्रशस्ति उसकी प्राचीनता सिद्ध करने में सबसे अधिक सहायक हुई है। यह प्रशस्ति मूल रचना की ही प्रशस्ति है। इसमें लेखक ने अपनी गुरु-परम्परा के साथ रचनाकाल (वि० स० १६४५) और रचना-स्थान 'सादडी' (मारवाड) के साथ महाराणा प्रताप और उनके मन्त्री भामाशाह का उल्लेख करते हुए सादडी के शासक ताराचन्द का भी उल्लेख किया है, जो ऐतिहासिक सत्य है। इस दृष्टि से इसका महत्त्व अधिक बढ जाता है कि यह मूल रचना के अधिक सन्निकट है। अत. इसके पाठ अन्य प्रतियो की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक सिद्ध हुए है।

६ **साहित्यिक आधार :** किसी रचना के पाठ-निर्णय में साहित्यिक आधार भी अन्य आधारो के समान ही महत्त्वपूर्ण होता है। रचना-तत्त्वो में छन्द, अलकार, भाव और रस के उपयुक्त भाषा के रूपो को विभिन्न प्रतियो से तुलना तथा शोध-सशोधन कर पाठ-निर्णय किया गया है। इनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जाता है—

(१) प० च० में प्रधान रूप से दोहा और चौपई छन्दो का प्रयोग हुआ है। इन छन्दो में आदि से अन्त तक एक विशेष लय है। पाठान्तरो का तथा भिन्न पाठो का कही-कही इस लय में मेल नही बैठता। इसी प्रकार गति-भग-दोष तथा न्यूनाधिक मात्रा-दोष भी पाठ-निर्णय में सहायक हुए हैं। निम्न लिखित उदाहरण देखिये:—

मूल – ब्रह्म-विष्णु-शिव सइ मुखइ, नितु समरइ जसु नाम (२)
यहाँ 'मुखइ' के स्थान पर E प्रति में 'मुखे' पाठ है। यह बहुवचन होने पर भी 'सइ मुखइं' तथा उसकी क्रिया 'समरइ' की लय में नही बैठता। 'मुखइ' के स्थान पर B प्रति का 'मुखि' पाठ मात्रा-दोष के कारण अमान्य

हो जाता है। इसी प्रकार दसवे पद मे 'वसुधा लोचन जेसु विसाल' में 'जेसु विसाल' के स्थान पर B प्रति का पाठ जस 'सुविशाल' गति भग दोष के कारण अमान्य है।

(२) इसी प्रकार पहले दोहे में वयणसगाई अलकार पाठ-निर्णय में सहायक हुआ है :—

> सुख सपति दायक सकल, सिधि बुधि सहित गणेस।
> विघन विडारण विनयसुं, पहिली तुम्ह प्रणमेस ॥१॥

इसमें 'विघन विडारण विनयसुं' के स्थान पर B प्रति का पाठ 'विघन विडारण सुखकरन' अथवा E प्रति का पाठ 'विघन विडारण रिधिकरण' कर देने से उक्त अलकार की स्थिति नष्ट हो जाती है, जब कवि ने वीर रस की रचना में वयणसगाई को प्राथमिकता देने की परम्परा का निर्वाह किया है।

(३) रस का आधार भाव है। अतः भाव-व्यञ्जना के लिये शब्द और अर्थ में सामजस्य आवश्यक है। बादल के इन गाज भरे शब्दो मे देखिये —

> "सुणि बावा" ! बादिल कहइ, "सुभटांसु कुण कांम ?
> सुभट सहू सूए रहउे, ए करिस्यु हुं कांम ॥४०८॥

इसमें 'सुभटां सुं कुण कांम' के स्थान पर E प्रति के 'अवरां केहो कांम' तथा 'वैसि रहो सारा सुहड' में प्रत्यक्ष भावाभिव्यक्ति न होने से बादल के उत्साह का भाव सीधा ग्रहण नही होता।

७. शैली और परम्परा का आधार : वीर-रस की रचना होने पर भी कवि ने जैन-शैली की भाषा-परम्परा और लेखन-परिपाटी के प्रति आग्रह दिखाया है। इस सम्बन्ध मे आगे प० च० की भाषा के अन्तर्गत सविस्तार वर्णन है। नीचे कुछ ऐसे प्राचीन रूपो को दिया जाता है जो आग्रह पूर्वक प० च० में रखे गये हैं, और जिनके प्रति अन्य प्रतियो में यह आग्रह नही दीख पड़ता:—

मूल – अम्ह — B, C, D, E, – हम; D, – हमनैं } जबकि इसके विपरीत मूल 'अम्हि' के स्थान पर B, C, D, E, मे 'अम्हे', B मे 'अम्ह' C मे 'अम्हे' और D, E मे 'हम' भी मिलतेहै

आविउे — B – आविओ, C, D – आवियो

ऊतरीउे — B – ऊतरीयो, ऊतर्यउे } C, D – ऊतरीयो, ऊतर्यो } E ऊतरीयो

उदधि — B, C, D – जलद, दरिया } B, C – समुद्र } E सागर, जलधि }

८. **भाषा का आधार :** पाठ-निर्णय में भाषा का आधार सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है। पाठ-निर्णय के लिये कुछ भाषा-सम्बन्धी आधारों का उल्लेख नीचे किया जाता है:—

(१) पाठ-भेद प्रवृत्ति : कुछ लिपिकारों तथा क्षेपककारों में मूल रचना से सर्वथा भिन्न पाठ कर देने की प्रवृत्ति होती है। इसके अनेक कारण होते हैं, पर मुख्यतः यह कभी तो अर्थ समझने में न आने पर किया जाता है और कभी प्रमाद या व्यक्तिगत रुचि के कारण :—

(क) अर्थ न समझने के कारण —

मूल— अति सुकमाल पसम पडवडी (१५३) (स० सूकः=कमल)
B— , शुकमाल पशम ,, (शुक ... =तोते का पर)
E— कोमल सदल पसम पडवडी (अर्थ स्पष्ट है)

(ख) व्यक्तिगत प्रमाद या रुचि के कारण—

मूल – ऊषर खेत्र न लागइ बीज। विण झगडा नवि थापइ धीज (४२)
यहा रेखांकित शब्द उपयुक्त हैं। यहां 'खेत्र' के स्थान पर B प्रति में 'क्षेत्र' (भिन्न अर्थ) 'लागइ' के स्थान पर E प्रति मे 'उगै', 'झगडा' के स्थान पर C प्रति मे 'झगडइ' तथा E प्रति में 'झगडै' और, 'थापइ' के स्थान पर E प्रति में 'होवइ' पाठान्तर तथा पाठ-भेद हो गये हैं। इसी प्रकार 'ए ऊषाणु अख्या दीठ' (५८) में 'अख्या दीठ' के स्थान पर E प्रति में 'साचो दीठ' पाठ लिपिकार की प्रमाद-प्रवृत्ति का द्योतक है।

(२) पाठान्तर प्रवृत्ति : भाषा के प्राचीन रूपो के व्यवहार से मुक्त हो जाने पर लिपिकाल के समय लिपिकार उनसे विकसित नवीन रूपो का प्रयोग कर लेता है। इसी प्रकार कभी तत्सम रूपो के प्रति उसकी रुचि तथा उसकी स्थानीय बोली का प्रभाव और उसकी उच्चारण प्रवृत्ति आदि अनेक कारणो मे एक ही रचना की भिन्न-भिन्न प्रतियो में पाठान्तर हो जाते हैं। कुछ का उल्लेख यहां किया जाता है—

(क) अव्यवहृत प्राचीन रूपो के स्थान पर नवविकसित या प्रचलित रूपों का प्रयोग :

मूल—अवडा – B,C,D, – एवडा, E इतने
करावउे – C,D – करावो (–वो)
कहवाडउे– B,C – कहवाडो (–डो), D,E–कहावो (–वो)
अजुआलइ- B, – उजवालइ, C–उजबालै, E उजालै

(ख) तत्सम रूपो के प्रति लगाव—

मूल—अउर - B,C,D - अवर (< स० अपर)
उछाह - D - उत्साह
ऊछेद - D - उच्छेद

(ग) स्थानीय बोली का प्रभाव—

मूल—कवित्त - B,C,D,E - किवित्त } मारवाडी की आदि इकार-प्रवृत्ति
कस्तूरी - E - किस्तूरी }
अवकइ - C - अवकिइ } मध्य राजस्थानी की मध्य इकार-प्रवृत्ति
अनइ - C - अनिइ }
अवनि - C - अविनि }

(घ) उच्चारण की मुखसुख प्रवृत्ति ('य' का निवेश)

मूल—करिसइ - B,C - करिस्यइ
कहीइ - B,C - कहियइ D,E - कहियै
उवेलीउे - C - उवेलीयउे

(च) व्याकरण सम्बन्धी भूलें—

(१) लिंग की भूल - मूल - आडी (स्त्री०)-B-आडउे, C,D,E-आडो (पु०)
(२) वचन की भूल- मूल - आणा (व.व.)-B-आणउे, D,E -आणु (व व)

पदमणि चउपई की कथावस्तु का विस्तार दस खण्डो में हुआ है । प्रत्येक खण्ड की कथा सक्षेप में इस प्रकार है—

१ खण्ड – चित्तौड़ के राजा रतनसेन का अपनी पटरानी प्रभावती के व्यंग पर सिंहलद्वीप मे जाकर वहाँ के राजा की बहिन पद्मिनी से विवाह कर के लौटना—(१-९३) ।

२ खण्ड – रतनसेन और पद्मिनी के प्रेम-प्रसग के समय राघव का अन्त पुर में प्रवेश और इस कारण रतनसेन का क्रोध मे आकर उसकी आँखें निकलवाने का आदेश । राघव का डर से भाग जाना— (९४-१३५) ।

३. खण्ड – राघव का दिल्ली पहुँचना और वहाँ एक भाट की सहायता से अलाउद्दीन के दरवार में प्रवेश कर पद्मिनी स्त्री का प्रसग छेड़ना । अलाउद्दीन का अपने हरम में पद्मिनी स्त्री की खोज के लिये राघव द्वारा निरीक्षण कराना और उसमें एक भी पद्मिनी स्त्री न होने पर राघव के सकेत पर पद्मिनी के लिये सिंहलद्वीप पर चढाई करना—(१३६-१८६) ।

४ खण्ड – अलाउद्दीन द्वारा सिंहल पर आक्रमण और समुद्र मे अनेक कठिनाइयों के कारण पीछा लौटना—(१८७-२२७) ।

५. खण्ड — दिल्ली लौटने पर अलाउद्दीन की बीबी का व्यंग्य करना। फिर राघव की सूचना और सकेत पर पद्मिनी प्राप्त करने के लिये चित्तौड पर आक्रमण का आदेश—(२२८-२४१)।

६ खण्ड — रतनसेन और अलाउद्दीन का युद्ध। अलाउद्दीन का गढ़ लेने मे असफल रहने के कारण अपने मत्री को भेजकर केवल किला और पद्मिनी को देखकर लौट जाने का छल-पूर्ण सन्धि-प्रस्ताव—(२४२-२८२)।

७ खण्ड — अलाउद्दीन का गढ मे प्रवेश। भोजन के समय दासियो को देख कर उन्हें पद्मिनियाँ समझ कर बार-बार चौकना और राघव का उसको सचेत करना। भोजनोपरान्त झरोखे की जाली से झाँकती हुई पद्मिनी को देख कर उसका मूर्छित हो जाना और राघव का उसको समझाना। किला देख कर लौटते समय रतनसेन को बातो में लगा कर द्वार तक ले आना और वहाँ अपमे छिपे हुए साथियो द्वारा उसे बन्दी बना लेना—(२८३-३४७)।

८. खण्ड — रतनसेन-प्रभावती का पुत्र वीरभाण पद्मिनी को उसकी माता का सौभाग्य छीनने वाली समझता है और इस कारण वह उसको अलाउद्दीन को सौंपकर उसके बदले मे राजा को लेने का प्रस्ताव स्वीकार करता है। यह सुन कर पद्मिनी के मन मे रोष, चिन्ता और ग्लानि तथा वहा न जाने का दृढ निश्चय—(३४८-४२१)।

९ खण्ड — पद्मिनी का सहायता के लिये गोरा-बादल के पास जाना। बादल द्वारा रतनसेन को छुडाने की प्रतिज्ञा सुन कर उसकी माता का उसको रोकना—(४२२-४९७)।

१० खण्ड — अपनी बात न मानने पर बादल की माता का उसकी नव-विवाहित वधू को भेजना। अपने स्वामी के दृढ निश्चय तथा रणोल्लास को देखकर नव-वधू का उसको रणवेश से सज्जितकर आयुध देकर युद्ध के लिये विदा करना। बादल का वीरभाण को समझा कर अपने पक्ष मे करना और अलाउद्दीन के पास जाकर उसको छलभरी बातो से पद्मिनी के आने का विश्वास दिला कर उसकी सेना को वहाँ से रवाना करवा देना। फिर गढ मे आकर डोलो में दासियो के स्थान पर अपने सैनिको को और पद्मिनी के स्थान पर गोरा को छिपा कर ले जाना, रतनसेन को छुडाना और अलाउद्दीन तथा उसके चुने हुए साथियो को मार भगाना। युद्ध मे गोरा की मृत्यु और उसकी स्त्री का सती होना—(४९७-६२०)।

पदमणि चउपई मे भाषा की सामान्य प्रवृत्तिया और उसकी शैली :—

पदमणि चउपई का रचनाकाल वि०सं० १६४५ है अत: इसकी भाषा वि०स० १६०० और १७०० के बीच की विकसित भाषा का रूप हैं। विकास-काल की दृष्टि से इसको मध्यकालीन राजस्थानी तथा क्षेत्र की दृष्टि से इसको मध्य राजस्थान की भाषा मानना चाहिये। मध्य राजस्थानी क्षेत्र राजस्थान का गोडवाड़ का प्रदेश, उसके पूर्व मे अजमेर, अजमेर से जहाजपुर-माडलगढ, वहाँ से भीलवाड़ा, गंगापुर, रायपुर, आमेट, कुम्भलगढ और पुन: गोड़वाड के बीच का विस्तृत भू-भाग है। उस काल की मध्य राजस्थानी का क्षेत्र भी लगभग इसी के अन्तर्गत मानना चाहिये। उक्त रचना का रचयिता हेमरतन गोडवाड़ प्रदेश में स्थित सादड़ी का निवासी था। अत: इस ग्रन्थ की भाषा-प्रवृत्तियाँ सामान्य रूप से मध्य राजस्थान की उस काल की भाषा-प्रवृत्तियाँ हैं, जिसके भीतर कही-कही गोड़वाड़ी की स्थानीय प्रवृत्तियों का भी समावेश है। लेखक के जैन साहित्य की परम्पराओ मे शिक्षित होने के कारण इस ग्रन्थ मे जैन शैली की भाषा-परम्परा का निर्वाह भी देख पडता है। इसी प्रकार वीर-रस की रचना होने के कारण इसमें डिंगल शैली का भी समावेश है :–

१. मध्य राजस्थानी की भाषा-प्रवृत्तियां —

(१) शब्द के आदि में अ-कार के स्थान पर मारवाडी इ-कार की प्रवृत्ति :

इधकी (७८ D अधकी), इसउ (२२७); खिण (२४ = क्षण); खित्री (३८१ = क्षत्रीय); सिवद (४३६ = शब्द)

(२) कही-कही 'इ' तथा 'उ' के स्थान पर 'ए' तथा 'ओ' और 'ए' तथा 'ओ' के स्थान पर 'इ' तथा 'उ' की गुण-वृद्धि;

(क) जिमउे (४८६)–जेसु (१०); करियो (४)–करेयो (४३१) -जीविसु (४६५)–जीपेशां (४०४); जीता (५६६)–जेत (५१४)

दिष्टे (१५५ B,C)–दीठ (६६)—द्रेठि (२७०)

(ख) सुहामणी (१६८)–सोहामणी (DE); सुगद (२६६)–सोगध (E); फुजदार (२८६)–फौजदार, फोफल (३३०)–पुगफल, पुष्पफल; वुल्लइ (३६७)–वोलइ (३८६), होई (१००)–होइ (३३), हुइ (३६४)

(३) तालव्य 'श्' और दन्त्य 'स्' का एक दूसरे के स्थान पर अनियमित प्रयोग : जीपेशा (४०४)-जीपिसुं (४६५), करशां (४०१)-करेसां (५३७ A,E), करेसुं (५३६)

(४) मध्यग - व् - के स्थान पर कही - य् - और कही - अ का अनियमित प्रयोग :

बहुअर (४४६), - बहूयर (B,C,E) - बहूवर (D)

खाग्रां (३९१) - खावा

जावइ (४७८) - जायइ (४६८)

(५) स्वर-लोप द्वारा शब्द - सयोग की प्रवृत्ति :

न + आवइ = नावइ (२५)

न + आदरी = नादरी (४८५)

म + आवइ = मावइ (४२२)

(६) मध्य अनुनासिक - एँ - का - आँ - मे परिवर्त्तन :

(क) वात सहू बहू अर नां कही (४४६ A) स्त्री० ए०

(ख) सिंघलपति नां सिरपा दीउं (२२२ A) पु० ए०

(ग) मोटां नां परि दीधुं मान (२२३ A) ब० व०

उक्त रचना मे इस प्रवृत्ति का प्रभाव कर्म कारक के चिन्ह 'ने' पर पड़ने से उसका 'ना' हो गया है। आधुनिक बोली मे इस क्षेत्र मे 'थने कहयो' के स्थान पर 'थना कियो' बोला जाता है। कर्म कारक मे ही यह प्रवृत्ति सीमित नही है। मध्यस्थित स्वरो की यह प्रवृत्ति ध्यान देने योग्य है :

भांश ∠ भैंस, फाक्यो ∠ फैंक्यो, खाच्यो ∠ खेंच्यो आदि।

प०च० मे खची (५९३) ∠ खांची ∠ खेंची

३. पदमणि चउपई मे मध्यराजस्थानी की गोड़वाड़ी बोली की स्थानीय प्रवृत्तिया :

(क) सख्यावाचक दो-तीन (२,३) के स्थान पर बे-त्रण तथा उसके रूपों का प्रयोग :

बि - च्यार (५४४), बी - सहस (१०१), बे (६७), बिवणउे (२०४) बेउ (५४), बेइ (३९) बेही (८०), बिहु (७), बिहु (१५१), ब्यु (९२), ब्यउ (५०३), बिया (५४९), बीजा (३९६), बीजी (५०)।

त्रिगुण (१८७), त्रिहु (३११), त्रीजउ (१२६), त्रीजी (३०६), त्रीस (४१), त्रीसहस (३७३), त्रीसहजार (२८५)।

(ख) करण - अपादान कारकों मे 'सुं' (सू) के स्थान पर भीली 'थी' का प्रयोग :

१।—रतनसेन थी मन महि डरइ (८२)

२।—तू सिंघल थी अविउे नासि (२५०)

(ग) भूतकाल 'हतो' (आधु० राज० 'हो') के स्थान पर 'थो' का प्रयोग·

१।—आगे - ई थो बभण गुणी (१४५)

(घ) दो दीर्घ स्वरो के बीच वाले अक्षर मे स्थित स्वर "अ" का "इ" मे परिवर्तन : दोहिलो (४५४); पाछिलो (६४)

४. जैन शैली की भाषा-परम्पराओ का आग्रह :

(क) संयुक्त स्वर 'ऐ' तथा 'औ' के प्राचीन रूपो को ग्रहण कर उनको प्राचीन रूपो मे ही लिखा गया है, जब कि अन्य प्रतियो मे उनके नव विकसित रूप लिखे गये हैं ·

वइसणइ (२६)-बैसणै (E); बेसणउे (५०३)-बैसणो (D)

(ख) आदि 'य्-' के स्थान पर 'ज्-' का प्रयोग:

जोअण (४१) ∠ योजन; जोगी (६०) ∠ योगी

इसी प्रकार अन्त्य '-ज्' के स्थान पर इसके विपरीत '-य्' का प्रयोग; आवयो (५३६) =आवजो,

(ग) कही-कही शब्दो के प्राचीन रूपो का निर्वाह,

(१) मध्य "त" के स्थान पर "प" : जीपण (७३) - जीतण

(२) आदि "ल" के स्थान पर "न" . निलवटि (४६८),- ललाटि (६०६)-, निलाटि(B,C,D,E), नालि (२८६)-लारि (१८४)

(३) आदि व- के स्थान पर म - : मोनती (१६१)-वीनती (२०६)

५. वीर-रस की अभिव्यक्ति के लिये भाषा में डिंगलत्व .

(क) व्यञ्जन द्वित्व . सावर्ण्य प्रवृत्ति के आधार पर विकसित प्राकृत-अपभ्रश के द्वित्त-व्यञ्जन-युक्त शब्दो का प्रयोग डिंगल की प्रधान विशेषता है। इसी आधार पर उसमे अनेक प्रकार के द्वित्त-व्यञ्जन-युक्त रूपो की रचना हुई। इसमे से निम्नलिखित प्रवृत्तिया उक्त रचना मे दीख पडती हैं :—

(१) प्राकृत-अपभ्रंश मे स्वीकृत सवर्ण द्वित्व :

भट्ट (१६२) खग्ग (३६७)

(२) अपभ्रंश मे द्वित्वव्यजन वाले जो शब्द राजस्थानी में परिवर्तित हुए थे उनमे द्वित्वव्यंजन लोप होकर उसके पूर्व-वर्ण को दीर्घ करने की प्रवृत्ति देख पडती है। इसी नियम के विपरीत शब्द के मध्य मे द्वित्व के आगमन के लिये पूर्व स्थित दीर्घ वर्ण को ह्रस्व करने का नियम डिंगल मे देख पडता है। निम्नलिखित उदाहरणो मे यह प्रवृत्ति देख पडती है :

अ < आ — झल्लई (३६७) < झालइ (३६६)
इ < ई — लिज्जइ (३७४) < लीजइ (२६७)
इ < ए — खिल्लूं (४३३) < खेलु (७४)
उ < ऊ — फुट्टउे (४४२) < देखो, फूटइ (२५६)
उ < ओ — बुल्लइ (३६७) < बोलइ (३३)

इसी प्रकार के द्वित्व मे कही-कही पर-वर्ण भी ह्रस्व कर दिया जाता है :

सत्ति (४१६) < सती (२०)

(३) कभी-कभी पूर्व तथा पर-वर्ण को प्रभावित किये बिना ही द्वित्वव्यजनागम हो जाता है :

फिट्टू (४४२) < फिट (५६८);
सक्कइ (१३) < सकइ (१३)

(४) मध्यव्यंजन महाप्राण होने पर उसके साथ द्वित्व की स्थिति में अल्प-प्राण का ही सयोग होता है :

रक्खाविउं (४४२); पाउद्धरइ (२८६)

(५) (क) द्वित्वव्यंजनागम के पूर्व उर्ध्व रेफ का अधोरेफ होना :

गध्रव्व (१६३) < गंधर्व; स्त्रग्गि (२४१), स्त्रग्ग, < स्वर्ग

(ख) उच्चारण लाघवत्व अथवा छन्द-बन्धन के कारण अक्षर लोप की प्रवृत्ति :

सख (१६३) < सुखिणी (१६३); रभ (१६५) रभा;
कति (१६६) < कांति; नीद्र (१६६) < निद्रा;

(ग) सर्वनाम के प्राचीन रूपो का प्रयोग :

अम्ह (१७०, ५८२-सबध-कर्त्ता), अम्हनि (५४२-कर्म-अधि०),
तूय (४४०), तूअ (४४३), तुज्झ (६०५)
ताणच्चिय (१५६), ताम [५७० A (५५०)]
कवण (१८७)

(घ) प्राकृत 'हन्तो' के रूपो का विविध विभक्तियों मे प्रयोग :

१. कर्म — वासइ ए ओलोचइ कीउ (३६८)
२. सम्प्रदान-संबंध — पोतुं बीतु अमलह तणुं (४७)
सामी सिंघल दीपह तणुं (६२)
३. अपादान — गढनी पोलि हुति ऊतरिउ (४६८)

(च) अनुस्वार का विभक्ति के रूप मे प्रयोग :

१. कर्त्ता-कर्म — खवासां उजासां (२८६)
२. कर्म — छत्रा धरइ (२८६)
३. करण — अख्या दीठ (५८)
४. सबध — रायां घर (२८६), असुरा घेह (३६७)

(छ) 'न' के स्थान पर 'ण' का आग्रह :

विणास (३६२), खांण (२०२), समांणी (१६१), सांमिणी (४१६)

(ज) अन्य प्राचीन रूप :

पडसाद (पट+सद्द < शब्द-२४६), पायालइ-१८७ (पातालइ)
अछइ (३०६), अछां (४०२)

(झ) दृश्य सादृश्य के लिये अनुरणन :

१. ढलकइ.. ढीकली (२४४)
२. दुमकि दुममा....(२४५)

(ट) अपभ्रंश के 'अडडडुल्ल' से विकसित स्वार्थिक प्रत्यय :

इसडउ, इसडइ (४३५), वड्डुउ, प्रियड्डुउ (३९७), बोलडा (२४०) प्राहुणडां (२९५), गोरिल्ल (३९३)।

हेमरतन और उसकी रचनाएँ

१ कालनिर्णय :

वि० स० १५०० और १७०० के बीच का युग राजस्थानी भाषा, साहित्य, सस्कृति और कला के चरम विकास का युग था। इस युग मे राजस्थानी भाषा और साहित्य की बहुमुखी प्रवृत्तियो का विकास देख पडता है, जहा धर्म और सम्प्रदाय, भक्ति और साधना, लौकिक और पारलौकिक भावनाए आदि का साहित्य के साथ-साथ सामंजस्य हो जाता है। साहित्य, नरक्षेत्र और आध्यात्मिक क्षेत्र मे सामजस्य स्थापित करता है। एक ओर वह 'मानव-व्यापारो मे आदर्श

स्थापित करता है तो दूसरी ओर वह उन आदर्शों द्वारा भगवत्प्राप्ति की ओर सकेत करता हुआ साधना और भक्ति के स्थूल तथा सूक्ष्म तत्वो में भी प्रवेश करता है। जहाँ धर्म सम्बन्धी रचनाएँ धार्मिक तत्वों और सिद्धान्तो के सीमित क्षेत्र मे ही देख पडती थी वे अब लौकिक चरित्रो और लौकिक व्यवहारो के साथ सामंजस्य स्थापित करने लगी।

जैन साहित्य की अनेक रचनाए ऐसे ही पात्रो के चरित्र को लेकर सामने आई, जो इन आदर्शो के कारण लोकप्रिय हो रहे थे। ये आदर्श पहले जैन धर्म तक ही सीमित थे। फिर जैनेतर चरित्र भी उन आदर्शों के साथ समाविष्ट हुए। धीरे-धीरे जैन लेखको ने जैनेतर विषयो और चरित्रो को भी अपने काव्य का विषय बना लिया, और इस प्रकार अनेक जैन लेखको द्वारा उत्तम कोटि के चरित-काव्य रचे गये, जो राजस्थानी भाषा और साहित्य की अमूल्य निधि बन गये। हेमरतन इसी प्रकार का एक कवि था, जिसने जैन होकर भी जैनेतर वस्तु और पात्रो को अपने काव्य का विषय बनाया। इस युग मे इस प्रकार की अनेक रचनाएँ हुई, जो जैन साहित्य की ही अमूल्य निधि नही हैं। उनको राजस्थानी भाषा और साहित्य से अलग नही किया जा सकता। राजस्थानी साहित्य के विविध रूपो की परम्परा और विकास की द्योतक ये जैन रचनाएँ ही हैं, जिनसे साहित्य के इतिहास के लिये सम्बन्धित सामग्री भी परिपूर्ण मात्रा मे प्राप्त होती है। हेमरतन के अनेक ग्रन्थ पिछली खोज मे प्राप्त हुए हैं, जिनसे उसके अपने युग का एक महत्वपूर्ण कवि होने का सकेत मिलता है। उसकी प्राप्त रचनाओ मे 'पदमणि चउपई' यहाँ प्रस्तुत है।

हेमरतन के जीवन के विषय मे बहुत कम सामग्री प्राप्त है। राजस्थानी लेखक इस दृष्टि से इतिहास लेखक की पोथी मे बहुत बदनाम हुआ है। पर अपने महत्व की प्रशस्ति स्थापित करना राजस्थानी लेखक ने कभी अपने जीवन का उद्देश्य नही बनाया। उसका उदेश्य रचना और तद्गत विषय को प्रस्तुत करना था। इसीलिये उसने विषय और वस्तु की ओर अधिक ध्यान दिया। उसने ग्रन्थ के आरम्भ तथा अन्त मे अपने आराध्य तथा आश्रय का उल्लेख कर उनके साथ अपना सम्बन्ध स्थापित किया है। चाहे वह धार्मिक क्षेत्र हो, चाहे साम्प्रदायिक, चाहे लौकिक क्षेत्र हो, चाहे पारलौकिक, सभी मे राजस्थानी लेखक की यही स्थिति रही है कि उसने अपने व्यक्तित्व को अपनी कृति मे कही उभरने नही दिया। इस कारण इतिहास-लेखक ने एक ओर उसकी रचनाओ को कृत्रिम कहा और दूसरी ओर उसकी सन्दर्भ-सामग्री का उपयोग भी किया। हेमरतन की रचनाओं मे 'पदमणि चउपई' का विषय इतिहास से सबध

रखता है। फिर भी उसका कोई अंश पूर्ण ऐतिहासिक नही है। पर वह किसी न किसी मात्रा मे ऐतिहासिक सामग्री अवश्य प्रस्तुत करती है। इतना होने पर भी उसका उद्देश्य सहित्य रचना है, रस उत्पन्न करना है, इतिहास लिखना नही (देखो–खड १।४।५)। अत: उसको इतिहास के क्षेत्र मे लेजाकर कृत्रिम कहना उचित नही है। 'पदमणि चउपई' इतिहास नही, काव्य है। उसका रचयिता इतिहासकार नही, कवि है, जिसका उद्देश्य किसी आश्रयदाता को प्रसन्न करना नही, केवल लोकप्रिय चरित्रो को लोकप्रिय काव्य-शैली मे चित्रित करके उनके आदर्शो को लोक-जीवन मे स्थापित करना है।

हेमरतन की प्राप्त रचनाओ मे उसके जीवन सम्बन्धी जो अन्तर्साक्ष्य सूत्र प्राप्त होते हैं, उनसे उसके रचनाकाल, गच्छ-परम्परा, शिक्षा, ज्ञान, अनुभव, तत्सम्बन्धी इतिहास आदि की ओर सकेत-सूत्र प्राप्त हो जाते हैं। उनके आधार पर उनके व्यक्तित्व की शोध सभव है। जैन धर्म मे दीक्षित हो जाने के पश्चात् माता-पिता आदि का सासारिक सम्बन्ध टूट जाता है और गुरु-परम्परा से उसका सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। यही कारण है कि हेमरतन ने अपने माता-पिता का परिचय न देकर गुरू परम्परा का ही उल्लेख किया है।

बहिर्साक्ष्य सामग्री से हमे उसकी शिक्षा-परम्परा तथा तत्कालीन साहित्य और तत्सबधी इतिहास का सकेत-सूत्र मिल जाता है। एक लेखक के विषय मे इतनी तो जानकारी होनी ही चाहिये और इसके लिये प्राप्त अल्पतम सामग्री भी किसी सीमा तक पर्याप्त है। उसके आधार पर उसके जीवन और व्यक्तित्व का पता लगाने मे तो हम सफल हो ही जाते है। अत उसकी रचनाओ के आधार पर उसका जीवन निश्चित करेगे। हेमरतन की अब तक जो रचनाएँ पिछली खोज मे प्राप्त हुई हैं, वे निम्नलिखित है—

१. अभयकुमार चउपई	रचना काल वि०स० १६३६
२ महीपाल ,,	,, ,, ,, १६३६
३ गोरा बादल पदमणि चउपई	,, ,, ,, १६४५
४ शीलवती कथा	,, ,, ,, १६७३
५ लीलावती	,, ,, ,, १६७३
६ रामरासो	
७ सीताचरित	
८ जदवा बावनी	
९ शनिचर छद	

इसमे से पहली पाच के तो रचनाकाल उपलब्ध हैं। शेष चार की खोज इन पाँच के आधार पर सम्भव है।

जिन पाँच रचनाओ पर रचनाकाल दिया गया है, वे सब प्रौढ रचनाएँ हैं। इनके आधार पर हेमरतन का रचनाकाल वि०स० १६३६ से १६७३ के बीच निश्चित हो जाता है। इस प्रकार पहली रचना (१६३६) और पाँचवी रचना के बीच ३७ वर्षों का अन्तर है। इनके आधार पर इन ३७ वर्षो के समय के तीन कालो मे-१६३६, १६४५ और १६७३ हेमरतन की सभी रचनाओ को स्थापित किया जा सकता है। हेमरतन के रचना-विकास (मानसिक-विकास) के ये आदि, मध्य और अन्तिम अथवा आरम्भ, विकास और उत्थान की स्थितियाँ मानी जा सकती हैं। आदि और मध्य के बीच लगभग दस वर्षों का और मध्य और अन्तिम के बीच २८ वर्षो का अन्तर है। २८ वर्षो का समय उसके चरम विकास का द्योतक है। इसी काल मे हेमरतन की अन्तिम और महत्त्वपूर्ण रचनाएँ पूरी हुई होगी।

कवि ने अपनी रचनाओ मे कही-कही अपनी रचना सम्बन्धी योजना की ओर भी सकेत किया है; जैसे 'अभयकुमार चउपई' मे उसने लगभग सात विषयों की रचनाएँ प्रस्तुत करने का सकेत किया है.—

दान, सील, तप, भावना, चारु, चरित्र, कहेस।
क्रोध, मान, माया, वली, लोभादिक, पभणेस॥

इसमे दान, शील, तप, मान, क्रोध, माया और लोभ ये सात विषय स्पष्ठ हो जाते हैं। लोभादिक कहने से चारो विकारो मे शेष काम भी आ जाता है। इस प्रकार ये आठ विषय आठ रचनाओं की ओर सकेत करते हैं। इस आधार को देखते हुए वि० स० १६३६ की प्रथम दो रचनाओ मे भी यह स्पष्ठ हो जाता है कि 'अभयकुमार चउपई' उसके पहले की और 'महिपाल चउपई' उसके बाद की रचना है। ऐसा लगता है कि कवि ने इन्ही विषयो को अपनी काव्य-रचना का आधार मानकर एक-एक विषय पर एक या अधिक रचनाएँ प्रस्तुत की। इनमे से एक रचना 'शीलवती कथा' का रचना काल जैन गुर्जर कविओ (भाग १ पृ० २०७-२०८) के लेखक ने वि० स० १६०३ दिया है। पर यह ठीक नही लगता। लेखक की मान्यता का आधार उक्त प्रति मे दिया गया यह रचनाकाल है :

सवत सोल त्रिरोत्तरे, पाली नयर मझारि।
सील कथा साची रची, प्रवचन वचन विचारि॥

मे वृद्धि की। लोक-प्रिय काव्य की आत्मा का कलेवर इसी प्रकार घटता-बढता रहता है। इसकी लोक-प्रियता के अन्य कारण भी हैं :

१. अन्य जैन रचनाओ के समान यह एकांकी नही है। अन्य जैन चरित-काव्यो के समान इसके आधार मे कोई धार्मिक-सिद्धान्त या प्रचार की भावना नही है।

२. रचना के विषय, वस्तु और पात्र सभी ख्याति-प्राप्त और लोक-प्रिय हैं।

३ कथा ऐतिहासक है तथा उसी राजवश से सम्बन्धित है, जिसमे महाराणा प्रताप जैसे वीर ने इसकी रचना के समय ही अपने मान, मर्यादा और स्वतन्त्रता-प्रेम का परिचय दिया था। उन्ही के त्याग और बलिदान की प्रेरणा से इसकी रचना हुई है।

४. इसमे धार्मिक परम्पराओ के स्थान पर साहित्यिक परम्पराओ का निर्वाह दीख पडता है। इस रचना में उस काल के लोक साहित्यिक परम्पराओ का निर्वाह हुआ है। यह वीर रस का एक सुन्दर लोक काव्य है।

उदयसिंह भटनागर

कवि हेमरतन कृत

गोरा वादल पदमणी चउपई

[पहलो खंड]

॥ दूहा ॥

[1]सुख संपति दायक सकल[1], सिधि बुधि सहित गणेस[2]।
विघन विडारण [3]विनयसुं[3], पहिली[4] तुझ प्रणमेस[5] ॥ १ ॥

ब्रह्म[1] विष्णु[2] शिव सइँ[3] मुखइँ[4], नितु समरइँ[5] जसु[6] नाँम[7]।
ते[8] देवी सरसति[9] तणइ[10], पद[11] युगि[12] करुं[13] प्रणाँम ॥ २ ॥

पद्मराज वाचक[1] प्रभृति[2], प्रणमी[3] निज[4] गुरु पाइ[5]।
केळवस्युं[6] साची कथा, काँणि[7] न आवइ[8] काइ[9] ॥ ३ ॥

नवरस दाखइँ[1] नव-नवा, सयण सभा सिणगार[2]।
कवियण मुझ करियो[3] कृपा, वदताँ वचन[4] विचार ॥ ४ ॥

वीरा रस सिणगार[1] रस, हासा रस हित हेज।
सामि[2]-धरम-रस[3] साँभलउं[4], [5]जिम हुइ तनि अति तेज[5] ॥ ५ ॥

सामि-[1]धरम जिणि[2] साचविउं[3], वीरा रस सविसेष[4]।
सुभटाँ[5] महि[6] सीमा[7] लही, राखी खित्रवट रेख ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ १ सकल सुख-दायक सदा E। २ गणेश B। ३ सुख-करन B, रिधि करण E। ४ पहिलु B, पहिलो C, पहिलि D। ५ प्रणमेश B, प्रणमेसु C।

॥ २ ॥ १ ब्रह्मा B। २ विष्नु B। ३ सइ C, सै E। ४ मुखि C, मुखें E। ५ समरइ B, समरैं B। ६ जस E। ७ नाम B। ८ तेण B, तिण E। ९ सरसती E। १० तणै E। ११ पय E। १२ युग B, जुग E। १३ प्रणाम B।

॥ ३ ॥ १ वाचिक B। २ प्रभति E। ३ प्रणमु E। ४ सद E। ५ पाय BCE। ६ केळविसु B, केळविसु C, केळवताँ E। ७ काणि BC, तथा E। ८ लागैं E। ९ काय BCE।

॥ ४ ॥ १ दाखइ BC, दाखै E। २ शिणगार B। ३ करिजो B, करिज्यो C। ४ वयण E।

॥ ५ ॥ १ सिंगार E। २ साँमि B, साम C, साँम E। ३ ते C, विधि E। ४ संभलु A, समलउं C, साँभलो E। ५ ज्युं वार्धैं तन तेज E।

॥ E ६ ॥ सील साच जगि भाषिई, जसु प्रसाद सुख होइ।
पदमणि जिणपरि पालियो, साँभलियो सहु कोइ ॥ E ६ ॥

॥ ६ ॥ १ साम E। २ जिम C, जां E। ३ साचिव्यउं BC, साचव्यो E। ४ सुविशेष B, सविशेष E। ५ सुभडाँ B, सुहडाँ E। ६ माँहि BC, मै E। ७ सोभा CE।

विद्वान लेखक ने 'त्रिरोत्तर' का अर्थ तीन (३) मान लिया है, जो ठीक नही है। वैसे भी 'त्रिरोत्तर' का अर्थ त्रिदशोत्तर होता है। पर यह पाठ ही अशुद्ध है। शुद्ध पाठ "त्रिहोत्तरे" है जिसका अर्थ ७३ होता है।

हेमरतन का रचनाकाल वि० स० १६३६ और १६७३ के बीच मानने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वि० स० १६३६ मे उसकी आयु २५ वर्ष के लगभग होगी। इस दृष्टि से उसका जन्म वि० स० १६११ के आसपास हुआ होगा। हेमरतन के एक शिष्य कुँवरसी की एक रचना 'नवपल्लवपार्श्वनाथ' श्री अगरचन्द नाहटा के सग्रह मे है। उसके अनुसार हेमरतन का वि० स० १६८१ मे होना पाया जाता है। इस दृष्टि से वि० स० १६८१ मे हेमरतन की आयु ७० वर्ष के लगभग होगी। इसके वाद वे ६।१० वर्ष और जीवित रहे होगे। अत हेमरतन का निधन वि० स० १६६० के आस पास ठहरता है। इस प्रकार हेमरतन का जीवन काल वि० स० १६११ और १६६० के बीच निश्चित होता है।

पदमणि चउपई की ख्याति और महत्त्व :

चित्तौड़ की प्रसिद्ध रानी पद्मिनी की इतिहास-प्रसिद्ध कथा को लेकर लिखी जाने वाली यह प्रथम उपलब्ध राजस्थानी रचना है। इसकी रचना के ४८ वर्ष पूर्व मियाँ जायसी अपना पदमावत अवधी बोली में रच चुके थे।

स्पष्ट है कि युग की परिस्थितियो ने ही हेमरतन को इस रचना की प्रेरणा प्रदान की थी। वि० स० १६३३ मे हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध हो चुका था, जिसमे महाराणा प्रताप के अटल धैर्य और कुल की मान-मर्यादा की परीक्षा हुई थी। वे न तो अकबर के आगे झुके और न अपनी वहन-वेटी को अकबर के हरम मे पहुचा कर राज्य-सुख ही भोगा। कठिन सघर्ष और रक्त-प्रवाह तथा त्याग और वलिदान के द्वारा वि० स० १६४३ मे उन्होने अपने खोये हुए राज्य को पुनः अपने अधिकृत कर लिया था। रह गया केवल चित्तौड़! जिसकी प्राप्ति के लिये अन्तिम प्रयत्नो मे वि० स० १६५३ मे उन्होंने अपने प्राण त्याग किये। महाराणा प्रताप की यह आदर्श गौरव गाथा देश मे दूर दूर तक गायी जाने लगी। उनकी यह प्रणवद्ध अटलता, अडिगता और अणनमता सभी के लिये एक आदर्श उदाहरण वन गई थी। साहित्य मे भी यह नवीन आदर्श एक नवीन उत्साह लेकर खडा हुआ था, जिसने लोगो के मन मे देशभक्ति की भावना प्रतिष्ठित की। लोग इस त्याग पर अभिमान करने लगे। जैन लेखको पर भी इसका प्रभाव कम नही पडा। पद्मसागर ने तो अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ

'जगद्गुरु काव्य' (वि० स० १६४६) में अकबर के आगे अपनी आन वेचने वाले राजाओ की भर्त्सना करते हुए राणा प्रताप के प्रति श्रद्धा प्रकट की थी:—

केचिद् हिन्दुनृपा बलश्रवणतस्तस्य स्वपुत्रीगण,
गाढाभ्यर्थनया ददत्यविकला राज्य निजं रक्षितुम् ।
केचित्प्राभृतमिन्दुकान्तरचन मुक्त्वा पुरः पादयोः,
पेतुः केचिदिवानुगाः परमिमे सर्वेऽपि तत्सेविनः ।।

स० १६४६ में पद्मसागर कृत जगद्गुरुकाव्य, ८८

कितने ही हिन्दू राजा उस (अकबर) के वल को सुन कर स्वय के राज्य को वचाने के लिए अपनी पुत्रियो के समुदाय को बड़ी अभ्यर्थना के साथ उसे निरन्तर प्रस्तुत करते हैं। कितने ही चन्द्रकान्तमणि आदि जवाहरात देकर उसके पैरो पडते हैं और कितने ही उसके गाढ़ अनुयायी चन कर उसके सच्चे सेवक कहलाने की कामना करते हैं। (परन्तु एकमात्र मेदपाट का राणा प्रताप जो हिन्दू जाति का कलशभूत माना जाता है वह उस (अकबर)का तिरस्कार करता रहता है और अपने पूर्वजो की आन को निभाने के लिये दृढतापूर्वक अणनम बन रहा है।)

हेमरतन ने भी प०च० की प्रशस्ति मे महाराणा प्रताप का उल्लेख किया है:

पृथ्वी परगट राण प्रताप। प्रतपई दिन दिन अधिक प्रताप।

अपने युग की प्रेरणा ने ही हेमरतन को इस वीर रस की रचना की ओर प्रवृत्त किया था। कोई आश्चर्य नही कि पदमणि चउपई के अतिरिक्त भी उसने कोई वीर रस की रचना की हो। पदमणी चउपई मे रतनसेन के पुत्र वीरभाण की कल्पना इसी प्रकार के आन बेचने वाले राजाओ का प्रतिनिधित्व करती है। गोरा और बादल उस आन की रक्षा के लिये प्राण देने वाले वीरो के प्रतीक हैं। बड़े ही उपयुक्त समय मे हेमरतन ने अपना यह चरितकाव्य प्रस्तुत किया था। इसमे भारतीय नारी के सतीत्व और कुल मर्यादा की रक्षा हेतु प्राण देने वाले लोक-प्रसिद्ध चरितो को अकित किया है। ऐसी रचना का महत्व भी उसी समय प्रकट हो गया था। मेवाड़ के पुनरुद्धार (वि० स० १६४३) के साथ ही इसकी आधार की भूमि तैयार हुई और दो वर्षों मे उस जनता के सम्मुख प्रकाशित कर दी गई जो ऐसे ही त्याग का दिन-रात अनुभव कर रही थी। उसी समय यह रचना इतनी लोकप्रिय भी हो गई कि कवि के जीवन-काल मे ही इसकी अनेक प्रतियाँ दूर-दूर तक पहुँच गईं। अनेक लिपिकारो और क्षेपककारो ने इसमे क्षेपक जोडे, सशोधन परिवर्तन और परिवर्द्धन करके इसकी लोक-प्रियता

गोरा[१] रावत[२] अति गुणी, वादल[३] अति वलवंत ।
वोलिसु[४] वात विहुं तणी[५], सुणियों[६] सगला[७] संत ॥ ७ ॥

रतनसेँन राजा तणइ[१], छलि हूआ[२] अति[३] छेक[४] ।
गोरउ[५] वादल[६] [७]वेँ गुणी[७], सत्तवंत[८] सविवेक[९] ॥ ८ ॥

युद्ध[१] करी जिम जस लीउं[२], वसुहा[३] हूआ[४] विख्यात ।
चित्रकोट[५] चावउं[६] कीउं[७], ते निसणउं[८] सहु[९] वात ॥ ९ ॥

॥ चोपई ॥

चित्रकूट[१] पर्वत चउंसाल[२], वसुधा-लोचन [३]जैंसु विसाल[३] ।
सुर-नर-किंनर तणउं [४]निवास, रॉंम रह्या था जिहॉं वनवास ॥ १० ॥

गिरवर ऊपरि[१] दूढ[२] दुरंग, विषम ठाम गढ अति[३] हि उतंग ।
गयणह[४] पडण विधाता डरी, जाणि कि थंभ दीउं[५] थिर करी ॥ ११ ॥

विपम[१] घाट गढ विसमी पॉंलि, अति उंची कोसीसॉं[२] ऑंलि ।
संचा मॉंहि[३] घणा[४] सॉंसता[५], अंणभंग[६] कोट घणी आसता ॥ १२ ॥

वॉंक[१] दुवारा विसमी[२] गली[३], विकट[४] कोट[५] अति विसमउं[६] वली[७] ।
[८]अणजाणिउं न सकइ नीकली[८], [९]कद ही कोइ न सकइ कली[९] ॥ १३ ॥

मॉंहि मनोहर[१] महल[२] अनेक, सगला[३] लोक वसइँ[४] सविवेक[५] ।
त्याग भोग सहु[६] लाभइँ[७] तिहॉं[८], सुर [९]इम जॉंणइ इणि गढि रहॉं[९] ॥ १४ ॥

॥ ७ ॥ १ गोरो BO । २ राउंत B, रावति O । ३ वादिल A, वादल B । ४ °सुं O । ५ वेहूँ O ६ सुणिज्यो O । ७ सघला BO ।

गोरा वादल रिण गहिल, विन्है सुहड वलिवंत ।
वोलिस वात हुई यथा, सुणयो सगला संत ॥ E ७ ॥

॥ ८ ॥ १ तणै E । २ हूया C, राखी E । ३ कुल E । ४ टेक E । ५ गोरो BOE । ६ वादिल A । ७ सूरिमा E । ८ सतधारी E । ९ सुविवेक OE ।

॥ ९ ॥ १ जुद्ध BO । २ लीयउं B, लीयो O । ३ वसुहॉं B, वसुधा O । ४ हुयउं B, हूया O । ५ चित्रकोटि O । ६ चावु A, चावो O । ७ कियउं B, कीयो O । ८ तिसुणो O । ९ सहु B, सवि O ।

जुध जीतो जस खाटीयो, वसु-पुडि हुआ विख्यात ।
चित्रकोट चावो कीयो, सुणयो ते अवदात ॥ E १० ॥
नर नरपति पढित सभा, सॉंभलियो सहु कोइ ।
परचाव्यॉं तन धन दिये, ध्रम सतधारी कोइ ॥ E ११ ॥

॥ १० ॥ १ चित्रकूट B । २ चौसाल E । ३ जस सुविशाल B, जे सुविशाल E । ४ तणो O, तणे D, राम BCE ।

॥ ११ ॥ १ ऊपर E । २ दूठ BO । ३ तिहॉं O । ४ गयणा O । ५ दीयउं B, दीयो O, कीयो E ।

॥ १२ ॥ १ विषमी BOE । २ कोसीसा BOE । ३ माहिं B, नीर E । ४ घणॉं O, तणा E । ५ सासता BCE । ६ अभग O ।

॥ १३ ॥ १ वाघ E । २ विसमा F । ३ घाट E । ४ विसमो O । ५ कोटि O । ६ विसमु A, विसमो O, विसमी F । ७ वाट E । ८ जाणि पुरुप भूलइ पणि वली O, अणजाणग न सकइ नीकली E । ९ अणजाणउ न सकइ नीकली B, जाण पुरुप पिण भूलै गली D ।

॥ १४ ॥ १ अनोपम OF । २ महुल O, महिल F । ३ सघला B । ४ वसै E । ५ सुविवेक O । ६ सवि O, सुत E । ७ सपति E । ८ जहॉं E । ९ सुर पिण जाणै वसीयै इहॉं E ।

चउरासी[१] चोहटा हटसाल[२], मणिमय[३] तोरण झाक-झमाल ।
[४]गोख घणा उंचा आवास[४], राजभवणि[५] संधिउ[६] आकास[७] ॥ १५ ॥

घरि-घरि गोख घणा[१] पाखती, रंगि[२] रमइँ[३] बेठी दंपती ।
गोखइँ-गोखि घणी जालिका, तिहाँ बेठी दीसइँ बालिका ॥ १६ ॥

कमल-वदन गज-गति-गामिणी[१], कोमल तन[२] दीसइँ[३] कामिनी ।
सात[४] भुँया[५] उंचा आवास, लोक वसइँ[६] सहु लील विलास ॥ १७ ॥

[१]तिणि गढि राज करइ गहिलौंत्त[१]; रतनसेँन [२]राजा जस-जौंत्त[२] ।
प्रबल पराक्रम पूर[३] प्रताप, [४]पेसी न सकइ[४] जसु[५] घटि पाप ॥ १८ ॥

अवनि घणी लग[१] अविचल आण[२], भालि[३] तपइँ[४] जसु[५] बारइ[६] भाँण[७] ।
वेरी[८] कंद तणउ[९] कुद्दाल[१०], रण[११]-रसीउ[१२] नइ[१३] अति रंढाल ॥ १९ ॥

पटराणी[१] तसु[२] परभावती, रूपइँ[३] रंभा सीलइँ[४] सती ।
इंद्र तणइ [५] इंद्राणी जिसी, तेहनइ[६] ते[७] पटराणी[८] तिसी ॥ २० ॥

अवर अनेक अछइँ[१] तसु[२] नारि, अपछर रंभ तणइ[३] अणुहारि ।
पिण[४] मन-मानी[५] परभावती, तिणि पिणि[६] मोहि लीउ[७] निज पती ॥ २१ ॥

सतर भेद भोजन रसवती, केळवि[१] जांणइ[२] ते गुणवती[३] ।
राजा[४] तिणि[५] रीझवीउ[६] घणुं[७], किसुं[८] घणुं[९] हिव[१०] ते हुं[११] भणुं[१२] ॥ २२ ॥

भोजन भगति करइ[१] ते[२] नारि, तउ ते भूप करइ आहार ।
अवर तणउ[३] कीधउ[४] अनपाक[५], रतनसेँन नइँ[६] लागइ[७] खाक[८] ॥ २३ ॥

॥ १५ ॥ १ चोरासी E । २ सुविसाल O, सुविशाल E । ३ मणिमइ O, मणिमै E । ४ जाली गोख अनोप आवास E । ५ भुवणि O, राजभुवन E । ६ सुरिज E । ७ परगास E ।

॥ १६ ॥ १ घणाँ B । २ रंग B । ३ रमइ B,
घरि घरि गोख चिहु दिस घणा, देखण ख्याल बाजाराँ तणाँ ।
गोखे जडित गुपत जालिका, वैठि तिहाँ खेलै वालिका ॥ E १८ ॥
O प्रति में यह चौपई नहीं है ।

॥ १७ ॥ १ गामणी B, दामिनी O, गामिनी E । २ चतुर E । ३ दीसइ O, सरस E । ४ सप्त E । ५ भुमिया BO । ६ वसै E ।

॥ १८ ॥ १ तिण गढ राज करे गहिलौंत्त E,......गहलोत O । २ रिण भ्रिसणाँ मौंत्त E, राजा सजोत O । ३ तेज E । ४ पैसि सकै नहि E । ५ तसु O ।

॥ १९ ॥ १ तस E । २ आण BO । ३ भाल OE । ४ तपइ BO, तपै E । ५ जस E । ६ वारह E । ७ भाण B, वाँण O । ८ वयरी BE, केवी A । ९ तणो OE । १० कुद्दार O, कोदाल E । ११ रिण OE । १२ रसियो E । १३ मड E ।

॥ २० ॥ १ पटराणी E । २ तस E । ३ रूपइ BO, रूपै E । ४ सीलइ BO, सीलै E । ५ तणी OE । ६ रतन E । ७ तणे E । ८ पटराँणिँ E ।

॥ २१ ॥ १ अछे E । २ तस E । ३ तणे E । ४ पणि OE । ५ मनि-मानी BO, मांनि E । ६ पणि OE । ७ लीयो OE ।

॥ २२ ॥ १ ते केलवी E । २ जाणिइ B, जाणें E । ३ रसवती B । ४ राण BOE । ५ तणो चित E । ६ रीझवीयो O, रीझ्यो E । ७ घणु O, इसो E । ८ किसउ B । ९ घणु B । १० तेहनो O । ११ हिव O । १२ भणु O, ८ से १२– चातुरता नु कहिवो किसो E ।

॥ २३ ॥ १ करि O । २ निज O, १-२ राणी करै रसोडो हाथ, तव ते आरोगे नरनाथ ॥ ३ तणो O । ४ कीधो OE । ५ अंनपाक B । ६ नइ O, नै E । ७ लागिइ B, लागे E । ८ खाख E ।

माहो-माहि[१] घणुं[२] मनि-मोह[३], सहि न सकइ[४] खिण एक विछोह ।
वीरभाँण[५] तसु सुत अति सूर, प्रतपइ[६] तेज तणुं[७] घट पूर[७] ॥ २४ ॥
चतुरंग सैंन सँपूरण[१] साथ, नीतइँ राज करइ नरनाथ ।
अरि सगला नाँख्या ऊछेद[२], खिति धरताँ तसु ना'वइ खेद[३] ॥ २५ ॥
सवल सूर साचा ससनेह, छल न करइँ नवि दाखइँ[१] छेह ।
सुरपति दियइ[२] जिणाँरी[३] साखि, "[४]इसा सुभट तसु घरि ऍक लाख[४]" ॥ २६ ॥
हय गय पायक[१] रथ नीसंख, करे न सकइ को आकंख ।
इण[२] परि परिगह तणइ[३] पडूरि, रतनसैंन राजा भरपूरि ॥ २७ ॥
एक दिवस भोजन नइ[१] समइ[२], आवी दासी इम वीनमइ[३] ।
"सांमि[४] ! पधारउ[५] भोजन भणी[६], पाक हूआ हुई वेला[७] घणी" ॥ २८ ॥
आवी वइठो[१] नृप वइसणइँ[२], पटराणीसुं[३] प्रेमइँ[४] घणइँ[५] ।
थाल कचोला कनकह तणा[६], सोवन पाटि पथराव्या[७] घणा[८] ॥ २९ ॥
प्रीसइ[१] भोजन भगति भँडार[२], नारी[३] रंभ तणइँ[४] अणुहारि[५] ।
राजा भोजन जीमइ[६] रंगि[७], विचि-विचि वात करइ[८] कणयंगि[९] ॥ ३० ॥
[१]कदली दलसुं घालइ वाउ[१], जिमतउ[२] जंपइ ते नर-राउ[३] ।
"आज न भोजन भावइ[४] कोइ, नितु[५] निसवादा[६] जीमण [७]होइ ॥ ३१ ॥
शाक-पाक[१] सगला पकवांन[२], धुरि निसवादा[३] लागा[४] धांन[५] ।
रूडी जुगति[६] करउ[७] रसवती[८]", तव ते पभणइ[९] परभावती ॥ ३२ ॥

॥ २४ ॥ १ माहिं E । २ घणो O, प्रेम E । ३ मन-मोह O, समोह E । ४ सकइँ BO, खिण इक न खमै विरह विछोह E । ५ वीरभाण B । ६ प्रतपै E । ७ तणो O, प्रताप पडूर E ।

॥ २५ ॥ १ सपूरी O । २ उछूछेद O । ३ खेध O,
सवल सेन सझाइ घणी, न्याय राज पालै गढ़-धणी ।
अरि नासै जेहने भडवाव, जिम गेवर दीठै वनराव ॥ E २८ ॥

॥ २६ ॥ १ दाखइ B । २ वायइ O । ३ जिणरी O । ४ इसा सुभट घरि वसइ क लाख B ।
सामंत सकल वडा रजपूत, साम-ध्रमी वाका रिण-धूत ।
महिपति मोटा चित्त उदार, दोइ लाख सेवे दरवार ॥ E २९ ॥

॥ २७ ॥ १ पाएक B । २ इणि B । ३ तणइँ B । २-३ अवर परिग्गहतणो पडूर ।
है गै रथ पाइक अणपार, नीत-रीत पट ध्रम आधार ।
रिद्धि-सिद्धि पूरित भंडार, दरवारे नित दे-दैकार ॥ E ३० ॥

॥ २८ ॥ १ °नइँ B, °नै E । २ समइँ B, समै E । ३ वीनवइँ B, वीनवइ O वीनवै E । ४ स्वामि E ५ पद्धारो O, पधारो E । ६ काजि E । ७ वेल B, भोजन ढील न कीजे राज E ।

॥ २९ ॥ १ वइठउ B, वेठो O । २ वइसणइ O । ३ सू A, सू O । ४ प्रेमइ BO । ५ घणइ O । ६ °तणाँ B ७ पथराव्या A । ८ घणाँ O ।
नृप आवी वैठा वैसणै, दासी वाय करे वीझणै ।
थाल कचोला सोवन तणा, कनक कपाट पथराया घणा ॥ E ३१ ॥

॥ ३० ॥ १ प्रीसै E । २ अपार E । ३ रॉणी E । ४ तणै E । ५ अनुहार O । ६ जीमै E । ७ रग O । ८ करे E । ९ पिण चग O ।

॥ ३१ ॥ १-१ राजा मित्र कदे न कहाइ E । २ जिमतों O; २-३ भोजन विचि वोल्यो न रहाय ॥ E । ४ भावै E । ५ नित E । ६ निसिवादा O, ७ जीवणि O ।

॥ ३२ ॥ १ सकल E । २ पकवान BO । ३ निसिवादा BO, सुसवादा E । ४ लागइ O, होता E । ५ धान B । ६ युगति O । ७ करो E । ८ अनपान E । ९ जपइ O, मान तणो मूकी अभिमान E ।

[१]आसंगइ आणी अभिमाँन, राँणी बोलइ-"सुणि राजाँन[१] !
भगति न भावइ[२] मुझ कैंळवी, तउ[३] काइ नारी आणउ[४] नवी ॥ ३३ ॥
परणउ काइ जई[१] पदमिणी[२], ते जिम भगति करइ[३] तुम्ह[४] तणी ।
अम्हें[५] जिमाडी[६] जांणां[७] नही", कोप[८] कीउ[९] कामणि इम कही ॥ ३४ ॥
माणवती[१] हुइ महिला मूल[२], माण[३] गमाडइ[४] विनय[५] समूल[६] ।
विनय[७] गयइ[८] न रहंई[९] सोहाग[१०], विण सोहाग[११] न लाभइ[१२] भाग ॥ ३५ ॥
रतनसैंन राजा रंढाल, तिजि[१] भोजन ऊठिउ[२] ततकाल ।
"तउ[३] हुं जउ[४] आणुं[५] पदमिणी[६], भगति जुगति जीमुं ते[७] तणी ॥ ३६ ॥
ए इम गरवी नारी किसुं, नारी आगलि हुं किम[१] खिसुं ।
असक्य[२] नही हुं आणण[३] नारि[४], कयुं[५] ए[६] अबला कहइ[७] अविचारि[८]" ॥ ३७ ॥
मुंछ[१] मरोडी ऊभउ[२] थयउ[३], [४]गरब ग्रही घर बाहर गयउ[४] ।
रतनसैंन राजा एकलउ[५], साथि खवास करी इक भलउ[६] ॥ ३८ ॥
सबल[१] खजीनउ[२] साथइ[३] लेइ[४], [५]असि चढि चाल्या छाना बेइ[५] ।
कोइ न जाणइ[६] ए विरतंत[७], [८]खिति-पति मनि अति लागी खंति[८] ॥ ३९ ॥

॥ ३३ ॥ १-१ आसंगै छोडी मुख लाज, राँणि कहै सँभलि महाराज E ।
२ भावै E । ३ तमे कांइ O । ४ आणो O, आणो E ।
॥ ३४ ॥ १ जाई B । २ पदमणी B, १-२ परणो नारी जे पदमिणी E । ३ करै E । ४ तुम O ।
५ अम्है E । ६ जीमाडु E । ७ जाणु D । ८ मांण O । ९ कीयो E ।
॥ ३५ ॥ १ माणवती E । २ मूलि E । ३ माणि O, मानै E । ४ गमाडि O, हुई E । ५ विनय्य B, विणसइ O । ६ सवि धूलि E । ७ विनइ B । ८ गयै E । ९ रहै E । १० सोभाग O ।
११ सउभाग O । १२ लाग न A, लाभै E ।
॥ ३६ ॥ १ तजि OE । २ ऊठ्यउ O, उठ्या E । ३ तो OE । ४ जो OE । ५ आणु O, परणुं E ।
६ पदमणी E । ७ तस O, तेह E ।
॥ ३७ ॥ १ किँम E । २ असक OE । ३ आंणिवा E । ४ हार O । ५ किम O E । ६ इ O ।
७ वदि O, जपे E । ८ अविचार OE । BOE प्रतियों में निम्नलिखित दो दोहे और एक गाथा क्षेपक हैं.—

(१) वधेउ[१] वचन अति आकेरउ[२][३], राणी माण गहिछि ।
तेजी न सहइ ताजणउ[४], सहइ त' टाँइर ढिछि ॥ B ३७ अ ॥
[१ वधो, २ आकरो, ३ जिणो, ४ तट्टाइर ॥ O ॥]
वचन कहिउ अणभावतो, राँणी माँन गहिछ ।
तेजी न सहै ताजणो, सहैय त' टारर ढिछ ॥ E ४१ ॥
(२) सुहड सपुरसाँ सिंह नृप, ए प्रहैरइ वलवत ।
अनइ वकारथा[२] माण[३] वदि[४], ते नवि कदा खमति ॥ B ३७ आ ॥
[१ प्राहिइ; २ वकारया; ३ माँण ४ वदि ॥ O ॥]
सीह सुहड नृप सापुरस, एह सदा वलवत ।
वाकारता माण वसि, कदिहि न वयण खमत ॥ E ४२ ॥

गाहा

(३) माया पियाइ वधू, भज्जा गेह धण च धन्न च ।
अविमाणया य पुरिसा, देस दूरेण छड्डुति ॥ B ३७ इ ॥ O ॥
॥ ३८ ॥ १ मूछ E । २ ऊभो O, उभा E । ३ थया E । ४४ गमर करी निज महिलै गया E ।
५ एकलो O E । ६ भलो OE ।
॥ ३९ ॥ १ खरच E । २ खजीना O E । ३ साथै E । ४ लेह E । ५ है चढि छाना चाल्या तेह E, अश्व B, अश्वि O । ६ जाणै E । ७ वरतत B । ८ राजा मनि लागी अति खति E ।

“पद्‌मिणि[१] परणी[२] आवुं[३] घरे, नहि[४] तरि रहिस्युं[५] गिरि-कंदरे।
विण पद्‌मिणि[६] नवि पोढुं सेज, विण पद्‌मिणि[६] न हसुं हित हेज” ॥ ४० ॥

[१]एम प्रतिज्ञा कीधी पूर[१], राजा चालिउ[२] साहस सूर[३]।
वीस त्रीस जोअण वउलिया[४], तव ते वेही[५] इम[६] बोलिया ॥ ४१ ॥

“ऊपर खेत्र[१] न लागइ[२] बीज, विण झगडा[३] नवि थापइ[४] धीज।
विण बादल नवि वरसइ[५] मेह, एक पखउ[६] नवि हुई[७] सनेह[८] ॥ ४२ ॥

गाम नही तउ[१] केही सीम, अगनि माहि[२] नवि[३] जाँमइँ[४] हीम।”
सेवक जंपइ[५] “सॉमी[६], सुणउ[७], प्रगट प्रकासउ[८] मुझ मंत्रणउ[९] ॥ ४३ ॥

मरम पखे[१] किम लहीइ[२] माग, ताण्या[३] विण किम[४] लाभइ[५] ताग[६]”।
[७]राजा जंपइ “पद्‌मिणि भणी[८], मइँ ए अवनि उलंघी घणी[८] ॥ ४४ ॥

पद्‌मिणि[१] तणा[२] पठंगा जिहाँ[३], ठावी ठोड वतावउ[४] तिहाँ[५]”।
सेवक जंपइ[६] “सामी[७], सुणउ[८], खरच्च-वरच्च[९] साथइ[१०] छइ घणउ[११] ॥ ४५ ॥

पिणि[१] नवि जाणी[२] जाँ लगि पंथ[२], ताँ लगि सगलउ[३] गोरख-कंथ[४]”।
वइठउ[५] भूप जई तरु तलइ[६], पंथी आविउ[७] इक[८] तेतलइ[९] ॥ ४६ ॥

भूख त्रिसइ[१] भेदाणुं[२] घणुं[३], पोतुं[४] बीतुं[५] अमलह[६] तणुं[७]।
पंथ[८] तणुं[९] वलि पूरउ[१०] खेद, घटि सगलइ[११] हूउ[१२] परसेद ॥ ४७ ॥

अटवी माहि[१] घणुं[२] आफलइ[३], पिणि[४] नवि[५] कोई[६] माँणस[७] मिलइ[८]।
तिणि[९] ते[१०] दीठउ[११] भूपति जिसइ[१२], पगतलि[१३] आवी[१४] पडीउ[१५] तिसइ[१६] ॥ ४८ ॥

॥ ४० ॥ १ पदमनि E। २ परणी B। ३ आविस E। ४ नहिंतर E। ५ रहिसूं E। ६ पदमणि E। ७ पुढु O, पोढौ E।

॥ ४१ ॥ १ मनसु एहवो पण आदरी E। २ चाल्यो O, चाल्या E। ३ धरी E। ४ जोयण B, वोलिया A, राति-दिवस चाले इम राव E। ५ वेऊ O। ६ एम O। ५-६ पथ न लगै हैवर पाव E ४७।

॥ ४२ ॥ E में यह अधिक है-
राजा भेद प्रकासै नहीं, सेवक वोल्यो अवसर लही ॥
१ क्षेत्र B। २ उगै E। ३ झगडइ O, झगडै E। ४ होवइ E। ५ वरसि O, वरसै E। ६ पसो OE। ७ हुइसइ B, होइ O, हुयै E। ८ नेह B।

॥ ४३ ॥ १ तो OE। २ माँहि E। ३ नमि B, किम E। ४ जामइँ B, जामइ O जामै E। ५ वोलइ O, वोलै E। ६ स्वामी B O E। ७ सुणो O E। ८ प्रगासउ B, प्रकासो O E। ९ मंत्रणो O, मन्त्रिणो E।

॥ ४४ ॥ १ पखइ O, पखै E। २ लहीयै E। ३ ताणा E। ४ जिम E। ५ लम्यइ O, न लहै E। ६ त्राग E। ७ तव वलतो जपइ नर-राज E। ८ हु चाल्यो छु पदमिण काज E।

॥ ४५ ॥ १ पदमणी O। पदमण E। २ तणी B। ३ होइ E। ४ वतावो O, करेवी E। ५ सोइ E। ६ जपै E। ७ स्वामी OE। ८ सुणो O E। ९ विरच O, लीयो E। १० साथि छइ B O, छै साथै E। ११ घणो O E।

॥ ४६ ॥ १ पणि C E। २ जाँणउ O, जाँण्यो जा संबंध E। ३ सगलो O E। ४ धंध E। ५ बेठो O। ६ ते तलइँ B ते तलिइँ O; ५-६ वृक्षछाया राजा बीसमै E। ८ आयो O, आव्यो E। ८ एक C E। ९ समै E।

॥ ४७ ॥ १ त्रिपा B, त्रिसा O F। २ भेदाणो O, भेदाणो E। ३ घणो O E। ४ पोतो O E। ५ वीतो O E। ६ अमली C। ७ तणो O E। ८ पंथि B C E। ९ तणो O, करता E। १० पूरो O, उपनो E। ११ सवले E। १२ प्रगट्यौ E।

॥ ४८ ॥ १ माहिय B, माहैं E। २ घणो O। ३ आफलै E। ४ पणि E। ५ नवी F। ६ कोइ F। ७ माणस B। ८ मिलै F। ९ ति E। १० वलि O, तलै D। ११ दीठो O, दीठौ E। १२ जिमइँ B जिसै E। १३ आगलि E। १४ आवि E। १५ पडीयो E। १६ तिसइँ B, तिसै E।

राइ कीआ सीतल उपचार, वाली[1] चेतन[2] पायुं[3] वारि ।
अमल [4]अमोलिक देई करी, भाँजी भूख गई तीसरी[4] ॥ ४९ ॥
सावधांन हूउं[1] पंथी[2] तेह[3], कर जोडी[4] जंपइ[5] ससनेह ।
"तइँ मुझ कीधउं[6] अति उपगार, जनम[7] दीउं[8] मुझ बीजी वार ॥ ५० ॥
मुझ सरिखउं[1] को[2] कहियो[3] काम, हुं सेवक नइ[4] तुं मुझ साँमि[5]" ।
वलतुं[6] राइ भणइ सविसेस[6], "[7]तइं दीठा बहु देस विदेस[7] ॥ ५१ ॥
[1]पुहवि फिरंतइ तइं पदमिणी, काई नारि कठेई सुणी[1]" ।
तव ते जंपइ[2] "सुणि मुझ [3]धणी[3] ! सिंघल[4] दीपि[5] घणी[6] पदमिणी[7] ॥ ५२ ॥
[1]दक्षिण दिसि छइ सिंघल दीप[1], सगलाँ दीपाँ माहि प्रदीप[2] ।
आडउं[3] आवइ[4] उदधि[5] अथाह[6], तिणि तसु[7] कोइ न लाभइ[8] माह[9] ॥ ५३ ॥
इम निसुणी राजा रंजीउं[1], सिंघल दीप दिसी[2] चालीउं[3] ।
पवन-वेग चंचल चतुरंग, अंबरि ऊड्या वेउ[4] तुरंग[5] ॥ ५४ ॥
गाम नगर पुर पाटण तणा[1], मारग माहि[2] उलंघ्या[3] घणा[4] ।
[5]अखलित गति ऊलंघी मही[5], समुद्र समीपइँ[6] आव्या[7] वही[8] ॥ ५५ ॥
आगलि[1] उदधि करइं[2] कल्लोल, [3]छिटकि रही चिहुँ दिसि जलछोलि[3] ।
पवहण[4] तिकोई पइसइ नही, तउ कुण[5] माणस जाई वही[6] ॥ ५६ ॥
पाँणीसुं[1] नवि चालइ[2] प्राँण[3], [4]उदधि तणा आवइ ऊधाँण[4] ।
रतनसेंन चिति[5] चिंतइ[6] इसुं, हिव[7] जगदीस करीजइ[8] किसुं[9] ॥ ५७ ॥

॥४९॥ १ वाल्यो E । २ चेतनइ O । ३ पायो O, प्याइ E ।
४-४ ..गालि पायो ततकाल, तव प्रगट्यो वल तेज विलास । E

॥५०॥ १ हुयो OE । २ सवि E । ३ देह E । ४ जोडीइ B, जोडी इम E । ५ जपै E । ६ कीरतां E
७ जन्म B । ८ दीयो OE ।

॥५१॥ १ सरिखो OE । २ कोइ BOE । ३ कहयो B, कहज्यो O, भाषो E । ४ नइ B ५ स्वामि E ।
६-६ पभणै ऐम नरेस E । ७ तें दीठा होस्यै बहु देस E ।

॥५२॥ १-१ प्रथवी पीठ सिरे पदमणि, किंण देसै उतपति तेह तणी ।
एह भेद जे मुझ नै कहै, लाखपसाव वधाइ लहै ॥ E ॥
२ जपे E । ३ अरदास E । ४ संघल BOD । ५ देसे E । ६ अछइ O, उतपति E ।
७ तास ॥ E ६० ॥

॥५३॥ १-१ शघल BOD, छै दखिण दिसि सिध E । २ प्रसिध E । ३ आडो OE । ४ आवे E । ५ समुद्र B,
जलधि E । ६ अथाग E । ७ तसुनो B, तेहनो OE । ८ लहइ O, लहै E । ९ माग E ।

॥५४॥ १ रंजीयो O । २ दिसा O । ३ चालीयो O । ४ जाइ O । ५ कुरग O ।
१-५ वात सुणत राजा चित चढी, दीधी रतन-जडित मुद्रडी ।
पूछी सवि मारग विवहार, चढीया राजा हरप अपार ॥ E ६१ ॥

॥५५॥ १ जेह D । २ वहताँ E । ३ देखे E । ४ तेह E । ५ राजा मारग लंघ्यो जिसै E ।
६ समीपइ O, समीपे E । ७ आया E । ८ तिसै E ।

॥५६॥ १ आगे E । २ करइ BO, करे E । ३ छलकि रही O, छिलता दीसे पाणी छोलि E । ४ पवन B,
प्रवहण न सकै चालि जिहाँ E । ५ किम E । ६ तिहाँ ॥ E ६५ ॥

॥५७॥ १ पाणी B । २ चालिइ B, चालै E । ३ प्राण B । ४-४ लागै नहि कोइ बुधि विणाण E ।
५ चित E । ६ चितै E । ७ हिवइ O, हिवै E । ८ करीसि O, करीजै E । ९ किस्यउं O ।

भूपति चिति[1] चमकइ[2] पदमणी[3], जलधि वेल पिण वीहामणी[4] ।
'नइ[5] पिण[6] ऊंडी[7] गुल पिण[8] मीठ,' ए ऊखाणुं[9] अंख्या[10] दीठ ॥ ५८ ॥

वाघ अनइ[1] दोतडिनउ[2] न्याइ[3], ए मुझ आज पहूतउ[4] आइ[5] ।
केम करुं[6] हिव चिंतुं[7] काइ, मंडुं[8] कोई अधिक[9] उपाइ' ॥ ५९ ॥

फिरतइ[1] ऍम पयोनिधि पास, दीठउ[2] जोगी एक उदास ।
साधइ[3] पवन सदाई[4] तेह, जंगम जोग तणउ[5] गुण-गेह ॥ ६० ॥

सिध साधक[1] जोगेसर[2] जती[3], पणमी[4] पासि गयउ[5] भूपति ।
विनय[6] करी राजा वीनवइ[7], वलि-वलि सिर तसु चरणे ठवइ[8] ॥ ६१ ॥

"साँमी[1] सिंघल[2] दीपह[3] तणुं[4], मुझ मनि[5] हरष अछइ[6] अति घणुं ।
तुम्ह मेट्याँ हिव भावटि टलइ, पदमिणि नारि किसी परि मिलइ ॥ ६२ ॥

'मुझसुं साँमि करउ हिव मया[1], दुख देखंताँ वहु[2] दिन थया" ।
विनय-वचन[3] वीनवीया[4] जिसइ[5], सुप्रसंन हूउ[6] जोगी तिसइ ॥ ६३ ॥

नेत्र उघाडी निरखइ[1] नूर, आयस मनि[2] हूउ[3] आणँद पूर ।
"आवउ[4] रतनसेँन[5] राजाँन"! नाँम कही [6]तसु दीधुं मान[6] ॥ ६४ ॥

विसमय[1] हूअउ[2] राजा भणी, 'आँ किम वात लही मुझ तणी' ।
जोगी जंपइ[4], "सुणि[5] राजाँन! [6]जउ तु आयउ इणि मुझ थाँनि[6] ॥ ६५ ॥

॥५८॥ १ मन E। २ चाहै E। ३ पदमणी OE। ४ सोहामणी B। ५ नय D। ६ पणि O।
७ ऊॅडी O। ८ ऊँडी O। ९ उपाणो O। १० साचो E।

॥५९॥ १ अनै E। २ तडिनो OE। ३ न्याय B। ४ पहुतुं B, पहुतो OE। ५ आय O। ६ करो O।
७ च्यंतो O। ८ माडो O। ९ अपर O, अवर E, ६-७ राजा इम चिंतै मन माहि E।

कानै मुद्रा रयण झलकति, लाइ विभूति वइठो तपसत।
चित्रा-त्तच आसनि मृगचर्म, ध्यान मौन ध्यावइ शिवसर्म ॥ BO ६१ ॥
मुद्रा नाहि विभूत लगाइ , वैठो शिवसुं ताली लाय।
ध्यॉन मौन ध्यॉवे शिवसर्म, चीत्र-तुचा आसन मृगचर्म ॥ E ७० ॥

॥६०॥ १ विरतइ B, फिरतो O, फिरता E। २ दीठो OE। ३ साधै E। ४ सदाही O, साधना E।
५ तणो OE।

॥६१॥ १ साधिक O। २ योगेसर O, जोगीसर E। ३ जती OE। ४ प्रणमी E। ५ गयो OE।
६ विंनै E। ७ विनवै E। ८ ठवै E।

॥६२॥ १ स्वामी DE। २ शघल AB, सीघल DE। ३ दीपाँ O। ४ तणो OE। ५ मुझि मन O।
६ अछे OE।

॥६३॥ १ मुझसु महिर करो हिवे मया O, महिर करी मुझ कीजै मया E। २ वोहो O, सेवक ऊपरि आणी
दया E। ३ वचन O। ४ वीनवीयो O, वीनवीया E। ५ जिसे OE। ६ हुवो O, हुओ D;
॥ B ६४ ॥ O ७१ ॥ E ७३ ॥

॥६४॥ १ निरख्यो OE। २ मन E। ३ हुंवौ O, हुयो E। ४ रॉवौ D, आवो E। ५ रतनसेन B,
रतनसेनि O। ६ . दीधो . B,... मॉन O, दीधो वहु मॉन D ॥

॥६५॥ १ विसमइ। २ हूवो, हुवौ D, हुयो E। ३ किम इणि B, इण E, वात B, वात O, लही B, कही
O , किम ए जॉणे परि . D। ४ जपै O कह D। ५ सुणो D। ६......आव्यउं...
...थानि B, जो ..आयो मुझनइ...O, जो तु आयो माहरै थानि D, जो तुम्ह आए माहरें...E ॥

तउ[1] हिव[2] सगलउ[3] होसी[4] भलउ[5], मत[6] मनि जाणइ[7] छुं[8] एकलउ[9] ।
वीधा[10] अंबरि[11] ऊडण तणी, समरी साही करि समरणी ॥ ६६ ॥

बे असवार धरी निज बाथ[1], सिंघल[2] दीप गयउ[3] गुरुनाथ[4] ।
नगर समीपइ[5] आया[6] जिसइ[7], आयस[8] हूउ[9] अलोपी तिसइ[10] ॥ ६७ ॥

राजा रंजिउ[1] देखी दीप[2], जो जोवइ[3] ते अतिहि उदीप[4] ।
कोलाहल अति कसबउ[5] घणउ[6], वणज[7] अनइ[8] व्यापारां[9] तणउ[10] ॥ ६८ ॥

[1]हीयइ-हीयउ[1] दलाइ[2] सही[3], विरलउ[4] कोइक[5] जायइ[6] वही[7] ।
आगलि पडहउ[8] फिरतउ[9] दीठ[10], [11]तास लगइ ते आव्या नीठ[11] ॥ ६९ ॥

पूछण लागा पडह विचार[1], [2]तव ते जंपइ "सुणि असवार[2] ।
सिंघल[3] दीप तणउ[4] राजीउ[5], गुणे करी महिमा गाजीउ[6] ॥ ७० ॥

॥६६॥ १ तो C । २ हिवइ E, हिवै D । ३ सगलो D, सवही E । ४ होसइ C । ५ भलो CD, भला E । ६ मति C । ७ जाणो C, जांणै D । ८ छु C, मै D, छइ E । ९ एकलो CD, एकला E । १० बिधा C । ११ अवर D ।

॥६७॥ १ हाथि C, हाथ D । २ शघल AB । ३ गयो C, गया D । ४ सुधरनाथ C, गुरनाथ D । ५ समीपै CD । ६ आव्या B, आयो C । ७ जिसै CD । ८ आइस C । ९ हुवो C, थया D । १० तिसै ED ।

॥६८॥ १ रज्यौ C, रज्या D । २ रूप D । ३ जोवै CD । ४ उदीप B सरूप CD । ५ कसुबट B, कलहट CD । ६ घणो CD । ७ विणज B, वीणज C । ८ अनै CD । ९ व्यापारी C, व्यापारी D । १० तणो D ।

॥६९॥ १ हीयै हीयो B । हीयो हीयै E । २ दलायइ CD । ३ धकै D । ४ बिरलौ D, विरलो E ५ कोई CD । ६ जायै C, जाई D । ७ सके D । इस अर्द्धाली के पश्चात् BCDE प्रतियों में ये क्षेपक हैं–

सोवन-कलस सोहइ (सोहै D) सवि (सहु E) गेह ।
नर-नारी बहु (सहु C) चतुर सनेह (सनेह C) ॥ B ७० ॥
मणिमय (°मै CD) गउख (गोख CD) जड्या अतिसार ।
माहे (माँहि BC) बइठी (बैठी C, बैठा D) राजकुमारि (°कुवारि E, °कुआर D) ॥
थानकि थानकि (थाँनिक २ D), दीसइ (दीसै C) चरी ।
जाणे (जाँणि क D) इंद्रपुरी अवतरी ॥ B ७१ ॥
चतुरा नारी मोहन वेलि (वेल C, वेलि D) ।
सहियाँ स्यूँ (स्यू B, सुं DE) हीडइ (हीडै CD) गयगेलि (गजगेलि CD) ॥
नव नव नाटक (नाटिक D) जोवइ (जोवै DE) भूप ।
थानकि थानकि (थाँनिक २ D) अकल सरूप ॥ B ७२ ॥
हाट पटण (बाजार E) सहु देखइ (देखिइ E, देखै D) राइ (राय D) ।
मध्य भाग ते नयरें (नयरह DE) जाइ ॥

इससे आगे शेष अर्द्धाली (६९) आरम्भ होती है –

८ पढहो DE । ९ वाणतउ C, बाजतो D, सुणयो E । १० सुणइ C, सुणै D, जिसै E । ११ तेह वहि आवइ नृप हित धणइ C, तिहाँ वहि आवै नृपति घणै D, राजा देखण पहुता तिसै E ॥ A ६९ ॥ BC ७३ ॥ D ८० ॥ E ८२ ॥

॥७०॥ १ बिचार D । २· जपै· D, ते जपै "सुणिहो असवार !" E । ३ सघिल C । ४ तणो DE । ५ राजीयो D, राजान E । ६ ..गाजीयो D, लील-विलासी इंद्र-समान ॥ A ७० ॥ BC ७३ ॥ D ८१ ॥ E ८३ ॥

तास वहिनि[१] परतिख[२] पद्‌मिणी[३], त्रिभुवनि[४] ओपम[५] नही तसु तणी।
अह निसि[६] पद्‌मिणि[७] ते[८] इम वकइ[९], 'मुझ भाई[१०] जे[११] जीपी सकइ[१२] ॥ ७१ ॥

तेह नइ[१] कंठि[२] ठवुं[३] वरमाल[४], इम जंपइ[५] ते अवला[६] वाल।'
"हिव ते पडह वजावइ इसउ[७], मुझनइ जीपइ नही को[८] तिसउ ॥ ७२ ॥

जीपण तणाँ घणा परकार, रिण-रामति[१] किनाँ[२] मल्लाकार।
[३]किण ते वात करइ खँति घणी[३]"? वलतउ[४] वोलइ[५] पडसद-धणी[६] ॥ ७३ ॥

"रिणवट[१] तणी रहउ[२] हिव[३] वात[४], संतरंज[५] रामति[६] खेलुं[७] घात[८]।
जउ[९] कोई मुझ[१०] जीपइ[११] सही, [१२]तउ मइं वात इसी छइ कही[१२] ॥ ७४ ॥

अरध देस अरधउ[१] भंडार, विहची आपुं[२] अधिक[३] उदार।
भगिनी[४] वली[५] परतिख[६] पद्‌मिणी[७], परणावी द्युं[८] पहिरामणी[९] ॥ ७५ ॥

ए मुझ वाचा अविचल[१] अछइ[२], इम म[३] कहेज्यो[४] न कहिउं[५] पछइ[६]"।
ऍम[७] सुणी[८] रंजिउ[९] नर-राइ[१०], संतरंज[११] रामति आवइ[१२] दाइ[१३] ॥ ७६ ॥

भूप भणइ[१]-"संभलि[२] मुझ वात, संतरंज[३] रामति[४] केही मात[५]।
जे जाणउ[६] ते लेज्यो[७] दाण, पिण[८] तुम्ह[९] वात[१०] अछइ[११] परमाँण[१२]" ॥ ७७ ॥

ऍम कही ते[१] मेल्हिउ[२] माहि[३], रामति[४] ऊपरि अधिकी[५] चाहि।
तिणि[६] जाई[७] सिंघलपति[८] पासि, वीनवीउ[९] सहु वचन[१०] विलास[११] ॥ ७८ ॥

॥ ७१ ॥ १ वहिनि B, वहिन DE। २ परतखि DE। ३ पदमणी D। ४ त्रिभुवन DE। ५ उपम D, ओप E। ६ अहनिस E। ७ पदमणि D, पदमिनि E। ८ मुहडइ C, मुहडै D, एहवु E। ९ वकै DE। १० वधव DE। ११ को D, कोई E। १२ सकै DE ॥ A ७१ ॥

॥ ७२ ॥ १ तेहने C, तेहनै D, तेहनें E। २ कठ C। ३ ठवो C, ठउ D। ४ वरमाल E। ५ जपै D, जंपे E। ६ सुदरि DE। ७ इसो C। ८ कोइ B ॥ A ७२ ॥

॥ ७३ ॥ A प्रति में यह चौपई नहीं है। १ रिण C, रॉमति D, रिणवटि E। २ किना C, कै E, खगमुजि E। ३ किण ते वात करै खानि घणी D, किण परि हुस असै तेहतणी E। ४ वलतो CE, वलतो D। ५ वोलै D, जपै E। ६ पडहा E।

॥ ७४ ॥ १ रिणपट C। २ रही CD, नही E। ३ हिवे D। ४ वात D, माहिं E। ५ सतरिंज C। ६ रॉमति D। ७ खेलइ C, खेलण DE। ८ घात D, चाहि E। ९ जे C, जै को D। १० मुझसुं B, मुझनइ C, मुझनै D। ११ जीपै D; ९-११ रमताँ मुझसु जीपै जेह E। १२ तउ मिइ वात इसी कही सही C, तो मै वात कहा-इम कही D, मुह मॉग्यो फल पॉमे तेह E ॥ A ७३ ॥

॥ ७५ ॥ १ अरधो CDE। २ आपउ C, विहची आपु D। ३ अरध D, २-३, है गै मणि मोती अणपार E। ४ भगनी D, वहिन E। ५ पणि C वल D, मुझ E। ६ परतखि D। ७ पदमणी DE। ८ दिउ C, द्यों D। ९ पहिरावणी B।

॥ ७६ ॥ १ अविचल D। २ अछै CD। ३ मति C। ४ कहियो C, कहिज्यो D, कहयो E। ५ कहियो CDE। ६ पछै DE। ७ तव E। ८ निसुणी E। ९ रज्यो CDE। १० नरनाथ E। ११ सतरज C। १२ आवै D, माहरै E। १३ हाथ E।

॥ ७७ ॥ १ भणै DE। २ सॉभलि DE। ३ सतरज C। ४ रॉमति E। ५ माति E। ६ जाण्यउ B, जाणो CD जॉणो E। ७ लेव्यो B, लेयो C, लेवो D, मॉडो E। ८ ए DE। ९ मुझ DE। १० वाच D। ११ अछै DE। १२ परिमॉण D।

॥ ७८ ॥ १ तस E। २ मेल्हयो C, मेल्हो D, मुक्यो E। ३ माहि CE। ४ रॉमति DE। ५ इधकी D। ६ तिण E। ७ जाय D, जाइ E। ८ सघल° ACD, सींघल° E। ९ वीनवीयो DE। १० वचन D। ११ विलास D, विलासि E।

[1]सिंघलपति[1] मनि[2] हरखिउ[3] घणुं[4], [5]तेडावी दीधुं बेसणुं[5] ।
आगति सागति करि[6] अति[6] घणी, वात बिहुं[7] रमवानी वणी ॥ ७९ ॥

बेठा[1] बेही[2] रमवा[3] भणी, जाणि[4] कि[5] सिसहर[6] नइ[7] दिनमणी ।
पासइँ[8] बेठी[9] ते पदमिणी[10], कोमल कमल वदन[11] कामिणी[12] ॥ ८० ॥

रतनसेँन[1] सतरंजइ[2] रमइ[3], तिम-तिम नारि तणइ[4] मनि गमइ[5] ।
झुउ[6] किमई[7] ए जीपइ[8] दाण[9], तउ[10] मुझ वखत[11] सही[12] सुप्रमाँण[13] ॥ ८१ ॥

सिंघल[1]-पति मनि शंका[2] करइ[3], रतनसेँन[4] थी[5] मन महि[6] डरइ[7] ।
मनमथ रूप मनोहर वेस[8], ए कोइक छइ[9] सबल नरेस ॥ ८२ ॥

केलि करंताँ रामति[1] रंग, सिंघल[2] भूपति पाँमिउ[3] भंग ।
[4]जैत्र अनइ जस हूउ घणउ[4], [5]परतउ पुहतउ पदमिणी तणउ[5] ॥ ८३ ॥

कंठ[1] ठवी कोमल[2] वरमाल[3], जय-जय शबद[4] जगावइ[5] बाल ।
सिंघल[6] दीप तणउ[7] हिवे[8] धणी, भगति करइ[9] ते[10] भूपति तणी ॥ ८४ ॥

सामहणी अति मेली घणी, परणावी बहिनर पदमिणी ।
अरध देस[1] अरधा[2] भंडार, [3]विहची दीधा अधिक उदार[3] ॥ ८५ ॥

परिघल दीधी पहिरामणी[1], हरषित नारि हूई[2] पदमिणी ।
बि सहस बाँदी रूप-निधाँन[3], पदमिणि[4] पासि रहइ[5] सुविधाँन[6] ॥ ८६ ॥

॥७९॥ १ शंघल° AO, सिंघलि E । २ मन BD, तव E । ३ हरख्यउ B, हरख्यो O, हरख्यौ D, हरखत E । ४ घणो OD, थाय E । ५ तेडावीं दीधो O, बैसणो वइसउ O, मेल्हि प्रधाँन तेडाया माहिं E । ६ कीधी DE । ७ व्रेहु O ।

॥८०॥ १ वयठा B, वैठा D । २ वेई O, वेइ D, विन्है E । ३ रमिवा O, रमिवा D, रमेवा E । ४ जाँणि OE । ५ किं E, क D । ६ शशिहर DE । ७ नै E । ८ पासि O । ९ वइठी O । १० पदिमणी O । ८-१० पासै आइ वैठी ते पदमणी D, पासै आइ वैठी पदमिणी E । ११ वदन D । १२ कामणी B, कामनी D, काँमिनी E ।

॥८१॥ १ रतनसेनि D । २ सेत्रंजइ O, सेत्रजै D, सतरजें E । ३ रमै DE । ४ तणे O, तणै DE । ५ गमै DE । ६ जइ O । ७ °ही ODE । ८ जीपै DE । ९ दाण OE । १० तो DE । ११ वखत D, पेखत E । १२ चढै E । १३ प्रमाण B, परमाँण DE ।

॥८२॥ १ शंघल° ADE, सघल° O । २ संका OE, संक्या D । ३ करै D करे E । ४ रतनसेनि D । ५ तैD, नवि O । ६ माहि D, मै O । ७ डरै DE । ८ वेस D । ९ छै DE ।

॥८३॥ १ रांमति ADE । २ शंघल A । ३ पम्यो O, पम्यौ D, पाँम्यो O । ४ जीती नइ जस लीधो घणो O, जीपी नै जस लीधो घणौ D, जीपे ऊठ्यो रयण नरिंद E । ५ परतो पहुतो पदमिणी तणो O, परत्यो पहुतो पदमणि तणौ D, पदमण मनि हुयो आँणद E ॥

॥८४॥ १ कठि E । २ काँमिणि O, कामणि D । काँमणि E । ३ वरमाल E । ४ शब्द B, सवद ODE । ५ गावइ B, पयपइ O, पयपै E । ६ शंघल A, सीघल E । ७ तणो ODE । ८ हिवें B, हिवै D । ९ करै D, करे E । १० तेण B, तिण E ।

॥८५॥ १ अरधि देसि O, ..राज DE । २ अरधो OD । ३-३ विहची आप्यो अरधोदार O, विहची आप्यौ अरध उधार O, मणिमाँणिक मुगताफल सार E ।

॥८६॥ १ पहिराँवणी D, पहिरामणी E । २ थई E । ३ विलास E । ४ पदिमणि O, पदमणि D । ५ रहै D । ६ सावधाँन O, सावधान D, । ४-६ सेवा सारे पदमिण पास ।

भमर घणा[१] गुंजारव[२] करइँ[३], पदमिणि[४]-परिमल मोह्या फिरइँ[५] ।
पदमिणि[४] तणउं[६] पटंतर एह[७], भूला[८] भमर न छंडइँ[९] देह[१०] ॥ ८७ ॥

पदमिणि[१] रूप कही कुण सकइ[२], इंद्राणीथी[३] अधिकी[४] जकइ[५] ।
रतनसेँन[६] परणी[७] पदमिणि[८], [९]आस सँपूरण हुई मन तणी[९] ॥ ८८ ॥

दिन दस पंच[१] तिहाँ[२] सुखि[२] रही, रतनसेँन[३] नृप[३] अवसर लही ।
[४]सिंघलपतिसुं[५] शिष्या[६] करइ[६], [७]विनय-वचन मुख अति उच्चरइ[७] ॥ ८९ ॥

सिंघलपति[१] साचउं[२] भूपाल[३], [४]आदर अधिक करी सुविशाल[४] ।
[५]रंगरली वहिनडनी वहू, सिंघलनउं पति पूरइ सहू[५] ॥ ९० ॥

[१]सैंन घणी ले सिंघलनाथ, रतनसैंन नइ हूओ साथि[१] ।
सैंना सगली[२] समुद्र मझारि[३], प्रवहण[४] पूरि करायउं[५] पारि[६] ॥ ९१ ॥

समुद्र परइँ[१] पुहचावी करी, सिंघलनाथइँ[२] शिष्या[३] करी ।
प्रीति रीति पालिउं[४] पडिवनउं[४], व्युं[५] ही अधिक वधारिउं[६] विनउं[७] ॥ ९२ ॥

[१]सिंघलपति पाछा संचर्‍या[१], [२]रतनसैंन डेरइ ऊतर्‍या[२] ।
भाट कला भुंजाई[३] तणा,[४] डेरइ[५] डेरइ[५] दीसइँ[६] घणा ॥ ९३ ॥

॥ ८७ ॥ १ सदा E, । २ गुजारवि D । ३ करै DE । ४ पदमणि D, पदमिण E । ५ फिरै DE । ६ तणो CDE । ७ एह C । ८ भोगी E । ९ छडै D, छाँडै E । १० देह C ।

॥ ८८ ॥ १ पदमणि D, पदमिण E । २ सकै DE । ३ हुती E । ४ अधिकाँ C, इधकी D । ५ जिकइ C, जेकद D, जकै E । ६ रतनसेनि D । ७ ते परणी E । ८ पदिमणी C, पदमणी D, नारि E । ९-९ आसा हुइ पूरी मन तणी C, आस पूर हूई मन तणी D, साइँ सवाडौ पूरण हार E । ॥ A ८८ । BC ९२ । D १०१ । E १०३ ।*

॥ ८९ ॥ १ पाँच DE । २-२ तीहा सुख D, लगै तिहाँ E । ३ रतनसेनि न्रप D । ४ सिंहल° CE । ५ स्यू C । ६ शिष्या B, सिप्या C, माँगी सीख E । ७ 'अति' के स्थान पर 'इम' C, विनय-वचन मुखि इंम उचरै D, कहेज्यो कारज अम्ह सारीख E ॥ A ८९ । BC ९३ । D १०४ । E १०६ ।

॥ ९० ॥ १ सिंहल DE । २ साचो C, साचौ D, मोटो E । ३ राजान E । ४ हित दाख्यो देई बहु माँन E । ५ ५ यह अर्द्धाली D और E प्रतियोंमें नहीं है ।

॥ ९१ ॥ १-१ यह अर्द्धाली CD प्रतियों में नहीं है । २ सघली CDE । ३ मझारि D । ४ प्रवहणि C, प्रहुघण D । ५ करि आया C, कराया DE । ६ पारि D ॥ A ९१ । BC ९५ । D १०५ । E १०७ ॥

॥ ९२ ॥ यह चोपई E प्रति में नहीं है । १ परै D । २ सिंघलनाथै D । ३ सिप्या C । ४ पाल्यो पडिवन्यो C, पालि पडवनो D । ५ वउं ही B, विहु मनि CE ॥ ६ वधारिनउं B, वधारयो C, धारयो E । ७ विनो BD, वनो C, विनो E ॥ D १०६ ॥

॥ ९३ ॥ १ सिंघल° BC, पाल्यो पडिवन्यो C । १-२ यह अर्द्धाली D प्रति में नहीं है,
सिंहलपति पाछा जवल्या, रतनसेन आगा नीकल्या E ११८ ।
३ भुजाइ° DE । ४ तेणा C । ५ डेरै डेरै DE । ६ दीसै DE ॥ A ९३ । BC ९७ । D १०७ E ११९ ॥

* साहसीयाँ सतवादियाँ धीराँ एक मनाँह । देव करेसी चींतडी, लहिरी चित जिहाँह । D १०२ । E १०४ ॥ (दई D) (चतडी D) (अरड फवेसी त्याँह D)
साहसीयाँ लच्छी मिलै (हुवै D), नह (नहु D) कायर पुरसाँह (पुरीसाँह D)।
काने कुंटल रयणमै, मिलि कज्जल नैणाँह ॥ (अजणयण नयणाँह D) ॥ D १०३ । E १०४॥

[दूजो खण्ड]

वात[१] सुणउं[२] हिव[३] ते[४] पाछिली[५], रतनसैंन[६] राजानी भली ।
छानउं[७] छिटकिउं[८] भूपति जेह[९], मरम न जाणइ[१०] कोई तेह ॥ ९४ ॥

साँझ हुई[१] नवि दीसइ[२] राइ, साँमी[३] विण[३] किम सभा भराइ[४] ।
बाहरि[५] भीतरि कीधउं[६] सोझ[७], नृपनुं[८] कोइ[९] न लाभइ[१०] खोज[११] ॥ ९५ ॥

माहि[१] जई[२] राँणी[३] वीनवी[४], तव[५] तिणि[५] वात हती[६] ते[७] चवी ।
"सांमि[८] सकइ[९] तउ[१०] रीसइ[११] घणी, परणेवा चालिउं[१२] पदमिणी[१३]" ॥ ९६ ॥

वीरभाँण[१] सुत सकज सनूर, सुभट सभा महि[२] बेठउ[३] सूर ।
कपट[४] बात[५] कूडी केलवी, वीरभाँण[१] भाषइ[६] नव नवी ॥ ९७ ॥

"राजा माहि जपइ[१] छइ जाप, जिणथी[२] प्रबल वधइ[३] परताप" ।
एम कही आघुं[४] जोगवइ,[५] भूप तणी परि भुंइ[६] भोगवइ[७] ॥ ९८ ॥

इम करताँ दिन हूआ[१] घणा, संकाँणा[२] मन सुभटाँ[३] तणा[४] ।
"नितु-नितु[५] बाहरि[६] करतउ[७] केलि, नृप[८] हिव[९] महल[१०] न द्यइ[११] किण[१२] मेलि[१३] ॥९९॥

कुसल अछइ[१] कइ[२] काई[३] वात[४], मत[५] सुति[६] मारिउं[७] होई[८] तात" ।
ऍहवी वात[४] करई ते[९] जिसइ[१०], रतनसैंन[११] नृप[१२] आविउ[१३] तिसइ[१४] ॥ १०० ॥

च्यारि[१] सहस हयवर[२] हीसता, बी सहस[३] गयवर अति गाजता[४] ।
बी सहस[५] विहुं[६] दिसे[७] पालखी[८], त्याँ[९] माहे बेठी[१०] तसु सखी ॥ १०१ ॥

॥ ९४ ॥ १ वात D। २ सुणो ODE। ३ हिवि O, हिवै D। ४ सवि E। ५ पाछली B। ६ रतनसेनि E ११८। ७ छानो OD, छाँने E। ८ छिटक्यो O, छिटक्यौ D, चाल्या E। ९ तेह O। १० जाणइ BO, जाणै D, जाँण्यो E। O १०९।

॥ ९५ ॥ १ हुवै D। २ दीसै D, दीठा E। ३ राय वीणि D, स्वामी॰ E। ४ भराय D। E ११९। ५ वाहिरि OE। ६ कीधो O, कीधौ D, पूछ्या E। ७ सोज D, सही E। ८ नृपनो O, न्रपनो D, नृपनी E। ९ काइ E। १० लाभै D, मालम E। ११ लही E।

॥ ९६ ॥ १ माँहे O, माहे D, माँहि E। २ जाइ OE, जाय D। ३ राणी BO। ४ वीनवी D। ५ तव तिण D, तिण ते E। ६ हुवी BD, हुती O, हुइ E। ७ तिम OD, तेम E। ८ स्वामि DE। ९ सकै DE। १० तो DE। ११ रीसै DE। १२ चल्या ODE। १३ पदमणी E।

॥ ९७ ॥ १ वीरभाण BO। २ माहि B, मइ O, माँहि D। ३ वेठो OE, वैठो D। ४ कटक E। ५ वात D। ६ भाषै DE।

॥ ९८ ॥ १ जपै D, जपै छै E। २ जीहा D, जेह E। ३ बधइ BO, वधै D, वधै E। ४ आघो O E, आघौ D। ५ गवै DE। ६ परिभूँ O, परिभुइ D, परिधर E। ७ भोगवै DE ॥

॥ ९९ ॥ १ हूया BO। २ सक्काणा O। ३ सुहडा D। ४ तणाँ B। ५ नित-नित E। ६ वाहिरि O, वाहिर E। ७ करतो O, करता E। ८, न्रप D। ९ हिवे D। १० महिले D। ११ दिये D, घै E। १२ किणि D। १३ मेल B।

॥ १०० ॥ १ अछै OD। २ काँई O, कै DE। ३ छइ O, कोइ छइ D, काइक E। ४ वात D। ५ मत्ति D। ६ सुतइ B, सुत D, वेटे E। ७ मारयो ODE। ८ हुवइ O, होवै DE। ९ करेइ O, करै D, हुई E। १० जिसइँ B, जिसै DE। ११ रतनसेनि D। १२ न्रप D। १३ आव्यो O, आयो D, आया E। १४ तिसइँ B, तिसै DE।

॥ १०१ ॥ १ च्यार॰ E। २ हइवर E। ३ वीस सहस DE। ४ गरजता E। ५ वीस॰ E। ६ विहु O, विहुयै D। ७ दिसि D दिस E। ८ पलिखी E। ९ त्याँ माहिं D, त्याँ माँहे E। १० वैठी DE।

विचि[1] पालखी[2] पदमिणि[3] तणी, चिहुं[4] दिसि[5] भमर[6] रह्या रुणझणी[7] ॥
ऊपरि कंचण[8] कलस अनेक, [9]एक थकी वलि[9] अधिकउ[10] एक[11] ॥ १०२ ॥

सुभट[1] तणा नवि[2] लाभइ[3] पार, [4]गज-गरजारव हय-हीसार[4] ॥
पंच शबद वाजइ[5] वाजित्र[6], जे[7] सुणताँ सवि[8] नासइं[9] शत्र[10] ॥ १०३ ॥

इम[1] तसु[2] साथइं[3] सबली[4] सेण[5], गयणंगणि[6] बहु[7] ऊडइं[8] रेण ॥
आव्या[9] चित्रकोट[10] तलहटी, हुवउ[11] कोलाहल[12] अति कलहटी ॥ १०४ ॥

वीरभाँण[1] संकाणउं[2] माहि[3], [4]सुभट सहू धाया असि-साहि[4] ॥
परदल आविउं[5] जांणी करी[6], [7]हाटे हलफल हूई खरी[7] ॥ १०५ ॥

तितरइ[1] आविउं[2] नृपनउं[3] दूत, कागल लेई[4] माहि[5] पहूत[6] ॥
वीरभाँण[7] वाची[8] सहु[9] वात[10], "धन्य[11] दिवस मुझ आविउं[12] तात" ॥ १०६ ॥

विनयवंत[1] साँम्हउं[2] दोडीउं,[3] [4]कपट तणउं पडदउं छोडीउं[4] ॥
[5]सुभट सहू धाया ससनेह[5], [6]जोअण आया लोक अछेह[6] ॥ १०७ ॥

सकल[1] लोक[2] जई[3] लागा पाइ[4], कुसल[5] खेम पूछइ[6] नरराइ ॥
रतनसेँन[7] चडीउ[8] गजगाहि[9], महा महोछवि आविउ माहि[10] ॥ १०८ ॥

॥ १०२ ॥ १ विचइ C, विचि D, विचै E । २ पालखी BCDE । ३ पदमणि C, पदमिण D, पदिमणि E । ४ चिहू CD, चिहू E । ५ दिस B । ६ भ्रमर B । ७ रणझणी B । ८ कचन E । ९ एक एक थकि वलि B, एक एक थी CD, एक एक थी वल E । १० इधकौ C, अधिकी D, अधिको E । ११ रेख D ।

॥ १०३ ॥ १ सुभटाँ तणाँ E । २ न E । ३ लाभै DE । ४–४ गय गंजारव हय हंसार B, हिसार C, गै गरजारव हय हीसार D, गय...हींसार E । ५ वाजै D, वाजै E । ६ वाजीत्र D । ७ जइ BC । ८ सहु D । ९ नासइ BC, नासै DE । १० शित्र B, सत्रु C शत्रु B, सित्र E ।

॥ १०४ ॥ १ इण CD । २ परि D, तस E । ३ साथै CD, साथि E । ४ वहुली D । ५ सेणि C, सेन D । ६ गयणाँगण B, गयणाँगणि C, गयागण D । ७ लगि D । ८ ऊडी CDE । ९ आया CD । १० चित्रकोटि E । ११ हुई A, हुवो CE, हुयो D । १२ कुलाहल E ।

॥ १०५ ॥ १ वीरमाण BD । २ साक्यउ BC, साक्यौ D, संक्यो E । ३ मनमाहि BCE, मनमाहि D । ४–४ .. असू ..BE,. अस C, सुहडाँ तेड्या सिलह कराइ D । ५ आव्यउ B, आव्यौ C, आयो D, आव्यो E । ६ वारि D । ७–७ ..हुइ घरी घरि C, हलवल पडी सारे वाजारि D, हाटे हल हूई अति घणी E ।

॥ १०६ ॥ १ ततरइ A, तितरै C । २ आव्यउं B, आयो । ३ न्रपनो C । १–३ तितर नृप मूंक्यो एक दूत D, ...आव्यो E । ४ देइ D । ५ माहि BC, रूडो D । ६ पहुत्त BCE, रजपूत D । ७ वीरमाण EC, वीरभाँण B । ८ वाची C, पूठी D, वाँची E । ९ सव BE, सवि C, सवि D । १० वात CD । ११ धन्नि B ।

॥ १०७ ॥ १ विनैवत C, °करि D । २ साम्हौ C, साँम्हा D । ३ दउंडीयउं B, दोडीयौ C, आवीया D, दोडीयो E । ४–४...छोडीयउं B,...तणौ पटदो छोडीयो C, कही भेद सहु परचावीया D,...तणो पटदो छोटीयो E । ५–६ D प्रतिमें नहीं है E । ६ जोवण B ।

॥ १०८ ॥ १ शकल B, नगर D । २ जाइ B, जाय C, सहु D । ३ लागइ B । ४ पाय CD । ५ कुशल BCE । ६ पूछै DE । ७ रतनसेंनि D । ८ चढीयो D चढीया E । ९ गजगाह BC, गजराज E । १०–१० महामहोछव आयो माँहि B, माहा...°माहि D, ढाले चमर धरै छत्र साज E ।

हूउ[1] पइसारउ[2] पूगी रली[3], ठोडि-ठोडि[4] गूडी ऊछली ॥
पदमिणि[5] नारी परणी तणउ[6], जय जयकार[7] हूउ[8] अति घणउ[9] ॥ १०९ ॥

महल[1] मनोहर[2] दीधी[3] माहि[4], तिणि[5] ते पदमिणि[6] करइ[7] उछाह[8] ।
बि सहस[9] पासि रहइँ[10] छोकरी, चंचल चपल रूप सुंदरी[11] ॥ ११० ॥

रतनसैंन[1] गयो[2] राणी[3] पासि,[4] "पदमिणि[5] आँणी[6] द्यउ[7] सावासि[8] ।
भोजन हिवे[9] जीमेस्याँ स्वादि[10], तइँ[11] मुझ[12] बोल वद्यो[13] बडवादि[14]" ॥ १११ ॥

संभलि राणी[1] विलखी[2] थई[3], "माहरी[4] जिह्वा[5] वैरिणि[6] हुई[7] ।
निज करिस्युं[8] मइँ[9] भाग्यों रतन,[10] पश्चाताप[11] करइ[12] क्या[13] मन" ॥ ११२ ॥

॥ दूहा ॥

हिव[1] पदमिणी[2] सुं[3] प्रेम-रस, सुखि झीलइँ[4] ससनेह[5] ।
पंच विषय[6] सुख भोगवइ[7], गय-गमणी गुणगेह ॥ ११३ ॥

वादल[1] महि[2] जिम वीजली[3], चंचल अति चमकंति[4] ।
महल[5] माहि[6] तिम[7] ते तणउ, झलहल तनु झलकंति[8] ॥ ११४ ॥

पान प्रहीस्यइँ[1] पदमिणी[2], गलि तंबोल गिलंति[3] ।
निरमल तनि तंबोल ते, देह महिय[4] दीसंति[5] ॥ ११५ ॥

हंस-गमणि हेजइँ[1] हसइँ[2], वदन-कमल[4] विहसंति[5] ।
दंतकुली दीसइ[6] जिसी[7], जाणि कि हीरा[8] हुंति ॥ ११६ ॥

प्रेम संपूरण पदमिणी,[1] सामि[2] घणउ[3] ससनेह[4] ।
विलसइँ जे[5] सुख[6] विषयना,[7] कहि कुण जाणइ[8] तेह ॥ ११७ ॥

॥ १०९ ॥ १ हुयो C, हुवौ D, हूयो E। २ पइसारो C, पैसारो D, पेसारो E। ३ रुली BC। ४ ठउडि° B, ठोडि° C, ठामि° D, ठाँम E। ५ पदिमणी C, पदमणी D, पदमिण E। ६ तणो CDE। ७ जइ जइ° BC, जै जै° E। ८ हुवउ B, हूयो CE, हुवौ D। ९ जस° B, घणो CE, घणौ D।

॥ ११० ॥ १ महिल DE। २ मनोरथ D। ३ दीधउ A। ४ माँहि C। ५ तिणि BDE। ६ पदमणि CD, पदमिण E। ७ करइँ B, करि C, करै D, रहै E। ८ उछाहि E। ९ बेसहस D। १० रहि C, रहै DE। ११ सूँदरी C॥ A १०९। B ११४। C १२१ D १२५। E १३४॥

॥ १११ ॥ १ रतनसैंनि D, राजा E। २ पहुता E। ३ राँणी E। ४ पास DE। ५ पदमणि C, पदमिण DE। ६ आणी DE। ७ द्यो CE, दौ D। ८ आवास D। ९ हवि C, हिवै D, हिव E। १० जीमिस्यॉ C, जिमैस्याँ D, जिमैसाँ E। ११ तै DE। १२ मुक्ति D। १३ वदो D, कह्यो E। १४ वडवादी D, थो वादि D। यह चोपई A प्रति में नहीं है।

॥ ११२ ॥ १ राँणी DE। २ विलखी C। ३ गई E। ४ माहारी D। ५ जिब्वा DE। ६ वैरण C, वयरणि D। ७ थई E। ८ °सु D। ९ मै D। १० भागउ C। ११ पस्याताप C। १२ करै D। १३ क्यॉ C॥ यह चोपई A प्रति में नहीं है। B ११६। C १२३। D १२३। D १२७। E १३६।

॥ ११३ ॥ १ हिवि C, हिवै D। २ पदमणि D। ३ स्यू BC। ४ झीलै D। ५ ससनेह D। ६ विषै D। ७ भोगवि C, भोगवै D। ये दोहे ११३ से १२० तक A प्रति में नहीं हैं।

॥ ११४ ॥ १ वादिल B, वादल CD। २ माहि BD, माँहि C। ३ वीजुली D। ४ चमकत D। ५ महुल C, महिपल D। ६ माँहि C,। ७-७ तेहनउ B, तेहनो C, तेहनौ D। ८ झलकत D।

॥ ११५ ॥ १ प्रहीसै D। २ पदिमणी C। ३ गिलन D। ४ माहि BD, माँहे C। ५ दीसत D।

॥ ११६ ॥ १ हेजइ B, हेजै D। २ हसइ C, हसै D। ३ वदन D। ४ कवल D। ५ वीकसति D। ६ दाति C, दीसै D। ७ तिसी C। ८ हीराँ B।

॥ ११७ ॥ १ पदिमणी C, पदमणी D। २ स्वामि BCD। ३ घणो D। ४ ससनेह D। ५ विळसइ C, विलसै D। ६ सुखी C। ७ °नाँ B। ८ जाणइँ B, जाँणि C, जाँणै D।

राति-दिवस[1] रूँधो[2] रहइ,[3] नरपति पदमिणि[4] पासि।
भमर तणी परि भूपति, अलुझि[5] रहिउ[6] आवासि ॥ ११८ ॥

चंदन तरवरि[1] जिम[2] चडी, वीटइ[3] नागर वेलि[4]।
तिम ते कामिणि[5] कंतसुं[6], विलगि[7] रहइ[8] गुण-गेलि[9] ॥ ११९ ॥

कवित कथा-रस काम-रस[1], गाह[2] गूढ[3] गुण गोठि[4] ॥
पदमिणि[5] प्रीतम रीझिवा[6], जाणि कि[7] वास्या[8] होठि[9] ॥ १२० ॥

नारी[1] निरमल[2] नेहरस, सुधा-सरोवर-सार।
[3]तास माहि नृप झीलतउ, पाँमि न सक्कइ पार[3] ॥ १२१ ॥

॥ चोपई ॥

राजा रमलि[1] करंतउ[2] रहइ[3], इम केताइक[4] दिन निरवहइ[5] ॥
सगला लोक वसइँ[6] सुखवास[7], आवासे[8] लागा आवास ॥ १२२ ॥

तिणि[1] पुरि[2] राघवचेतन व्यास[3], विद्यासुं[4] अधिकउ[5] अभ्यास ॥
राजा तिणि रीझवीउ घणुं, मुहत घणुं घइ व्यासाँ तणुं ॥ १२३ ॥

[1]राय भवणि नितु प्रति संचरइ[1], [2]भारत-वात विचख्यण करइ[2] ॥
अमहलि[3] महलि[4] सदा संचरइ[5], राजलोक[6] महि[7] हीडइ[8] फिरइ[9] ॥ १२४ ॥

एक दिवसि[1] पदमिणि[2] नइ पासि[3], राजा वेठउ[4] करइ[5] विलास[6] ॥
नेह[7] नितंवनि[8] चुंवनि करइ[9], [10]राजा आलिंगन आचरइ[10] ॥ १२५ ॥

॥ ११८ ॥ १ दिवसि D। २ रूधउ B, रूधो AC, लुधौ D। ३ रहइँ B, रहै D। ४ पदमणि CD। ५ अलूझ B, अलज C। ६ रह्यूउ B, रह्यो C, रहै D।

॥ ११९ ॥ १ तरुवर B, तरवर CD। २ चढी CD। ३ वींटी B, वीटी C, वीटी D। ४ वेलि D। ५ काँमणि CD। ६ °स्युँउ B, °स्यु C, °स्यौ D। ७ विलग C, विलगि D। ८ रही BCD। ९ गेल C। A ११६। B १२३। C १३२। D १३५॥

॥ १२० ॥ १ काँम C। २ गाहा D। ३ गूढा B, गूँढा C, गुढा D। ४ गोठ BC। ५ पदमणि D। ६ रींझिवा B, रिझवा D। ७ क BCD। ८ वेस्या C, वास्या D। ९ होठ BC।

॥ १२१ ॥ १ नारि B। २ निरम्मल B। ३-३ . °झीलतो, पामि ..°पारि C, तासु माहि न्रप झीलतौ। पामि न सकै पार D, नृपति केलि रस झीलतो, सकै न पामि पार E। A ११८। B १२५। C १३४। D १३७। E १६२॥

॥ १२२ ॥ १ रमल BCD। २ करतो CD। ३ रहै D। ४ केताएक D। ५ वरवहइ C, निरवहै D। ६ वसइ B, वसै D। ७ °वास D। ८ आवासइ B।

॥ १२३ ॥ १ तिण D, तिन E। २ पुर C, गढ E। ३ व्यास D। ४ विद्यासु C, °सु E। ५ अधिको CDE।

॥ १२४ ॥ १ राइभुवण नित.. B, रायभुवण नित. C, राय. .निति.. सचरै D, राजभुवन नितप्रति ते जाइ E। २ भारथ-वात वखाणइ करइ A, भारथ-वात विचक्षण करइ B, भारथ-वात विचिखिण करै D, भारथ-कथा सुणवै राइ E। ३ अमुहल BC, अमहल DE। ४ मुहल BC, महल DE। ५ सचरै D, सचरे E। ६ राजमुहल BC, राजभुवन D, राजमहिल E। ७ माँहि B, माँहि C, मै DE। ८ हींटइ B, हींडै DE। ९ फिरै D, फिरे E।

॥ १२५ ॥ १ दिवस E। २ पदिमणि C, पदमणिनै D, पदमिणसु E। ३ सेज E। ४ वइठो C, वैठो D, वयठा E। ५ करि C, करै D छै E। ६ विलास D, हित-हेज E। ७ नेहा D, नेहें E। ८ नितवन CDE। ९ करै D करे E। १० राजा निज आलिंगन आचरै D, आलिंगन रति सुख आचरे E।

तिणि[1] प्रस्तावइं[2] राघव व्यास[3], पुहतउ[4] पदमिणि[5] तणइ[6] आवास[7] ।
ते देखी राजा खुणसीउ[8], राघव ऊपरि कोप ज कीउ[9] ॥ १२६ ॥

भमह[1] चडावी[2] कीउ त्रिसूल[3], कोप तणउ[4] जे कहीइ[5] मूल[6] ॥
राघव पिण[7] मन[8] माहे डरिउ, 'विण[9] प्रस्तावइं[10] हुं संचरिउ[11]' ॥ १२७ ॥

चतुर तणी ए नही चातुरी, अण तेडिउ[1] आवइ[2] फिरि-फिरी[3] ।
वात[4] गोठि[5] अण[6] रुचती[7] करइ[8], 'काढंतांई नवि नीसरइ[9] ॥ १२८ ॥

विहुं जणां[1] विचि[2] त्रीजउ[3] थाइ[4], अमहल[5] माहे[6] आघउ[7] जाइ[8] ।
अण बोलायउ[9] बोलइ[10] घणुं[11], अण दीधुं[12] वलि[13] ल्यइ[14] बेसणुं[15] ॥ १२९ ॥

डीलइं-डील[1] लिगाडी[2] धसइ[3], वात[4] करंतउ[5] आपे[6] हसइ[7] ॥
मनि[8] जाँणइ[9] हुं खरउ[10] सुजाण,[11] मूरिख[12] जनरा ए अहिनाँण[13] ॥ १३० ॥

एकंतइ[1] अस्त्री[2]-भरतार, [3]रामति रमतां हुइं अपार[3] ।
कन्हइं[4] जइं[5] ऊपावइ[6] काणि,[7] मूरिख[8] जन[9]रा ए अहिनाँण ॥ १३१ ॥

[1]इम मनि खुणसिउ राजा घणुं[1], माँन[2] मरोड्युं[3] व्यासाँ[4] तणुं[5] ।
कीधी रीस घणी ते[6] राइ[7], जिणथी[8] तन-धन[9] जीवित[10] जाइ[11] ॥ १३२ ॥

॥ १२६ ॥ १ तिण DE । २ प्रस्तावि O, प्रस्तावै DE । ३ व्यास D । ४ पुहतो O, पहुतो DE । ५ पदमणि O, पदमिण DE । ६ तणि O, नैर D, रै E । ७ आवासि OD । ८ खुणसीयो BODE । ९ कीयो BODE ।

॥ १२७ ॥ १ भमुह BD । २ चढावी DE । ३ कीयो BODE । ४ तणौ DE । ५ ते D, जै E । ६ कहीयो B, कहिइ O, कहीयै DE । ७ पणि B । ८ मनि B, मन D, मन माँहे O, माहे OD । ९ विणि D । १० प्रस्तावें B, प्रस्तावि O, प्रस्तावै DE । ११ सचरयो BDE, सचरयौ E ।

॥ १२८ ॥ १ तेड्यो B । २ आवै ODE । ३ फिर फिरी BO । ४ वात D । ५ गोठ BO । ६ अर D । ७ रुचिती B, जुगती O । ८ करइँ B करै D, करे E । ९ काढै तोइ ते B, काढिइ तोइ ते ..O, काढंता पणि नवि नीसरै D, सीख दीयताँ नवि नीसरै E । A १२५ । B १३२ । O १४२ D १४८ । E १७० ॥

॥ १२९ ॥ १ विहु DE । २ विन्चि D । ३ त्रीजु A, त्रीजो ODE । ४ थाय D । ५ नृप अमुहल BO, न्रप अमहिल D । ६ माहि BO, मै D, मैं E । ७ आघो ODE । ८ जाय D । ९ वोलायउ B, वोल्या O, वोलाव्यौ D, वोलाव्यो E । १० वोलै DE । ११ घणउं B, घणो OE, घणौ D । १२ दीधउं B, दीधो OE, दीधा D । १३ भिज BDE, णिजि D । १४ लेई B O, लै D, ल्यै E । १५ वइसणउं B, बेसणो, O वैसणो DE ।

॥ १३० ॥ १ ढील-इ-डीलै OD । २ लगाडी BOD । ३ धसइँ B, धसै DE । ४ वात D । ५ करतां BO करतो DE । ६ आफे A, आपज E । ७ हसइँ B, हसै DE । ८ मन E । ९ जाणे O जाँणै D, जाँनै E । १० खरो BOD, घणो E । ११ सुजाँण DE । १२-१३ मूरख नरनाँ ए अहिन्नाण B, मूरख नरनाँ ए अहिनाण O, ए उत्तमना नहि सहिनाण E ।

॥ १३१ ॥ १ एकतइँ B, एकाति O, एकतै D, एकते E । २ स्त्री BO, नारी DE । ३ . होइ BO, ..रमता D, वैठा होवै रग मझार E । ४ कन्हि O, पासि D, पासै E । ५ जाइ BO जाय D, जइ E । ६ ऊपजावइ BO, उपजावै DE । ७ काँणि DE । ८ मूरख BO, नर BODE, नाँ B । ९ अहिन्नाण B अहिनाण OD ।

॥ १३२ ॥ १ राजा मन माहि (माइ O, माहे DE) खुणस्यउ छणउं B, घणो O, घणौ D । २ माँण E । ३ मरोड्यो BO, मरोड्यौ D, मरथो E । ४ व्यासा O, व्यासाँ D । ५ तणउं B, तणो OD । ६ तव E । ७ राय OD । ८ जेहथी BODE । ९ तन-धन D । १० जीवति O, जीवत D, जीवन E । ११ जाय O ।

विलखउं[1] हुइ[2] ऊतरीउं[3] व्यास[4], नीठ[5] पहूतउं[6] निज आवास[7] ।
सामी[8] तणी जव[9] थाइ[10] रीस[11], तव जाँणे[11] रूठउं[12] जगदीस ॥ १३३ ॥
[1]वलता व्यास न तेड्या माहि[1], माँन[2] मुहतथी[3] मुंक्या[4] ठाहि[5] ।
इणि मुझ दीठी ए पदमिणी[6], आँखि हरावुं[7] हुं ए[8] तणी ॥ १३४ ॥
व्यास[1] सुणी इम[2] मनि[3] वीहनउं[4], कुण वेसास[5] करइ[6] सीहनउं[7] ।
राजा मित्र[8] कदी नवि[9] होइ, नवि दीठउं[10] नवि सुणीउं[11] कोई[12] ॥ १३५ ॥

[तीजो खण्ड]

इम चिंति[1] राघव मनि डरइ[2], [3]नृप-खुणसाँणइ खिण न विसरइ[3] ।
[4]"नृपनी खुणस न होइ भली[4]", [5]"नितु नितु हाणि हुई एकली"[5] ॥ १३६ ॥
इम आलोची राघव-व्यास[1], चित्रकोट[2] नउं छाँडिउं[3] वास[4] ।
माणस[5] मुहरइ[6] लेई करी, गढथी छानउं[7] गउ[8] नीसरी ॥ १३७ ॥
जातउं जातउं[1] डिल्ली[2] गयउं[3]; तिहाँ जाईनइ[4] परगट[5] थयउं[6] ।
गामि[7] माहि हूउं[8] परसिद्ध[9], ज्योतिष[10] निमित[11] घणउं[12] जस लीध[13] ॥ १३८ ॥
भणइ[1] भणावइ[2] शास्त्र[3] अनेक, वात[4] वखाण[5] करइ[6] सविवेक[7] ।
नवरस[8] सयण[9]-सभा[10] रीझवइ,[11] सित[12]-सित अरथ[13] करी सीझवइ[14] ॥ १३९ ॥

॥ १३३ ॥ १ विलखो CDE। २ होइ CDE। ३ ऊतरयउं B, ऊतरयो C, ऊतरयौ D, उतरीयौ E। ४ ब्यास D। ५ नीठिं B, नीठि C। ६ पहुतो C, पहुतो D, पहुतो E। ७ आवासि B। ८ सामि BCDE। ९ जव D। १० थायइ B, थाये DE। ११ जाणे (जाँणे E) करि BCDE। १२ रूठो CDE।

॥ १३४ ॥ १ वलतउं व्यास न ते गयो माहि BCD, ब्यास D, °न पहुतो° D, माँहि C। २ मान BD। ३ तै D। ४ काढ्यउं B, काढ्यो C, काढ्यौ D। ५ साहि BCD। ६ पदिमणी C, पदमणी D। ७ कढावउं B, कढाउ C, कढाउ D। ८ एह BCDE।

॥ १३५ ॥ १ ब्यास D। २ एम C। ३ मन C। ४ वीहनो C, विनहो D। १-४ वात सुणी मनि वन्हो व्यास E। ५ वेसास D। ६ करि C, करै D। ७ सीहनो C D। ५-७ सीहाँ तणा केहा विसवास E। ८ मींत्र D। ९ कदे न D, न केहनो E। १० दीठो CDE। ११ सुणीयो BCDE। १२ लोइ E।

॥ १३६ ॥ १ चिंता B, चता C, चितवतो DE। २ डरइँ BC। डरै D, डरे E। ३ नृपनी खुणस न खिण वीसरइँ B, नृपनी खुणस न ख्यण वीसरइ C, न्रपनी खुणस न खिण वीसरै D, नृपनी शंका न वीसरै E। ४ होवइ B, न्रपनी होइ नही ° D, न्रपनी रीसैं भलो न होइ। E। ५ नित नित ···हुवइ° °B, निति निति ° हुवइ C, नित-नित हाँणि हुवै° D, मरण नही तो गळण होइ E। A १३३। B १४०। C १५२। D १५९। E १८० ॥

॥ १३७ ॥ १ ब्यास D। २ चित्रकूट BCDE नो CDE। ३ छोड्यउं B, छोडो CD, छाँड्यो E। ४ घास D। ५ माँणव E। ६ मुहरइँ BC, महरै D, साथै E। ७ छाँनो DE। ८ गयो BC, गियो E।

॥ १३८ ॥ १ जातो जातो CDE। २ दिल्ली BCDE। ३ गयो BDE, गियो C। ४ जाइनइ BC, जाइनै D, जाइने E। ५ परगटि BCDE। ६ थयो BDE, थियो C। ७ गाम B, ग्राम D, सिहर E। ८ हूयउ B, हूअउ C, हुवो D, हूयो E। ९ परसीध CD। १० जोतिप BCD, जोतिक E। ११ निमत C, निमति D। १२ घणो BCDE। १३ लिद्ध E।

॥ १३९ ॥ १ भणै D, भणे E। २ भँणावै D, भणावै E। ३ सास्त्र C, सासत्र D, वाल E। ४ बास D। ५ वखाण D, वखाँण E। ६ करै DE। ७ सुविवेक BC, सुविवेक D। ८ नवसत D। ९ सयण E। १० सुभा C। ११ रीझवइँ B, रीझवै D, रीझेंवे E। १२ सिति-सिति C। १३ अर्थ BC। १४ सीझवइँ BC, सीझवै D। ११-१३. सूत्र अर्थ भिन भिन बूझवै E।

पुरउ[१] घट[२] विद्या[३] परवेस, तेहनइ[४] केहा[५] देस-विदेस[६] ।
विद्या[७] माता विद्या[७] पिता, विद्या[७] सयण सगा[८] सासता[९] ॥ १४० ॥

विद्या[१] वित्त तणउ[२] भंडार, विद्या[१] घटि[३] सोलइ[४] सिणगार, ।
मॉन[५] मुहत[६] जस विद्या थकी, वित्तथी[७] विद्या[१] अधिकी जकी[८] ॥ १४१ ॥

डिल्लीपति[१] पतिसाह[२] प्रचंड, अवनि[३] एक[४] तसु[५] आण[६] अखंड ।
अलावदीन नव खंडे नाम, नृप सहु तेहनइँ[७] करइ[८] सिलॉम[९] ॥ १४२ ॥

एक छत्र धर सगली धरइ[१], सुर नर सहु को तिणथी[२] डरइ[३] ।
अवनि तणउ[४] अधिकउ[५] अभिलाष, लसकर तसु[६] नव त्रिगुणा लाख[७] ॥ १४३ ॥

तिणि ते[१] सुणीउ[२] बंभण गुणी, तेडाविउ[३] डिल्लीनइ[४] धणी[५] ।
व्यासि[६] जई[७] दीधी आसीस, जॉणि[८] की बेठो[९] छइ[१०] जगदीस ॥ १४४ ॥

व्यासि[१] कह्या तसु[२] कवित[३] अनेक, सभा सहित[४] रीझिउ[५] सविवेक[६] ॥
आगइँ[७][८] थो[९] बंभण[१०] गुणी, पातिसाहि[११] दी[१२] पहिरामणी[१३] ॥ १४५ ॥

मॉन[१] मुहत[२] वधीउ[३] पुर मॉहि[४], पूछइ[५] तेड़ी नित पतिसाहि ।
उलगतॉं[६] तूठउ[७] अवनीस, पूगी राघव तणी जगीस ॥ १४६ ॥

वास्या[१] गाम[२] ग्रास दइ[३] घणा, राघव चेतन बेही[४] (?) जणा[५] ।
पातिसाह[६] पासइ[७] नितु रहइ[८], राघव कवित कथा नितु[१०] कहइ[११] ॥ १४७ ॥

॥१४०॥ १ पूरो O। २ घटि पूरो DE। ३ विद्या D। ४ तेहनइ B, तेहवै D, तेहनैं E। ५ केहॉं B। ६ विदेसि O, वदेस D। ७ विद्या D। ८ सदा BOD, सदाइत E। ९ हिता E।

॥१४१॥ १ विद्या D। २ तणो OD. वित्त तणो E। ३ घट BO। ४ सोलह BO, सोलै D। ५ मान BODE। ६ महत DE। ७ वित्तथी अधिकी D। ८ जिकी B।

॥१४२॥ १ दिल्लीपति BODE। २ पतिसाहि D। ३ अविनि O, अवनी E। ४ तसि E। ५ जस E। ६ आणि BO। ७ तेहनइ B। तइनइ O, तेहने D, अवर राइ सवि E। ८ करइँ BO, करै DE। ९ सलॉम DE। A १२९ ॥ B १४६ ॥ O १६१ ॥ D १६९ ॥ E १८८ ॥

॥१४३॥ १ धरै D, धरे E। २ तिसथी D, जेहथी E। ३ डरै D, डरें E। ४ तणो ODE। ५ अधिको ODE। ६ मिलै E। ७ सतावीस E।

॥१४४॥ १ तिण BDE, तेण O। २ सुणीयो B, सुणीया OD। ३ तेडाव्या BOD। ४ दिल्ली॰ BO, ॰नेO, ॰नै D। ५ धनी B। ६ व्यास B, ब्यास D। ७ जाइ BODE। ८ जाणि क B, जॉंणि क D। ९ वइठउ B, बेठा O, बैठो D। १० छै D।

॥१४५॥ १ ब्यास D। २ इम B। ३ कवित D। ४ राय E। ५ रीझयउ BO, रीझ्यौ D, रीझ्या E। ६ सुविवेक BO, सुविवेक D। ७ आगइ BO, आगै D। ८ हीं BO। ९ थी BO। १० बॉंमण BO। ११ पातिसाह OD। १२ दीधी B, दीय D। १३ पहिरावणी BD। ७-१३ देखी चातुरता कवि-भाव, पातिसाहि दीधो सरपाव E।

॥१४६॥ १ मान B। २ महुत BO, महत DE। ३ वाध्यउ B, वाध्यो O, वाध्यौ D, व्याध्यो E। ४ माहिं DE। ५ पूछि O, पूछै D, नित प्रति तेडावै E। ६ ओलगतॉं E। ७ तूठो O, तूठौ D।
॥१४७॥ १ व्यासॉं BOE, ब्यासॉं D। २ ग्राम BO, ग्रॉम D। ३ दे DE। ४ वेई BOD। ५ जणा D। १-५ दीधो ग्रास सात गॉंमनो मोटॉं सेव्यॉं वाध्यो विनो E। ६ पातसाह BO। ७ पासै D, पासैं E। ८ नित DE। ९ रहै DE। १० निति OD, रस E। ११ कहै DE।

इक[१] दिन[२] आविउं[३] ए अभिमाँन, 'रतनसैंन[४] मुझ मलीउं[५] मॉन[६]
वालुं[७] वयर[८] किसी परि एह, साँमि धरम लइ[९] दीधउं[१०] छेह ॥ १४८ ॥
"तउं[१] हुं[२] जउं[३] पदमिणि[४] अपहरुं, चित्रकोटथी[६] अलगउं[७] करुं[८] ।
पदमिणि[४] नारि खरी पड़वड़ी[९], लगि पातिसाह[१०] करुं[११] परगडी[१२]" ॥ १४९ ॥
राघव चिंतइ[१] अधिक उपाइ, प्रगट[२] वात[३] मुखि न कहइ[४] काइ ।
भाट एकसुं[५] भाईपणुं[६], कीधुं[७] मान[८]-मुहत[९] दे[१०] घणुं[११] ॥ १५० ॥
हीआ[१] माहि[२] आलोची[३] हेत, खोजासुं[४] कीधउं[५] संकेत ।
[६]वित्त विहुनइ दीधु घणुं[६], मित्र[७] करी कीधुं[८] मंत्रणुं[९] ॥ १५१ ॥
"सभा माहि[१] काढेयो[२] घणी, वात किसी परि पदमिणी[३] तणी[४]" ।
अन्न[५] दिवसि[६] बेठउं[७] सुलितांण,[८] मिली सभा सहु[९] राँणो-राँण[९] ॥ १५२ ॥
अति[१] सुकमाल पसम पड़वड़ी[१], कलहंस पंखि[२] तणी पंखड़ी[३] ।
अतिसुंदर करि धरी[४] सभाउं[५], तव[६] तिणि भाटि दियउं व्रह्माउ[६] ॥ १५३ ॥

भाटवाक्यं-

एक छत्र जिणि पृथी, धरी निश्चल धर ऊपरि ।
आणि कित्ति नवखंडी, अदल कीधी दुनि भीतरि ।
नल विन्नल विध्याड़ि, उदधि कर पाउं पखालिय ।
अंतेउर रति रंभ, रूप रंभा सुर टालिय ।

॥ १४८ ॥ १ एक BOD । २ दिवसि BD । ३ आयो BO, आयौ D । ४ रतनसेनि D । ५ मलीयो D, लीयो O, टाल्यो D । ६ माण B, मॉण O । ७ वालउं B, वालो O, वालु D, वालु E । ८ वइर BO, वयर D । ९ सामिधरम नइ BO, सामिधरमनै D साँम धरमने E । १० दीधो O, दाखु E । A १४५ । B १५२ । O १७० । D १७८ । E १९६ ॥

॥ १४९ ॥ १ तो ODE । २ हु D । ३ जो ODE । ४ पदमणि OD, पदमिण E । ५ अपरउं B । ६ चित्रकूट B चित्रकोटि O । ७ अलगो OE, अलगौ D । ८ करउं B । ९ परवडी O । १० पातिसाहि B । ११ करउ B, करो O । १२ पगगडी O ।

॥ १५० ॥ १ चितै DE । २ प्रगटि BO । ३ वाति BO, वात DE । ४ कहै DE । ५ स्यू B, सो O । ६ °पणउ B °पणो OD, °चार E । ७ कीधउं B, कीधो ODE । ८ मॉन E । ९ महत D, महुत E । १०-११ मनुहार E ।

॥ १५१ ॥ १ हीया BDE । २ माँहि B । ३ आलोचइ BO, आलोचै D, आलोची E । ४ °स्युं B, °सो O । ५ कीधो OE, कीधौ D । ६ ° विहूनइ दीधउं घणउं B, ° दीधो घणो O, वित्त विहुनै दीधौ घणो D, विहुनै धन देइ आपणो E । ७ मत्र B, मत्रि O । ८ कीधउं B, कीधो ODE । ९ मंत्रणउं B, मत्रिणो O, मत्रणा DE ।

॥ १५२ ॥ १ माँहि BODE । २ काढेय्यो B, काढिज्यो C, काढेज्यौ D, काढेज्यो E ३ पदिमणी O, पदमणि D, पदमिण E । ४ भणी D । ५ अन्नि B, अन O, अनि DE । ६ दिवस E । ७ बइठउं B, वेठो O, वैठो D, वैठा E । ८ सुलनान BOD, सुलताँण E । ९ °राणो राण B, °राणो-राणि O, °राणौ-राण D, सहूयै दिवाँण E ।

॥ १५३ ॥ १ ' शुकमाल पशम ' B, कोमल सदल D । २ पख BO, पखिणनी E । ३ पखुडी BO । ४ घरीय BO, ग्रही DE । ५ सहाउ D, सुभाइ E । ६ तणि ' दीयो O, तव तिण दीयो ब्रह्माव D, भाटै आइ दीयो ब्रह्माइ E ।

हेतंमदान कवि मल्ल भणि, अमर किति ते वखत गिणि ।
दीठउ न को रवि-चक्र तलि, अलावदीन सुलिताण विण ॥ १५४ ॥

॥ चोपई ॥

कवित सुणी रीझउं सुलितॉन, भाट प्रतइँ दीधउं वहु मान ।
"हाथि किसुं ?" पूछइ पतिसाह, तव ते भाट भणइ गुण गाह ॥ १५५ ॥

॥ गाथा ॥

भाटवाक्यं-
माणसरोवर[1] मध्ये[2] निवसइँ[3] कल[4] हंस पंखीया[5] वहबे[6]
ताणं[7] चियं सुकमाला एसा पंखी करे[8] मज्झ[9] ॥ १५६ ॥

॥ चोपई ॥

इम निसुणी[1] लेईं[2] सुलिताँण[3], नव-नव[4] मउज[5] महा[6] असमॉन ।
सोहइ[7] पसम महा[8] सुकमाल, ते[9] देखी-जंपइ भूपाल[9] ॥ १५७ ॥
"इसी[1] सकोमल काई वली[2], किण[2] ही वस्त कठे संभली?"
तव[3] ते भाट भणइ[4] सुविचार, "हाँ,[5] सुलिताँण[5]! कहुं अवधारि[5] ॥ १५८ ॥
पदमिणि[1] नारि इसी पातली, अति सुकुमाल[2] सकोमल[3] वली[4] ।
एह[5] थकी वलि अधिकी तेह[5], सगुण[6] सकोमल[6] नइ[7] ससनेह" ॥ १५९ ॥

॥ १५४ ॥ यह कवित्त BODE प्रतियोंमें नहीं है, परन्तु संग्रामसूरि द्वारा सम्पादित प्रतिमें तथा लब्धोदय गणि द्वारा सम्पादित 'पद्मिनी चरित्र' की प्रतियोंमें मिलता है ।

॥ १५५ ॥ इस चोपईके स्थान पर BODE प्रतियोंमें निम्नलिखित चोपई है-

B, पातिसाहि पंख दिट्टें पडी । 'क्या वे हाथि तेरइ पखुडी ॥
O, पातिस्याहि पखि ,, ,, । ,, ,, ,, तेरे ,, ॥
D, पातिसाहि द्रिष्टी पखज पडी । ,, ,, ,, तेरै ,, ॥
E, पातिसाहीकी द्रिष्टिइ पडी । यह किसकी है वे पखडी ॥
B, जीवइ पतिसाह हुकम जइ लहु । आलमसाह सलामति कहुं ॥
O, ,, ,, ,, ,, ,, । , ,, ,, ॥
D, जीवै पतिसा ,, जो ,, । आलसाहि सलामति ,, ॥
E, जीवै हजरत ,, ज ,, । ,, ,, ,, ॥
A. १५२ । B १५८ । O १७६ । D १८४ । E २०२ ।

॥ १५६ ॥ १ मानसरोवर D । २ मझे BOD, मझै E । ३ निवसइ BODE । ४ कलि BO । ५ पंखीया E । ६ बहुवे BO, बहवो D, बहवै E । ७ °चा BO, ताणी तो D, ताण तणो E । ८-९ करे मुझ BO, कर मझ D, मर्म इत्थे E ।

॥ १५७ ॥ १ नसुणी D । २ जोई BD । ३ सुलताण BOD, सुलतान E । ४ नवसत BOD । देखी E । ५ मोज BO, मौज DE । ६ महा असमान BOD । ७ सोहे D, सोहै E । ८ माहा D, घणउ E । ९ जपै पतिसाह D, हरषित थइ पूछै E ।

॥ १५८ ॥ १ ऐसी कोमलता कोइ ओर E । २ °वसत कठे सॉभली B, "वसत सॉभली O," बसत कहाँ सॉभली D, वस्तु होती है किनही ठोर E । ३ तव D । ४ भणि O, भणै DE । ५ आलमस्याह B, आलमसाह O, आलमसाहि D, एक वस्तु इसकै अणुहार E । A १५५ । B १६१ । O, १७९ । D १८७ । E २०५ ।

॥ १५९ ॥ १ पदिमणि O, पदमणि D, पदमिण E । २ सुकमाल BOD, ऐसी पसम E । ३ सुकोमल OD । ४ वली B । ५ इसथै यादा (ज्यादा) कछु इक तेह E । ६ सुगुण ODE । ७ नै DE ।

तव ते भूप भणइ-"पदमिणी, काई नारि कठेई सुणी" ।
भाट भणई ए अवसर लही, गोरीपति निसुणइ गही गही ॥ १६० ॥

भाटवाक्यं-

॥ कवित्त ॥

भाट भणइ[१]-"सुणि[२] भूप, रूप अति रंभ समाणि[३] ।
हइँ[४] तुझ[५] हरम हजार, संख[६] कुण लहइ समांणी[६] ।
ता महि[७] पदमिणि काइ[७], हउंसि[८] तुरकिणी हिँदुआणी[८] ।
अदल[९] आज तू राज, अवर कोइ[१०] राउ[११] न राँणी[१२] ॥
तुझ[१३] महल[१४] माहि[१५] पदमावती, गिणत[१६] नारि होसी घणी[१६] ।
सुणि[१७] मीनती सुलितांण विण[१७], मइँ[१८] न काइ वीजी सुणी[१८]" ॥ १६१ ॥

॥ चोपई ॥

इम निसुणी[१] खोजउ[२] खलभलइ[३], पातिसाह[४] वइठउ[५] संभलइ[६] ॥
आसंगाइत[७] वोलइ इसुं[७] "तइं[८] रे भाट ! कहिउं किसुं[८] ?" ॥ १६२ ॥

खोजा वाक्यं-

॥ कवित्त ॥

"मम भणि[१] भट्ट[२] सुकवित्त,[३] खुंद[४] खोजउ[५] घइ[६] पूरउ[७] ।
रे ! रे ! सवद[८] फरोस ! 'सिवद हरमां लगि सूरउ[९] ।
कहां[१०] सु नारि पदमिणी[११], सेज[१२] रायनकी सोहइ[१२] ।
सुर-नर-गण[१३]-गंध्रव्व[१४], पेखि[१५] त्रिभुवन[१६] मन मोहइ[१७] ।

॥ १६० ॥ BODE प्रतियोंमें यह चोपई है ॥

B, "इसी सकोमल अति पदमिणी । तइ रे भट्ट किहाँ-किहाँ सुणी ?
O, ,, सकोमलि ,, पदिमणी । ति रे ,, ,, ,, ,, ?
D, ,, सकोमल ,, पदमणी । तै रे ,, किहाँ ई ,, ,, ,, ?
E, , ,, ,, ,, । कहिवै ,, कहाँ तै ,, ,, ,, ?
B, हमस्यु खूब कहउ वे साच । तुझ उपरि खुसी वहुत मुझ वाच ॥
O, हमसुं ,, कहू ,, , । ,, ,, ,, ,, ,, ,, ॥
D, हिमसुं ,, कहौ वो ,, । ,, ,, ,, ,, ,, ,, ॥
E, हमसै ,, कहे वे ,, । ,, ,, खुस मेरीय ,, ॥

॥ १६१ ॥ १ °भणै BOD, भणहिं भट्ट E । २ सुनि E । ३ समाँणी D, समानी E । ४ हइ BO, है D, हैं E । ५ तुह E । ६ सव कुण लहै ° D, दिवमै रूप जुवाँनी E । ७ तामइ BO, तामै पदमणि काई मुगलानी पारसी D । ८ होसी तुरकणि B, होसी तुरकाणि O, होसी तुरकणि हिंदवाँणी D । ९ अदिलराज तू आज B, अदलराज तू आज O, अदलिराज तू आज D । १० को BO । ११ राव DE । १२ राँनी E । १३ तुज्झि D । १४ मुहल BO, महिल E । १५ माँहि E । १६ गिणित ° BD, गणिति O, न्हे है नारि इद्रायनी E । १७ वीनती सुलितानजी B, ° वीनती सुलतानजी O, सुणोहु अरज मुझि सुलिताँणजी D, अल्लावदीन सुलतान सुनि E । १८ ओर ठौरमैं नहु सुंणि E ।

॥ १६२ ॥ १ नसुणी D । २ खोजो ODE । ३ पलमले D, जलफले E । ४ आलिमसाइ BO, आलमसाहि DE । ५ वेठो O, वैठो D, वैठो E । ६ सँभलै DE । ७ आसंगइ तव B, आसंगि तब वोलै इसुं O, वोलै उछक आसंग लही D । ८ क्यउ रे भाट ! कह्यउ तिइ ते O, किस्यउ B, क्युं रे भाट कह्यौ तै किसु D, अबै भट्ट अैसी क्यु कही E ॥ A १५९ । B १६५ । O, १८३ । D १९१ । E २०९ ।

सुंखिणि[१८] सवइं[१९] सुलितांण[२०] घरि", कोपि[२१] हूउ वदि इसइ[२१] ।
"रे[२२] खोजा ला इतवार तूं"[२२], सुणि[२३] पातसाह मुलकइ हसइ[२३] ॥ १६३ ॥

॥ चोपई ॥

आगलि[१] वेठउ[२] राघव व्यास[३], पुस्तक[४]ऊपरि अधिक[५] प्रयास[६] ।
सइं[७] मुखि पूछइ[८] इम[९] सुलितांण[१०], पदमिणि[११] नारि तणा अहिनाँण[१२] ॥ १६४ ॥

॥ कुंडलीउ ॥

आलिमसाह[१] अलावदी, पूछइ[२] व्यास[३] प्रभाति ।
"रतन-परीक्षा[४] तुम्हि[५] करो[६], त्रीकी केती[७] जाति ?" ।
"त्रीकी केती[७] जाति !" कहइ[८] राघव सुविचारी[९] ।
"रूपवंत पतिव्रता,[१०] प्रिय सो[११] होई पियारी ।
हस्तिणि[१२] कि चित्रिणि सुंखिणी,[१३] पुहवि[१४] वडी[१५] पदमावती ।"
इम भणइ[१६] विप्र साचउ[१७] वचन, आलिमसाहि[१८] अलावदी ॥ १६५ ॥

रूपवंत रतिरंभ कमल, जिम काय[१] सुकोमल[२] ।
परिमल पुहप[३]सुगंध, भमर[४] वहु भमइ[५] वलावल[६] ।
चंपकली[७] जिम चंग रंग, गति गयंद समांणी[८] ।
सिसि-वयणी[९] सुकमाल[१०], मधुर मुखि[११] जंपइ[१२] वाणी[१३] ।

॥ १६३ ॥ १ भणसि B, मणिसि C। २ भट्ट BODE। ३ किवित्त BODE। ४ खूँद BC। ५ खोजइ A, खोजो CDE। ६ दे D, कहै E। ७ पूरो C, पूरौ D, झूठौ E। ८ वाद C, वात D, वात E। ९ सव दल माहि हइ सूरउ B, सबद माँहि हइ पूरो C, तू ही वाजारी नूरो D, करही वाजार वयठो E। १० कहाँसु B, किहाँसू C, काहाँसु D, कहाँ नारि E। ११ पदिमिणी C, पदमणी D, पदमनी E। १२. .रावण BC, ' रावणरी सोहै D, लछिन ताका कहि मोहै E। १३ गण D। १४ गधर्व BC, गधरव D, ग्रधव E। १५ पिंखि E। १६ त्रिभोवनC, त्रिभवन D। १७ मोहै DE। १८ सुखिणी BC, संखणी D, संखनी E। १९ सवि BC, सहु D, सबही E। २०पतिसाह BC, पतिसाहि D, साह E। २१ कोपि हूउ वदिण इसइ A, कोपीयो एम वंदण रसइ BC, कोपीयो एम वोलै रसै D, क्या है दुरावनि हम्मसै E, २२" इतवार'''BC, लायतबार D, जिहाँन-खाँन दरगहिं सुनहिं E। २३'''पातिसाह मुलकें हसइ C," पातिसाह मुलकै हसै D," पातिसाह मुलकित हसै E।

॥ १६४ ॥ १ आगल C। २ वइठा B, वेठो C, वैठा D, वयठा E। ३ ब्यास D। ४ पुसतग D। ५ प्रेम E। ६ प्रकास E। ७ सै D श्री E। ८ पूछिइ C, पूछै DE। ९ नव E। १० सुलताण B, सुलतान C, सुलताँन E। ११ पदमणि CD, पदमिण E। १२ इहनाण A, सहिनाँण D।

॥ १६५ ॥ १ आलमसाह BC, आलमसाहि D। २ पूछिइ B, पूछै C। ३ ब्यास D। ४ परीख्या BC परख्या D। ५ तुम्ह BD, तमे C। ६ करउ B, करो C, करौ D। ७ केही D। ८ कहि C, कहै D। ९ अविचारी D। १० पतिभ्रता D। ११ प्रियस्युं B, प्रीयसु C, प्रीवसु D। १२ हसतण D। १३, शखणी B, सखणीं D। १४ पुहिवि C, पुहवि D। १५ वडी B। १६ भणे C, भणै D। १७ साचो C, साचौ D। आलमसाह BC, आलमसाहि D। E प्रतिमें यह पद नहीं है। A १६२। B १६८। C १८६। D १९४॥

चंचल चपल चकोर जिम, नयण[14] कंति सोहइ[15] घणी ।
कहि[16] राघव सुलिताँण[17] सुणि[18] ! पुहवि[19] इसी हुइ[20] पदमिणी[21] ॥ १६६ ॥

कुच जुग[1] कठिन कठोर[2], रूप अति रूड़ी राँमा[3] ।
हसित[4] वदन[5] हित हेज, सेज[6] नितु[6] रहइ[7] सकांमा[8] ।
रूसइ[9] तूसइ[10] रंगि[11], संगि सुख[12] अधिक उपावइ[13] ।
राग रंग छत्रीस गीत, गुण[14] गांन[15] सुणावइ[16] ।
स्नाँन[17] माँन[18] तंबोल[19] रस, रहइ[20] अहोनिसि[21] रागिणी[22] ।
कहि राघव सुलिताँण सुणि ! पुहवि इसी हुइ पदमिणी ॥ १६७ ॥

वीज[1] जेम झबकंति[2], कंति[3] कुंदण ज्युं[4] सोहइ[5] ।
सुर नर गण[6] गंध्रव्व[7], पेखि[8] त्रिभवन मन मोहइ[9] ।
त्रिवली तलि[10] तनुलंक, वंक[11] वहु[12] वयण[13] पयंपइ[14] ।
पतिसुं[15] प्रेम सनेह[16], अवरसुं[17] जीह न जंपइ[18] ।
साँमि[19] भगत ससनेहली, अति सुकमाल सुहामणी[20] ।
कहि राघव सुलिताँण सुणि पुहवि इसी हुइ पदमिणी ॥ १६८ ॥

धवल-कुसुम[1]-सिणगार, धवल वहु वस्त्र सुहावइँ[2] ।
मोताहल[3] मणि रयण, हार हृदय[4]स्थलि भावइँ[5] ।
अलप भूख त्रिस[6] अलप, नयणि[7] वहु नींद्र[8] न आवइ[9] ।
आसणि[10] अंग सुरंग[11], जुगतिसुं[12] काम जगावइ[13] ।
भगति जुगति[14] भरतारसुं[15], करइ[16] अहोनिसि[17] कांमिणी[18] ।
कहि राघव सुलितांण सुणि ! पुहवि इसी हुइ पदमिणी ॥ १६९ ॥

॥ १६६ ॥ १-२ काइ सकोमल BDE, काय स° C । ३ पुहव D, पुहोप E । ४ भंमर D । ५ ममै DE । ६ वलावलि BCD । ७ °कुली B । ८ समाणी B । ९ शिश B, °वयणी D, °वदनी E । १० सुकमालि BC । ११ मुख CE । १२ जपै DE । १३ वाँणी CE, वाँणी D । १४ नयन DE । १५ सोहै D, सोहे E १६ कहइ B, कहै D । १७ सुलतानि C, सुलताण D, सुलताँन E । १८ सुनि E । १९ पुहुवि C, पुहवि D । २० होइ C, हुवै DE । २१ पदिमणी C, पदमणी D, पदमिनी E ।

॥ १६७ ॥ १ युग C २ कठोरि C, सरूप DE । ३ रामा BC । ४ हसति BCD । ५ वदन BD । ६ निति निति D । ७ रमइ BC, रमै DE । ८ सुकामा BE । ९ रूसै DE । १० तूसै DE । ११ रग C । १२ सुखि C । १३ अधिको पावइ C, अधिक उपावै DE । १४ गुन E । १५ ग्यान BCD, ग्याँन E । १६ सुणावै D, सुनावै E । १७ सनाँन D । १८ मज्जन B, मजन CE, मंजन D । १९ स्यु B, स्यु C, सु D । २० रहि C, रहै DE । २१ अहोनिस E । २२ रागणी ।

॥ १६८ ॥ १ वीज C, वीजू D । २ झलकति BCDE । ३ कत D । ४ कुदन D । ५ सोहईं B । ६ गुण B । ७ गधर्व BCD, गंध्रव E । ८ रूप DE । ९ मोहईं B, मोहि C, मोहै DE । १० तन नउ B, तननो CD, मय तज E । ११ वक D । १२ नहु D, नहु E । १३ वयण न B, वयण D । १४ पयपै DE । १५ °स्यु B, सु CE, सु D । १६ अपार DE । १७ स्यु B, सु CD । १८ जपईं B, जपै DE । १९ सामि BC, साँम E । २० सोहाँमणी D, सुहाँमणी E ।

॥ १६९ ॥ १ कुसम C । २ सुहावइ AC, सुहावै DE । ३ मुत्ताहल BCD, मुगताहल E । ४ रिदस्थल E । ५ भावइ AC, भावै DE । ६ त्रिसि A, त्रिष E । ७ नयण BCDE । ८ नीद BCD, नींद E । ९ आवईं B, आवै DE । १० आसण BCDE । ११ सुचग E । १२ युगतिस्यु B, युगतिसु C, जुगतिस्यौ D, जुगति करि E । १३ जगावईं B, जगावै DE । १४ युगति BC, हेत E । १५ स्यु B, सु C, स्यौ D । १६ रहइ B, रहइ C, रहै DE । १७ अहोनिस E । १८ रागणी E ।

॥ चोपई ॥

इणि परि पदमिणिना[१] अहिनाँण[२], निसुणी[३] हरष धरइ सुलिताँण[३] ।
"अम्ह[४] घरि[५] हरम परीक्षा[६] करउं[७], पदमिणि[८] हुइ[९] ते जूदी[१०] धरउं"[११] ॥ १७० ॥

व्यास[१] भणइ[२]-"संभलि[३] सुलिताँण[४], तूं[५] मुझ साहिब सुगुण[६] सुजाँण ।
हुं[७] तुझ हरम निरखुं नही[७], विण[८] निरख्या क्युं परखुं सही[८] ? ॥ १७१ ॥

"म[१] कहसि[२] वात[३] निहालण तणी", तव ते जंपइ[४] डिल्ली[५] धणी ।
साहि[६] कहइ[७]-"संभलि[८] हो व्यास, मणिमय[९] एक करउं[१०] आवास[११] ॥ १७२ ॥

तिण[१] माहे[२] तेहना प्रतिबिंब[३], निरखी परख करउं[४] अविलंब[५] ।"
सामगरी[६] सहु[७] मेली करी, राघव माहे[८] आणिउं[९] धरी ॥ १७३ ॥

मणिमय[१] मंडप[२] माहे[३] व्यास[४], परखइ[५] हरम[६] तणउ परगास[७] ।
हस्तिणि[८] चित्रिणि[९] नइँ[१०] सुंखिणी[११], निरखी नारी न का पदमिणी[१२] ॥ १७४ ॥

॥ कवित्त ॥

रयण महलि[१] अलावदी, साहि[२] राघव हक्कारी[३] ।
नयणि[४] नारि निरखेवि[५], परखि[६] अव[७] हरम हमारी[८] ।
हंस[९]-गमणि हँसि[१०] चली[११], नारि निरमल[१२] मयमत्ती[१३] ।
सुर-नर-गण[१४]-गंध्रव्व, पेखि भूले[१५] अनिरूत्ती[१६] ।
अइसी[१७] सवे[१८] अंतेउरी[१९], पभणि[२०] व्यास[२१] पेखी[२२] घणी ।
हस्तिणि[२३] कि चित्रिणि[२४] सुंखिणी[२५], नही साहि घरि पदमिणी[२६] ॥ १७५ ॥

॥ १७० ॥ १ पदमणी DE । २ अहिनाण BO । ३ ' सुलताण B, '''सुलताँणि O, निरखी हरिष धरै सुलताँण D, सुणी चित हरख्या सुलताँन E । ४ हम BO, हम OD । ५ घर E । ६ परीख्या BO, परिख्या D, परिखा E । ७ करो O, करौ D, धरो E । ८ पदमणि D, पदमिन E । ९ होइ BOE, होय D । १० पासइ BO, पासै D, तो मालिम E । ११ धरो O, धरौ D, करो E ।

॥ १७१ ॥ १ ब्यास D । २ भणै DE । ३ साँभलि DE । ४ सुलताण B, सुलताँण OD, सुलताँन E । ५ तू B, तू OD । ६ सुगण E । ७ हउ''''''नरीखउ नही B, हउ नरीखो O, हु'' निरखु'' D, हुरमाँ निरखण हुकम न मोहि E । ८'''निरख्याँ' परखो O, बिणु निरख्याँ'''परखु ' D निरख्याँ विण किम पारिख होइ E ।

॥ १७२ ॥ १ इम BODE । २ कही BODE । ३ वात D । ४ जपइ BOE, जपै D । ५ दिल्ली ODE । ६ साहु BO । ७ कहै D । ८ समल O । ९ मणिमइ O, मणिमै D । १० करू AB, करो O, करौ D । ११ आवासि O ।

॥ १७३ ॥ १ तिणि OD । २ माँहि O । ३ प्रतिबब O, प्रतिब्यब D । ४ करु AB, करो O, करौ D । ५ अबिलंब D । ६ सामग्री BO, सामग्रही D । ७ सबि O, सब D । ८ माँहे O । ९ आण्यउ B, मेल्यो O, आण्यौ D, E प्रतिमें यह चोपई नहीं है ।

॥ १७४ ॥ १ मणिमइ BO । २ मडिप O । ३ माँहि O । ४ ब्यास D । ५ परखि O, परखै D । ६ °तणो O, हरमा तणौ D । ७ परकास O, प्रकास D । ८ हस्तणी D । ९ चित्रणी BODE । १० नै D । ११ शखणी B, संखणी DE । १२ पदमणी D ।

॥ १७५ ॥ १ मुहल BO, महिल D । २ साह O । ३ हकारी AOD । ४ नयण D । ५ नरखेव O । ६ परख O । ७ इब O । ८ हमाँरी A, हमारी D । ९ हंसि गमणि O, हस गमणी D । १० हसि A । ११ चलि B । १२ निमल A । १३ मयमंती D । १४ गधरव O, गंण गधर्ब । १५ भूलइ B, भूलि O, भूलै D । १६ अनुरत्ती BODE । १७ अैसी D । १८ सवै D । १९ अतेवरी D । २० भणइ BD, भणै O । २१ ब्यास D । २२ देखी BOD । २३ हस्तिनी BOD । २४ चित्रणी BOD । २५ सुंखणी BO, संखणी D । २६ पदमणी OD । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ चोपई ॥

इम निसुणी[१] पभणइ[२] पतिसाह,- "विण पदमिणि केहउं[३] उच्छाह।
पातसाही[४] पदमिणि[५] विण[६] किसी, पदमिणि[७] नारि हीया[८] महि[९] वसी[१०] ॥ १७६ ॥

तउं[१] हुं जउं[२] परणुं[३] पदमिणी[४], केथी[५] कीजइ ए पदमिणी[५]।
हस्तिणि[६] चित्रिणि[७] नइ[८] सुंखिणी,[९] घरि घरि नारि लहीजइ[१०] घणी ॥ १७७ ॥

विण[१] पदमिणि[२] नवि[३] पोढुं[४] सेज,[५] विण[१] पदमिणि[२] न हसुं[६] हित हेज।
विण[१] पदमिणि[२] न करूं[७] सुख-संग, विण[१] पदमिणि[२] न रमुं[८] रति[९]-रंग ॥ १७८ ॥

चमकइ[१] चित महि नितु पदमिणी[१], वलतउं[२] जंपइ[३] ढिल्ली[४]-धणी।
"कहि[५] राघव[६]! किहां[७] छइ[८] पदमिणी[९]? जेहनइ[१०] हुइ[११] ते[१२] आणुं[१३] हणी ॥ १७९ ॥

ठावी ठोड[१] वतावउ[२] तेह,[३] जिम[४] जई ल्यावुं पदमिणि गेह[४]"।
वलतउं[५] व्यास[६] पयंपइ[७] ऍम-"पदमिणी[८] नारि लहीजइ[९] कॅम? ॥ १८० ॥

सिंघलदीप[१] अछइ[२] पदमिणी,[३] दक्षिण[४] दिसि[५] विचि[६] धरती घणी।
आडउ[७] आवइ[८] उदधि[९] अथाग,[१०] तिणि[११] तेहनउ[१२] कोइ[१३] न लहइ[१४] माग"[१५] ॥ १८१ ॥

साहि[१] भणइ-"संभलि मुझ वात,[२] मो[२] आगलि[३] सिंघल[४] कुण मात।
सरग पताल[५] समेतउ[६] खणी! काढुं[७] नारि[८] जई[८] पदमिणी"[९] ॥ १८२ ॥

॥ १७६ ॥ १ नसुणी D। २ प्रभणै D, जपै E। ३ केहवउं BD, कहो CE। ४ पतिसाही BDE। ५ पदमणि CE, पदमणी D। ६ विणु B, विणि D। ७ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिण E। ८ हीय D। ९ मँहि B, माहि C, मै D, माँहि E। १० वसी D।

॥ १७७ ॥ १ तो CE, तौ D। २ जो CE, जौ D। ३ परणउं B, परणु D। ४ पदमणी D। ५ ·· कॉमिणी C, कीजे·· कॉमणी D, अवर न मन रीझै कामनी E। ६ हस्तनी B, हस्तिनी E। ७ चित्रणी BCD, चित्रनी E। ८ नइ BC, नै D, ने E। ९ सखणी BD, सुखणी C, शखिनी E। १० लहीजे C, लहीजै DE।

॥ १७८ ॥ १ विणि D। २ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिन E। ३ नवि E। ४ पउंढउं B, पोढो C, पौढौ E। ५ सेझ D। ६ हसउ BC, हसु D, हसु E। ७ करउ B, करौं C, करु DE। ८ रमउ B, रमु CD। ९ रित B, रिति C। A १७५। B २०९। C २१५। D २२१। E २४९।

॥ १७९ ॥ १ चमकइ चित्त माहि B, चमकि चित्त माहि C, चमकै चित्त माहै पदमणी D, वसि नारी चित्तमैं पदमिनी E। २ वलतउं B, वलतो CE, वलतौ DE। ३ जपै DE। ४ ढिली नउं B, ढिलीनो C, दीली DE। ५ कहउं B, कहो C, कहौ DE। ६ व्यास BCE, व्यास D। ७ किहा D, कहॉ E। ८ होइ BC, है DE। ९ पदमणि CD, पदमिनी E। १० जेहणइ B, जेहनै D, किसकै E। ११ होइ BCD, है D। १२ तिस E। १३ आणउ B, ऑणो C, आणौ E।

॥ १८० ॥ १ ठउंड B। २ वतावो CE, वतावौ C। ३ जेह BCD, सोइ E। ४ जाइ ल्यावउं गेह B, जिमि जाइ ल्यावो C, जायं ल्याउ पदमणि D, पदमिण नारि जिहाँ किण होइ E। ५ वलतउं B, वलतो CD, वलतो E। ६ व्यास D। ७ पयपै DE। ८ पदिमिणि C, पदमणि D, पदमिण E। ९ लहीजै DE।

॥ १८१ ॥ १ सिंहल दीपि BC, सीघल दीप D, संघल दीप E। २ अछै DE। ३ पदमणी CD। पदमिनि E। ४ दख्यण C, दखिणि D, दखिण D। ५ दिस E। ६ विचि D। ७ आडो CE, आडौ D। ८ आवै DE। ९ समुद्र BC, जलद D, जलधि E। १० अथाह D। ११ तिण E। १२ तेहनो CE, तेहनौ D। १३ कोई C, को D। १४ लहइ DE। १५ माह D।

॥ १८२ ॥ १ माह कहइ B, साह कहि C। कहे साँमलि वात D, 'सुणो व्यास!' हजरत कहै वात। २ मुझ BCDE। ३ आगल E। ४ दरीया BCD, दरिया E। ५ पयाल BDE, पयालि C। ६ सवेउ BD, सवऊ C, सवैउ E। ७ काढउ B, काढो C, काढु DE। ८-८ नारि जाइ B, नार जिई C, नारि जाय D, व्यास नारी E। ९ पदमणी D, पदमिनि E।

हय-गय-पाखरि[1] सहु सज किया, घोर दमामा[2] नोवत[3] दिया ।
वाहरि[4] डेरा दीया[5] सही, लसकर सहूवइ[6] आया वही ॥ १८३ ॥
सिंघल[1] ऊपरि चडीउं[2] साहि,[3] कोपाटोप [4]कीउं पतिसाहि[5] ।
पदमिणिसुं मनि अति अभिलाष[6], लसकर[7] लारि सतावीस लाख[8] ॥ १८४ ॥
असि[1] चडि[2] चालिउं[3] आलिम[4] जिसइ[5], दह दिसि देस[6] संकाणा[7] तिसइ[8] ।
गयणंगणि[9] वहु ऊडइ[10] रेण, सूर[11] न सिसिहर सूझइ तेण[11] ॥ १८५ ॥
सेषनाग[1] सहि सकइ[2] न भार, आलिम[3] चालिउं[4] हुइ[5] असवार ।
घण जिम गाजइ[6] गयवर[7] घणा[8], पार न लाभइ[9] सुभटां तणा[10] ॥ १८६ ॥

[चोथो खण्ड]

॥ कवित्त ॥

असपति[1] कीउं[2] आरंभ, चडवि[3] चंचल दक्षण[4] धर[5] ।
पतिसाहि[6] कोपीउ[6], कवण[7] छूटइ[8] सिंघल[9] नर[10] ।
दल-वादल[11] पतिसाह[12], जुडीउं[13] संग्राम सुहड भड ।
नव लख त्रिगुण[14] तुरंग, सहस सोलह[15] मयगल[16] घड ।
सुरिज्ज[17] खेह लोपी गयउं[18], पायालइँ[19] वासुगि[20] डुल्यिउं[21] ।
चिहुँ[22] चक्कराइ[23] संसय[24] पड्यउं, पातिसाहि[25] किसु[26] परि चड्यउं[27] ॥ १८७ ॥

॥ १८३ ॥ १ पाखर DE । २ दमाँमा DE । ३ नोवति DE । ४ वाहिरि DE । ५ दीधा D । ६ लारसइ B, सहुवे D, सहुयै E, A प्रतिमें यह चोपई नहीं है । B २१४ । C २२० । D २२६ । E २५३।

॥ १८४ ॥ १ सिंहल B, सीहल C, सघल A । २ चढीयउं BC । ३ साह BCE । ४ 'कीयो' पतिसाह BC, 'कीयो' D, दिलीपति रिणवर रिमराह E । ५ ...स्यु B, पदमणि ..CD, जीतवाद जैत जस हाथ E । ६ जगत जीत विरद है तास E ।

॥ १८५ ॥ १ असु BC, अस्व D । २ चढि D । ३ चाल्यउं B, चाल्यो CDE । ४ आलम BE, असपति D । ५ जिसै DE । ६ लोक BCDE । ७ सकाँणी E । ८ जिसै D, तिसै E । ९ गयणगण B, गयणाँगिण C, गयणागणि D । १० उडइ B, वहू उडइ C, वहु उडी D । ११ ...ससिहर...BC, पार न रवि तसु सूझै रेणि D, अवरि भाँण न सूझे तेण E ।

॥ १८६ ॥ १ शेषनाग BC । २ सकै D, सके E । ३ आलम DE । ४ चाल्यउं B, चाल्यो CE, चाल्यौ D । ५ होइ BC, होय D । ६ गाजै D । ७ गयवर B, गैवर D । ८ घणाँ C । ९ लाभै D । १० तणाँ C, A १८२ । B २१६ । C २२२ । D २२८ । E २५६-२५७ ।

॥ १८७ ॥ १ अस्व° D । २ कीयो B, कीधो C, कीयौ D, कीय E । ३ चढवि B, चढिवि C । ४ दख्यण C, दखिण DE । ५ पातसाह BC, पातिसाह D, दलीपती E । ६ कोपीयउ B, कोपीयो CE, कोपीयौ D । ७ कहाँ E । ८ छटइ B, छुटै DE । ९ सिंहल BC, सीघल D, सिंघल E । १० धर A । ११ गोरी ? A, दलवादल D । १२ पतिसाहि D, रिमराह E । १३ जुडी BCD, भिडण E । १४ तिगुग BC । १५ सोलह BC । १६ सगल B, संघल CD, सिंघल E । १७ सूरज BC, सूरिज D, सूरजि E । १८ लोपवि गई A, लोपी गयो C, लोपी गयौ D, लुकवि गयौ E । १९ पायालइ BCD, पयालै D, पयालहि E । २० वासिग BC, वासिग D, वासिंग E । २१ डुडउं B, डुल्यो C, डुडौ D, गड्यौ E । २२ च्चउ BC । २२-२४ चौ धराय सासै पडौ D, ... पडै E । २५ पातसाह B, पातिसाह CDE । २६ किस B, किसि CD । २७ चढ्यो BC, चढ्यौ CD ।

॥ चोपई ॥

आलिमसाहि[1] कीउ[2] इलगार[3], साथइँ[4] सबला[5] जोध[6] जुझार[7] ।
अखलित[8] गति उलंघी मही[8], समुद्र[9] समीपइँ[10] आव्या[11] वही[12] ॥ १८८ ॥
रण[1]-रसीउ नइ[2] अति[2] रढाल, [3]आलिमसाह करइ धख चाल[3] ।
"वूरी[4] समुद्र करुं[5] थल[6]-खंड, सिंघलदीप[7] करूं[8] सित[9] खंड ॥ १८९ ॥
पकडुं[1] सिंघलपति[2] जीवतउ[3], पदमिणि[4] आणुं[5] तउ[6] हुं[7] हतउ[8]" ।
ऍम[9] कही ऊतरीउ[10] साहि[11], लसकर दीधउ[12] ले[13] जल माहि[14] ॥ १९० ॥
"छडे[1] पयाणे[2] जाउं[3] छंडि, सिंघलदीप[4] करउं[5] सित[6] खंडि" ।
ऍम[7] हुकम आलिम नउ हूउ[7], लसकर वूडी[8] माहे[9] मूउ[10] ॥ १९१ ॥
आलिम[1] नइ अति[2] चडीउ[3] कोप, [4]कोप तणउ कीधउ आटोप[4] ॥
प्रवहण[5]-नाव घडाव्या[6] नवा, चडीया[7] जोध[8] वली[9] जूझिवा[10] ॥ १९२ ॥
लाख-लाख एकीकउ[1] लहइ,[2] रण-[3]रसीउ कुण[4] वाँसइँ[5] रहइ[6] ॥
आगलि[7] ऍम कहइ वलि धणी, ए वेलाँ[8] छइँ[9] सुभटाँ[10] तणी ॥ १९३ ॥

॥ १८८ ॥ १ आलमसाह BC, आलमसाहि DE । २ कीयो BCDE । ३ अलगार D । ४ साथे BC, साथै CE । ५ सबल BCD, बडा E । ६ योध BC । ७ झूझार BCDE । ८ एलायति''' B, एलायति उलगी''' C, पातसाहि औलघी मही D, वडे पयाणे लंघी मही E । ९ समद D, समुंद्र E । १० समीपइ C, समीपे B, समीपै DE । ११ आव्या BCE, आयौ D । १२ सही CDE । A १८४ । B २१९ । C २२५ । D २३१ । E २५९ ।

॥ १८९ ॥ १ रिण-रसीयो BCE, रणरसीयो D । २ नै D, आलम E । ३'''ढिग ''BC,'''करै धक''' D, पोरस चढि माँडी धक चाल E । ४ वूरउ B, वूरो CDE । ५ करउ B, करो C, करौ D, खिण E । ६ खल-खड BCD, धर-मड E । ७ सिंहल BC, सीघल D, संघल A । ८ करउ B, करो CE । ९ सत CDE ।

॥ १९० ॥ १ पकडउ B, पकडो CE । २ सिंहल BC, सिंघल D, सीघल E । ३ जीवतो CE, जीवतौ E । ४ पदमणि CD, पदमिण E । ५ आँणउ B, आँणो C । ६ तो CE, तौ D । ७ जीत BCD, मै E । ८ हुयउ BC, हुयौ D, छतो E । ९ इम कही E । १० उतरीयो BCE, उतरीयौ D । ११ साह BCE । १२ लीधो C, दीधी D, दीधो E । १३ लेइ B, लें CE, ते D । १५ माँहि C, माहिँ E ।

॥ १९१ ॥ १ छडै E । २ पियाणे C, पयाँणे D, प्रयाँणै E । ३ जाजो BC, जाजौ D, जायो E । ४ सिंहल BC, सीघल D, शंघल A । ५ करो B, करु D, कीयो E । ६ सितखड B सतखड CDE । ७ इमते BC, इंमंते D, इमेते E, हुकम हुवउ C, हूवो C, हुवो D, कीयो E, पतिसाह B, पतिसाहि E । ८ वूडण BCDE । ९ लागउ C, लागो CE, लागा D । १० माहि BCD, माहिँ E ।

॥ १९२ ॥ १ नइँ B, आलमनै D, तव आलम E । २ मनि BCD, वलि E । ३ चटीयउ B, चडीयो CE, चढियो D । ४'''वलि कीधउ टोप B, ''तणो वलि कीधो ''C,'''तणौ कीधौ अटोप D, मुन्झ वयणनो किम हुइ लोप E । ५ प्रहुवण D । ६ घडाया E । ७ चाल्या BC, चाल्या D, चल्या E । ८ जूध C । ९ वलि B, वले D, तिणे E । १० झूझिवा BC, झूझवा DE ।

॥ १९३ ॥ १ एकीको CD, एकेको E । २ लहइँ B, लहै DE । ३ रिण-रसीयो BC, रसीयौ D, रिण वेला E । ४ किम E । ५ वासइँ BC, वासै D, वाँसै E । ६ रहइँ BC, रहै DE । ७'' वलि ' B, ''कहै वलि D, इम जंपइ ऊभो निज धणी E । ८ वेलाँ BD, वेला AD । ९ छइ BC, छै DE । १० मुजरा E ।

लडी-भिडी सिंघल[1] मेलयो[2], माहि[3] जई[4] माझी झेलयो[5]।
चाल्या जोध घणा जूझार[6], पांणी[7] माहि[8] कीउ[9] पइसार[10] ॥ १९४ ॥
आगलि कहर[1] भमइ[2] भमरीउ,[3] जाणि कि[4] सिंघलि[5]-सुर समरीउ[6]।
[7]ते माहे प्रवहण गिया जिसइ,[7] खंडो-खंड[8] हुआ[9] सहु[10] तिसइ[11] ॥ १९५ ॥
फरीआदे[1] लागी फरीआदि[2], ऊगारउ[3] आलिम[4] अवलादि[5]।
दरीउ[6] दूठ[7] महा दुरदंत, उदधि[8] तणउ[9] नवि लाभइ[10] अंत ॥ १९६ ॥
वड-वड[1] सुभट[2] रह्या जल माहि[3], [4]अंवुधि न सकइ को अवगाहि[4]।
पदमिणि[5] नारि पडउ[6] पातालि, [7]आलिम ए तुम्ह छंडउ आलि[7] ॥ १९७ ॥
वलतउ[1] आलिम[2] इणि[3] परि कहइ[4], [5]मो आगलि क्युं दरीउ रहिइ[5]?।
सुभट मूआ ते गई वलाइ[6], [7]अवर घणेरा आणुं जाइ[7] ॥ ॥ १९८ ॥
वरस सहस-[1]इक रहिस्युं[2] इहाँ, विण[3] पदमिणि[4] किम[5] जाउं[6] तिहाँ।
असपति कीधउ[7] वलि[8] आरंभ, तेड्या सुभट[9] घणा सारंभ[9] ॥ १९९ ॥
[1]सुभट सहू संकाणा हीइ,[1] फोकट दरीआ[2] माहे[3] दीइ[4]।
[5]काम-काज नवि सीझइ कोइ,[5] [6]हठीउ आलिम[7] न रहइ[8] तोइ ॥ २०० ॥

॥१९४॥ १ सिंहल BO, सीघल D, सीघल E। २ भेलिज्यो O, भेलज्यो OE, भेलज्यौ D। ३ माहे BD। ४ जाइ BO, जाय D। ५ झेलिज्यो B, झालिजो O, जेलजौ D। ६ झूझार BOD, झूँझार E। ७ पाणी BOD। ८ माँहि BD। ९ कीयउ B, कीयो O, कीयौ D, कीया E। १० पइसारि O, पैसारि D, पयसार E। A १९० । B २२५ । O २३१ । D २३७। E २६६ ।

॥१९५॥ १ कहइ B, कहि O, कहै D, एक E। २ भमे O, भमै D, भमें E। ३ भमरीयउ B, भमरीयो OE, भमरीयौ D। ४ क BO, जाँणि क D। ५ सिंहल BO, सिंघल D, सीघल E। ६ मेल्हीयउ B, मेलीयो O, मेल्हीयौ D, मेल्हीयो E। ७'''माँहिं गया प्रवहण ' B,'''माँहि गया प्रवहण' O, '' महे गया प्रह्रुवण जिसै D, माँहि प्रह्रुवण पहुता जिसै E। ८ खंडि B। ९ हुवा BODE। १० सवि E। ११ निसै DE।

॥१९६॥ १ फरीयादे BODE। २ फरीयाद BOE। ३ ऊगारो BOE, ऊगारौ D। ४ आलम DE। ५ अवलाद E। ६ दरीयउ B, दरीयो O, दरीया DE। ७ दुद्द BOD। ८ जलद BO। ९ तणो OE, तणौ D। १० लाभै D, लाभे E।

॥१९७॥ १ वडचड BO। २ खान E। ३ माँहि B। ४ अवुंध'''कोउ अवगाह BO'''न सकै को'''D, '''कोई न सकै अवगाहिं D। ५ पदिमिणि O, पदमणि D, पदमिण E। ६ पडो OE, पडौ D। ७'''तुह्म द्रडो'''O, आलष ' छडो ''D, आलभ छाँडो ए हठ आलि E।

॥१९८॥ १ बलतउ B, वलतो O, वलतौ D, बलता E। २ आलम BDE। ३ इण E। ४ कहै DE। ५'''किम'' BO, मुझ किम दरीया रहै D, हम आगै दरीया क्यु रहै E। ६'''मूवा ' वलाइ B, मूवा '''O,'''मूवा तौ'''D, सुभट मुयैका क्या पछताव E। ७ 'घणा आणउ वोलाइ B,'''घणा आणो O, '''घणा आणौ वेजाय D, दिल्लीका घर मी दरीयावौं E।

॥१९९॥ १'''एक लगि BODE। २ रहेसउ B, रहेस्यों O, रहिसैं D, रहैगे E। ३ विणि D। ४ पदमणि D, पदमिनी E। ५ मै E। ६ जावै E। ७ कीधो O, कीधौ D, चित्यो E। ८ अति BOD। ९ सुहड घणा गज खभ E।

॥२००॥ १ ' हीयइ BO,''' सहु संकाँणा हीयै D, लसकर हू संकाणा हीयै E। २ दरिया BODE। ३ माहिं ODE। ४ दीपइ BO, दीपै DE। ५ 'सीझै D, तिल-इक कारिज सरै न कोइ E। ६ हठोयउ BOE, हठयौ D। ७ आलम BDE। ८ रहै DE। A १९६। B २३१। O २३७। D २४३। E २७१।

आलिम[1] मनि[2] अति अमरस[3] घणउ[4], पार न पांमइ[5] दरीआ[6] तणउ[7] ।
खाण[8] पीण[9] निद्रा परिहरी,[10] [11]असपति मनि हूई चिंता खरी[11] ॥ २०१ ॥

॥ कवित्त ॥

[1]कोपि चडिउ[2] सुलिताँण[3], खांण[4] अर[5] पांन[6] न भावइ[7] ।
[8]ला इतमार ज नार[8] दार[9] पदमिणि[10] दिखलावइ[11] ।
[12]करि सिलांम वहु दुवाहि,[12] [13]खोदि वन जो इस ऊपरि[13] ।
[14]सिंघल दीपि सुमुद्र[14] [15]अछइ, पदमिणी घराघरि[15] ।
[16]हुसियार हू अरदास सुणि,[16] [17]एक अद्ध पेखाँ जहाँ[17] ।
[18]पेखवि समुद्र सासइ पडिउ,[18] [19]कुण खुदाइ खूदे कहाँ[19] ॥ २०२ ॥

सुभट[1] घणा सज कीधा वली,[2] नाव[3]-ईं-नाव घणी[4] सांकली[5] ।
इणि[6] परि आलिम[7] ऊभउ[8] कहइ,[9] "लाख तुरी [10]जाई ते लहइ[11] ॥ २०३ ॥
सिंघल[1] मेलइ[2] जे उंवराउ,[3] विवणउ[4] तेहनइ करुं पसाउ ।
माहि[5] जई जे[6] माझी[7] हणइ,[8] त्रिगुण[9] पसाउ[10] करुं[11] तेहनइ ॥ २०४ ॥

॥२०१॥ १ आलम BDE । २ मन D । ३ अमरप E । ४ घणो CE, घणौ D । ५ पामइ BD, पामै D, पँमै E । ६ दरीया BCDE । ७ तणौ D, तणो CE । ८ खाँणा C, खाँन DE । ९ आवं B, अनइ C, पाँन DE । १० परहरी BCD । ११ असपति हूई…BC, असपति…D,… चिंता धरी E ।

इसके पश्चात् BC और D प्रतियोंमें यह दोहा है—
B. चिंता निद्रा परिहरइ , चिंता लेजाइ सुख ।
C. ,, ,, परहरइ , ,, ,, ,, ।
D. ,, ,, पारहरै , ,, लेनाय ,, ।
B. चिंता अहनिशि तन दहइ, चिंता फेडइ मुख ॥
C. ,, अहिनिशि तन दहति, ,, ,, ,, ॥
D. ,, ,, ,, दहै , ,, फँडै फुक ॥
A और E प्रतियोंमें यह दोहा नहीं है ।

॥२०२॥ १ कोप BCE । २ चढ्यउ BD, चढ्यो C, चढ्यौ E । ३ सुलतान B, सुलतानि C, सुलताँन E । ४ खान B, खाण C, खाँन DE । ५ अरु DE । ६ पान BC । ७ भावै DE । ८ 'अवे याराँ! D करो निहाल BC, ‥करू D, तिसकु करहु निहाल E । ९ जो नार BC, जु नार D, जु पै नार E । १० पदमणि D, पदमिन E । ११ दिखलावै DE । १२ 'सलाम'' धुंउ चाहि B,‥ सलाँम वहु धुं C, सलाँम हुं D, सुनत हुकम सव सूर E । १३ खोदि जल करो दरीया दूर B, खोदि जल करो दरीया दूरि C, खोदि जल करि दरियादर D, प्रवल प्रगटे सूरातन E । १४ शघल° D, उलटे दल असमाँन E । १५ अछे…C, अछै पदमणी D, मनहुँ वन वन सिर रावन E । १६ हू ° B, हू अरदासि CD, हुलसे सुभट करि करि हलाँ E । १७ '' अध न पेखद जिहाँ BC, '' अध न पेखै जिहाँ D, संमुँद्र तट आए जव्वहि C । १८ ' सासउ पडइ B, साँमै पडौ D, दरीयव छैल विपवि दहल E । १९ खोदइ BC, खोदै जिहाँ D, तन गुमान छूटहि तवहि E ।

॥२०३॥ १ शुभट B । २ वली D । ३ नावै° D, नाव° E । ४ घाली E । ५ शाकली B । ६ इण परि BE एण° C । ७ आलम BDE । ८ ऊभौ C, ऊभाँ D, ऊभा E । ९ कहै D । १० जायइ B, जाय D, जाअे E । ११ लहै DE । A १९९ । B २३५ । C २४१ । D २४८ । E २७८ ।

॥२०४॥ १ सगल B, शिंघल DE । २ भेले C, मेलै DE । ३ उमरउं B, ऊवरो C, उमराव DE । ४ विमण पसाव तेहनइ करउ B, विमणो पसाउ तेह नइ करो C, विमण पसाव तेहनै कराव D, सुभट लहै ते दूण पसाव E । ५ माहे BD, माहिँ C । ६ जाइ BCD । ७-७ माझी नइ BC, माझीनै D पकडै E । ८ हणै D, सिरदार E । ९ तिगुण BC, तिवण E । १० पसाव D । ११ सही BCD । लहै E । १२ ते लहइ BC, तनु तणै D । झुंझार E ।

[1]ऐसी आणइ जे पदमिणी,[1] [2]घर वहुली नउ हुइ ते धणी[2] ।
लालच[3] लोभ[4] दिखाडइ[5] घणा[6], [7]मन्न मनावइ सुभटाँ तणाँ[7] ॥ २०५ ॥
[1]पदमिणि नउ अधिकउ अभिलाष,[1] [2]सज्ज कीया सुभटाँ नव लाख[2] ।
सुभट सहू मनि शंका करइँ,[3] [4]आलिमथी चलि अधिका डरइँ[4] ॥ २०६ ॥
वाघ[1] अनइ[2] दो[3] तडिनउ न्याइ,[4] लसकरीआँ[5] नइ पुहतउ[7] आइ[8] ।
जिणि[9]परि तिणि[10]परि [11]मरिवउ सही, सुभट सहू आव्या[12] सांमही[13] ॥ २०७ ॥
[1]सुभटे छानउ[2] तेड्यउ[3] व्यास,[4] "रे पापी ! तइँ[5] घालिउ[6] पास ।
कुमति किसी तइँ कीधी एह, [7]सुभट सहूनउ कीधउ छेह[7] ॥ २०८ ॥
[1]हिव तेइँ कोई हुसी उपाइ[1], जिणथी[2] आलिम[3] निज[4] घरि जाइ" ।[5]
व्यास[6] कहइ-[7] "निसुणउ[8] वीनती,[9] सहुइ[10] सुभट होवउ[11] इक[12] मती ॥ २०९ ॥

॥२०५॥ १ पइसी'' B, पइसी पदमणी C, पैसी आणैजे पदमणी D, आँणीछै मुझनें E। २ होइते'''B, वोहलानो C, वहुलानो होवै धणी D, तेह करूँ दक्षिण दिस धणी E। ३ लालिच BC। ४ एम E। ५ दिखाडै D, पैसारे E। ६ घणे E। ७ मान BC, मंत्र न मानै'''D, मन नवि मानै सुहडाँ तणै E।

॥२०६॥ १ पदमणि कउ B, पदिमिणिकी अधिको C, पदमणिनो अधिकौ D, पातिसाह मनि पदमिणि चाह E। २ सुज कीधा सुभट BC, सुभट सजे कीया D, सुहड विचारे निज कुल राह E। ३ ''सका'''BC,'' सक्या करै D, समुद्र थकी मृत सका धरै E। ४ आलमथीं मनि' 'B,' मनि ' C, आलमथी मनि टरै D, आलमथी पणि 'डरै E।

॥२०७॥ १ वाघ D। २ अनिइ C, अनै DE। ३ तड नउ B, दोतडिनो CE, दोतडिनै D। ४ न्याय E। ५ लसकरीयाँ BCDE। ६ °नै D, °ने E। ७ पुहूतो C, पहुतो DE। ८ आय D। ९-१० जिण° तिण° BE। ११ मरीवो C, मरिवो D। १२ धाया BCD। १३ सामुही B। ११-१२ यह अंतिम पाद E प्रतिमें नहीं है।

॥२०८॥ १ सुभटइ C। २ छाँनो CD। ३ तेड्यो C, तेडौ D,। ४ व्यास D। ५ तै D। ६ घाल्यो C, घाल्यौ D। ७ कीधौ C। ८ सफल सुभटनी कीधी छेह D, यह चोंपई B प्रतिमें नहीं है।
इस चोपईके पश्चात् BCD प्रतियोंमें निम्न लिखित दोहे हैं–

B वचन विमासी वोलीए, ए पडित नउ न्याइ।
C ,, विमासी वोलीइ , ए पडितनो न्याय।
D वचन विमासी वोलीयो, ,, ,, ,, ,,।
B अविमास्या कार्य करइ, मूरीख ते नर थाइ॥
C. अणविमासी कार्य जे कहि, ,, ,, ,, थाय॥
D अविमासी कारिज करै, ,, ,, ,, थाइ॥
B लघु बालक पुहवी धणी , ए विड्ड एक सुहाउ।
C. ,, ,, ,, ,, ,, ,, वेड्ड ,, ,,।
D ,, ,, पोहोवी ,, , ,, विड्ड ,, सहाउ।
B रीढ न छडइ आपणी, भावइ ते घर जाउ॥
C. रीढ ,, छाडि ,, , ,, ,, घरि ,,॥
D. रढ नवि छडै ,, , भावै जौ घर ,,॥
A और E प्रतियोंमें ये दोहे नहीं हैं।

॥२०९॥ १ ''ते होइ' B, ते ' होइ उपाउ C, हिव एहवो कोइ करो उपाइ E। २ जिणि D, जिण परि E। ३ आलम BDE। ४ फिरि C, पाछो D। ५ जाय D। ६ व्यासि C, व्यास D। ७ कहै DE। ८ निसुणो CE, निसुणौ D। ९ वीनती E। १० सहू BCDE। ११ हुवउ D, हूवो C, हौवो D, होवो E। १२ एक BCDE। A २०५। B २४४। C २४८। D २४८। E २९३॥

हिकमति[1] हेक[2] हलावाँ[3] नवी, [4]व्यासइँ साची मती[5] सीखवी ।
सहस एक साकतिसुं[6] तुरी, आधा[6] आणउ[7] गज-पाखरी ॥ २१० ॥
पहिरावउ[1] सोवन सिणगार[2], कोडि एक आणउ[3] दीनार ।
नाव भरावउ[4] वहु नव नवी, पट्टकूल वहु ऊपरि ठवी ॥ २११ ॥
कंचण[1]-कलस घणा सिरि[2] ठवउ[3], अण दीठा[4] नर इम[5] सीखवउ[6] ।
'सिंघल[7] पति मेल्हउ[8] छइ[9] डंड[10], [11]आलिम ! अवकइ[12] मुझ नइ[13] छंडि[14] ॥ २१२ ॥
नाक[1]-नमणि[2] मइँ[3] कीधी एह, हुं[4] छुं[5] तुम्हनी[6] पगनी खेह' ।
ऍम[7] कही राखउ[8] अभिमाँन[9], जिम [10]वाहुडि जायइ[11] सुलिताँन[12]" ॥ २१३ ॥
अवर उपाइ[1] न दीसइ[2] कोइ[3], हरषित[4] सुभट[5] हूआ[6] सहु कोइ ।
रातो[7]-राति कीया[8] परपंच[9], छांना[10] मेल्या[11] सगला संच ॥ २१४ ॥
आलिम[1] साहि न जाणइ[2] वाति[3], आविउ[4] डंड[5] हूउ[6] परभात[7] ।
जागिउ[8] आलिम[9] जगती[10]-धणी, मन माहे थी[11] चिंता घणी ॥ २१५ ॥
आगलि[1] वाविउ वाहणि जिसइ[1], जलधि[2] माहि ते दीठा तिसइ[2] ।
साहिव कहइ "किसुं छइ एह?" तव ते[4] व्यास कहइ ससनेह[4] ॥ २१६ ॥

॥ २१० ॥ १ हीकमति BO, हुकमति D । २ एक BODE । ३ चलावउ B, चलावो O, चलाँउ D, चलावी E । ४ व्यासइ BO, व्यासे D, व्यासै E । ५ मुली D । ६ °स्थु B, सागतिस्यु O, साखतिसुं, °सु E । ६ पाँचसइ BO, पाँचसह BO, पाँचसै DE । ७ आणो O, आणौ D ऑणो E ।

॥ २११ ॥ १ पहिरावो OE, पहिरवौ D । २ शोवर शिणगार B, सिंणगार E । ३ आणो O, ऑणो DE । ४ भरावी OE, भरावौ D ।

॥ २१२ ॥ १ कंचन E । २ शिरि B, सिर E । ३ ठके O, ठवौ DE । ४ जाण्याँ BO, जाँण्या D, सिंधा E । ५ °नइ BO, नै DE । ६ शीखवउ B, सीखवो O, सीखवौ DE । ७ सिंहल° BO, सीघल° D, सिंघल° E । ८ मेल्ह B, मेल्यो O, मेल्हे D, मूकी E । ९ छै D, ए E । १० दड BOD, पेसे E । ११ आलम DE । १२ अवकइ B, अवकि O, अबकै D, मुझकुं E । १३ मुझनइं BO, °नै D, म दियो E । १४ रेस E ।

॥ २१३ ॥ १ नाकि O । २ नमण O । ३ मइ BO, मै DE । ४ हू OD । ५ छउं BO, छु DE । ६ तुमारा O, आलम DE । ७ इम O । ८ राखो O, राखौ D, राख्यौ E । ९ अभिमान B । १० वाहुडि B । ११ जाइ BO, जाए D, जायै E । १२ सुलताण B, सुलताँण O, सुलताँन E ।

॥ २१४ ॥ १ उपाव B, उपाय ODE । २ दीसै DE । ३ कोय E । ४, ५, ६ साँभलि रीझ्या मनि E । ७ रातौ-राति D । ८ करी E । ९ प्रपंच B । १० छाना OD । ११ मेल्हा D ।

॥ २१५ ॥ १ आलिमसाह BO, आलमसाहि D । २ जाणइ BO, जाँणै D । ३ वात D । ४ आव्या BO, आया D । ५ दड B । ६ हूयो O, हुवै D । ७ परभाति D । ८ जाग्यो O, जागो D । ९ आलम D । १० जगनो OD । ११ °माहि O, °माहे D । यह चोपई E प्रतिमें नहीं है A २११ । B २५० । O २५४ । D २६४ ॥

॥ २१६ ॥ १ वाहिरि A, . आव्या जिसइँ B, .वाहण O, आया वाहण जिसै D, तितरे प्रवहण आया तेह E । २ दरीया ..तिसइँ B, दरीया माहे दीठा तेह D, दरीया माहिं दीठा तेह E । ३ साहवजी कहइँ किस्यु छइ एह B, साहवजी कहि किसु छइ एह O, साहबजी'र कहै किसु एह D, साह वजीर कहै क्या एह E । .४ वलतउ व्यास...B, वलतो.. O, वलतौ व्यास कहै...D, वलता.. कहै संसनेह E ।

"साँमि[1] सकइ[2] तउ[3] सिंघल[4] तणी, परिघल[5] आवी पहिरामणी[5]" ।
झलकइँ[6] तोरण चूनी चंग, ऊपरि कंचण[7]-कलस उतंग ॥ २१७ ॥

फरहर नेजा धज फरहरइँ[1], उदधि[2] माहि[3] [4]आवइँ इणि परइँ[5] ।
आलिम[6] मनि[7] हूउ[8] आणंद, देखी प्रवहण-वाहण[9]-वृंद ॥ २१८ ॥

ते पिण[1] आव्या[2] वाहरि[3] तरी[3], [4]साकति [5]सगली आगलि करी[6] ।
असि[7] नाँखी नइ[8] आव्या[9] धाइ[10], पातिसाहि[11] नइ[12] लागा[13] पाइ[14] ॥ २१९ ॥

डंड-डोर हय-हाथी घणा[1], सेवक[2] आव्या सिंघल[3] तणा[4] ।
विनय[5] करी भापइ[6] वीनती[7], "[8]तुं मोटउ छइ डिल्लीपती[8] ॥ २२० ॥

सिंघल[1]पति तुम्ह[2] पगनी खेह, तिणि[3] महिमाँनी[4] मेल्ही[5] एह ।
[6]ए चूनउ होसी तुम्ह पाँनि[6], मया करी हिवकइ[7] दिउ माँन ॥ २२१ ॥

"[1]तुं मोटउ जाणे जगदीस[1], नमताँसुं[2] न[3] करउ[3] हिव[3] रीस" ।
विनय[4]-[5]वचन राजा[6] रीझीउ[7], सिंघलपति[8] नइ[9] सिरिपाउ[10] दीउ[11] ॥ २२२ ॥

पहिराव्या[1] सगला परधाँन,[2] मोटाँ नइ[3] परि दीधुं[4] माँन[5] ।
सिंघलपति[6] [7]युं जे मेल्हउ[8], ते सुभटाँ नइ[9] विहची [10]दीउ ॥ २२३ ॥

॥२१७॥ १ स्वामि BOE, सामि D । २ सकइँ B, सकै, DE । ३ तो BCDE । ४ सिंहल BC, सिघल धणी DE । ५ ..पहिरावणी BD, मेल्ही पेस एह हजरत भणी E । ६ झलकइ BC, झलकत D, झलकै E । ७ कचन D ।

॥२१८॥ १ फरहरै D, फरहरें E । दरिया BCD, सागर E । ३ विचि D, विचि E । ४ आवइ BC, आवै DE । ५ °परि C, °परै DE । ६ आलम DE । ७ मन E । ८ हूवउ B । हुवा C, हुयौ E । ९ वाहण-वृंद D ।

॥२१९॥ १ परि B, पणि CD, तितरै E । २ आया DE । ३ बहिरि C, वाहण तिरी D, वाहण तिरी E । ४ साँकलि B, साखति D, सागत E । ५ शगली B, सघली E । ६ धरी E । ७ अस B, खडग CD । ८ नाखि नइ B, नाखइ नइ C, नाखिने D, नाँखिनै E । ९ आया DE । १० धाय D । ११ पातसाह BC, पातिसाह E । १२ नइँ B, नै D, के E । १३ लागइँ BC । १४ पाय BE ।

॥२२०॥ १ घणाँ BCD । २ आव्याँ B, आया D । ३ सिंहल BC, सिंघल D । ४ तणाँ B । ५ बिनै D । ६ भापइँ B, भापै D । ७ बीनती D । ८ तउ (तूँ C) छइ मोटो BC, तुम्ह छौ मोटा साहिब दिलीपती D, तुम्ह हो मोटा दिलीपती E । प्रथम अर्द्धाली E प्रतिमें नहीं है ।

॥२२१॥ १ संगल° B, संघल° C, सीघल° D, सिघल° E । २ तुम C । ३ तिण D । ४ महिमानी B । ५ वोली BC, भेजी DE । ६ ''पान B, हूँ चूनो ''तुम पान C, ''तुम पाँन D, यहु चूना हैगा तुम पाँन E । ७ °धो मान B, हिवकि धो मान C, हिवै दौ मुझि मान D, लीजै हग माँन E ।
A २१७ । B २५६ । C २६० । D २७० । E ३०७ ३०८ ।

॥२२२॥ १ मोटो ° C, तू मोटो''' D, तुम हो दुनियाँ सिर जगदीस E । २ °स्यु B, नमतासु D, सुं CE । ३ हिव केही B, हिवि केही C, हिवै केही D । ४ बिनै D । ५ बचन D । ६ आलम DE । ७ रजीयो BC, रजीयौ D, रीझीयो E । ८-९ °ना A, सिंहल पति नइँ B, सिंहल पति ''C, सिघलजी नै D, सिंघल हु E । १० सिरिपा A, सिरपाउ B, सिरपाऊ C, सिरपाव D, सिरपावज E । ११ दीयो CE, दीयौ D ।

॥२२३॥ १ पहिराया DE । २ परधान BCD । ३ नाँ A, नी BCDE । ४ दीधउ B । ५ मान BCD । ६ सिंहल° BC, सीघल D, सिंघल E । ७ जेइ जे B, जेइ जि C, जे जे DE । ८ मेलहउ A, मेल्हीयो BCDE । ९ °नाँ A, °नइं B, °नै D, सुहडाँने E । १० दीउ A, दीयो BCDE ।

[पाँचमो खण्ड]

॥ चोपई ॥

असिपति आविउ[1] निज पुरि[2] जिसइ[3], ठोडि-ठोडि[4] नर भाषइँ[5] तिसइ[6] ।
पदमिणि[7] नारि [8]पखइँ पतिसाह, [9]किम [10]आविउ [11]विण कीइ[12] विवाह[13] ॥ २२८ ॥
आलिमसाहि[1] [2]हुतउ आकरउ[3], [4]पिण हिव[5] सरल हूउ[6] पाधरउ[7] ।
विण[8] परणी[9] आविउ[10] पदमिणी[11], ठोडि-ठोडि[12] भाषइँ[13] काँमिणी[14] ॥ २२९ ॥
आलिम[1] आविउ[2] निज आवासि[3], लेइ[4] शस्त्र महि गयउ खवास[4] ।
माहि[5] मेल्हि ते[6] वलीउ[7] जिसइ[8], बडकणि[9] बीबी वोलइ[10] तिसइ[11] ॥ २३० ॥
"पातिसाहि[1] परणी पदमिणी[2], ते[3] दिखलावउ[4] अब हम भणी[5] ।
जात्तकराँ[6] जोवाँ[7] दीदार, निजरि[8] निहालाँ[9] हम[10] इक[11] वार ॥ २३१ ॥
जसु[1] घरि पदमिणि[2] नही दोइ च्यार[3], सगलउ[4] सूनउ तसु संसार[4] ।
तेह[5] तणी सुलिताँणी किसी[5]? जेहसुं पदमिणि न रमइ हसी[6] ॥ २३२ ॥
पातिसाहि[1] हिव[2] पदमिणि[3] पखे[4], ठालउ[5] आयउ[6] हुइ[7] घरि रखे" ।
बीबी विलखउ[8] कीउ[9] खवास[10], आवी[11] पुहतउ[12] आलिम[13] पासि[14] ॥ २३३ ॥

॥ २२८ ॥ १ आव्यउ B, आयो C, आयौ D, आया E । २ निज तखतइँ BDE, निज तखतइ C । ३ जिसइँ B, तिसइ C, तिसै D, जिसै E । ४ ठउडि-ठउडि BC, ठामि ठामि D, ठोडि-ठोडि E । ५ भाषइ C, भाषै DE । ६ तिसइँ BE, जिसइ C, इसइ D । ७ पदिमिणि C, पदमणि D, पदमिणि E । ८ पखइ C, पखै D, सरिसै E । ९ क्यु E । १० आयउ B, आयो C, आयौ D, आए E । ११ विणि D, विनु E । १२ कीयइ BC, कीया D, कीधै E । १३ ब्याह E ।

॥ २२९ ॥ १ आलिमसाह B, आलमसाह CE, आलमसाहि D । २ हुतो C, हुतौ D, हुते E । ३ आकरो C, आकरौ D, आकरे E । ४ पिण C, पणि DE । ५ हिवि C, हिवै D, अबकै E । ६ हवौ C, हुवौ D, हुयै E । ७ पाधरो C, पाधरौ D, पाधरे E । ८ विण D, विनु E । ९ परण्या E । १० आव्यउ B, आव्यो C, आयौ D, आयै E । ११ पदमणी D, पदमिनी E । १२ ठउडि-ठउडि B, ठोडि-ठोडि C, ठामि-ठामि D, ठाँम-ठाँम E । १३ भाषि C, भाषै DE । १४ कामिणी B, काँमनी D, काँमनी E ।

॥ २३० ॥ १ आलम BDE । २ आव्यउ B, आव्यो C, आयौ D, पहुता E । ३ आवास BE, आव्यासि C । ४ शस्त्र लेई गयो माहि खवास B, सस्त्र लेई गयो माँहि खवास C, ससत्र लेइ गयो माहे खवास D, खड्ग छुडायो आइ खवास E । ५ माहे D । ६ °नइ BE, मेल्हि नइ C, मुकीनै D । ७ वलीयउ B, वलीयो C, वलीयो D, वलियौ E । ८ जिसइँ B । ९ वडकण BCD, वडकत E । १० वोलै D, वोली E । ११ तिसइँ B, तिसै DE ।

॥ २३१ ॥ १ पतिसाह CE । २ पदमणी D । ३ ति B, सो E । ४ दिखलावो CE । ५ तणी D । ६ जातिकरा C, जातकरा D, जातिकराँ E । ७ देखाँ BCDE । ८ नजरि B, नजर C । ९ निहालउ B, निहालाँ CDE । १० टुक BCDE । ११ एक वार BCD ।

॥ २३२ ॥ १ जस B । २ पदमणि D, पदमिन E । ३ दोइ-च्यारि BCD, दुइ च्यार E । ४ सब ही ऊजड तसु संसार BC, अब ही ऊजड तसु घर बार C, है तिसका कैसा अवतार D । ५ °सुलताणी ° B, अब तेरी पतिसाही किसी DE । ६ जेहस्यु° रमइँ B, जेहस्यु°° C, जेहस्यो पदमणि D, जे पदमनि सुन-सुन में हसी E ।

॥ २३३ ॥ १ पातसाह BCE, पातिसाह D । २ अवे BE, अव C, आए D । ३ पदमणि D । ४ पखइ C, पखै D । ५ वालो BCDE । ६ आयो BCDE । ७ होइ BCDE । ८ विलखो CDE । ९ कीयो BCDE । १० खवास C । ११ आवि D । १२ पहुतौ D । १३ आलम BDE । १४ पास E । A २२८ । B २६७ । C २७१ । D २८२ । E ३२१ ।

[1]वात सहू सविवेकी कही[1], असपति[2] रीस हीया[3] महि ग्रही[4] ।
आलिम[5] मंडिउं[6] अधिक अभ्यास[7], '[8]ततखिणि तेडिउं वलि ते व्यास[8] ॥ २३४ ॥
"[1]सिंघलदीप[1] [2]पखे पदमिणी[3], [4]वले किहाँ छइ कहि मुझ भणी[4]" ।
[5]व्यास कहइ- "संभलि सुलिताँण[5], [6]इक वलि पदमिणिनुं अहिठाँण[6] ॥ २३५ ॥
चिंहु[1] दिसि[2] चविउं[3] गढ चीतोड[4], वींझाचल[5] [6]महि विसमइ[7] ठोडि[8] ।
रतनसेन राजा रंढाल[9], [10]कलह करूर महा कंधाल[10] ॥ २३६ ॥
तसु घरि नारि अछइ[1] पदमिणी[2], [3]सेषनाग सिरि जिम हुइ मणी[3] ।
[4]लेई न सकइ कोई तेह[4], तिणि[5] कारणि सुं[6] [7]भाखुं '[8]एह" ॥ २३७ ॥
साह[1] कहइ[2]-"संभलि[3] हो[4] वंभ,[5] एवडुउ[6] फोकट[7] कीउं[8] आरंभ[9] ।
बीजी[10] वात सहू हिव तिजउं[10], गढ चीतोड[11] तणउं[12] सुं[13] गजउं[14] ॥ २३८
ऊभा-[1]ऊभि लीउं[2] पदमिणी, [3]जीवतउ पकडुं गढनउं धणी[3]" ।
[4]सबल सेन ले आलिम चडिउं[4], [5]धर धूजी वासिग धडहडिउं[5] ॥ २३९ ॥

॥ २३४ ॥ इसके पूर्व निम्नलिखित चोपई BODE प्रतियोंमें क्षेपक रूपमें मिलती है–

B "पातिसाह जीवउं कोडि वरीस , बीबी हासा मिसि करि रीस ।
C पातसाह जीवो „ „ , „ „ „ कीधी „ ।
D पातिसाहि जीवौ „ वरीस , „ हासौं „ „ „ ।
E हजरत जीवो „ वरीस , „, हमसु कीन्ही „ ।
B हासा मिसि मुझ कहीया घणाँ , नाजक बोल पदमिणी तणाँ ।
C „ „ „ „ घणा , नाजिक „ पदमणि तणा ।
D „ मिस मुखि „ „ , नजक „ पदमिणी तणौं ।
E „ मिसि घणा कथा „ , मोसा पदमिन नारी तणा ।

१ वात 'सविवेकी D, नगर वात पणि सगली लही E । २ असुपति B । ३ हीया माहि BE, हीया माँहि C, °मै D । ४ गृही BODE । ५ आलम DE । ६ माड्यउ B, माड्यो C, माडौ D, माँड्यो E । ७ प्रयास E । ८ ततखिण तेटाव्यो ते व्यास B, ततिखिण तेटाव्यो ते व्यास C, ततखिण तेडायो ते व्यास D, तेडायो वलि राघव-व्यास E ।

सूचनिका- इसके नीचे एक कवित है, देखो स० २४० ।

॥ २३५ ॥ १ सिंघल° BOD, सींवल E । २ पखइ BOD, पखें E । ३ पदमिनी E । ४ बहुरि किहाँ वे कहि मुझ भणी BD, वहू C, कहि वै व्यास कहाँ तें सुनी E । ५°° भणइँ° 'सुलताण B,°°°भणइँ°°°C, जीवै हजरत इस दुनियाँन E । ६ एक वले पदमिणि अहि ठाण BD, एक वले पदमणि अहि ठाण C, है पदमिन एक हींदूस्थान E ।

॥ २३६ ॥ १ चिहू C, चिहु E । २ चिक E । ३ चावो CE । ४ चीत्रोड BOD । ५ वीझाचल A, वींझाचल B । ६ माँहि C, मै E । ७ विसमी BODE । ८ ठउडि B, ठोट E । ९ रिणधीर E । १० ° कुहाल BOD, रजवट सिरै चढावै नीर E ।

॥ २३७ ॥ १ अछै E । २ पदमिनी E । ३ ° सोहइ जिम°°°BD, सेप-सीस जिम सोहइ मणी C, रजवट सिरै चढावै नीर E । ४ तिहाँ BOD, ले न सकीजै किण ही तिहाँ E । ५ तिण BDE । ६ °स्युं BODE । ७ भापउ BD, भापों C, कहीयै E । ८ जिहाँ BOB ।

॥ २३८ ॥ १ साहि D । २ कहइँ B, कहि C, कहै DE । ३ साँमलि DE । ४ वे E । ५ व्यास E । ६ एवड A, एवटो C, पहिली E । ७ फोगट E । ८ कीयउं B, कीयो CE । ९ प्रयास E । ६-८ यह पाद D प्रतिमें नहीं है । १०°°°अब तजउं BOD, अब दूजी सही वातो तजो E । ११ चित्रोडि BO (?) १२ तणो CE, तणौ D । १३ सु A, स्यु BD, क्या D । १४ गजो CD, गजौ E ।

॥ २३९ ॥ १ ऊभाँ ऊभ D, ऊभा ऊभा E । २ लेवउ B, लेऊ C, लेढ (?) D, ल्यावुं E । ३ जीवत A, .. पकडउं B, जीवतो पकडो गढनो धणी C, जीवतो गढनौ °°D, पकटि जीवतो गढको धणी E । ४-५ के स्थान पर यह अर्द्धाली क्षेपक है - दिन दस-पाँच रही ते करी BODE, सबल सनाखति (सनापति B) सावधि (सावति B) करी BODE ।

॥ कवित्त ॥

सलहदार हथीयार, लेइ आगलि अवधारी ।
सभाली सर-सेलि, माहि[1] मेजी[2] भंडारी ।
बीबी तव पूछीउ[3], "कहाँ पदमिणि[4] तुम्हि[5] आँणी[6] ।
च्यारि-पंच[7] नही पदमिणि[8], किसी तिसकी सुलिताँणी[9] ।
तेडावि व्यास[10] तत्तखिणिहि[11], पूछइ[12] वात विगति बहू[12] ।
सिंघलाँ[13] टालि[14] जिणि[15] ठाणि[16] हइ[17], कहाँ[18] राघव [19]पदमिणि [20]कहू ॥ २४० ॥

हसि बोलइ[1] सुलताँण[2], [3]माण [4]धरि मूछ[5] मरोडी[6] ।
"रतनसेन[7] [8]करुं बंदि[9], चित्रगढ[10] [11]भाजुं त्रोडी[12] ।
पलाण्याँ[13] पतिसाह,[14] [15]जलय-थल बहु अकुलाँणइ[15] ।
स्त्रग्गि[16] इंद्र खलभलिउ[17], पड्या[18] दह-[19]देस भगाँणइ[20] ।
[21]फणिवइ पयालि वासुगि डुड्यउ[21], [22]कहइ साहि विग्रह करुं[22] ।
[23]मारुं सदेसं हिंदूआण कउ[23], [24]एक-एक जीवित धरुं[24] ॥ २४१ ॥

इसके पश्चात् BODE प्रतियोंमें यह अर्द्धाली क्षेपक रूपमें है –
B मीर-मुगल वाहुडि सज थया , आधी राति दमाँमा हुया ।
C ,, मूंगल वहुढि सजि ,, , ,, ,, ,, हूआ ।
D ,, जोधा वाहुडि जस कीया , ,, ,, ,, दीया ।
E ,, ,, ,, ,, कीया , ,, ,, ,, ,, ।
४-४···चड्यउ B,·· चड्यो C, सेनि ले आलम चढौ D,· सेनसु आलम चढ्यो E । ५-५··· धडहड्यउ B,·· धडहड्यो C,· वासिग धडहड्यौ D, वासिंग धडहड्यो E । A २३४ । B २७७ । C २७९ । D २९२ । E ३३२ ।

॥ २४० ॥ सूचना– यह कवित्त BOD प्रतियोंमें चोपई संख्या २३४ के नीचे दिया है और E प्रतिमें नहीं है । १ मॉहि BOD । २ भेज्यउ BD, भेज्यो C । ३ पूछीयो BOD । ४ पदमणी D । ५ तुम C । ६ आणी B । ७ दोइ-च्यारि BOD । ८ पदमणी D । ९ सुलतानी B, सुलताँनी CD । १० व्यास D । ११ ततखिणई B, तितखिणइ CD । १२ पूछै वात विगती बहु D । १३ सिंहलि B, सिंहल C, सीघल D । १४ वगइरि BC, विगर D । १५ जिहि BOD । १६ ठउरि B, ठोर CD । १७ हय D । १८ किहाँ BC, किहा D । १९ पदमिणि C, पदमणि D । २० कहो C, कहु D । BOD प्रतियोंमें यह कवित्त चोपई सख्या २३४ के नीचे दिया है । E प्रतिमें यह नही है ।

॥ २४१ ॥ १ बोलै C, बोल्यो D । २ सुलताण B, सुलताणि C, सुरताँण D, सुलताँन E । ३–६ कहाँ राघव ! पदमिणि कहु A । ३ मॉण C, मॉन E । ७–९ रतनसेंन गढ चित्रकोट A । ७ रतनसैंनि D । ८ करों B, कु E । ९ वदि D, पकडि E । १०–१२ गहिलोत राइ पहु A । १० चीत्रगढ D । ११ भाजउ B, भाजौं C, नाखहु E । १२ तोडी DE । १३–१४ पलॉणीया अलावदी A, पलाण्या पतिसाहि D, हय कपे चक च्यार E । १५ जल-थल अकुलॉणइ A, जल-थल वहू अकुलाणे C, जलय-थल बहु अकुलॉणै D, थरकि जलनिधि अकुलॉणौ E । १६ सरग BOD, सरगि E । १७ खलभली BOD, खलभल्यो E । १८ पड्यउ B, पड्यो CE, पडी E । १९ दस-देस BC, देस-देस D, दस दिसिहि E । २० भंगाणै D, भगाणो E । २१...वासिग. B,वासिग डर्‌यो C, फण वय पयाल वासिग डर्‌यो D, फरमान देस देसहि फटे E । २२. .करउं B,.. करों C, कहै...विग्रह. C, सब दुनियाँ असी सुनी E । २३ मारउ B. हिंदूवाण...B, मारू देस हिंदवाणको C, घो पडु देस हिंदवाण सव D, मारि हैं रतन हींदुऑन पति E । २४ कोइ कोइ जीवतउ धरउ B, कोई-कोई जीवतो धरू C, कोइक हु जीवतो धरु D, साहिं पकडि है पदमिनी E । BODE प्रतियोंमें यह चोपई संख्या २३९ के नीचे दिया है । A २३६, B २७८, C २८०, D २९३, E ३३३ ।

[छठो खण्ड]

गढ चीतोड[१] तणी तलहटी, आविउ[१२] असिपति इणि परि हठी[२] ।
लाख सतावीस लसकर लार, [३]हथीयारे लागा हथियार[३] ॥ २४२ ॥
मइगल[१] सबल [२]करइँ सारसी, हय हीसारव[३] भट[४] पारसी ।
आतसबाजी अधिक[५] अगाज[६], गोला-नालि रह्या वहु गाजि ॥ २४३ ॥
दह दिसि[१] मंड्या[२] वहु दुमदमा[३], [४]सुभट सहू दीसइँ ऊजमा[४] ।
[५]ढलकइँ चिहुँ दिसि वहु ढीकुली[५], [६]न सकइ कोइ पइसी नीकली[६] ॥ २४४ ॥
डुमकि[१] दुमामा घूमइँ घणा[१], [२]वाजइ ढोल घण-सॉंघिणा[२] ।
भभकइ[३] भुंगल[४] भेरी भूर[५], रणकइ[६] रोस भरया[७] रण-तूर[८] ॥ २४५ ॥
हुइ[१] सरणाई सिंधू साद, परवत[३] माहि[४] पडइँ[५] पडसाद[६] ।
हठीउ[७] आलिम[८] साहि अभंग[९], जुद्ध[१०] तणा करि जाँणइ जंग[१०] ॥ २४६ ॥
रतनसैन[१] पिण[२] रोसइँ[३] चडिउ[४], दीठउ[५] आलिम[६] आवी पडिउ[७] ।
सुभट सैंन सज कीधी[८] सहू[९], वलवँत वोलइ[१०] वहसे वहू[११] ॥ २४७ ॥
"[१]साहि भलइँ तुं आविउ सही[१], [२]पिणि हिव नासि म जाए वही[२] ।
[३]नासंताँ छइ[४] नर नइ[५] खोडि[६], हुं[७] ठावउ[८] छुं[९] इण[१०] हिजि ठोडि[११] ॥ २४८ ॥

॥ २४२ ॥ १ चीत्रोड BC, चीतौड E । २ अनुक्रमि आया असपति हठी B, अनुक्रमि आयो असपति...C, अनुक्रमि आयौ असपति हठी D, अनुक्रमि आयौ आलम हठी E । ३ हथियारेँ दीसइ...B, . दीसइ हथीयार C, दीसै ..D, डेरा दीया अति विस्तार E ।

॥ २४३ ॥ १ मईगल B, मयगल D, मेंगल E । २ करैं D, करें E । ३ हींसारव B, हीसै D, हींसें E । ४ मुगल BCD, मूँगल E । ५ अति E । ६ अगास D । ७ अग्राज E ।

॥ २४४ ॥ १ दिस E । २ माँड्याँ C, माड्याँ E । ३ दमदमा BCDE । ४ सुभट्या सहू दीसइ ऊजमा B, . दीसइँ ऊजमा C, सहु दीसै उजमा D, माँडी नालि वलि चिहुयै गमा E । ५ ढलकइ विंहु दिसि वहु ढींकुली B, ढलकइ विहु दिसि वहु ढीकली C, ढलकै ढीकली D, ढलकै ठाँम ठाँम ढीकँली E । ६. .नीकली BCD, न सकै को पैसी नीकली E ।

॥ २४५ ॥ १ दमाँमा घूमई B, दुमकइ दमाँमा धूमई C, दमाँमा घूमै D, धैसँ नगरे धूजे धरा E । २ घणा हू घणा BC, वाजै ढोल नही काइ मणा D, गूँज्या गयण अनै गिरवराँ E । ३ भभकै DE । ४ मूगल B, मूगल C, मुगल DE । ५ भूरि D । ६ रणकइँ B, रणकै DE । ७-८ भरायइ तूर BC, भराया तूरि D, भराणाँ तूर E ।

॥ २४६ ॥ १ सुर BCDE । २ सीधू D, सींधू E । ३ परवति B । ४ माँहि BC । ५ पडइ B, पडै DE । ६ परसाद A । ७ हठीयो BCD, हठीयौ E । ८ आलमसाह BC, आलमसाहि DE । ९ अलाव (अलाव) E । १० जुध .जाणइ B, जोधि.. जाणइ C, जुध जुध्या करि जाँणै जंग D, गढ भाँजण भनि चिंतें दाव E ।

॥ २४७ ॥ १ रतनसेनि BD । २ पणि BCDE । ३ रोसइ B, रोसि C, रोसै D, रोसें E । ४ चड्यउ B, चड्यो C, चढ्यौ D, चढ्यौ E । ५ दीठो CE, दीठौ D । ६ आलम CD । ७ पड्यउ BC, पडौ D, अड्यो E । ८ तेडाया E । ९ वहू BCE, सहु D । १० वोलै D, आया E । ११ सहू E ।

A २४२ । B २८४ । C २८५ । D ७९९ । E ३३९ ।

राणा रतनसेनजी दूत मोकली एम कहायो - B

॥ २४८ ॥ १ ..आव्यउ ..B, . भलइ तू आव्यो C, साँहि भलै तू आयो सही D, अम्ह उपरि आया छो सही E । २ पणि नासि म जाजो जी धिप मही BC, नाँसि म जाजो रिमजो रही D, नासि म जाजो खमयो रही E । ३ नासता BCDE । ४ छै D । ५ नरने । C, नरनै D । ३-६ नासंता हींदू नै खोडि E । ७ हूँ B, हू CDE । ८ ठावो C, ठावौ DE । ९ छउ B, छु CD । १० इण हीं B, इण हीज C, इणि हीज E । ११ ठउडि B, ठोढि C, ठोट D, ठौडि E ।

हिवई[1] दिखाडिसु[2] माहरा हाथ, तुं[3] पिणि[4] सज्ज[5] करे[6] निज साथ ।
ढीलीपति[7] मत[8] ढीलउ[9] रहइ[10], सुभट[11] तिको[12] जे[13] पहिली[14] कहइ[15] ॥ २४९ ॥
तुं[1] सिंघलथी[2] आविउ[3] नासि, तिणि[4] कारणि[5] तोनइ[6] शाबासि[7] ।
तोनइ[8] छइ नासणनी[9] टेव, दीठइ[10] मुंहि[11] मत[12] नासइ[13] हेव ॥ २५० ॥
कीधउ[1] कोट सजे साबतउ[2], [3]फिरतां दीसइ अति फाबतउ[3] ।
पोलि[4] जडावी पेठा[5] माहि[6], सुभट[7] घणा साह्या गज-गाहि[8] ॥ २५१ ॥
[1]आगलि पतिसाह अराति कराल[1], तेल पड्यउ[2] बलि[3] ऊठी झाल ।
हिंदू बोल[4] वधा[5] बे [6]वडा, अब कया [7]सुभटो देखो[8] खडा ॥ २५२ ॥
गढ रोहउ[1] मंडाणउ[2] घणउ[3], तिम-तिम कोप वधइ[4] बिहुं तणउ[5] ।
बेही[6] बलवंत बेही[6] दूठ, पूरउ[7] परिगह[8] विहुंनी[9] पूठि[10] ॥ २५३ ॥
जे [1]भाजइ ते लाजइं[2] [3]घणुं, कुल अजूआलइं[4] बे[5] [6]आपणुं ।
गोला-नालि वहइ[7] ढीकली[8], [9]बाहरि को[10] न सकइ[11] नीकली ॥ २५४ ॥
गोफणि गयणि[1] वहइं[2] अति घणी, रीठ पडइं[3] अति[4] रोढां[5] तणी ।
कुहक बाण[6] करडाटा[7] करइं[8], [9]लसकर लंघी जाई परइं ॥ २५५ ॥

॥ २४९ ॥ १ हिवइ BC, हिवै D, हिवे E । २ दिखाडिसि BC, दिखाडसि D, दिखाडिस E । ३ तूं B, तू CD, तुम्ह E । ४ पिण BC, पणि DE । ५ सज CD, सझ E । ६ कीयौ E । ७ डिल्ली° B, डिली-पती C । ८ मति BCE । ९ ढीलो C, ढीलौ DE । १० रहइं B, रहै DE । ११ शुभट B, सकज B । १२ तिकउ BC, तिकौ D, तेह E । १३ जो BCDE । १४ पहिलौ D । १५ कहइं B, कहै DE ।

॥ २५० ॥ १ तूं BE, तू CD । २ सिंघळ° B, सिंघलि C, सीवलतै D, सींघलते E । ३ आव्यउ B, आव्यो C, आयो D, आयौ E । ४ तिण BDE, तिणि तो C । ५ वातैं E । ६ तों° B, तुझ° C, तोनै D, तुझनें E । ७ सावासि BCD, स्यावासि E । ८ तुझनै DE । ९ नासणरी छइ B, नासणरी छे CE, नासणरी छै D । १० दीठै DE । ११ मुहि B, मुहइ C, मुखि DE । १२ मति BCD । १३ जाऐ B, जाइ C, जाज्यो D, भाजो E ।

॥ २५१ ॥ १ कीधो CDE । २ साबतो CDE ३ फिरतउ B, फिरतो फावतो फिरतौ दीसै C, फावतौ D, बुरज भीत चिहु दिसि फवतौ E । ४ पउलि B । ५ पइठउ B, पेठो C, पैठो D । ६ माँहि C । ७ शुभट C । ८ गाह BCD । अतिम अर्द्धाली E प्रतिमें नहीं है ।

॥ २५२ ॥ १ ...अति विकराल C, आलम अति असराल D, आलिम आगि सदा असराल E । २ पड्यो C, पड्यो D । ३ नै E । ४ वोलइ C । ५ विया C, कह्या E । ६ वे वडा B, वि वडा E । ७ यायैं DE । ८ देखो CE, देखौ D ।

॥ २५३ ॥ १ गढरो हो CD, गढरो हौ E । २ मडाणो B, मडाणौ C, मडाणौ D । ३ घणो C, घणौ DE । ४ वधइ A, वधै D, वध्यौ E । ५ विहू तणो E, °तणौ DE । ६ वे वै E, वेई BCDE । ७ पूरो CDE । ८ परिग्रह B, परिग्रिह C । ९ विहनी B, विहूनी C, वेहई D, विहु अै E । १० पूठ E ।

॥ २५४ ॥ १ भाजै DE । २ लाजइ BC, लाजै DE । ३ घणउ B, घणो C, घणौ DE । ४ उजवालइ B, उजवालै D, ऊजालै E । ५ ते D । ६ आपणउ B, आपणो C, आपणौ DE । ७ वहइं B, वहि C, वहै D, वहै E । ८ ढींकुली B, ढीकुली C, ढींकली E । ९ वाहिरि B, वाहिर E । १० कोइ B, कोई C, कौ D । ११ सकै DE । A २४८ । B २९१ । C २९२ । D ३१३ । E ३८२ ।

॥ २५५ ॥ १ गयण CDE । २ वहइ C, वहै D, वहै E । ३ पडइ C, पडै DE । ४ गिर D, सिर E । ५ रौढां E । ६ कोहोक वाण D, कुहक वाँण E । ७ कडडाटा D, गडडाहा E । ८ करै DE । ९...जाय परइ C, ...भाजी जाय परै D, गैवर घोडा मूगल भरै E ।

वाण[1] विछूटइँ त्रूटइँ[3] तणी[4], [5]फूटइँ [6]फोज [7]चिहुं [8]दिसि [9]घणी ।
[10]झूझइँ-वूझइँ सघली कला[10], [11]भुरजि-भुरजि भड ऊछाँछला[11] ॥ २५६ ॥
झाडइ झंडा [2]पाडइँ पाघ[3], ऊडाडइँ[4] धज गयणि[5] अथाग[6] ।
[7]ताकइ हाकइ वाहइ तीर[7], [7]मारइ मयगल मुंगल मीर[7] ॥ २५७ ॥
फाडइ[1] डेरा[2] हेरा करी, न सकइ[3] को[4] पेसी[4] नीसरी[5] ।
कलली कोप करइँ[6] कँधाल, फारक मारि [6]करइँ घइं[7] फाल ॥ २५८ ॥
कोट [1]तणा [2]सगला काँगुरा[3], [4]वीटी वइसइँ[5] जिम वाँनरा[6] ।
[7]वालइँ [8]वाधी [9]कवडी [10]हणइँ, मरण तणउ[11] भय [12]मनि नवि गिणइँ[13] ॥ २५९ ॥
रतनसेँन[1] वाँसइ[2] राजाँन[3], [4]पूरइ पाणी नइ पकवाँन[4] ।
[5]जूझइँ सुभट सनेहाँ[6] सहू, आलिम[7] मनि हूई चिंता वहू ॥ २६० ॥
आलिमसाहि[1] कहइ[2]-“साँभलउ[3], सुभट[4] सहू[5] को[6] मेला[7] मिलउ[8] ।
गढ ऊपाडउ[9] घउ[10] सीघडा, [11]पाडउ [12]भुरज [13]विहंडउ [14]घडा ॥ २६१ ॥
[1]सवल सुरंग दीउ गढ हेठि[1], देखी[2] न सकइ[3] जिम को[4] द्रेठि[5] ।
कोट तणा[6] ढाहउ[7] काँगुरा[8], पाडउ[9] खाँणि[10] धकावउ[11] धरा ॥ २६२ ॥

॥ २५६ ॥ १ वाँण E । २ वछूटइ C, विछूटै D, विछूटे E । ३ त्रूटइ C, तूटै D, फूटै E । ४ अणी E । ५ फूटइ C, फूटै D, फाटै E । ६ फोजाँ E । ७ चिहूँ B, चिहू C, चिहु E । ८ दिस E । ९ तणी E । १० झूझइ-वूझइ C, मारै घण मुगलाँ विण भीच E । ११ भुरज-भुरज भिडइँ उछाछला B, भुरज-भुरज भिडइँ उछाँछला C, बुरजि-बुरजि भिडै उछाछला D, भुरजे-भुरजे ऊभा भीछ E ।

॥ २५७ ॥ १ झाडइँ B, झाडै DE । २ पाडइ C, पाडै DE । ३ पाथ BCD, पाग E । ४ उडाडइँ B, उडावइ C, उडाडै D, ऊडाडै E । ५ गयण BCDE । ६ अवाथ BC, अवाथ D । ताकइँ हाकइँ वाहइँ B, ताकइँ हाकइँ वाहि C, ताकै हाकै वाहै D, ताकि हाकि इम वहै तीर E । ७ मारइ मुगला B, मारइँ मलगल C, मारे मुगल सवली भीर C, पाडै खाँन निवार्वा मीर E ।

॥ २५८ ॥ १ फाडै DE । २ डेरा D । ३ सकइँ B, सकै DE । ४ पइसी BC, पैसी D, कटक तणा E । ५ नीकली D । ६ करइ C, करै D । ७ वहु BC, देइ D । E प्रतिमें यह अर्द्धाली नहीं है ।

॥ २५९ ॥ १ °तणाँ B, कोटि तणाँ C । २ सघला DE । ३ काँगरा E । ४ वीटी D, वींटी E । ५ वइठा B, वैठा DE । ६ वानरा BC, वाँनरा D । ७ वालइ BC, वालै D, वालै E । ८ वाघी B, वाँघी CDE । ९ कउडी B, कोडी CD । १० हणइ BC, हणै DE । ११ तणो CE, तणी D । १२ तिल E । १३ गणइ BC, गणै DE ।

॥ २६० ॥ १ रतनसेनि D । २ वाँसइँ B, वासे C, वासै D । वाँसे E । ३ राजान B । ४ पकवान B, पाँणी C, अन्न पाँन पूरै पकवाँन D, दिये वधारा करि सम्माँन E । ५ झूझइ BC, झूझै D, झूझे E । ६ सनेहा BCDE । ७ आलम DE । A २५४ । B २९७ । C २९८ । D ३२३ । E ३९२ ।

॥ २६१ ॥ १ अलिमसाह BC, आलम साह E । २ कहै DE । ३ साँभलो CE, साँभलौ D । ४ सुहड E । ५ सवै E । ६ कोउ BC, अव DE । ७ ले ले E । ८ मिलो CE, मिलौ D । ९ ऊपाडो C, ऊपाटौ D, उटाटो E । १० द्यो C, दौ D, दे E । ११ पाटो CE, पाटौ D । १२ बुरज BCDE । १३ हुवउ B, हुयो C, होइ D, लागी E ।

॥ २६२ ॥ १°° दीयउ °°B, °°दीयो°°°C, °दियो गढ हेठ D, सुरँग लगावो गढने हेठ E । २ देखि न E । ३ सकै DE । ४ कोइ CE, कोई D । ५ द्रेठ E । ६ तणाँ C । ७ पाडो C, पाडै D । ८ कागराँ C, कागुरा D, काँगरा E । ९ पाडो C, पाडौ DE । १० खाणि BC । ११ धकावो C, धुखावौ DE ।

आसि-[1]पासि पइसारउ[2] करउ[3], कासुं[4] मरण थकी [5]मनि डरउ[6] ?
लाँबी ले नीसरणी ठवउ[7], [8]एकी [9]कउ रोढउ[9] खेसवउ[10] ॥ २६३ ॥

लाख लाख ल्यउ[1] रोढा[2] तणउ[3], गढ ऊपाडि करउ[4] आँगणउ[5]" ।
सुभट सहू को[6] धाया धसी, आलिमसाहि[7] हूउ[8] मनि[9] खुसी ॥ २६४ ॥

रण-रसीउ[1] जोवइ[2] रमि[3] राह, हलकारइ[4] पूठइँ[5] पतिसाह ।
ढीलीपति[6] ढोवउ[7] माँडीउ[8], [9]पिण नवि कोट चिनी खाँडीउ[9] ॥ २६५ ॥

साँझ लगइ[1] हूउ[2] संग्राम[3], पिण नवि सीधउ[4] कोइ काँम[5] ।
घणा मराव्या[6] मुंगल[7] मीर, असिपति[8] माँनी[9] हीयइ[10] हीर[11] ॥ २६६ ॥

[1]आलिमसाहि करइ आलोच[1], लसकर [2]माहिँ [3]हूउ संकोच ।
व्यास[4] कहइ[5]-"संभलि सुलिताँण[6], कोट[7] न लीजइ[8] किम[9] ही प्राँण[10] ॥ २६७ ॥

[1]छानउ कोइ करउ[2] छल-भेद, [3]मत परगासउ[4] मरम मजेद ।
[5]वात करावउ[6] कपटइँ[7] इसी, [8]साहि हूउ हिव तुमसुं खुसी[8] ॥ २६८ ॥

बोल-बंध [1]दियउ माँगइ[2] तिके, [3]करउ सुगंद[4] करावइ[5] जिके[6] ।
विचलइ[7] नहीं[8] हमाँरी[9] वाच[10], ऍम कही ऊपावउ[11] साच ॥ २६९ ॥

॥ २६३ ॥ १ आस-पास E । २ पइसारो O, पवसारौ D, पैसारा E । ३ करो OD, करौ E । ४ काशु BO, क्या वे D । ५ अब DE । ६ डरयो O, डरौ DE । ७ ठवो O, ठवौ D । ८ एकेको D, एकैको E । ९ रोढो O, रोढे D, रोढौ E । १० खेसवौ DE ।

॥ २६४ ॥ १ ल्यो OE, लेहु D । २ रोढाँ BO, रोडा E । ३ तणो O, तणौ DE, । ४ करो ODE । ५ आँगणो O, आँगणौ D । ६ सहुकै D, सुणी सहु E । ७ आलिमसाह B, आलमसाहि D । ८ हूवा B, हूआ OE, हुवौ D । ९ मन BO ।

॥ २६५ ॥ १ रिण-रसीयो BO, रिण-रसीयौ DE । २ जोवै DE । ३ रिण° BO, रिम° DE । ४ सिलकारइ BO, हलकारै DE । ५ पूठइ BO, पूठै D, ऊभौ E । ६ दिल्लीपति B, डिलीपति O, दिलीपति D, ढिलीपति E । ७ ढौवौ E । ८ माँडीयउ B, माडीयो O, माडीयो D, माँडीयौ E । ९ पणि... खाँडीयउ B, पणि...कोटि. .खाँडीयो O, पणि ..चिन्हि खाँडीयो D, तिलइक गढ खाँडियौ E ।

॥ २६६ ॥ १ °लगै D, साझि लगै E । २ हूवा B, हूया O, होवै D, हौवै E । ३ सग्रॉम D । ४ सीधो O, खीझै DE । ५ काम BOD । ६ मराया E । ७ मुगल'न B, मूगल'न O, मुगलह D, मूगल E । ८ असुपति B, असपति DE । ९ मानी BOD । १० हीयडइ BO, हारि DE । ११ अधीर D, अहीर E । A २६० । B ३०३ । O ३०४ । D ३३० । E ३९९ ।

॥ २६७ ॥ १ 'आलमसाह काइ करउ आलोच' B, करो...O, आलम साहि पच्यौ...आलोच D । २ माहि BDE । ३ हूवउ B, हूयो O, हुवौ D, हूयौ E । ४ व्यास D । ५ कहि O, कहै D, भणै E । ६ सुलताण B, सुलताणि O, सुलताँन E । ७ कोटि O । ८ लीजे D, लीजै E । ९ किणही DE । १० प्राणि BD, प्राण O ।

॥ २६८ ॥ १ छानो OE, छाँनो D । २ रचो O, करो D, करौ E । ३ मति D । ४ परगासो BC, परगासौ D, परकासौ E । ५ वात D । ६ करावो OD, कहावौ E । ७ कपइ B, कपटै D, कपटैं E । ८ साह हुवउ . स्युं. .B, हुयो...°सु...O, ...हुवो हिवै.. D, आलिम हूआ छै...E ।

॥ २६९ ॥ १ घउ B, घो O, देउ D, धौ E । २ मागइ B, मागि O, माँगे D । ३ करो O, करौ E । ४ सुगधि B, सुगंध OD, सौगंध E । ५ करावो D, करावै E । ६ जिकै E । ७ विचलै D, विचलै E । ८ नहीं E । ९ हमारी B, अमारी O, हंमारी D । १० घात B, बाच D । ११ उपावओ B, उपावो O, उपावो D, ऊपावौ E ।

मुंकउ[1] माहिँ[2] पाका[3] परधाँन[4], इम[5] कहवाडउ[6] दिउ[7] हम माँन[8] ।
तेडी माहि खवाडउ[9] खाँण[10], द्रेठि[11] दिखाडउ[12] तुम्ह अहिठाँण[13] ॥ २७० ॥

पदमिणि[1] हाथइँ[2] जीमण[3] तणी, मुझ [4]मनि खंति[5] अछइ[6] अति घणी ।
अवर न काई[7] मागइ[8] साहि[9], [10]अलप सेनसुं[11] आवइ[12] माहि ॥ २७१ ॥

एक वार[1] देखी पदमिणी[2], साहि[3] सिधावइ[4] ढीली[5] भणी[6] ।
ऍम कही मुंक्या[7] परधाँन[8], [9]रतनसेँन पूछ्या दे माँन[9] ॥ २७२ ॥

"[1]कहउं किम आव्यउं तुम्हि परधाँन[1]?" तव[2] ते वोलइँ[3]-"[4]सुणि राजाँन[5] ।
आलिमसाहि[6] कहइ[7] छइ[8] ऍम,- "माहो-[9]माहि करउं[10] हिव[11] प्रेम" ॥ २७३ ॥

॥ कवित्त ॥

"[1]हमसुं साहि परठव्या[1], करणकुं[2] वाताँ[3] भली ।
[4]जइ तुम्हि[5] मानउं[6] वात[7], साहि[8] वहि[9] [10]जावइ डिल्ली[11] ।
[12]करि पदमावति दृष्टि[12], [13]फेरि चीतोड जि देखुं[13] ।
[14]विग्रह कोई नवि करूं[14], [15]वाँह देइ सब ही रखुं[15] ।
[16]गलि-लाइ कंठि पहिराइ करि[16], वहुत मया आलिम[17] करइ[18] ।
[19]राउ रतनसेँन ! सुणि वीनती[19], पुहर माहि[20] दुत्तर तरइ[21] ॥ २७४ ॥

॥ २७० ॥ १ मूको BOD, मेल्हो E । २ माँहि BOE, माहि D । ३ पक्का E । ४ परधान BO । ५ एम DE । ६ कहवाडो B, कहिवाडो O, कहावौ DE । ७ घउ B, घो C, दो D, दियौ E । ८ मान BD । ९ खवाटो O, खवाडौ D, खवावौ E । १० खाण B । ११ नजरि B, नजर O, निजरि D, निजर E । १२ दिखाडो O, दिखाडौ D, दिखावौ E । १३ ठाण BE ।

॥ २७१ ॥ १ पदमणि D, पदमिन E । २ हाथि O, हाथै D, हाथि E । ३ जीमणि BO । ४ मनि D । ५ खाँति DE । ६ अछि O, अछै DE । ७ काँई BE । ८ मागइँ B, मागै D, मागे E । ९ साह BO । १० अल्प O । ११ °स्युं B, °सु O, सेंनि° D । १२ आवइँ B, अवि O, आवै DE ।

॥ २७२ ॥ १ वार D । २ पदमणी D । ३ साह BOE । ४ सिधावै DE । ५ दिल्ली B, दीली O, डिल्ली D । ६ घणी BOD, भणी E । ७ मूँक्यउ B, मूक्यो O, मूक्यौ D, मुक्या E । ८ परधान BOD । ९...पूछइ राजान BO, रतनसेनि पूछै राजान D, मिल्या जाइ रतन राजान E । A २६६ । B ३०९ । O ३१० । D ३३६ । E ३०५ ।

॥ २७३ ॥ १ कहु आयो तू परधान B, कहु आयो तू...O, कहो आयो तू D, कहोजी क्युं आया ..E । २ तव D । ३ वोलइ BO, वोलै DE । ४ चतुर BODE । ५ सुजाण BD । ६ आलमसाह BO, आलिमसाहि D, आलिम वला E । ७ कहै E । ८ छै DE । ९ माहो-माँहि E । १० करो BO, करौ D । ११ हिवि O, हिवै D ।

॥ २७४ ॥ १...पठाव्या B,...पठावीया O, हम.. D, हमहिँ पठाए साहि E । २ कौ D । ३ वाताँ D, वातौं E । ४ जे BO, जै D, जो E । ५ तुम्ह BDE, तुम O । ६ मानो O, मानौ D, मानहु E । ७ वात D, वाच E । ८ साह BOE । ९ वलि BO, वलि D, फिरि E । १० जाइ AD, जावै E । ११ दिल्ली OD । १२ ..दीठि E, दिखलावौ पदमिनी E । १३ फिरि सहू गढ कउ देखुं B, फिरि सहू...कूँ . O, फिरि सव गढकूँ...D, और सव गढहि दिखावौ E । १४ कोइ .करो B, . .कोइ...कराँ O, विग्रह को ...E । १५ वाह देउ सवहि हरखु B, वाह देओ सवही हरपौं O, वाह दे सवही हरपुं D, वाँह दे प्रीत वढावौ E । १६ कठ...A,. .°लाइं. B,...°लाय. .पहिराव ...D,.. मिलहि सिरपाव दे E । १७ आलम D । १८ करइं B, करै D, करहि E । १९ राव रतनसेँनि...बीनती D,...सुनि ..E । २० माँहि O, माहिँ E । २१ तरइं B, तरै D, तरहि E । A प्रतिमें यह कवित्तके नीचे दिया है ।

"[1]वाँकउ गढ चीतोड[2-3]सकति सुरताँण[4] न लीजइ[5] ।
ऊठाईइ[6] मुसाफ़ बोलि[7] ज्युं [8]राउ पतीजइ[9] ।
दंड [1] द्रव्य न[11] लीउं[12] देस पर दल नवि[13] गाहुं ।
नही हम[14] गढकी[15] चाउ[16] राउकुमरी[17] नवि[18] [19]व्याहुं" ॥
अलावदीन सुरतांण[20] कहि[21]- "राज [22]माहि नवि[23] आहुडुं[23] ।
राउ रतनसेंन[24] मुझकुं मिलइ[25], नाक[26]- नमणि करि [27]बाहुडुं ॥ २७५ ॥
"[1]कीउ उपंग सुलिताँण[1], [2]मंत्र एइ सु उपाई[2] ।
मुझकुं[3] गढ दिखलाउ,[4] आप[5] जनमंतर[6] भाई ।
हुं[7] कृत कम्मज[8] [9]जम्म, [10]सत्रु असुराँ [11]घर पाँमी[12] ।
[13]तु पूरव[14] पुन्य[15] प्रमाण,[16] [17]हुउ चित्रकोटह[18] स्वामी[19] ।
[20]दोइ काइ अछइ इक आतमा,[20] [21]आवि जंम मेलउ थयउ[21] ।
[22]खीमकरण-भुज-मंत्रसुं[22] [23]राजा-वयण तिम भयउ[23] ॥ २७६ ॥

॥ चोपई ॥

बोल[1] बंध द्युं[2] साचा सही, विचलइ[3] वात[4] हमाँरी[5] नही ।
नाक-नमणि[6] करि कोट[7] दिखाडि[8], पदमिणि[9]-हाथई[10] मुझ[11] जीमाडि[12] ॥ २७७ ॥
पदमिणि[1] नारि निहालण तणउ[2], मुझ मनि हरष[3] अछइ[4] अति घणउ[5] ।
अवर न काँई[6] मागइ[7] आथि, जीमे[8] जाऊँ[9] पदमिणि[1] हाथि ॥ २७८ ॥

॥ २७५ ॥ १ वाँको BO, बाकौ D । २ चीत्रोड BO, चीतौड D । ३ सगति BOD । ४ सुलताणि B, सलताँनि O, सुलताँण D । ५ लीजै D । ६ ऊठाइयइ B, उठाईयै D । ७ जु B, °ज O, °तो D । ८ राज D, ९ पतीजइं BE, पतीजै D । १० द्रव्य D । ११ नहु BOD । १२ लीयु B, लीयु OD । १३ नहि D । १४ हंम D । १५ °को BO, °कुं D । १६ चाओ B । १७ राजकुमरी BO, राजकुमरी D । १८ नहि BOD । १९ ब्याहूँ D । २० सुलतान B, सुलतानि O, सुलतौंन D । २१ कहइ BOD । २२ राजमहल D । २३ आहुडउ B । २४ रतनसेंनि D । २५ मिलइं B, मिलइ O, मिलै D । २६ तउ नाक . B, तो नाक...O, तौ नाक.. D । २७ बाहुडउ B । E प्रतिमें यह पद नहीं है । BOD प्रतियोंमें यह पद चोपई सख्या २७८ के नींचे दिया गया है । A २७१ । B ३१५ । O ३१६ । D ३४२ ।

॥ २७६ ॥ १ कहइ राण सुलताण B, कहि राण सुलताण O, कहै राँण सुलताँणँ D । २ वात तुम्ह ऍम कहाई B, बात तुम एम कहाई O, बात तुम्ह कहाई D । ३ °कउ BO । ४ दिखलाइ B, दिखलाइ O, दिखलाय D । ५ आप A, आपि O । ६ जनमतरि B, जनमर्मितर O । ७ मइ BO, मै D । ८ कृत कर्म BO, कृतकर्म D । ९ अमिहर BOD । १० जनम BOD । ११ घरि BOD । १२ पाम्यौ D, १३ तू B, तू O । १४ पूर्व O, पुरब D । १५ पुण्य OD, पुन्य B । १६ प्रमाणि B, प्रमौंणि OD । १७ हूउ AO, हूवउ B, हुवौ D । १८ चित्रकूट BO । १९ स्वांमी O, सामी D । २० दोंई काई एक आतमा B, दोई काई एक जीव आतमा O, दोई काइ जीव एक आतमा D, दोय काया एक हम आतमा E । २१ दुनिया माहि मेलउ थयउ B, दुनियाँ माहि मेलो थयो O, दुनिया माहि मेलौ भयौ D । २२ मुझ-मंत्र सुणि BO, खेम करण मुझ मंत्र सुणि D । २३ राजि वयण तव मानीयउ B, राजि वयण तव मानीयो O, राज-वयण तब मौंनीयौ D ।

॥ २७७ ॥ १ बोल D । २ घु B, धो O, देउ D, धौ E । ३ विचलि O, बिचलै D, विचलै E । ४ बात D । ५ हमारी BOE । ६ नाँकि° O । ७ कोटि O । ८ दिखालि BO, दिखाउ E । ९ पदमणि D, पदमिन E । १० हाथइ B, हाथि O, हाथे DE । ११ मुझह DE । १२ जीमाड E ।

॥ २७८ ॥ १ पदमिन O, पदमणि D । २ तणो O, तणौ DE । ३ हरषि O, हर्ष D । ४ अछे DE । ५ घणो B, घणौ DE । ६ काइ OD । ७ माँगे DE । ८ खाणा BOD, खाँणा E । ९ खुरदम BO, खुरम D, खुस है E । E प्रतिमें यह पद यहीं है ।

माहो-माहि करउ[1] संतोष,[2] राखउ हिव ए वधतउ रोष[2]।"
घलतउ[3] भूपति[4] बोलइ राण,[4] माहरा[5] कथन कहउ[6] सुलताण[7] ॥ २७९ ॥
रतनसैंन[1] कहि[2]-"सुणि[3] परधाँन,[4] वाताँ[5] करताँ[6] वाधइ[7] वाँन[8]।
पिणि[9] जउ[10] प्राँण[11] दिखाडइ[12] भूप,[13] तउ[14] नवि कोई रहइ रस-रूप[14] ॥ २८० ॥
वात[1] करइ[2] जउ[3] आलिमसाह[4], तउ[5] हम मिलवा घणउ उछाह[5]।
[6]असपति आवइ अंगणि वही,[6] [7]प्रापति विण क्युं पामाँ सही[7] ॥ २८१ ॥
[1]बोल बंध घइ साचा साहि,[1] [2]अलप सेनसुं आवहि माहि[2]।
अम्ह[3] घरि आइ [4]अरोगउ धाँन, माहो-माहि[5] वधइ[6] ज्युं[7] माँन" ॥ २८२ ॥

[सातमो खण्ड]

परधाँने[1] पूछिउ[2] पतिसाह, "वात[3] वणे[4] दीधी[5] निज [6]वाह"?
आलिम[7] सुंस[8] करइ[9] सहि झूठ[10], मुँहि[11] मीठउ[12] मन माहे दूठ ॥ २८३ ॥
राघव व्यास कीउ[1] मंत्रणउ,[2] रतनसैंन[3] नृप[4] झालण[5] तणउ[6]।
नृप[4]-मनि कोइ नही छल-भेद, खुरसानी[7] मनि अधिकउ[8] खेद ॥ २८४ ॥
[1]ऊघाडी मेल्ही गढ-पोलि,[1] मिलीया[2] माँणस[3] टोला-टोलि[4]।
आलिम[5] साथि लीया[6] असवार, लोहइ[7] लुंब्या[8] त्रीस[9] हजार ॥ २८५ ॥

॥ २७९ ॥ १ करो C, करौ DE। २ . हिवइ वधंता रोस B, राखो हिवि वधतो रोस C, राखौ हिवै वधतौ रोस D, हिव मेटी अति वधती रोष E। ३ वलतो C, वलतौ D, वलता E। ४. .बोलै रांण D, कहै रतन राजाँन E। ५ माहरी CDE। ६ कहो C, कहौ D, सुणो E। ७ सुलताणि C, सुलताण D, परधाँन E। A प्रतिमें यह अर्द्धाली नहीं है। A२७०। B ३१४। C ३१५। D ३४१। E ४१०।

॥ २८० ॥ १ रतनसेनि D। २ कहइ BC, कहै CD। ३ सुण C, सुनि E। ४ परधान B। ५ वात BC, वात D। ६ करता BCD। ७ वाधै D। ८ वान B, वान D। ५-८ इण वातै बहु वाधै वाँन E। ९ पणि BCD, परि E। १० जो CDE। ११ प्राण BC, जोर DE। १२ दिखाडै D, दिखावै E। १३ साह E। १४ तो C, ते रहै .D, रस न रहै वलि लागै दाह E।

॥ २८१ ॥ १ वात D, हम E। २ करै C, करताँ E। ३ जो CDE। ४ आलिमसाहि B, आलम साहि DE। ५-५ चौ० २८१ का दूसरा पाद-अलप. BCDE। ५-६ और ७ पाद BCDE प्रतियोंमें नहीं है।

॥ २८२ ॥ १ BCD प्रतिमें यह पाद नहीं है। २ BCDE प्रतियोंमें यह २८० का अंतिम पाद है। °स्यु आवइ . B,.. °सु आवइ C, सेनिसु आवै D,... °सु आवै. E। ३ अम्ह C। ४ आरोगइ B, आरोगइ C आरोगै D, आरोगे E। ५ माँहो-माँहि CE। ६ वधइ B, वधै D, वधै E। ७ जउ B, जु C, वोही D, वहु E। A २७६। B ३१८। C ३१९। D ३४५। E ४१६।

॥ २८३ ॥ १ परधाने B, परधानि C। २ पूछ्यउ B, पूछ्यो C, पूछै D। १-२ तेडी राँण तणा परधाँन E। ३ वात CD। ४ वणी BC, वणी D। ५ दीन्ही D। वाहिC, वाँहि D। ३-६ दीधा बोल वाँह सुलतान। ७ आलम BD। ८ स्युस B। ९ करै DE। १० आहूठ BC, सहु झूठ D। ११ मुह BC, मुखि D, मुख E। १२ मीठो AC, मीठा D, मीठौ E। १३ माहि C, माँहि E।

॥ २८४ ॥ १ कीयो C, कीयौ DE। २ मत्रिणो CE, मंत्रणौ D। ३ रतनसेंनि D। ४ न्रप D, नै E। ५ झेलण BCDE। ६ तणो CE, तणौ E। ७ खुरसाणी B, खुरसाँणी CDE। ८ अधिको CE, इधकौ D।

॥ २८५ ॥ १ उघाडी मेल्ही गढनी पउलि B, उघाडी मेल्ही गढनी पोलि C, उघाडी तब गढनी पौलि D। २ मिलिया D। ३ माणस BD। °टोल D। ५ आलम D। ६ किया BCD। ७ लोहै D। ८ लूम्या BC, लूम्या D। तीस BCD। यह चोपई E प्रतिमें नहीं है।

॥ कवित्त ॥

गढई[1] चड्यउ[2] सुलिताण,[3] नालि[4] उंबरां[5] खवासाँ[6] ।
भमर एक[7] भुल्लि[8] गउ,[9] चंद ज्युं[10] भयउ[11] उजासाँ ।
[12]ए चंदा खाइक्कक,[12] [13]दान उर मानस मंगल[13] ।
[14]एक चंद चंदणउ,[14] [15]सेज सोहइ रायाँ घर[15] ॥
फुजदार[16] सबे[17] हाजरि खडे, गिरि[18] पदमिणि[19] पाउद्धरइ[20] ।
अलावदीन सुलिताण[21] सुणि, आलिम[22] सिरि छत्राँ[23] धरइ[24] ॥ २८६ ॥

॥ चोपई ॥

रतनसैंन[1] सरलउ मन मांहि[2], मंत्री तेडण[3] मेल्यउ[4] साहि ।
"साहिव! आज[5] पधारउ[6] सहि", रतनसैंन[1] तेडइ[7] गहगही[8] ॥ २८७ ॥
व्यास[1] सहित साथइं[2] ततकाल[3], माहे[4] पेठा[5] सहु समकाल ।
कला[6] इसी[7] का[8] कीधी सोइ, पइसंतउ[9] नवि दीठउ[10] कोइ ॥ २८८ ॥
आवी माहि[1] हूआ[2] एकठा, तव[3] सगला[4] दीठा सामठा[5] ।
रतनसैंन[6] मनि खुणसिउ[7] सही, आलिम[8] आविउ[9] अंगणि[10] वही[11] ॥ २८९ ॥
नृप[1] पिण[2] सेना सगली[3] सार, असवारे[4] मेल्ह्या[5] असवार ।
तुंगे-तुंग मिल्या[6] एकठा, जाणि[7] कि दीसइ[8] वादल[9] घटा ॥ २९० ॥
आलिम पिण[1] न सकइ[2] आगमी[3], न सकइ[2] नृप[4] पिण[2] आलिम[5] गमी ।
आलिमसाहि[6] कहइ[7] "सुणि भूप, कांइ[8] तुम्ह[9] मेलउ[10] कटक सरूप ॥ २९१ ॥

॥ २८६ ॥ १ गढ BOD । २ चडीयो O, चडीयौ D । ३ सुलताँण BD । ४ साथि D । ५ उमराव BO, अमराव D । ६ खवासा D । ७ जेम BOD । ८ भूलि BO, भुली D । ९ गयउ B, गयो OD । १० जो D । ११ भयो O, भयौ D । १२-१२ पच लाख इक दीयउ BO, पंच लाख एक दीयौ D । १३-१३ जोति तसु अतिहिं सुदिनकर BOD । १४-१४ चाँदणउ जणु अफ्ताद BO, चंद जेम अफुताव D । १५ राय घरि BO, सेझ सोहै राय घरि D । १६ हुजदार BOD । १७ सवै D । १८ गिर BOD । १९ पदमणि D । २० पाउ उधरइ BO, पाव उधरै D । २१ सुलताण BO, सुलताँन D । २२ आलम D । २३ छत्र ए BOD । २४ धरै D । BOD प्रतियोंमें यह चोपई संख्या २८७ के नीचे दी गयी है, E प्रतिमें नहीं है । A २८० । B ३२४ । O ३२५ । D ३५१ ।

॥ २८७ ॥ १ रतनसेनि D । २ °मांहिं O, °माहिं D । ३ तेडन D । ४ मेल्यो O, मेल्हो D । ५ आजि D । ६ पधारो O, पधारौ D, ७ तेडै D । ८ गहिगही E । A प्रतिमें यह चोपई नहीं है ।

॥ २८८ ॥ १ व्यास D । २ साथे BOD । ३ ततकालि D । ४ माँहे B, माँहि O । ५ पइठा BO, पैठा D । ६ कली B, किलि O, कल D । ७ एहवी D । ८ काई BOD । ९ पइसंता BO, पैसंता D । १० दीठो O, दीठौ D । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ २८९ ॥ १ माहिं E । २ हुवा BE, हुया O । ३ तब D । ४ सगले BODE । ५ साँमठा E । ६ रतनसैंनि D । ७ खुणस्यो BO, खुणस्यौ DE । ८ आलम D । ९ आव्यउ B, आव्यो O, आयौ DE । १० अगणे B, अगण O । ११ वही BD ।

॥ २९० ॥ १ ध्रप D । २ पणि BODE । ३ सघल E । ४ असवारें B, असवारि O । ५ मिलीया BOD । ६ हुआ E । ७ जाण कि B, जाणिक OE, जाँणिक D । ८ दीसै D, उतरी E । ९ बादल BD, वादिल O ।

॥ २९१ ॥ १ पणि BODE । २ सकै DE । ३ आँगमी A । ४ ध्रप D । ५ आलम DE । ६ °साह BOD । ७ कहै DE । ८ काइ BD, काँए O, क्युं E । ९ तुम्हि BD, तुझि O, तुम्हे D । १० मेल्यउ B, मेल्यो O, मेलौ D, मेलत हो E ।

हुं[१] इहाँ विढवा आविउ नही[१], गढ[२] जोयवइ जाइसु सही[२] ।
म[३] धरउं[४] मन महि[५] खोटउं[६] खेद, मुझ[७] मनि कोइ नही छल-छेद[७]" ॥ २९२ ॥

नृप[१] जंपइ-[२] "आलिम[३]! अवधारि[४], कटक[५] कोइ मेलुं न लिगार[५] ।
जइ[६] तुम्ह वचन हूउं हिव इसुं[६], कटक[७] करी नइ करिवुं किसुं[७]? ॥ २९३ ॥

पिण[१] तइँ आण्या त्रीस हजार[१], किणि[२] कारणि[३] एवडा[४] असवार?
तुझ[५] मनि काँइ सही छइ वात[५], धूत पणारी[६] दीसइ धात[६]" ॥ २९४ ॥

आलिम[१] जंपइ[२]- "नृप[३]! अवधारि[४], प्राँहुणडाँ[५] नइ इम म पचारि[५] ।
थोडा[६] ह्वो अथवा ह्वो घणा[६], झेली लीजइँ[७] निज प्राँहुणा[८] ॥ २९५ ॥

धाँन[१] तणउं[२] छइ[३] आज[४] सुगाल[५], घणा-घणा काँइ[६] कहउं[७] भूआल[८] ।
अम्हि[९] आव्या था जिमवा सही[९], विढवा कारणि आव्या नही[१०] ॥ २९६ ॥

जीमण[१] रउं जाणउं[२] संकोच, खरच[३] करंताँ आवइ खोच[३] ।
तउ[४] वलि पाछा मेल्हाँ एह[४], जिम[५] भाखउं तिम राखाँ तेह[५]" ॥ २९७ ॥

भूप[१] भणइ[२]- "संभलि पतिसाह[३], भलइ[४] पधार्‍या[५] आलिमसाह[६] ।
वलि[७] तेडावुं[८] जाँणउं[९] जिके, पिण[१०] लघु बोल म[११] बोलउं[१२] तिके[१३] ॥ २९८ ॥

॥ २९२ ॥ १...आयउ...B, हू...आयो...C, हू.. विढवा आव्यो...D, मैं लडनेकुं आया नही E । २...जोइ .. जाइस्यु...B, . जोइ...C,...जोइ नै जासु...D, गढ देखणकी है दिल सही E । ३ न E । ४ धरो CDE । ५ माहि B, माँहि C, मै DE । ६ खोटो CD, खोटा E । ७...भेद BCD, मेरे मनं नाही छल-भेद E ।

॥ २९३ ॥ १ न्रप D । २ जपै DE । ३ आलम D । ४ अवधार D । ५ एवडउं कटस्युं नगर मझारि B, एवडो कटसुं नगर मझारि C, एवड़ौ कटस्युं नगर मंझारि D, लसकर क्युं लाए हो लारि E । ६ जो.. हूवउं . इसउं B, जे तुम्ह . हूयो इसा C, जो तुम्हे वचन हुउं हिवै इसउ D, पहिली तुम्ह फुरमाया साहि E । ७ करिस्यो किसउं B, ..करिस्यौ किस्यो C,...करीनै करिसी किसौ D, अलप सेनसें आवुं माँहि E ।

॥ २९४ ॥ १ ए...तीस ..B । ए तइ आँण्या तीस...C, ए तै...तीस D, अब तुम ल्याए तीस...E । २ किण CD, किस E । ३ कारण C, खातर E । ४ एवडा BCD, इतने E । ५...काइँ...कूडी ...B,.. कूडी...C,...काइ कूडी छै वात D, है तुम्ह मन कूडा असमाँन E । ६ धुर्त्त...दीसै .D, दिल्लीके ठग हो सुलताँन E ।

॥ २९५ ॥ १ आलम DE । २ जपै D, जंपहि E । ३ न्रिप D । ४ अवधार D, राजाँन E । ५ प्राहुणडाँ . BC, पाहुणडाने मती पचारि D, घरि आयाँ दीजै वहुमान E । ६ थोडा होइ होइ अथ घणा BC, थोडा होवै होवै घणा DE । ७ लीजइ BC, लीजै DE । ८ प्राहुणा BCE, पाहुणा D ।

॥ २९६ ॥ १ धान BC । २ तणो C, तणा DE । ३ छै DE । ४ आजि D । ५ सुगाल CE । ६ कृया DE । ७ करो C, करै D, कहो E । ८ भूपाल BCDE । ९ अम्ह . B, म्हे C, हंम आया...D, हम मिलवा आए ऊवही E । १० विढवा आया ..D, लढवाकुं आए है नही E ।

॥ २९७ ॥ १ °रो CE, रौ E । २ जाणे C, जाणौं D, जाणो E । ३...उपनै...D, ...तणौ आँणौ मन . E । ४ तउं पाछा मेल्हावउं एह B, तो पाछा मेलावो एह C, तौ पाछा मेल्हाँउं एह D, कहो जितने फिरि लसकर जाइ E । ५...राखउं तेह B, . भाखो...राखो तेह C, ...भाषौ...राखु...D, राखो सोइ तुम्हैं दिल माइ E ।

॥ २९८ ॥ १ राणाँ BC, राँण D, राई E । २ भणि C, भणै D, कहै E । ३ पतिसाहि D । ४ भलि C, भलै DE । ५ पधारै E । ६ आलमसाहि D, आलिमसाहि E । ७ वलि B । ८ तेडावउं B, तेडावो C, तेडावौ DE । ९ जाणउं B, जाणो C, जाणौ D, जाँणो E । १० पिणि B, पणि CDE । ११ न D । १२ बोलो CDE । १३ वके BD, वंके CE । A २९२ । B ३३४ । C ३३५ । D ३६५ । E ४३९ ।

परिघल पाणी परिघल धाँन, परिघल घोल घणा पकवाँन।
जीमउं भोजन भावइ जिके, पिण लघु बोल न बोलउं वके" ॥ २९९ ॥

बोलि[१]-बोलि बे हूआ[२] खुसी, हाथे ताली दीधी हसी।
माहो-माहि[३] हूउं[४] संतोष, टलीया[५] सगला मनना दोष[५] ॥ ३०० ॥

रतनसैंन[१] हिव निज घरि घणी[१], भगति[२] करावइ[३] भोजन तणी।
पदमिणि नारि[४] प्रतइं जई कहइ[४],-"आलिमसुं[५] हिव जिम रस रहइ[५] ॥ ३०१ ॥

तिण[१] परि भोजन भगतइं करउं[१], जिम[२] आलिम मनि हरषइ खरउं[२]"।
पदमिणि नारि[३] कहइ[४]- "प्री[५]! सुणउं, निज[७] करि न करिसु हुं प्रीसणउं[७] ॥ ३०२ ॥

षट रस[१] सरस[२] करुं[३] रसवती, प्रीसेसी[४] दासी[५] गुणवती।
सिणगारउं सगली[७] छोकरी[८], षाँति अछइ[९] जउं[१०] तुम्ह[११] मनि खरी" ॥ ३०३ ॥

बि[१] सहस दासी रूप निधाँन[२], पदमिणि[३] पासि रहइँ[४] सुविधाँन[५]।
रूप अनोपम रंभा जिसी, काम तणी सेना हुइ[६] तिसी ॥ ३०४ ॥

आसण[१]-बेसण सगला तेह[१], करसी[२] काँम सहू ससनेह[२]।
सगली[३] साकति करि सावती[३], माँहि[४] तेंडाविउ[५] डिल्लीपती[६] ॥ ३०५ ॥

परिघल[१] परठा दीसइ घणा[१], जाणि[२] विमान[३] अछइँ[४] सुर तणा[५]।
ठउडि ठउडि[६] दीसइँ[७] पूतली[८], घालइँ[९] वाउ[१०] चिहुं[११] दिसि वली[१२] ॥ ३०६ ॥

॥ २९९ ॥ BODE प्रतियोंमें यह चोपई नहीं है।

॥ ३०० ॥ १ बोल ..E। २ हूया B, हूँया C, हुवा D। ३ °माँहि C। ४ हूवउ B, हूयो CD, हुवो E। ५ राइ तणै मनि मिटियो रोष E।

॥ ३०१ ॥ १ रतनसैंनि घरि विधि-विधि घणी D, रतनसैंन गया महिलाँ भणी E। २ जुगति E। ३ करावी BCD, करावण E। ४ ..प्रति इमि C, पदमणि. .प्रतै .कहै D, पदमिण प्रति राजा . कह्यो E। ५...स्यु...B, ..°सु.. C, आलमसु हिवै . रहै D।

॥ ३०२ ॥ १ तिणि ..भगति . B, तिणि भगति करो C, भगति करु D, भोजन भगति करो हिव इसी E। २ थणउं BC, आलम .हरिपै घणु D, जिण दलीपति होवै खुसी E। ३ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिण E। ४ कहै DE। ५ प्रीय CD। ६ सुणो CE, सुणौ D। ७ .करुं B,...करू . प्रीसणो C,.. करहु प्रीसणौ D, हु हाथै न करू प्रीसणो E।

॥ ३०३ ॥ १ नवरस ABCD। २ सरिस E। ३ करउ B, करो C, करू D, करिस E। ४ प्रीसेसइँ B, प्रीससइ C, प्रीसेसै D, प्रीसैसै E। ५ नारी C। ६ सिणगारू C, सिणगारौ D, सिणगारो E। ७ सघली DE। ८ छोकरी D। ९ अछइँ B, अछै DE। १० जे BCD, जो E। ११ तुम C।

॥ ३०४ ॥ १ दो BC, बे D। २ निधान BCD। ३ पदमणि D, पदमिण E। ४ रहै DE। ५ सावधान BCD, सावधाँन E। ६ होइ BCD, हुयै E। A २९७। B ३३९। C ३४०। D ३७०। E ४४६।

॥ ३०५ ॥ १...बइसण.. B, ..वैसण .D, आसण वैसण विधि विधि किया E। २ काम B, काँम-काज ..D, ऊपरि छाया डेरा दिया E। ३...रिसवती B, .साखति E। ४ माहि B। ५ तेडाव्या BCDE। ६ दिल्लीपती BC, दीलीपती D, दीलीधणी E।

॥ ३०६ ॥ १ परघल परिगह...B, परघल परिगह.. घणाँ C, परिगह दीसै ..D, देखे साहि महिल सतखणा E। २ ताँणि C, जाँणि E। ३ विमाँन C, विमाण D, विमाँण E। ४ अछइ AB, अछै DE। ५ सुरतणाँ CDE। ६ ठोडि-ठोडि ACDE। ७ दीसइ BC, दीसै DE। ८ फूतली E। ९ घालइ B, घालि C, घालै DE। १० बाव D, वाव E। ११ चिहूँ C। १२ सिली BCDE।

अनुपम[1] रतन-जडित आवास,[2] अगर[3] कपूर अनोपम वास[3] ।
चिहुं[4] दिसि दीसइँ चित्र अनेक[4], मंडप[5] महल महा सुविवेक[5] ॥ ३०७ ॥

तिहाँ आवी बेठो[1] पतिसाह, मन महि[2] आवइ[3] अधिक उछाह[4] ।
पदमिणि[5] पाँहइँ[6] अधिक पडूर[7], दासी आवि[8] दिखाडइ[9] नूर ॥ ३०८ ॥

इक[1] आवी वइसण दे जाइ[1], बीजी[2] थाल मँडावइ ठाइ[2] ।
त्रीजी[3] आवि धोँवाडइ हाथ[3], चोथी[4] ढालइ[5] चमर सनाथ ॥ ३०९ ॥

दासी आवइँ[1] इम जू जूई[2], आलिम मति अति विह्वल हूई[3] ।
"पदमिणि[4] आ कइ, आ पदमिणि, सरिखी दीसइ सहु कामिणी[5]" ॥ ३१० ॥

व्यास कहइ[1]-"संभलि[2] मुझ धणी[2]! ए सहु[3] दासी पदमिणि[4] तणी ।
वार-वार[5] स्युं[6] झबकउं[7] ऍम? पदमिणि[8] इहाँ पधारइ[9] कॅम"? ॥ ३११ ॥

"मुष्टि[1] करी रहउं[2] साहि[3] सुजाँण[4], "म[5] हवउं वलि-वलि विकल अयाँण[5] ।
ए आवइँ[6] ते सगली दासि, प्रमदा पदमिणि[7] तणी खवासि" ॥ ३१२ ॥

देखी[1] दासी रंभ समाँन[1], आलिम[2]-मनि अति हूउं गुमाँन[2] ।
"जेहनइ[3] दासि अछइँ एहवी[3], तें[4] कहउं आप हुसी केहवी[4]"? ॥ ३१३ ॥

॥ ३०७ ॥ १ अनोपम C, अनौपम D, 'नूपम E । २ आवासि C । ३ .अनूपम ..B, ...अनौपम ..D, अगर धूप कपूर सुवास E । ४ . दीसइ... BC,...दीसै...D, चित्रसाली रंगित चित्राँम E । ५ महिल महा सुविवेक D, विचि-विचि मीनाकारी कॉम E ।

॥ ३०८ ॥ १ वइठउं B, वइठो C, वैठो D । २ °मइ BC, मन माहि D । ३ आवै D । ४ उत्साह C । ५ पदमणि D । ६ पासइँ B, पासइ D, पासै E । ७ पुडूर D । ८ आवइ B, आवि C, आइ D । ९ दिखावै CD । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ ३०९ ॥ १ एक वैसण दे जाय D । २.. मडावै धाय D । ३ धुवाडइ BC, तीजी आय धुवाडै D । ४ चउथी BC, चोथी D । ५ ढोलइ B, ढालै D । E प्रतिमें यह नहीं है । इसके नीचे BC प्रतियोंमे ये दो चोपइयाँ अधिक हैं–

(१) इक सखि मेवा मिठाई घणी, इक सखि भाँति वहु (वहू C) सालण (साल C) तणी ।
इक सखि साग सगएती (सगोती C) थाल, लेइ लेइ ऊभी सुदरि वालि ॥

(२) इक आणइ खूब घणाँ (घणा C) पकवान, इक आणइ गुरडी देवजीर धान (धाँन C) ॥
इक आणइ हलुआ साकर तणा, पातसाह (पातिसाह C) मनि रज्या घणा ।

॥ ३१० ॥ १ आवइ BC । २ जू जूई B । ३ विकलत थई BC । ४ पदिमणि C । कॉमिणी C । A ३०३ । B ३४७ । C ३४८ । DE प्रतियोंमें यह नहीं है ।

॥ ३११ ॥ १ कहइँ B, कहि C, कहै DE । २ सुणि दिली धणी E । ३ सुह BC, सव DE । ४ पदमणी D, पदमिण E । ५ वार वार D । ६ सु C, सु D, क्या E । ७ झवको B, जवको C, झवकौ E । ८ पदमणि D, पदमिण E । ९ पधारै CD, पधारैं E ।

॥ ३१२ ॥ १ मुष्ट BC । २ हो C, रहो DE । ३ साह BCE । ४ सुजाण B, सुजाँन E । ५ मम होवउ वलि विकल अजाण BE, मम होवो वलि विकल अजाँण C, मति हो वलि-वलि विकल अजाँण D । ६ आवइ BCDE । ७ पदमणि D, पदमिण E ।

॥ ३१३ ॥ १ ..रूप-निधान BCE, रूप-निधाँन D, दासी रूप-विलासी देख E । २ . हूवउं गुमान B, हुवो गुमान D, वार-वार चिंतै अनिमेष E । ३ अछइ . AC, जेहनै छै.. D, जेहनी दासी छै एहवी E । ४...कहु.. A, .आपि हुस्यइ ..BE,.. कहो आपि हुस्यइ...C, . कहौ.. D । इसके नीचे BCD प्रतियोंमें यह कवित्त है ।

आगलि बहुत खवासि, नारि बहु पोडस करती ।
पाछलि मरइ पैंच-च्यारि, च्यारिसित चिहु दिसि रंती ।

व्यास कहइ[1]-"सांभलि[2] सुलिताँण[3]! पदमिणि[4] नारि तणा[5] अहिनाँण[6] ।
झलकंती[7] जाणे वीजली[8], कुंदण-कंति जिसी ऊजली ॥ ३१४ ॥
अंधारइ[1] अजूआलउं[2] करइ[3], देखंताँ[4] त्रिभुवन मन[5] हरइ[6] ।
परिमल कमल सरीखउं[7] तास[8], भूला भमर न छंडइ[9] पास[10] ॥ ३१५ ॥
ते आवी छानी किम रहई[1], सुणि आलिम[2]!" इम राघव कहई[3] ।
आलिम[1] एम कहई[3]-"सुणि व्यास[4]! धन्य! धन्य[5]! ए[6] सगली दासि ॥ ३१६ ॥
पदमिणि[1] पासि[2] रहइ[3] नितु जेह[4], निजरि[5] निहालई पदमिणि[6] देह ।
किण[7] परि निजरि हुइसी पदमिणी[7]"? व्यास[8] कहइ -"सांभलि मुझ धणी[8] ॥ ३१७ ॥
उंचउं[1] दीसइ[2] ए आवास, इहाँ[3] छइ[4] पदमिणि[5] तणउं[6] निवास ।
रतनसेँन राजा इहाँ[3] रहइ[7], पदमिणि[8] विरह खिण इक नवि सहइ[8] ॥ ३१८ ॥

॥ कवित्त ॥

लखदह[1] लहइ[2] पल्यंग[3], सउंडि[4] सतलाख[5] सुणिज्जइ[6] ।
गाल-मसूरी[7] सहस, सहस गंदूआ[8] भणिज्जइ[9] ।
तस[10] ऊपरि दोवटी[11], मोलि दस[12] लाखे लीधी[13] ।
अगर कुसुम[14] पटकूल[15], सेजि[16] कुंकुम पुट दीधी[17] ।
अलावदीन सुरिताण[18] सुणि[19], विरह[20] विथा[21] खिण[22] नवि खमइ[23] ।
पदमिणि[24] नारि सिणगार करि[26], रतनसेँन सेजइँ[27] रमइ[28] ॥ ३१९ ॥

चमर ढलइ चिंहु पासि, भमर वहु रुणझुण मडइ ।
सुर-नर पिष्यिय रूप, गरव मनि ततखिण छडइ ।
हस गमणि गय गेलिस्यु, ठमकि ठमकि पग ते ठवइँ ।
कहइँ राघव-"सुलताण सुणि, पदमिणि गति इणि परि हुवइँ ॥

१ वहूत C, बोहुत D । २ खवास CD । ३ वहू C । ४ पोईस B । ५ करती B । ६ पाछिल D । ७ सइपँच B, सयपँच D । चिंहु CD ।

॥ ३१४ ॥ १ कहि C, कहै D । २ सभलि C । ३ सुलताण B, सुलताणि C । ४ पदमणि D । ५ तणाँ D । ६ अहिनाण BCD । ७ झवकती D । ८ वीजुली B, वीजुली C, वीजली D । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ ३१५ ॥ १ अधारे C, अधारै D । २ ऊजवालो C, ओजवालो D । ३ करइँ B, करै D । ४ देखता BD । ५ मनि D । ६ हरइँ B, हरै D । ७ सरीखो CD । ८ वास D । ९ छडि C, छडै D । १० पाँस BC, खास D । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ ३१६ ॥ १ रहइँ B, रहै D । २ आलम D । ३ कहइँ B, कहै D । ४ व्यास D । ५ धनि-धनि BD, धन धन C । ६ एते BCD । A ३०९ । B ३५३ । C ३५४ । D ३८५ । E प्रतिमें यह नहीं है।

॥ ३१७ ॥ १ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिण E । २ पासइ C । ३ रहई BC, रहै DE । ४ निति D, नित E ५ नजरि B, नजर C । ६ निहालइ AC, निहाले DE । ७ नजरि होसी .B, होइसी ...C, किणि .होसी. D, किस विधि हूहै E । ८ कहि-'सभलि C, व्यास कहै . D, कहै-"सुनि दिली E ।

॥ ३१८ ॥ १ ऊचउं B, ऊचो C, उचौ D, उचो E । २ दीखइँ B, दीसै DE । ३ ईहाँ B, ईहा C, तिहाँ E ४ छइँ B, छै DE । ५ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिन E । ६ तणो CE, तणौ D । ७ रहइँ B, रहै D, जाइ E । ८ विरह क्षिणइक सहइँ B, पदमिणि विण इक खिण नवि रहइ A, पदमणि विरह खिण एक न सहै D, भमर कमल जिम प्रेम सुखइ E ।

॥ ३१९ ॥ १-दश B, दस CE, दल D । २ लहै DE । ३ सेज C, पिलग D, पलिंग E । ४ सोडि DE । ५ सतलक्ष B, सतलख्य C, सत्तलख D, सतलख E । ६ सुणीजइँ B, सुणिजइ C, सुणीजै DE । ७

॥ चोपई ॥

अउर[1] न देखइ[2] पदमिणि[3] कोइ, जो[4] देखइ[5] सो[6] गहिलउं[7] होइ ।
पदमिणि[3] पुण्य[8] पखे[9] क्युं[10] मिलइ[11], जिणि[12] दीठी[13] नारी[14] ग्रव[15] गलइ[16]'' ॥ ३२० ॥
इम ते व्यास अनइ[1] सुलिताँण[2], वात[3] करइँ[4] बे चतुर सुजाँण[5] ।
तिणि[6] अवसरि[7] पदमिणि[8] चीतवइ[9], "देखुं[10] असुर किसउं?"- इम चवइ[10] ॥ ३२१ ॥
तितरइ[1] जंपइ[2] दासी एक, "गउंख हेठि वइठउं[4] सुविवेक[5]" ।
ते[6] देखण गउंखइ गज-गती[6], आवी[7] बेठी[8] पदमावती ॥ ३२२ ॥
जाली[1] माहे जोवइ जिसइं[1], व्यासइं[2] दीठी पदमिणि तिसइं ।
ततखिण[3] व्यास वली[4] वीनवइ[5], "साँमी[6]! पदमिणि देखउं[7] हवइ[8]" ॥ ३२३ ॥
रतन-जडी[1] देखउं[2] जालिका, ते माहे[3] दीसइ[4] बालिका ।
आलिम[5] उंचुं[6] जोवइ[7] जिसइ[8], परतिख[9] दीठी पदमिणि[10] तिसइ[11] ॥ ३२४ ॥
"अहो[1]! अहो! ए कहुं पदमिणि[1]? रंभ[2] कहुं, कइ कहुं रुखमिणी[2]?
नागकुमरि कइ[3] का[4] किंनरी[5]? इंद्राणी[6] ऑणी अपहरी[6]? ॥ ३२५ ॥

---

७ मसूर्या BCD । ८ गिंडूआ B, गिडूवा C, गीदवा D । ९ भणिज्जइं B, भणीजइ C, भणीजे DE । १० तसु BCE । ११ दोवडी D, दुप्पटी E । १२ दसलखें B, दसलखे C, दुहलखे D, दहलखै E । १३ लिद्धी BE, लद्धी C, लधी D । १४ कुसम BCD । १५ प्रदकूल D । १६ सेज BCDE । १७ दिद्धी BCE, दिधी D । १८ सुलताण BC, सुलतॉन DE । १९ सुनि E । २० विरह D । २१ विथा BE, वृथा C, विथा D । २२ क्षिण BCDE । २३ खमै DE । २४ पदिमिणि C, पदमणि D । २५ मिंगार BC । २६ सजि E । २७ सेजे B, सेजइ C, सेजै DE । २८ रमै DE । A ३१२ । B ३५५ । C ३५६ । D ३८८ । E ४६५ ।

॥ ३२० ॥ १ ओर C । २ देखै DE । ३ पदिमिणि C, पदमणि D, पदमिन E । ४ जे BCDE । ५ देखै DE । ६ ते D । ७ गहिलो CE, गहिलै D । ८ पुन्य BE, पुनि D । ९ पखइ B, पखै DE । १० किम BCDE । ११ मिलै DE । १२ जिण CE । १३ दीठइँ B, दीठइ C, दीठै DE । १४ अपछर E । १५ ग्रव DE । १६ गलै DE ।

॥ ३२१ ॥ १ अनै D, अने E । २ सुलताण B, सुलतानि C, सुलतॉन D । ३ बात D । ४ करै D, करे E । ५ सुजाण BD । ६ तिण DE । ७ अवसिरि C । ८ पदमणि D, पदमिन E । ९ चींतवइ B, चितवै D, चींतवै E । १० देखउं .चवइं B, देखो . किसु . C, . किसो .हुवै D, आलम केहवेजे इम चवै E ।

॥ ३२२ ॥ १ तितरइ B, तितरै D, तितरे E । २ जपै DE । ३ गोखि CD, गोख E । ४ वेठो C, वैठो D, वेठो E । ५ सुविवेक D । ६ गोखि C, गोखइ D, तसु मुख देखण तव गजगती E । ७ आवइ C, आवे DE । ८ वयठी B, वइठी C, वैठी D, गोखै E ।

॥ ३२३ ॥ १ जालिका माहइ जोवइं जिसइं B, जालिका मॉहि C, जाली माहे जोवै जिसै D, जाली माहिँ जोवै जिसै E । २ व्यासइ B, व्यासि C, व्यासै D, व्यासे E । ३ तत खिणि D । ४ वली D । ५ वीनवइँ B, विनवै D, वीनवै E । ६ स्वामी BCDE । ७ देखो CE, देखौ D । ८ हिवइँ B, हिवै DE ।

॥ ३२४ ॥ १ जटित BCDE । २ देखो C, देखौ D, जे छै E । ३ माही BE, माहि D । ४ वइठी BC, वैठी D, वेठी E । ५ आलम D । ६ ऊचउं B, ऊचो C, ऊचौ D, उचो E । ७ जोवइं B, जोई C, जोवै DE । ८ तिसइँ B, जिसै DE । ९ परतखि D, परितिख E । १० पदमणि D, पदमिन E । ११ तिसइं B, तिसै DE ।

॥ ३२५ ॥ १ वाहि ! वाहि ! यारॉ ए पदमिणी B, वाहि ! वाहि ! यारा ए पदिमणी C, वाहि ! वाहि ! यारॉ ए पदमणी D, वाहि ! वाहि ! यारो ये पदमिनी E । २ रम किता ए छद रूकमिणी B, रंभ कन्या ए छद रुकमिणी C, रम किना ए छै रुकमणी DE, रुखमणी E । ३ ४ कि ना BCDE । ५ किनरी CDE । ६ कइ इद्राणि आणि (ऑणि C) E, कै इद्राणी आणी हरी D, इद्राणी आणी अपहरी E । A ३१८ । B ३६० । C ३६१ । D ३९५ । E ४७८ ।

एहनउं[1] रूप अनोपम एह,[1] रूप तणी इणि[2] लाधी रेह।
एहना एक अँगूठा जिसी, अवर नारि नहु दीसइ[3] इसी[4] ॥ ३२६ ॥

एहनी वात[1] कहीजइ[2] किसी, पदमिणि[3] नारि हीया महि[4] वसी[5]।
मूर्छित चित्त हूउं[6] पतिसाह, धरणि ढलइ[7] वलि[8] मेल्हइ[9] धाह ॥ ३२७ ॥

व्यास[1] कहइ[2]- "सांभलि[3] नर-राज,[4] फोकट[5] काँइ[6] गमाडउ[7] लाज[8]।
धीर[9] धरउ साहस आदरउ,[9] अवर उपाय[10] वली[11] के[12] करउ[13] ॥ ३२८ ॥

रतनसेंन[1] जउं[2] पाँनइ[3] पडइ[4], तउं[5] ए पदमिणि[6] हाथइ[7] चढइ[8]।
इम आलोची[9] मेल्ही[10] वात[11], धीरपणा विण[12] मिलइ[13] न धात[14]" ॥ ३२९ ॥

मौन[1] करी सहु जीमिउं साथ[1], भगति घणी कीधी नर-नाथ[2]।
फल[3] फोफल देई तंवोल[3], माहों-माहि[4] कीउं[5] रँग-रोल ॥ ३३० ॥

चोआ[1] चंदण[2] अगर कपूर, करि कसतूरी[3] केसर[4] पूर।
माहो-माहि[5] कीया छाँटणा, ऊपरि दीधा वागा[6] घणा ॥ ३३१ ॥

परिघल दीधी पहिरामणी[1], भगति[2]- जुगति अति कीधी घणी[3]।
हाथी-घोडा देई घणा[3], संतोष्या सगला प्राँहुणा[4] ॥ ३३२ ॥

हिव इम जंपइ[1] आलिमसाह[2], माहो-माही[3] साही[4] वाह[5]।
"कोट दिखाडउं[6] अब हम[7] भणी, हम[8] आयाँ हूई वेला घणी[8]" ॥ ३३३ ॥

॥ ३२६ ॥ १...अनूपम B, एहनो ..C, एहनौ ..अनोपम ..D, अति ही अनूपम नारी एह E। २ इम BE, एह C। ३ दीसै DE। ४ किसी BCD।

॥ ३२७ ॥ १ वात D। २ कहीजै D। ३ पदिमणि C, पदमणी D। ४ माहि BCD। ५ वसी D। ६ हूवउं B, हूयो C, हूवौ D। ७ ढल्यो BC, ढल्यौ D। ८ वलि BD। ९ मेलइ C, मूकै D। E प्रतिमें यह नहीं है।

॥ ३२८ ॥ १ ब्यास B। २ कहइँ B, कहि C, कहै DE। ३ समलि DE। ४ पतिसाह BCD, सुलताँन E। ५ फोकटि C, फौकट D, फोगट E। ६ काय D। ७ गमाडइ BC, गँमावै D, गमावो E। ८ साह BCD, माँण E। ९ धरो आदरो C, धीरज धरि आदरौ D, धीरज धरि आदरो E। १० अवरोपाव C, उपाय DE। ११ वली BE। १२ को BCDE। १३ करो CE, करौ D।

॥ ३२९ ॥ १ रतनसेँनि D। २ जे B, जो C, जौ D। ३ पानइ B, पाँनै C, पाँने E। ४ पडइँ B, पडै C, पडैं E। ५ तो CE, तौं D। ६ पदमणि D, पदमिन E। ७ हाथइ C, हाथे D, हाथै E। ८ चडइँ B, चडइ C, चढै D, भडै E। ९ आलौची D। १० मेलइ BC, मेलै D, मेले E। ११ वात D। १२ विणि D, विनु E। १३ मिलै DE। १४ घात E।

॥ ३३० ॥ १ .जीमो...C, मून जीमौ D, इम करताँ जीम्यो E। २ नाथि B। ३ फल फोफल वलि देइ तवोल B, फल-फोफल वलि देइ तवोल C, श्रीफल देइ दीधा तवोल E। ४ माँहि DE। ५ कीया BCDE।

॥ ३३१ ॥ १ चोवा BCDE। २ चदन BCDE। ३ कस्तूरी BC, किसतूरी D। ४ केशरि B, केशर C, केसरि D। ५ माँहो-माँहि C। ६ वागा D। A ३२४। B ३६६। C ३६७। D ४००। E ४७७।

॥ ३३२ ॥ १ पहिरेँमणी E। २ युगति...B. जोगति. .C, जरकस ने पाटवर तणी E। ३ घणाँ B। ४ प्राहुणाँ B, प्रहुणा CE।

॥ ३३३ ॥ १ जपइँ B, जपै DE। २ आलमसाह CE, आलिमसाहि D। ३ माहे-माहे BD, माँहो-माँहि C, माहो माहिँ E। ४ झाली DE, ५ वाँह CE, बाहि D। ६ दिखलावउं B, दिखलावो C, दीखावो D, दिखावो E। ७ अम्ह BD। ८ तुम महिमानी कीधी घणी B, तुम महिमाँनी कीधी घणी CDE।

रतनसेँन[1] नृप साथइ[2] थयउ[3], कोट[4] दिखाडण[5] लेई गयउ[6] ।
विसमी[7] जे-जे हुंती ठोड[8], फेरि[9] दिखायउ[10] गढ चीतोड[11] ॥ ३३४ ॥

विसम घाट[1] अति वाँकउ[2] कोट, माहि[3] न देखइ[4] काई[5] खोट ।
गोला-नालि घणी[6] ढीकली[7], कदही कोई[8] न सकइ[9] कली[10] ॥ ३३५ ॥

गढ[1] देखंता ग्रव सव गलइ[1], इसडउ[2] कोट कदे नवि मिलइ[2] ।
हिव[3] इम जंपइ आलिमसाह[3], माहों[4]-माहे अधिक उछाह[4] ॥ ३३६ ॥

"काम[1] काज कह्यो[2] हम भणी, तुम[3] महिमाँनी[4] कीधी घणी ।
सीख दिउ[5] हिव[6] ऊभा रही", आलिमसाह कहइ[7] गहगही ॥ ३३७ ॥

भूप भणइ[1]- "आघेरा[2] चलउ[3]! जिम अम्ह[4] जीव हुइ[5] अति भलउ" ।
एम कही आघउ[6] संचरिउ,[7] गढथी वाहरि[8] नृप नीसरिउ[9] ॥ ३३८ ॥

नृप मनि कोइ नही वलवेध[1], खुरसाणी मनि अधिकउ[2] खेध[3] ।
व्यास कहइ- "ए अवसर अछइ, इम म[4] कहेज्यो[5] न कहिउ[6] पछइ[7]" ॥ ३३९ ॥

॥ दूहा ॥

["अवसर चुक्का मेहला[1], वरसी काह[2] करेस ।
खड सुक्का गोरू मुआ[3], वाल्हा गया विदेस" ॥] ३४० ॥

॥ चोपई ॥

हलकारया आलिम[1] असवार, माहों-माहि[2] मिल्या जूझार[3] ।
रतनसेँन झाल्यउ[4] ततकाल, विलली[5] वात[6] हूई[7] विसराल[8] ॥ ३४१ ॥

॥ ३३४ ॥ १ रतनसेँनि त्रप D । २ साथे BC, साथै DE । ३ थयो BC, थयौ D, थया E । ४ गढ BCDE । ५ दिखलावण BDE, देखलावण C । ६ गयो BC, गयौ D, गया E । ७ विषम-विषम जे हुवी (हूँती C) ठोट BCDE । ८ फिरी BCDE । ९ दिखाड्यो BCD, देखाड्यो E । १० चीत्रोड BC ।

॥ ३३५ ॥ १ घाटि C । २ वाँको BCDE । ३ माँहि E । ४ देखै DE । ५ काँई BCDE । ६ धरी D, वहै E । ७ ढींकुली B, ढीकुल C । ८ कोई ABCDE । ९ सकइ B, सकै DE । १० नीकली D ।

॥ ३३६ ॥ १ गरव गल्यउ BC, गढ देख्याँ गढपति ग्रव गलै DE । २ .मिलउ BC, इसडौ कोट कदे नहु मिलै D, एहवो कोट न कदहि मिलै E । ३ जपइँ B, जपै D, हिवै इम जपै आलमसाह E । ४ माहो माहे BCD, तुम्ह रतन हो मेरी वाह E ।

॥ ३३७ ॥ १ काँम CDE । २ कहिय्यो B, कहियो CE, कहिज्यो D । ३ तुम्हि BC, तुम्ह E । ४ महिमानी BCDE । ५ दीयउ BD, देउ C, दीयै E । ६ हिवे BD, हिवइ C, वलि E । ७ कहिइ C, कहे D । A ३३० । B ३७६ । C ३८६ । D ४०७ । E ४८४ ।

॥ ३३८ ॥ १ कहइ BCDE । २ आघेराँ B । ३ वलउ B, चलो CDE । ४ हम BCDE । ५ होवइ BC, होइ D, हुइ E । ६ आघो CE, आघौ D । ७ सचर्यउ B, सचर्यो CE, सचर्यौ D । ८ वाहिर CE । ९ नीसर्यउ BE, नीसर्यो CD ।

॥ ३३९ ॥ १ छल-भेद BCDE । २ अधिको CDE । ३ खेद BCDE । ४ न C, मत DE । ५ कहय्यो B, कहिज्यो C कहिज्यौ D, कहज्यौ E । ६ कहियउ B, कहीयो C, कह्यो E । ७ पछै DE ।

॥ ३४० ॥ १ मेहडा C । २ काहु D, कहा E । ३ मुया C, मुवा D । A प्रतिमें यह दोहा नहीं है ।

॥ ३४१ ॥ १ आल्म DE । २ °माँहे B, माँहि C °माहिँ E । ३ झूझार BCDE । ४ झाल्यो BCDE । ५ निचली BCDE । ६ वाच BC, वात CD । ७ हुवी B, हुया C, हुई E । ८ विकराल D ।

॥ सोरठा ॥

रूखाँ माहे[1] राउ[2], आँवा[3] भणी परसंसियइ[3] ।
मुहि रस[4] हीयइ[5] कसाउ[6], कहु[7] किम हीयइ पतीजियइ[7] ॥ ३४२ ॥

॥ दूहा ॥

"नृप[1], वयरी[2], वाघा तणउ, जे विश्वास करंत[3] ।
ते नर कच्चा जाणिए-" आलिम एम कहंत[4] ॥ ३४३ ॥
"वयरी[1] विसहर व्याध वघ, ग्रासी गढपति राउ[2] ।
छल-वलि गृहिए दाउ धरि, लग्गइ[3] कोइ न पाउ[4] ॥ ३४४ ॥
तइं[1] महिमांनी हम करी, अब तूं हम महिमान ।
[2]पदमिणि देइ करि छूटस्यउ[2], रतनसेंन राजान[3]" ॥ ३४५ ॥

॥ चोपई ॥

साथि हुता जे सुभट[1] सनेह, तियाँ[2] तणउ तिणि कीधउ छेह[2] ।
नरपति[3] आणिउ लसकर माहि[3], जाणि[4] कि सूरिज गिलीउ[5] राहि ॥ ३४६ ॥
वेडी[1] घालि वेसारिउ राउ[1], आलिम[2] जुलम कीउ अन्याउ[2] ।
भूप[3] हतउ अति सबलउ सही[3], अवल हूउ[4] जव लीधउ[5] ग्रही ॥ ३४७ ॥

[आठमो खण्ड]

सुणी सहू गढ माहे वकी, वात तणी विणठी वाँनकी ।
[1]गढ माहे हुइ हलफल घणी,[1] [2]साही लीधउ जव गढ-धणी[2] ॥ ३४८ ॥

॥ ३४२ ॥ १ माँहेँ C, हृदा E । २ राव DE । ३ °प्रससीइ C, °प्रसंसीयै D, आँवा 'तुज्झ' सराहियै E । ४ मुख E । ५ हियै DE । ६ कसाव DE । ७ कहो किम हियै पतीजियै D, अवराँ केम पतीजियै E । A प्रतिमें यह सोरठा नहीं है । B ३८१ । C ३९१ । D ४१५ । E ४८८ ।

॥ ३४३ ॥ १ म्रप D । २ वइरी C । ३ करति B । ४ कहति B । A प्रतिमें नहीं है ।

॥ ३४४ ॥ १ वैरी B । २ आप BE । ३ लागै DE । ४ पाप BE । A प्रतिमें नहीं है ।

॥ ३४५ ॥ १ तैं DE । २ पदमणि देई छूटस्यौ D, पदमिन दीधो छूटि हो E । ३ राजाँन CDE । A प्रतिमें नहीं है ।

॥ ३४६ ॥ १ सुहड E । २ तीयाँ ..A, तियाँ (तिआँ E) चढाई रजनी (रजवट E) रेह BCDE । ३ .आण्यो . BC, ग्रहि आण्यौ म्रप (आण्या नृप E) लसकर माहि DE । ४ जाणे BC, जाणै DE । ५ गलियो BCD, ग्रहीयो E ।

॥ ३४७ ॥ १ वेढि घालि वइसार्‌यउ B, वेडि घालि बइसारथो राय C, वेढि घालि वैसारथो राय D, वेढि घालि वैसार्‌यो राइ E । २ आलिम जिम कीधउ (कीधा D) अन्याय BC, आलम जुल कीयौ अन्याय (कीयो अन्याइ E) DE । ३ राणउ हुतउ B, राणो CD, राजा E, हुतो BE, हुतौ D, सबलो CE, सबलौ D । ४ हुवउ B, हुयो C, हुवौ D, हुओ E । ५ लीधो CE, लीधौ D । A ३३५ । B ३८६ । C ३९६ । D ४२० । E ४९३ ॥

॥ ३४८ ॥ १ हुलवल हूई सहिर बाजार E । २ साही लीधउ गढ नउ धणी B, लीधो गढनो . C, पकडे लीधे गढनो .D, पकडाणो राजा सिरदार E ।

मिलिया[१] सुभट दहो[२] दिसि वली[३], सेना सगली गढ सहि मिली ।
[४]मिलिया[४] माणस टोला टोलि[५], सवल जडावी गढनी पोलि ॥ ३४९ ॥

[१]वीरभॉण सुत सुभटॉ माहि[१], [२]वइठउ आवी ग्रही गजगाहि[२] ।
माहो-माहि करइ आलोच, सवल हूउ[३] गढ माहि[४] सँकोच ॥ ३५० ॥

एक कहइ[१]–"घॉ[२] राती वाह", एक कहइ "जूझॉ[३] गढ माहि" ।
एक कहइ–"सॉमी[४] सॉकडइ[५], जूझंतॉ किम टाणु जुडइ" ॥ ३५१ ॥

एक कहइ[१]–"नहि[२] नायक[३] माहि, विण नायक[३] हत सेन कहाइ ।
नायक[३] विण सहु[४] आल पंपाल[४], पूलइ[५] वॉध्यउ जिउँ सुसपाल" ॥ ३५२ ॥

एक कहइ[१] "मरवुं[२] छइ[३] सही, मूऑ[४] गरज सरइ[५] का नही ।
सवलॉसुं[६] नवि[७] थाइ संग्राम, [८]जिण परि तिण परि न रहइ मॉम[८] ॥ ३५३ ॥

इम[१] आलोच करइं भट[१] सहू, [२]मन माहे भय हूउ वहू[२] ।
तितरइ[३] आविउ[४] इक[५] परधॉन[६], आलिमसाहि[७] तणउ असमॉन[७] ॥ ३५४ ॥

खवर[१] करावी[२] आविउ[३] माहि[४], एम कहइ[५] छइ[५] आलिमसाहि[६] ।
"हमकुं[७] नारि दियउ [८]पदमिणी,[८] [९]जिम हम छोडॉ गढनउ धणी[९] ॥ ३५५ ॥

॥ ३४९ ॥ १ मिलीया A, मिलिया BCD । २ ते दह दिसि BCD । ३ वली BCD । १-३ तेड्या सुहड दसो दस वली E । ४ माहे B, माहि C, माहे D, माहि E । ५ .मानस AB, कटक सजाणो घण हाल कलोल E ।

॥ ३५० ॥ १...मॉहि BC, वीरमॉण सुत सुभटज .D, वीरभाण तव करि दरगाह E । २ वइठो. .(वयठो D) गृही गज गाह (गजसाह C) B, तेड्या सुहड सवे गजगाह E । ३ हुवउ B, हूयो C, हुवो D, हूओ E । ४ माहे BD ।

लोक कहे कुमति हुवो (°यो E) राय (°इ E), काइ विस्वास कियो असुराय D (असपतिनै आण्यो गड माहि E)

राय ग्रहो पदमणि पणि ग्रहे, गढ तोटै जण खय जसवहे D ।

वलि पछुचावण साथै थया, गढ वाहरि अलगा जो गया E । D ४२३ । E ४९७ ।

तो राजा पडिया तिण पास, असुर तणा केहा विस्वास ।

राय ग्रह्यो पदमिन पणि ग्रहे, गढ चीतोड हवै नवि रहै । E ४९८ ॥

॥ ३५१ ॥ १ कहइ BC, कहै DE । २ घउ BD द्यो C, दियो E । ३ झूझउ B, झूझो CD, झूझो E । ४ सामी BCD । ५ सँकटै DE । ६ झूझतॉ टाणउ BC, झूझतॉ . टाणो जुडै D, लडतां तेहनै भारी पडै E ।

॥ ३५२ ॥ १ कहइ BC, कहै DE । २ नही A । ३ नाइक BC । ४ विन BCE, विणि. .पताल D, एहवो कोइ करो मत्रणो E । ५ ..पहिलउ B, पहिलइ C, काइ सवै मिल झखौ आल D, मान रहै हिंदू ध्रम तणो E ।

॥ ३५३ ॥ १ कहइ BC, कहै DE । २ मरिव्यो B, मरिवो CDE । ३ छै DE । ४ मूवा BD, मूया C । ५ सरै D । ६ स्यु BC । ७ न E । ८ होइ BCD । ९ हारि हुयै तो न रहै माम E । A ३४१ । B ३९३ । C ४०३ । D ४७८ । E ५०२ ।

॥ ३५४ ॥ १ आलोचइ सामंत BC, आलोचै सामत DE । २ मन माहि विघन हुवा (हूया C) अति वहू BCD, चिंता उपजी चितमै वहू E । ३ तितरइ BC, तितरै D, तितरे E । ४ आव्यो BC, आयौ DE । ५ एक BCDE । ६ परधान BCDE । ७ आलमसाह (तणो D) असमान BCD, हुकम करै छै इम सुरतॉण E ।

माहि तेड्यो नीसरणी ठवी, मत्रि महाबुधि जाणग कवी ।
इम जपै छे आलमसाह, तुम्हे कहो तेहनी शु वाह ॥ E ५०४ ॥

॥ ३५५ ॥ १ खवरि BCDE । २ कराई C । ३ आवि BCDE । ४ माहि BCDE । ५ कहै छै D । ६ आलमसाहि BCDE । ७ हमकौं E । ८ दियौ DE । ९ जिम हूँ छोटउ BCD, जिम मैं छाडों गढका धणी E/१ ।

[1]नही तरि प्राणइं लेशाँ सही[1], [2]जउं तुम्ह इण परि देशउं नही[2]।
[3]जउं तुम्ह देशउं हम पद्मिणी[3], [4]तउं छूटेसी गढनउं धणी[4] ॥ ३५६ ॥

नहीं[1] तरि गढपति लीधउं[2] अही, गढ पिण[3] हेवइ[4] लेशाँ[5] सही।
गढ लीधइ[6] लीधी पद्मिणी,[7] हठीउं [8]असपति [9]करसी [10]धणी ॥ ३५७ ॥

मरशउं[1] सुभट[2] सहू ससनेह, कइ[3] हम सीख करउं[4] तुम्हि [5]एह"।
एम कही[6] ऊठिउं [7]परधाँन, [8]तितरइ बोल्या ते ससमाँन[8] ॥ ३५८ ॥

"वात विचारी कहशाँ अम्हे, ताँ लगि पडखउ इक दिन तुम्हे"।
एम कही राखिउ परधाँन, सुभट करइँ आलोच समाँन ॥ ३५९ ॥

"कहउं[1] हिवइ[2] परि कीजइ[3] किसी, विसमी वात हुई ए इसी।
[4]जउं ए देशाँ इम पद्मिणी[4], [5]तउं पिण माँम रहइ नही चिणी[5] ॥ ३६० ॥

विण दीधइ[1] सहु[2] विणसइ[3] वात, पद्मिणि[4] विण का न मिलइ[5] धात।
प्राँणइ[6] ए तउं [7] लेशइ [8]सही, [9]जे इम आविउं छइ इहाँ वही[9] ॥ ३६१ ॥

प्राँणइ लेताँ विणसइ[2] घणुं[3], [4]न रहइ वाँसइ एको त्रिणुं[4]।
[5]नही तरि जाशइ इक पद्मिणि,[5] [6]अवर विणास हुइ नहु चिणी"[6] ॥ ३६२ ॥

बीरभाँण पिण[1] पद्मिणि[2] दिसी, देताँ होवइ[3] मन महि खुशी।
"इणि मुझ मात तणउं[4] सोहाग, लेई दीधउं[5] दुख दउंहाग[6] ॥ ३६३ ॥

॥ ३५६ ॥ १ लेस्यु B,.. प्राणै लेसु . D, नहि तव लेंगे मै खड प्राण E। २ जो देस्यो . BD, गढ गजिहि गजिहि हिंदूआण E/२। ३ खुसी न थउं (देउ D) BD, खुसी होइ थैगे पदमिनी E। ४ खुदा न करइ (करै D) राखउ गढ धणी BD, में भी छोडौंगा गढका धणी ॥ E/१। C प्रतिमें यह चौपई नहीं है।

॥ ३५७ ॥ १ नहि BCD। २ लीधो C, लीधौ D। ३ पणि BCD। ४ हेवें B, हिवै D। ५ लेस्यो B, लेस्यु C, लेसु D। ६ लीधै D। ७ पदिमणि C, पदमणी D। ८ हठियो BCD। ९ आलिम BCD। १० करिसइ C। E प्रतिमें यह चौपई नहीं है।

॥ ३५८ ॥ १ मरउं BC, मरो D २ सेवक D। ३ कै D। ४ करो CD। ५ तुम्ह BCDE, प्रतिमें यह अर्द्धाली नहीं है। ६ कही नइ BC, कही नै DE। ७ गयो BCDE। ८ सुभट करइ (करै D) आलोच समान BCD, सवि आलोच पड्या असमान E/२। B ३९८। C ४०७। D ४३३। E ५०६।

॥ ३५९ ॥ BCDE प्रतियोंमें यह चौपई नही है। A ३४७।

॥ ३६० ॥ १ कहु A, कहो CDE। २ हिवै DE। ३ कीजै DE। ४ जइ BC, जै D, जो E, आपइ BC, आपै DE, देस्या BCD, पदिमणी C, पदमणी D, पदमिनी E। ५ पिणि माम .B, तो पणि आपणी C, तो काइ मास रहै नहि चिणी D, तो पिण वट न रहै आपणी।

॥ ३६१ ॥ १ दीधै D, दीधा E। २ सवि BCDE। ३ विणसै CD। ४ पदमणी D, पदमिनी E। ५ मिलै DE। ६ प्रॉणइ BC, प्रांणै DE। ७ ई ए BC, ए तो DE। ८ लेसइ BC, लेसौ DE। ९. आव्यो छइ इण परि (आयौ DE, छै DE) BCDE।

॥ ३६२ ॥ १ प्राणइ BC, प्राणै DE। २ विणसै DE। ३ दाउं BCD, दाव E। ४ रहइ वासइ (रहै वासे D) कोइ त्रिणाउं BCD, गढ न रहे नवि छूटे राव E। ५ नहि तरि जाइ एक पदमिणी B, नहि तरि जाए एकामिणी C, नहि तरि जाइ एक पदमणी D, नहि तरि इक जाता पदमिणी E। ६ न होवइ BC, . न होवै D, वरती रहै रहै गढ धणी E।

॥ ३६३ ॥ १ पणि BCD, पिण E। २ पदमणी D, पदमिन E। ३ थ्यौ E। ४ तणो BCDE। ५ दीधौ DE। ६ दोहाग BCDE।

तिणि[1] कारणि देताँ[2] पद्‌मिनी[3], "वलि मुझ मात हुइ सामिनी"[4]।
वीरभाण समझावी[5] कहइ[6]–"पद्‌मिणि दीधइ[7] सगलुं[8] रहइ[9]" ॥ ३६४ ॥

नाथ पखइ[1] सहु काचउं[2] हाथ, छल-चल-भेद न जाँणइ[3] धात।
एक ससी कहि इक विपरीत, कोई भार न झालइ[4] चीत ॥ ३६५ ॥

सगले सुभटे थापी वात– "पद्‌मिणि[1] देशाँ[2] हिव परभाति"[3]।
इम आलोची ऊठ्या जिसइ[4], पद्‌मिणि[1] सहु सांभलीउं[5] तिसइ[6] ॥ ३६६ ॥

[1]पद्‌मिणि हेव हीइ खलभली[1], "वात वुरी मइँ ए साँभली।
खंडुं[2] जीभ! दहुं निज देह! पिण[3] नवि जाउं[4] असुराँ गेह ॥ ३६७ ॥

[1]राजा इणि परि वंधे दीउं[1], वाँसइ[2] ए आलोचह[3] कीउं[4]।
सगला सुभट हूआ सतहीण! हिव[5] किण[6] आगलि भाषु दीण ॥ ३६८ ॥

वखत इसउं[1] मुझ आविउं[2] वहीं[3], सरणाई को[4] देखुं नही।
हिव जगदीस[5]! करीजइ[6] किसुं[7] ? देखउं[8] संकट आविउं[9] इसुं[10] ॥ ३६९ ॥

ऐ जीव! तुं नवि भाषे दीण[1], जीव! म होयो[2] रे सतहीण।
[3]मरताँ सहुवइ समरइ सही[3], [4]दुख-सुख कर्म लिख्या होइ मही[4] ॥ ३७० ॥

कर्म हर्त्ता कर्म कर्त्ता, क़र्म लील विलास[1]।
कर्म्मि आगलि को न छूटइ, राउ रंक[2] नइ दास ॥ ३७१ ॥

॥ ३६४ ॥ १ तिण C। २ दीजै E। ३ पदमिणी BCE, पदमणी D। ४ म्हाकु दुख्य न लागइ (लागै D) चिणी BCD, एह वात छै समझ्या तणी E। ५ समझावइ BC, समझावै D, सुहडाने E। ६ हिवइ BC, हिवै D, कहै E। ७ दीधै D। ८ सगलउं BDE, सगलो C। ९ रहै D। A ३५२।

॥ ३६५ ॥ १ पखै DE। २ काचौ DE। ३ जाणै DE। ४ झालै DE। A प्रतिमें नहीं है। B ४०४। C ४१३। D ४३९। E ५१२।

॥ ३६६ ॥ १ पदमणि D, पदमिन E। २ देस्या BCD, देसा E। ३ परमात BCDE। ४ जिसै DE। ५ समलियो BC, सामली D, सामलियो E। ६ तिसै DE।

वीरभाण कहि वात, सुनहु उमराव प्रधानह।
रखहु गढकी माम, धरा रखहु हींदुआनह।
है राजा पर हथ्थ, है वल देखै भल्ली।
देहु नारी पदमिनी, साहि फिरि जावै दिल्ली।
गढि आइ राण वैठहि तखत, चमर ढुलावहि तुझक धरि।
सिल हेठि हाथ आयौ सु तो, छल हुकमति कढहु सुपरि ॥ ५१३ E ॥

॥ ३६७ ॥ १ ..हिव हियटइ .BC, पदमणि हिवै हिवडै. D, पदमिन हिव चितमै व्याकुली E। २ खाडू BCDE। ३ पणि BCDE। ४ जाउ E।

॥ ३६८ ॥ १. .वाँधी दीयउं BC, वाँधी दीयौ D, असपति वाँधी दीयो E। २ वासै D, वँसै E। ३ आलोचज BCDE। ४ कीयउं BC, कीयौ D, कीयो E। ५ हिवै D। ६ किणि BCD।

॥ ३६९ ॥ १ इसो BCD। २ आयो BCD। ३ वही BD। १-३ आज दिवस मुझ एहवो सही E। ४ कोइ BE। ५ जगदीश्वर BD, जगदीस्वर C। ६ कीजइ BC, कीजै D, करीजै E। ७ किसउं BD, किसौ E। ८ देखो BCDE। ९ आयो BDE, आव्यो C। १० इसो BDE। A ३५६।

॥ ३७० ॥ १ दीन BC, अरे जीव मन भाषै दीण E। २ होज्यो C, हिव मत होजे तू सत्तहीण E। ३ . सहुयौ समरै D, मरण थिया सवि सुधरे वात E। ४ वीजी काइ न पहुचै घात। A में नहीं है। B ४११। C ४१९। D ४४५। E ५१८।

॥ ३७१ ॥ १ लीलवजाम C। २ रग C। ADE में नहीं है। B ४१२। C ४२०।

सीता वाहर रामचँद[1] कीइ, द्रुपदी[2] हरि लेइ पाँडुवा दीइ[3] ।
पदमिणि[4] असुराँ छुटइ[5] नही, रे! रे! जीव! मरण तुझ सही ॥ ३७२ ॥

॥ कवित्त ॥

दइ[1] पोलि[2] छिटकाइ[3], भन्या गढ तुरक नभाया[4] ।
अउर[5] गई घढ मंडि[5], साथि लसकरी सवाया ।
[6]आवत मिलीउ राउ, तब हि कीधी भुंजाई[6] ।
[7]त्रीस सहस जुडि गया, साथि लसकरी सवाई[7] ।
[8]खाण खाइ ऊठिउ जबहि, पकडि बाँह राजा लीउ[8] ।
[9]वात करत लंघाइ पोलि, रतनसैंन काठउ कीउ[9] ॥ ३७३ ॥

[1]करे कटक अलावदी, आइ चीतोडि विलग्गउ[1] ।
[2]वाच बंध दे छलिउ, राउ भूलउ मति भग्गउ[2] ।
[3]कन्यउ मंत्र मंत्रियाँ, राउ छोडावे लिज्जइ[3] ।
[4]झूझण भलउ न होइ, पलटि पदमावति दिज्जइ[4] ।
[5]तनु दहुं जीभ खंडवि मरूं, जोगिणिपुरि पति पेखसुं[5] ।
पदमिणी[6] नारि इम उच्चरइ[7]– "अब[8] किस सरण उवेखस्युं[8] ॥ ३७४ ॥

"[1]बाइ! सुणी इक वात? हुई वाजार सवारी[1] ।
[2]पदमिणि द्यउ पतिसाह, दुरंगू गढ राउ उवारी[2] ।
[3]खीमकर्ण भुज मंत्र, देल्ह पदमसी वयट्ठा[3] ।
[4]मिल्या पंच पंचार, सुभट सईंवल्य न दिट्ठा[4]
[5]चीतोड चोरास्या सवि जुड्या, ताँ नवि सरणइ ऊवरूं[5] !
[6]नवि रहुं सेज सुलिताणकी, अवहुं जीह खंडवि मरूं[6]" ॥ ३७५ ॥

॥ ३७२ ॥ १ रामै D । २ द्रोपती D । ३ पाडव D । ४ पदमणी D । ५ छूटै D । AE प्रतियोंमें नही है ।

॥ ३७३ ॥ १ देइ BC । २ पउलि BCD । ३ य BCD । ४ निभाया BCD । ५ अवर गए गढ माहिं BCD ।
६ खाणा खाइ उठियउ, कोट गढ सहु दिखलायउ खाय D, उठीयो C, उठीया D, सब D, दिखलायो C, (दिखलाया D) BCD ।
७ खुसी हुवा (हुया B) पतसाह (पतिसाह D), देखि छल (छलि C) व्यासि सिखायउ (सिखायो C, सिखाया D) BCD ।
८ सुभट सहू कायर हूवा (हुया B), वाहि (वाह CD) साहि राजा लियउ (लियो C, लियौ D) BCD ।
९ पोलि लघि वहु वात करि, रतनसेन (°नि D) काठउ (काठो C, काठौ D) कियउ (कियो C, कियौ D) BCD । E में नहीं है ।

॥ ३७४ ॥ १ विकल एक ., चित्रोडि (चित्रकोटि D) विलग्गउ । २ वोल वध दे छल्यो, राण भूलउ (भूलो C, भूलौ D) BCD । ३ (करउ A, करिउ D) मत्र मत्रीए राण छोडावी (छुडावि D) लीजइ (लीजै D) BCD । ४ (भलौ D) , पकडि दीजइ (दीजै D) । ५ तन दहउ मरउ, जोगणि हउ पति न पेखु इसु BC, , आलम घरि पिख्यु नही D । ६ पदमणि D । ७ उच्चरै D । ८ सरणइ हू पइसू BC, सु अव किणि सरणै हु रही D । A ३५८ । B ४१५ । C ४२३ । D ४४८ । E में नहीं है ।

॥ ३७५ ॥ १ सखी सुणउ (सुणो C, सुणौ D) , मत्री इम वात सवारी (समारी D) । २ (पदिमिणि C, पदमिणि D), (द्यो C, दिउ D) , पुरग्गढ उगारी (उन्वारी D) । ३ खीमकरण (खेमकरण D) , .. वइठा (वयठा D) । ४ कोइ सत्त न दीठा । ५ चित्रोडि (चित्तोडि D) चओरास्या (चौर्यांस्या D) सव मिल्या, त्या नवि सरणइ ऊगरू (ऊनरू D) । ६ ..रहउ (चढूं D) सुलताणकी, अवहि जीभ खडवि मरउ BCD । E प्रतिमें नहीं है ।

॥ चोपई ॥

इण[1] अवसरि हिव[2] हूउ[3] जेह, थिर मनि करि नइ[4] निसणउं [5]तेह ।
तिणि[6] पुरि[7] गोरउ [8]रावत रहइ[9], [1] खित्रवट रीति खरी निरवहइ[10] ॥ ३७६ ॥

तसु[1] भत्रीजउ[2] वादिल वाल[3], वेरी[4] कंद तणउं कुद्दाल[4] ।
[5]ते वेही वहु वलना धणी[5], वेही राउत वेही गुणी[6] ॥ ३७७ ॥

[1]राउ थकी रीसाणा रहईं, ग्रास न कांई नृप नउ ग्रहइँ[1] ।
[2]घरे रहइँ न करइँ चाकरी, रतनसैंनि मुंक्या परिहरी[2] ॥ ३७८ ॥

[1]ते वेही जाता था जिसइ[1], [2]गढरोहउ मंडाणउं तिसइ[2] ।
[3]रूधइ गढि नवि जाइँ तेह[3], [4]जाताँ लागइ खित्रवटि खेह[4] ॥ ३७९ ॥

[1]तिणि कारणि ते नवि नीसरइँ[1], [2]खरच-वरच पोता नउ करइँ[2] ।
[3]अग तणउं न तिजइ अभिमाँन[3], [4]माँन विना नवि लाभइ माँन[4] ॥ ३८० ॥

खित्री ते, जे खित्रवट धरइ[1], अपजसथी[2] मन माहे डरइ[3] ।
रूधे[4] जाताँ न रहइ[5] माम, करइ[6] अहो निसि नृपनउं[7] काम ॥ ३८१ ॥

[1]व्युंही तीरइ अधिकउं त्रेप[1], साँमि-धरम पालइँ[2] सविशेष[3] ।
गढनी लाज घणी निरवहइँ[4], इणि परि[5] ते वे राउत[6] रहइँ[7] ॥ ३८२ ॥

हिव चिंति चिंतइ[1] इम[2] पदमिणी[3]-"गोरा-वादिल[4] वेही[5] गुणी ।
त्याँसुँ जाइ करुं[6] वीनती, वीजाँ माहि न दीसइ[7] रती" ॥ ३८३ ॥

॥ ३७६ ॥ १ हीण BOE । २ हिवै D । ३ हूवो B, हूयो OE, हूवौ D । ४ करिनै D, करिसवि E । ५ निसुणो C, सुणिज्यौं D, सुणयो E । ६ तिण DE । ७ गढि DE । ८ गोरो C, गौरो D, गोरौ E । ९ रहै DE । १० खित्रवटि (निति वहै D) BCD, तणा विरद भुज वहै E ।

॥ ३७७ ॥ १ तासु BCDE । २ भत्रीजो C, भतीजो DE । ३ वादलराव । ४ वेरी (वैयरी D)...तणो... BCD, सूरातन भरीयो दरियाव E । ५ वे वेई (वेउ D), .BCD, ते वेवै वल छल जाण E । ६ वेई रावत वेई BCD, वे वै रावत वै कुल भाण E ।

॥ ३७८ ॥ १ ते वेई जाता था किसइ (जिसइ D), . कोई (नृपनो C, ग्रपनो D) ग्रसइ BCD । २ (रहै C करै D), रत्तनसेन (BC) BCD, पणि तेहनें नहि सुनिजर साम, खरच ग्रास नवि कोई ग्राम, घरे रहे न करे चाकरी, रतनसेन मूक्या परिहरि E । A ३६० । B ४१९ । C ४२७ । D ४५२ । E ५२७ ।

॥ ३७९ ॥ १ .वेई BC (,वेउ D, वेये E) (जिसै DE) जिसइ BCDE । २ गढरो हो (मडाणो CE, मडाणौ D) BCDE । ३ रूधइ BC (रूधै DE) जायइ BC (जाए D, जायै E).. । ४. लागै DE खेह BC ।

॥ ३८० ॥ १ नीसरै D, तिण कारगि रहिया ग्रहि टेक E । २ विरच BCD, पोतानो D (प्रोतानौ D), हिव जामा काइ हूआ एक E । ३ तणो CE (तणौ D) तजइ BC (तजै DE) . ४ सूर सुभट (महावल E) महा सवल (जोध E), जुवान (जुवान E) BCDE ।

॥ ३८१ ॥ १ धरइ BC, धरै D । २ तै D । ३ टरइ BC, डरै D । ४ रूधइ BC, रुधइ BC, रुधै D । ५ रहइ BC, रहै D । ६ करइ B, करे C, करै D । ७ नृपनो C, ग्रपनौ D, खित्री सोइज खित्रवट चलै, मरण दियै पिण नवि नीकलै । मुडा भला पटतर नाम, खापा छेह हुवै खग जाम E । D ४५५ । E ५३० ।

॥ ३८२ ॥ १ वेहू BC, तीरइ B (तीरे अधिको C, वेउ तीरै अधिको D) तेप विन्हे सुहट मति अधिको रोप E । २ पाल BC, पालै DE । ३ सुविशेष BCD, सुविवेक F । ४ निरवहइ BC, निरवहै DE । ५ इण परि BCD, विधि E । ६ रावत BCDE । ७ रहइ BC, रहै DE । D ४५७ । E ५३२* ।

॥ ३८२ ॥ १ चिंतै DE । २ श्री BCD । ३ पदमणी D, पदमिनी E । ४ वादल BCDE । ५ सुणियर BCD, सुणिजै E । ६ करो BC । ७ दीसै DE ।

[1]इम आलोची पदमिणी नारि[1], चडि चकडोलि[2] पहुंती बारि।
साथइ[3] लेइ सखी परिवार, आवी गोरिलरइ[4] दरबारि[5] ॥ ३८४ ॥

आगलि[1] गोरउ[2] बेठउ[3] दिट्ठ[4], तव तसु नँयणे अमीय पइट्ठ[5]।
गोरइ[6] दीठी जब पदमिणी[7], [8]तव ते हरषित हूवो गुणी[8] ॥ ३८५ ॥

गोरउ[1] साँम्हो[2] धायो[3] धसी, विनय करी इम[4] बोलइ[5] हसी।
"मात! मया बहु कीधी आज, कहउ[6] पधार्‌या केहइ[7] काज[8] ॥ ३८६ ॥

आलसूआँ[1] माहि[2] आवी गंग, [3]पवित्र हूआ मुझ अगण-अंग"[3]।
बलती बोलइ[4] इम[5] पदमिणी[6], "हुं आवी तुम्ह मिलवा भणी ॥ ३८७ ॥

सुभटे[1] सगले दीधी सीख, दया धरम[2]नी लीधी[3] दीख।
सीख दिउ[4] हिव तुम्ह[5] पिण[6] सही, जिम असुराँ घरि जाउं[7] वही[8] ॥ ३८८ ॥

सुभट सहू[1] हूआ[2] सत्त हीण, खिति-पुडि[3] खित्रवटि हूई खीण।
सुभटे सगले दाखिउ[4] दाउ[5], पदमिणि[6] दे नइ[7] लेशाँ[8] राउ[9] ॥ ३८९ ॥

हिव तुम्ह सीख दिउ[1] छउ किसी[2]? [2]सुभटे सगले कीधी इसी[2]"।
गोरउ[3] जंपइ[4]-"सुणि मुझ[5] मात! गढ माहे हुं केही मात्र! ॥ ३९० ॥

[1]खरच न खाओं राजा तणउ[1], पूछइ[2] कोइ नही मंत्रणउ[3]।
पिण मनि आरति म करउ[4] मात! [5]भली हुसी हिव सगली वात[5] ॥ ३९१ ॥

॥ ३८४ ॥ १...आलोचि ते पदमिणि (पदमिनि E) BC। २ चोडोलि E। ३ साथें BCD, साथै E। ४ °रै D, °नै E। ५ दुरवारि A। A ३६८। B ४२५। C ४३३। D ४५१। E ५३४।
*तेहने D (पणि E) मतौ D (तेहने E) न D (नवि E) पूछै कोइ DE।
जै D (जे E) पूछै DE तो इम कार होइ।
जाणहार (DE री एहीं रीति) (धरती हुयै जांम E)।
साचा सुभट न पूछै नीति D (सकजा दुखिता राखै साम। D ४५६। E ५३१।

॥ ३८५ ॥ १ आगइ BC, आगै DE। २ गोरू A, गोरिल BCDE। ३ वेठु A, वइठउ B, बेठो C, बयठो D, वैठो E। ४ दीठ BCDE। ५ पईठ BCDE। ६ गौरे D, गोरै E। ७ पदमणी D, पदमिनी E। ८...हूउ A (हूयो C)., मनि हरष्यो करि आगति घणी E।

॥ ३८६ ॥ १ गोरू A, गोरो BCDE। २ साम्हउ B, साम्हो C, साम्हौ D, सम्हो E। ३ धायउ B। ४ करी नइ BC, करीनै DE। ५ वोलै DE। ६ भलइ BC, भलै DE। ७ केहउ B, केहो CDE। ८ काजि A।

॥ ३८७ ॥ १ आलसूआँ BC, आलसिया D। २ भै E। ३ हुवउ B (हूयो C, हुवो D) आगण C (अगो D)...लहिरे आया मोती नग E। ४ वोलै DE। ५ ते BCDE। ६ पदमणी D, पदमिनी E। कपूर जाणि आयो लांहणै, कामधेन पहुती आगणै E।

॥ ३८८ ॥ १ सुभटें B, सुभटइ C। २ धर्म्म BC। ३ मेल्ही BC। ४ दियउ B, देउ C, दीयौ D, दियो E। ५ तुम A। ६ पणि BCD। ७ जाउ BC। ८ रही B।

॥ ३८९ ॥ १ सवे E। २ हूवा BD, हूया C। ३ क्षिति-पुडि BC, पुहवी D, प्रिथवी E। ४ दाख्यो BCE। ५ दाव DE। ६ पदमणि D। ७ देई DE। ८ लेस्या BCD, लेसा E। ९ राव DE।

॥ ३९० ॥ १ देउ C, दियो DE। २ सुभटा BC, सुभट सहूनी सुधि बुधि खिसी D, कहो वात छै आधिक तिसी। ३ गोरू A, गोरो CDE। ४ जपै DE। ५ मुझि BCD, मोरि E। A ३७४। B ४३०। C ४३९। D ४६५। E ५४१।

॥ ३९१ ॥ १ खाउ BCD तणो D, खरच ग्रास नही राजा तणो E। २ पूछइं BC, पूछै DE। ३ मत्रणो CE, मत्रणौ D। ४ कर A, करो CE, करौ D। ५ सगली होसी भली (रूडी DE) वात BCDE।

जइ[१] तुम्हि[२] आव्या[३] मुझ घरि वही, तउ[४] असुराँ घरि जाशउ[५] नही।
सुभट तणउ[६] ए नही संकेत, [७]अस्त्री देइ नइ लीजइ जेत्र[७] ॥ ३९२ ॥

वरि[१] मरिवउ[२] सुभटाँ नइ[३] भलउ[४], [५]जिणि परि तिणि परि करिवउ किलउ[५]।
अस्त्री[६] देइ नई[७] लीजइ[८] राउ[९]! सुभट[१०] न थापइँ[११] एहवउ[१२] दाउ[१३] ॥ ३९३ ॥

जाण्या सुभट वडा[१] जूझार, [२]अस्त्री देइ नइ ल्यइँ भरतार।
ते जीवी नइ करिशइँ[३] किसुं[४], जिणे[५] काम आलोच्युं[६] इसुं" ॥ ३९४ ॥

पद्मिणि जंपइ[१]-"गोरा[२]! सुणउ[३], इणि[४] घरि छाजइ ए मत्रंणउ[५]।
सिरिखइ[६]-सिरिखउ[७] सगले[८] थाइ[९], भीत[१०] पखे[११] नवि[१२] चित्र लिखाइ ॥ ३९५ ॥

भीति[१] सदाइ[२] झालइ[३] भार, [४]त्राटी वलिनइ थावइ छार[४]।
बीजा ऊभा मुंक्या[५] सही, तउ[६] हुं तुझ[७] घरि आवी वही ॥ ३९६ ॥

॥ कवित्त ॥

तुं हिज राउ[१] गोरिल्ल[२]! तुं हिज दल माहे[३] वड्डउ[४]।
तुं हिज राउ[१] गोरिल्ल[२]! तुं हिज मोरा, प्रिय अड्डउ[५]।
तुं हिज राउ गोरिल्ल[२]! तुं हिज दल वीडउ[६] झल्लइ[७]।
सुणि[८] राउत[९] गोरिल्ल[१०]! नारि पद्मावती बुल्लइ[१३]।

॥ ३९२ ॥ १ जे BODE। २ तुम्ह BODE। ३ आया E। ४ तौ DE। ५ जास्यो BO, जासौ DE। ६ तणो ODE। ७ नारी DE, दे नइ B (देइनि O, देई DE) लेसी BO (लीजै D, कीजै E) जेत्त D (जेत E)।

॥ ३९३ ॥ १ वर BOD, वलि E। २ मरवो OE, मरवौ D। ३ सुभटाँ नइँ BO, सुभटाँ नै D, रजपूताँ E। ४ भलो OE, भलौ D। ५ जिण परि तिण परि BOD करिवो OD .., आम्हो साम्हो करिवो किलो। ६ स्त्री BOE। ७ देइनै DE। ८ लीजइ B, लेजइ O, लीजै DE। ९ राव E। १० सकज E। ११ थायइ BO, थापै DE। १२ एहवो O, एहवौ D, एह E। १३ कुदाव E। E ५४४ *।

॥ ३९४ ॥ १ भला BOD। २ स्त्री देई नइ ले भरतार BO, राणी दे लेस्यै भरतार D, राणी दियै लियै सरदार E। ३ करिस्यइँ BO। ४ किस्यउं BO। ५ जेणे BO। ६आलोच्यउं B, आलोच्यो O। DE में द्वितीय अर्द्धाली नहीं है।

॥ ३९५ ॥ १ जपइ B। २ राउत BOD। ३ सुणो O। ४ एणि O। ५ मत्रिणो O। ६ सरिखइ BO, सरिखै D। ७ सरिखो OD। ८ सगलइ B, सगलै D। ९ थाय D। १० भींति BOD। ११ पखइं BD, पखै O। १२ किम BOD। D में प्रथम चरण नहीं है और E में सम्पूर्ण चौपई नहीं है। D ४६९*।

॥ ३९६ ॥ १ भींति BODE। २ सदाही BOD, सदा लगि E। ३ झाले D। ४ त्राटां वलिनइं (वलिनै थापै D) थावइ BOD, त्राटी वलि जलि थाँथै E। ५ मेल्ह्या B, मेल्या O, मेल्हा D, मेल्ही O। ६ तो ODE। ७ तुम्ह BODE। A ३८० । B ४३६ । O ४४५ । D ४७१* । E ५४९*।

* इणि D (इण E) बुधि DE सारु D (सारै E) सोयो DE राय D (राव E)।
हिवै गढ पदमिणि खोसै जाय D (गढ पिणि गमसै एहवे दाव E)।
स्याल न होय सीहा काम D (इण परि बोल्यो गोरिल जाम E)।
अपजस पूरौ जासै माम D (जपै पदमिण नारी ताम E) ॥ D ४७० ॥
सहु सरिखे निसवादो थाइ, भींत पखै किम चीत्र लखाइ ॥ E ५४८ ॥

"अवर सुहड सत्त हीण हूअ[११], [१२]"जस लीजइ तइँ एकलइ[१२] ।
अल्लावदीन[१३]सुं[१४] खग्ग बलि, रतनसेँन छोडावि लइ[१५]" ॥ ३९७ ॥

॥ चोपई ॥

[१]गोरउ जंपइ[२]-"सुणि मुझ[३] माइ[४]! गाजण[५] हुंतउ[६] मुझ[७] बड[८] भाइ[९] ।
तसु सुत बादिल[१०] अति[११] बलवंत, तेह नइँ[१२] पिण[१३] जाइ[१४] पूछाँ[१५] मंत[१६]" ॥ ३९८ ॥
[१]बेही आया बादिल दिसी[१], [२]बादिल साँम्हो[२] धायउ धसी[२] ।
विनयवंत[३] पग करीय[४] प्रणाम[५], [६]पूछइ बादिल- "केहउ काम[६] " ॥ ३९९ ॥
गोरउ[१] जंपइ[२]-"बादिल[३] सुणउ[४], सुभटे[५] कीधउ[६] ए मंत्रणउ[७] ।
पदमिणि[८] देइ नइ[९] लेशाँ[१०] राय[११]! अवर न मंडइ[१२] कोइ उपाय[१३] ॥ ४०० ॥
पदमिणि[१] आवी[२] आपाँ पासि, हिव[३] तउ कासुं कहइ विमासि[३] ।
तोनइ[४] पूछण आव्या[५] सही, करशाँ[६] वात तुहारी[७] कही ॥ ४०१ ॥
सुभट सकोई[१] बेठा[२] फिरी, जूझण[३] वात न ल्यइँ[४] आदरी ।
आपेई[५] पिण[६] अछाँ उदास, राउ[७] तणउ नही ग्रास न वास ॥ ४०२ ॥

॥ ३९७ ॥ १ राय D । २ गोरिल O । ३ माहि O । ४ बडो O, वडौ D । ५ प्रीअडो O, प्रीयडौ D । ६ बीडो O, बीडौ D । ७ झलइ O, झलै D । ८ तु । ९ हिज । १० बोलइ B, बोलै D । ११ सहू BOD । १२ अब जस तुम्ह हुइ इकलइ BOD (एकलै D । १३ अलावदीन BOD । १४ स्यू BOD । १५ छुडाई लै D ।

तुं गोरा रजपूत, तुंहि सामंत गहि गाडो ।
तुंहि ढाल हींदुआंन, तुहि मोरा प्रियआडो ।
सुर धीर तुं सकज, तुहिज दल बीझो झलै ।
तुं मुझ दीयै सुहाग, नारि पदमनि इम बुलै ।
अवर सुहड सतहीण सब, यह जस तो तुज इकलै ।
अल्लावदीनसु खगां बलि, हीदूपति छोडावि लै ॥ E ५५० ॥

॥ ३९८ ॥ १ गोरू A, गोरिल O, गौरो D, गोरो E । २ जपै DE । ३ मोरी BOE । ४ माय OD, मात E । ५ गाजन A । ६ सुभट BOD, हता E । ७ बडउ B, बडो D, वडा E । ८ मुझ BODE । ९ भाइ D, भ्रात E । १० वद्दल BO, वादल D, वादल E । ११ छै E । १२ तेहनै DE । १३ पणि BODE । १४ जई A, ए DE । १५ पूछउ B, पूछो O । १६ मत्र BODE ।

॥ ३९९ ॥ १ वेईं वादिल BOD, तव पदमिनी गोरिल ससनेह E । २ वादिल BOD सम्हउ B (साम्हो O, साम्हौ D) धायो BOD (धायु A) , पहुता जइ वादल नै गेह E । ३ विनैवंत D । ४ करी BODE । ५ परनाम E । ६...वादल (केहु A, केहो OD) . , काकानै वलि कीध सलाम E । E ५५३/१ ।

॥ ४०० ॥ १ गोरु A, गोरो BOE, गौरो E । २ जपै DE । ३ वादिल B, वादल OE, वादल D । ४ सुणु A, सुणो O, सुणौ E । ५ सुहडै E । ६ कीधु A, कीधो O, कीधौ D, थाप्यौ E । ७ मंत्रणु A, मन्त्रिणो O, मत्रणौ DE । ८ पदमणि D, पदमिन E । ९ दे नइ B, देस्या OD, देई E । १० लेस्या BOD, देसा E । ११ राउ BOD, राव E । १२ मडै D, चिंतै E । १३ दाव E । A ३८४ । B ४३९ । O ४४९ । D ४७५ । E ५५३/२, ५५४/१ ।

॥ ४०१ ॥ १ पदमणि D, पदमिन E । २ आया E । ३ हिवि (हिवे D) तू BOD कहउ BD (कहो O) विमासि BOD, आणी आझो मनि विसवास E । ४ तोनै D, तुझने E । ५ आया E । ६ करसां E । ७ तुम्हारी BO ।

॥ ४०२ ॥ १ सहू कोइ B, सहू को ODE । २ बइठा BO, वयठा D, वैठा E । ३ झूझण BODE । ४ ल्यै BODE । ५ आँपेई A । ६ पणि BODE । ७ राय E ।

हिव तुं जेम कहइ[1] तिम करॉं, नीचउं[2] देतॉं लाजे[3] मरॉं।
ऑंपे[4] डीले[5] छॉं[6] दुइ[7] जणा, आलिम आगलि[8] लसकर घणा ॥ ४०३ ॥

किम जीपेशां[1] कहउं[2] एकला, एकला[3] कदेई न हुवईं भला[3]।
तिणि कारणि तो पूछण भणी, आविउं[4] लेईं[5] हुं[6] पदमिणी" ॥ ४०४ ॥

पदमिणि[1] वादिल[2] सुं[3] वलि[4] भणइ[5] – "सरणइ[6] आवी हुं तुम्ह तणइ[7]।
राखि सकउं[8] तउं[9] राखउं[10] सही[11], नहीं[11] तरि पाछी जाउं वही[12] ॥ ४०५ ॥

खड्डु[1] जीभ दहुं[2] निज देह, पिण नवि जाउं[3] असुरॉं गेह।
लाखा जमहर करि नइ बलुं, पिणि नवि कोट थकी नीकलुं" ॥ ४०६ ॥

॥ दूहा ॥

इम सुणि वादिल[1] वोलीउं[2], दूठ[3] महा दुरदंत[3]।
जाणि कि[4] गयवर[5] गाजीउ[6], अतुल[7] वली एकंत[7] ॥ ४०७ ॥

॥ ४०३ ॥ १ कहै DE। २ नीची DE। ३ लाजा BCDE। ४ ऑंपे A। ५ डीलइ BC, डीलै DE। ६ अेछॉं BCDE। ७ दोइ BCDE। ८ आगइ BCD, माथै E।

॥ ४०४ ॥ १ जीपेस्या BCD, जीपेसा E। २ कहो CDE। ३ होवइ.. BC, किला न होई (होवै E) कदेहि भला DE। ४ आव्यउं B, आन्यो CE, आन्यौ D। ५ ले E। ६ साथै E।

॥ ४०५ ॥ १ पदमणि D, पदमिन E। २ वादल BCDE। ३ स्यू B। ४ इम BCDE। ५ भणै DE। ६ सरणै DE। ७ तणै DE। ८ सको CE, सकै D। ९ तो CE, तौ D। १० राखो CE, राखै D। ११ मुझ E। १२. जावू BCD, नहि तर तेहवो दाखो मुझ E। D ४८१*।

॥ ४०६ ॥ १ खाडउ B, खाडो C। २ दहउ B। ३ जावउ B, जावु C। A ३९०। B ४४५। C ४५५*
सील न खडु (खाडु E) देह अखड। जो फिर (फिरि E) उलटे (उलटै E) ए ब्रह्मड।
वात लख सम एकौ वात (सुहड करावे वलि भरतार E)। जीवता ए न फिरै घात (मुझ कुल एह नही आचार E)। D ४८२। E ५६१।
सील DE, प्रसादै D (प्रतापै E) तुझ जस होई D (होसी फते E)।
रिपुदल DE गाहौ D (गाहो E) अवसर जोय D (झूवो मते E)।
पदमणि रहै नै छूटे राय D (रहै गढ वलि छूटै राय E)।
गढ राखो जस त्रीभवण थाय D (हु पिण रहु सुजस जगि थाय E) D ४८३, E ५६२।
सील DE प्रसादै D (प्रतापै E) सुर D (सुख E) वरदाय D (वरताइ E)।
रिपु जीपै मनि वछित थाय D (जीपौ रिमरिझि वछित थाय E)।
कलिजुग नाम करु अखड D (कलिजुग नामो करो अखंड E)।
काया अथिर थिर जस नव खड D (प्रगटै सुजस लगै नव खड E) D ४८४। E ५६३।
श्रीपति पणि साहस नै साथि D (परमेसर पिण साहस साथि E)।
जयत हुआ DE हौज्यौ नरनाथ E (करसी जगनाथ E)।
लहि सोभाग DE देहु D (दिउँ E) आसीस DE।
जीवो DE वादल D (वादल E) कोडि DE वरीस (वरीस E)। D ४८५। E ५६४॥

कहै पदमिन आसीसी, अखै वादल अजरामर।
तुं मुझ पीहर वीर, धीर चित मेर बरावर।
खगि भाजहु खुरसांण, मांण रखहु हीदूवांनह।
धुरै जैत नीसांन, करै दुनीयांन वखांनह।
सनाह सांम सरणै सुहड, एह विरद तुय मुज लहै।
कर घालि मूंछ ज्यो मय सुहड, तुझ आंक मांथ वहै॥ F ५६५॥

॥ ४०७ ॥ १ वादल BCD, वादल F। २ वोलीयउं BC, वोल्यिौ D, वोलियो E। ३ दुट्ठ BCD, मद पोरस भैमत F। ४ जाणकि B, जाणिके C, जाणिक D, जाणिकै E। ५ केसर BC, केहरि DE। ६ गाजीयउं BC, गाजियौ DE। ७ अतुली वल BCD, देख घणां टेढ दत E।

“सुणि बाबा[1]!” बादिल[2] कहइ[3], “सुभटाँसुं[4] कुण कॉम[4]?
सुभट[5] सहू सूए रहउं[5], ए[6] करिस्युं हुं कॉम[6] ॥ ४०८ ॥

काका[1]! थे कॉंइ खलभलउं[1], अगि[2] म धरउं उताप[2]।
तउं हुं बादिल[3] ताहरउं[4], सयल[5] हरूं संताप[5] ॥ ४०९ ॥

पदमिणि[1] अंगणि[2] पग दीउं[3], पवित्र हूउं[4] मुझ गेह।
महलि पधारउं[5] माउली[6], दुख म धरउं[7] निज[8] देहि[9] ॥ ४१० ॥

आलिम[1] भांजुं[2] एकलउं[3], जउं[4] वॉसइ जगदीस[4]।
तउं[5] हुं बादिल बहसीउं[5], जउं[6] आणुं अवनीस” ॥ ४११ ॥

बीडउं[1] झालिउं[2] बादिलइ[3], बोलइ[4] इम[5] बलवंत[6]।
“आलिम[7] गंजी आप बलि[7], आणुं[8] नृप एकंत[8] ॥ ४१२ ॥

सुभट सहू सूए[1] रहउं[2], सुभटाँसुं[3] कुण कॉम[4]?
ए सगला[5], हुं एकलउं[6], निपट करूं[7] निज[8] नॉम[9]” ॥ ४१३ ॥

बादिल[1] बोलइ- “पदमिणी, मनि म करे[2] ऊचाट[3]।
तउं[4] हुं गाजण[5] जनमीउं[6], जउं[7] भंजुं[8] गज-थाट ॥ ४१४ ॥

अरि[1]-दल गंजुं एकलउं[1], भंजुं[2] नृपनी भीड।
राम काजि[3] हणमति[4] कीउं[5], तिम टालुं[6] तुझ[7] पीड ॥ ४१५ ॥

॥ ४०८ ॥ १ काका E। २ वादल BOD, वादल E। ३ कहै DE। ४ स्यु B काम BOD, अवरां केहो काम E। ५. सोई BOD रहौ D, वैसि रहौ सारा सुहड E। ६...काम BOD, एह अम्हीणो नाम।

॥ ४०९ ॥ १. खलभलो O, . खलमलौ D, काका थे चित मत चलौ। २ अगि धरउं B (अगि धरो O, अगि धरौ D, अगि धरहु E) उल्हास BODE। ३ वादल BOD, वादल E। ४ ताहरो OE, ताहरौ D। ५ मत्रीजो BODE स्यावासि B (सावासि OD, सावास E)।

॥ ४१० ॥ १ पदमणि D, पदमिन B। २ आगणि DE। ३ दीयउं BO, दीयौ D, दीयो E। ४ हूवउ BO, हुवौ D, हुयो E। ५ पधारो OE, पधारौ D। ६ मायडली BOD, माइडी E। ७ धरो OE, धरौ D। ८ तिल E। ९ देह BODE।

॥ ४११ ॥ १ आलम E। २ भजंउ B, भजो O, भजौ D, भाजउ E। ३ एकलो OE, एकलौ D। ४ जे वासइ (वासै D) BOD, दिउ प्रिसणा खगरेह E। ५ वादल विहसीउं, कुरवट अजुआलौ किलै E। ६ जे आणउ BO (जैआणु D), आणु रतन नरेस E।

॥ ४१२ ॥ १ बीडो OE, बीडौ E। २ झाल्यउं BD, झाल्यो OE। ३ वादिलइ BO, वादलै D, वादलै E। ४ बोलै DE। ५ अति BOD, ई E। ६ वलवान E। ७ अगजु हू आप वलि BO, एहनै गजु आप वलि D, तू सत सीता दूसरी E। ८ आणउ BOD, हु दूजो हणमान E। A ३९६। B ४४५। O ४६१। D ४९१। E ५७१।

॥ ४१३ ॥ १ सोई BO। २ रहो O। ३ स्यू B। ४ काम BO। ५ सगलउं B, सगलो O। ६ एकलो O। ७ करो BO। ८ तुम्ह BO। ९ नाम BO। DE प्रतियोंमें नहीं है।

॥ ४१४ ॥ १ वादल BO। २ करउं B, करो। ३ उच्चाट BO। ४ जो O। ५ गाजन-घरि BO। ६ जनमीयउं B, जनमियो O। ७ जे BO, ८ भजउं B, भञ्जे O। DE प्रतियोंमें नहीं है।

॥ ४१५ ॥ १ आलिम भाजउ B, आलिम भजो एकलो O, आलम तोड्डु एकलौ D। २ भाजउ BOD। ३ काज BOD। ४ हणमत BO, हणवत D। ५ कीयउं B, कियो O, कियौ D। ६ टालउ B, टालो O, टालू D। ७ ए BOD। E प्रतिमें नहीं है।

सखि! तुहारइ[1] सॉंमिणी[2], मली[3] महादल मांन[4] ।
गढ[5] माहे आणुं घरे[5], रतनसेंन राजॉंन[6] ॥ ४१६ ॥

जीह[1] सडउ ते जण तणी[1], दाखिउ[2] जिणि ए दाउ[2] ।
पदमिणि[3] साटइ[4] पालटे, आणेशॉं[5] घरि राउ" ॥ ४१७ ॥

लूण उतारइ[1] पदमिणी, वाला[2] वादिल अंगि[2] ।
बिरद बुलावे[3] वादिला, इम[4] जंपइ कणयंगि[4] ॥ ४१८ ॥

गोरउ हिव अति गहगहिउ[1], सूरिम[2] चडी सरीर ।
कायर[3] पूछ्या कंपवइ[4], धीर[5] धारइ[6] धीर ॥ ४१९ ॥

"घरे पधारउ[1] पदमिणी[2], आरति म करउ[3] कॉंइ[4] ।
वादिल वोल्या वोलडा, ते झूठा[5] नवि थाइ ॥ ४२० ॥

सूर न पश्चिम[1] ऊगमइ[2], मेरु न कंपइ[2] वाइ[3] ।
सापुरस[4] वोल्या नवि टलइ[4], सूवॉं[5] अवर विहाइ[5]" ॥ ४२१ ॥

[नोमो खण्ड]

पदमिणि घरे पधारी जिसइ[1], वादिल[2] माता आवी तिसइ[3] ।
सुणीउ[4] सगलउ[4] तिणि[5] संकेत, हीया[6] माहि[7] न मावइ[8] हेत ॥ ४२२ ॥

नयण झरइँ[1] मुंकइ[2] नींसास, अबला[3] दीसइ[4] अधिक उदास ।
इणि[5] परि आवी दीठी मात, विनय करी सुत पूछइ[6] वात ॥ ४२३ ॥

"किणि कारणि तुं माता इसी? कहउ[1] वात मन माहे[2] किसी[3]?
[4]आरति चीत किसी तुझ भणी[4]? [5]कॉंइ दीसइ आमण-दूमणी[5] "॥ ४२४ ॥

॥ ४१६ ॥ १ तुम्हारइ B, तुमारे C, तुहारै D, तुहारे E । २ स्वामिणी BC, स्वामिनि D, सामनी E । ३ मलु E । ४ माण E । ५ ..आणउ .BCD, घडी माहि आणु घरे E । ६ खुंमाण E ।

॥ ४१७ ॥ १ जीभ E, सिडो C (सिडौ E) त्या E, जन तणी BCD (दुरजणा E) । २ ज्या ए दाख्यो दाउँ । ३ पदमणि D, पदमिण E । ४ साटइ BC, साटै D, साटे E । ५ आणेस्या BCD, आणेसा E ।

॥ ४१८ ॥ १ उतारइ BC, उतारै D, उतारे E । २ वादल BCD, मिली मिली भींडै अग E । ३ बुलाइ सही B, वोलाइ C, बुलाए D, बुलावे E । ४ . वोलइ कुणयगि BC, वोलै कणयगि D, तू जीपै रिण जग E । A ४०२ । B ४५७ । C ४६७ । D ४९६ । E ५७४ ।

॥ ४१९ ॥ १ गोरो गहिगयो BC, गौरो मनि गहिगह्यौ D, गोरो समलि गहिगह्यौ E । २ सूरम E । ३ काइर BC । ४ कपवइ BC, कपवै DE । ५ सूर BCDE । ६ धरइ मनि BC, धरै मनि D, धरावै E ।

॥ ४२० ॥ १ पधारो CDE । २ पदमणी D, पदमिनी E । ३ करौ D, करो E । ४ माइ BCE, माय D । ५ फिरे न E ।

॥ ४२१ ॥ १ पश्चम BCDE । २ ऊगमै DE । २ कपै DE । ३ वाय D । ४ सापुरिस वोल्या वोलडी D, सापुरसारा वोलटा E । ५ मूया C, टलै सु वीजी काय D, फिरै न झूठा थाइ E । A ४०२ । B ४६० । C ४७० । D ४९९ । E ५७७ ।

॥ ४२२ ॥ १ जिसै DE । २ वादल BCD, वादल E । ३ तिसै DE । ४ सुणीयउ सगलउ BCD, सुणियो सगलो E । ५ तिण E । ६ हीयडा BCD, हइडा E ७ माहि BCDE । ८ मावै DE ।

॥ ४२३ ॥ १ झरइ BC, झरै DE । २ मूकइ BC, मूकै DE । ३ माता BCDE । ४ दीसै DE । ५ इण BCDE । ६ पूछै DE ।

॥ ४२४ ॥ १ कहो CDE । २ मनमइ छइ BC, मनमैं छै DE । ३ तिसी E । ४ चिन्ति ..तुम्ह (तुम C) BCD, आरति केही छै तुम्ह नणं E । ५ कार .BCD, क्यु छै चित आमण दूमणे E ।

मात कहइ[1]-"सुणि बादिल बाल! माडां[2] काँइ[3] पडइ[4] जंजालि?
दूध-दही तुं मुझ नइ[5] एक, [6]तो विण काइ न बीजी टेक[6] ॥ ४२५ ॥

तुं[1] मुझ जीवन प्राणाधार[2], तो[3] विण[4] सूनउ[5] सहि[6] संसार।
[7]तइँ ए काँइ कीउ मंत्रणउ[7], [8]वाँसइ कासुं देखइ घणउ[8] ॥ ४२६ ॥

सुभट घणा गढ माहि[1] समाज[2], त्याँ बेठाँ[3] तो[4] केही लाज?
ग्रास-वास को[5] नही नृप तणउ[6], [7]आपे खरच कराँ आपणउ[7] ॥ ४२७ ॥

घणा जिके[1] खाइं[2] छइँ[3] ग्रास, [4]सुभट रह्या छइ तेइ उदास[4]।
तुं किणि[5] करणि[5] हुइ[6] अझलखउ[7], विणठी वेला का[8] नवि[8] लखउ[9] ॥ ४२८ ॥

[1]रिणवट रीति न जाँणउ अजे[1], [2]वात करी जावउ वजवजे[2]।
कद[3] कीया[4] छइँ[5] तइँ[6] संग्राँम[7]? अण जाण्या[8] किम कीजइँ[9] काँम[10]? ॥ ४२९ ॥

आलिम[1] किणि परि[2] गंज्यउ[3] जाइ[4]? आटइ[5] लूण किसानइ[6] थाइ[7]।
बादिल[8]! पुत्र[9] अछइ[10] तुं बाल! [11]मत मुझ दुःख दीइ अणगाल[11] ॥ ४३० ॥

[1]परणिउ अछइ अजे तुं आज[1], [2]कहताँ आवइ मन महि लाज[2]।
पहिली साझउ[3] घरनी वहू, किला करेयो[4] पाछइ[5] सहू[6] ॥ ४३१ ॥

॥ ४२५ ॥ १ कहै DE। २ माडा BO, माडा E। ३ काय D, काइ E। ४ पडै D, लियो E। ५ मुझनौ D, माहरै E। ६ तुझ BOD, तुँझ ED, विणि D, काय D, नही E, वीजी OD, मुझ E, टेक E।

॥ ४२६ ॥ १ तू O। २ प्राण BO, प्राण E, आधार BO, अधार D। ३ तुझ BODE। ४ विणि D। ५ सूनौ D, सूनो E। ६ सहु। ७ तइँ BO, तै D, ते E, एकाकी BOD, एहवो E, कीयउ BO, कीयौ D, कीधो E, मत्रणौ D, मत्रणो E। ८ बासइं BO, पुठै D, पूठे E, ..दिख्यो BO, देखै D, दीठो E, घणौ D, घणो E।

॥ ४२७ ॥ १ माँहि E। २ सकाज E। ३ वइठाँ B, वइठाँ O, वैठा DE। ४ तुझ BODE। ५ अन्य प्रतियोंमें नहीं है। ६ तणो DE। ७ खावा आपणौ D, खरच करा छा निज गाठिनो E। A ४१० । B ४६६ । O ४७६ । D ५०५ । E ५८३ ।

॥ ४२८ ॥ १ घणा घणी E। २-३ खाई छइ BO, खाए छै D, खाअे छै E। ४ सुहड E.. छै DE, तेह BO, तिहाँ D, तिकै E, विमासि E। ५ किण कारणि BOE। ६ होइ BO, हुयै DE। ७ अझखौ D, अझलखो E। ८ काइ नवि BO, का तू नवि D, काइ न E। ९ लखौ D, लखो E।

॥ ४२९ ॥ १ रणवट AE जाणइ B, जाणौ D .., रिण विध किम जाणै सौ सजी E। २ जावइ BO, जायै D , घर विध वात न जाणो अजी E। ३ कदे D। ४ कीधा E। ५ छइ BO, छै DE। ६ तइ BO, तै D, ते E। ७ सग्राम BODE। ८ जाण्यउ BO, जाण्या D, जाण्या E। ९ कीजे D, कीजै E। १० काम BO।

॥ ४३० ॥ १ आलम E। २ किण परि BO, किगथी E। ३ गज्यो BOE, गज्यौ D। ४ जाइ BO, जाय D। ५ आटइं BO, आटै D, आटे E। ६ किसानइ BE, किसानै DE। ७ थाइं BO, थाय DE। ८ वादिल BOD, वादल E। ९ पूत BODE। १० अछै DE। ११ माइनइ दुख दीयइ अणगाल BO, मायनै दुख दीयौ असराल D, रिण सग्राम तणो नही ताल E।

॥ ४३१ ॥ १ परण्यो BO, परण्यौ D, परण्या E, अछइ BO, हिवै D, पणि E, हिवइ B, हिव O, अछै D, छो E, तुअ D, हिवडां E, राज E। २ कहिता D, आवइ BO, अावै D, मन माहि BOD, सेजै जाता आवै लाज E। ३ साधो OE, साधौ D। ४ करेय्यो BO, करज्यो D, करेज्यो E। ५ पाछै DE। ६ वहू AE।

अजे अछइ[1] तुं वादिल[2] बाल, [3]कुसुम कली जिम[3] अति सुकुमाल।
म करसि वात विमास्या[4] पखे[5], अति ऊछंछल[6] थाऊ[7] रखे"[8] ॥ ४३२ ॥

[1]वादिल जंपइ वलतउं हसी[1]–"माता! वात कही तइँ[2] किसी?
[3]किणि परि बाल कहिउं मुझ माइ[3]! पहिली मुझ नइ[4] ते[5] समझाइ[6] ॥ ४३३ ॥

धूलि न चुंथुं[1] रोउं[2] नही, आडी[3] न करूं साडी[4] ग्रही।
थाँन न चुंखुं[5] मुखि आपणइ[6], पोढुं[7] नही कदे[8] पालणइ[9] ॥ ४३४ ॥

[1]काँइ कहइ तुं मुझ नइ बाल[1], [2]देखि जेम करूं धकचाल[2]।
[3]राउ घणा ऊथापे थपुं[3], [4]इसडइ काँमि किसुं ऊतपुं[4]? ॥ ४३५ ॥

[1]सीसि उडाडुं सगला सित्र[1], तउ[2] हुं[3] जाणे[4] ताहरउ[5] पुत्र[6]।
गाजन[7] बाप[8] सही गाजवुं[9], मत[10] मनि[11] जाँणइ[12] कुल लाजवुं[13] ॥ ४३६ ॥

खित्रवटि रिणवटि पाछउं[1] खिसुं[2], तउ[3] तु मात[4] कहे[5] मुझ[5] इसुं[6]।
भिडताँ पाछउं[7] पग जउं[8] दीउं[9], तउ-तउं[10] माता फाटउ[11] हीउं[12] ॥ ४३७ ॥

खल-दल[1] खंडि[2] करूं[3] दहवाट? [4]तउ तुं काँइ करइ ऊचाट[4]।
म करसि माता मनि अणदोह[5]! सगले[6] आज वधारूं[7] सोह ॥ ४३८ ॥

॥ ४३२ ॥ १ अछइ C, अछै D। २ वादल BCD। ३ . ज्यूं BC, दूध मलन नि D। ४ विचार्या BCD। ५ पखइं BC, पखै D। ६ ऊछाछल BC, उछाछल D। ७ थायइ BC, थाइ D। ८ रखइ B, रखै D।

अलगा डुगर रलियामणो, हुस हुयै अणदीठा तणो।
जुद्ध तणा मुख भला अदीठ, वात करता लागै मीठ। E ५८८।

॥ ४३३ ॥ १ वलहो CE जपइं BC, जपै DE, वादल हसी BCDE। २ तै DE। ३ क्यु BC, किम हु DE, हउ BC, बालक कही BCDE, मुझ BCD, मोरी E, माइ BE, माय CD। ४ °नइ BC, °नै DE। ५ ए D। ६ समझाय CD। A ४१६। B ४७२। C ४८३। D ५१२। E ५९०।

॥ ४३४ ॥ १ चुधु D, चुथौ E। २ रोवउ BC, रोवु D। ३ आडउं B, आडो CE, आडौ D। ४ साडौ D, साटो E। ५ चूवू BC, चूखु E। ६ आपणइ BC, आपणै DE। ७ पउढउ BC, पोढो E। ८ कही E। ९ पालणइ BC, BC, पालणै E।

॥ ४३५ ॥ १ कहइ .°नइ BC, . कहै . °नै D, क्यु जाण्यो तें मुझनै बाल E। २ करों BC, धगचाल BCD, देखि जिसा माडुं धकचाल E। ३ राव D, घणा BCD, थयउ BC, उथाप्यौ फिरि थापु राइ E। ४ इसडइ BC, इसडै D, कामि BC, किस्यु BC, ऊभगउ B, ऊभउ C, हु भगुं D, साम सनाह विरह मुझ थाइ E।

॥ ४३६ ॥ १ शीश BC, उडाउ D, सत्र D, राज तणो सवि राखो सूत E। २ तौ D, तो E। ३ माता E। ४ जाणइ B, जाणै D, हु E। ५ ताहरो CE, ताहरौ D। ६ पूत E। ७ गाजण BCD। ८ पिता E। ९ गाजवउं E, गाजवो C, गाजउ D। १० मति BCD। ११ मन C, इम E। १२ जाणइ B, जाणिइ C, जाणे D, जाणै E। १३ लाजवउं B, लाजवउ C, लाजउ D।

॥ ४३७ ॥ १ पाछो C, पाछौ D। २ खिसउ B। ३ तो CE, तौ D। ४ माता E। ५ कहै मुझ D, कहिजै E। ६ इस्यउ BC, इस्यउ D। ७ पाछो C, पाछौं D। ८ जो C, जौ D। ९ दीयउं B, दीयो C, दीउ D। १० तउं मुझ B, तो मुझ C, तौ मुझ D। ११ फूटइं B, फूटे C, फूटै D। १२ हीयउं B, हीयो C, हीउ D। भिडता जो तिल पाछौ खिसु, तो तुं माता कहिजे इसु E। E में प्रथम अर्द्धाली नहीं है। E ५९३/१।

॥ ४३८ ॥ १ खलदल BCD। २ खोटि BC, खेसि DE। ३ करों B। ४ काई करइं करै D, तु मनि . BCD, माता म धरो मनि ऊचाट E। ५ अदोह BCDE। ६ सगली BCDE। ७ वधारउ B, वधारो C। A ४२१। B ४७७। C ४८७। D ५१६। E ५९३/२–५९४/१।

गाजन[1] आज[2] करूं गाजतउ[3], [4]रण-रस रंगि रमुं राजतउ[4] ।
सीह सिवद[5] सुणि[6] गय घड जाँइ[6]; [7]"कायर वचन कहइ मुखि काँइ[7]" ॥ ४३९ ॥

॥ कवित्त ॥

आइ माइ तिणि ठाइ, वइठि वादिल्ल पासि तस ।
"तूंय विण पुत्र निरास, तुं हिज चालिउ जूझण कसि ?
नयण मोरू वादिल्ल! प्राण वादिल्ल भणावइ ।
वयण मोरू वादिल्ल! वारवराँ समझावइ" ।
आवती माइ तव पेखि करि, ऊठि वादिल प्रणाम कीय ।
"वालक पुत्र! जुगि-जुगि जियो, कवण कुमंत्री मंत्र दीय" ॥ ४४० ॥
रे वादल मुझ[1] वाल[2]! वात तू वदइ[3] करारी ।
मनि परिहरि अभिमाँन, वोल वोलउ[4] सुविचारी ।
सुभट होवइँ[5] दस वीस, तास वलि रामति[6] कीजइ[7] ।
आलिमसाह[8] अथाह[9], [10]तास विढि नवि जीपीजइ[10] ।
वालक मति ऊछाँछली, जूझि-वूझि जाणउं[11] नही ।
मुझ मानि वचन[12] सुपसाउ[13] करि, [14]जउ मुझ सुत[14] वादल सही ॥ ४४१ ॥
"हुं कित[1] वालउ[2] माइ[3]! धाइ[4] अंचलि नवि लग्गुं ।
हुं कित[1] वालउ[2] माइ[3]! रोइ[5] भोजन नवि[6] मग्गुं ।
हुं कित[1] वालउ[2] माइ[3]! धूलि[7] लिट्टुं नवि फिट्टुं[7] ।
हुं कित[1] वालउ[2] माइ[3]! पाइ पालणइं न लुट्टुं[8] ।
'वालउ रि माइ तइँ क्युं कहिउ[9], [10]'अवर राइ' रक्खाविउ[10] ।
[11]"सुलितांण-सेन-विनडुं नही[11], [12]तउ तवहि माइ फुट्टउ हीउ"[12] ॥ ४४२ ॥

॥ ४३९ ॥ १ गाजण DE । २ आजि D । ३ गाजतौ D, गाजतो OE । ४ रिणरसि BO, रणरसि D,.. राजतो O, राजतौ D, सुजस पडह निसुणु वाजतौ E । ५ शब्द BO, सवद DE । ६ ..घट BO जाइ BO, जाय D, गेंवर घटा E । ७ काइर BO, वचन D, कहइ BO, कहै D, काइ BO, काय D, न्हासै सगला जो पिण कटा E । A ४२२ । B ४७८ । O ४८८ । D ५१७ । तिम आलम भाजु एकलो, गढ चीतोड दिखावु भलो E ५९५ ।

॥ ४४० ॥ BOD प्रतियोंमें यह कवित्त नहीं है । E प्रतिमें यह दोहा है । A ४२३ ।
एक घणाही एकला, इक एकला घणाह ।
सीह सहसै वीटीयो, जोखो जणा जणाह ॥ E ५९६ ॥

॥ ४४१ ॥ १ कहि E । २ मात E । ३ वदै D, वदहि E । ४ वोलो OD, वोलहु E । ५ होवो D, होइ E । ६ वलि आरभ E । ७ कीजै DE । ८-९ आलम साहि अथाहि E । १० ..जीपियइं O, जीपिणै D, समद किम वाहि तरीजै । ११ जाणै DE । १२ वयण E । १३ सुपसाव DE । १४ जौ D, तो पूत E । A प्रतिमें नहीं है । B ४७९ । O ४८९ । D ५१८ । E ५९७ ।

॥ ४४२ ॥ १ किम O । २ वालो OE, वालौ D । ३ माइं BO, माय D । ४ धाय D । ५ रोय D । ६ नहु A, नह BOD । ७ धूलि लोटि नवि पिट्ट BOD, धूलि ढिग माहि न लोट्टू E । ८ पाइ पालणै न D, जाइ पालणि नवि पोढ्ढ E । ९ वालो O, . ते किम कह्यौ BOD, जाजुल नाग आलम जवन E । १० अवर राणउ (राणो O, राणौ D) राउ रखावीउ BOD, तास जुद्धि छोडु ग्रहै E । ११ रिण खेल मचावहु वाल जिम E । १२ तवहि BOD .फुट्टइ B, फुटकइ O, फूटै D, हीयउ BO, हीयौ D, तवहि माइ वालो कहै E ।

"रे वाला वादिल्ल[1] मनह[2] आपणउं[3] न वूझसि ।
रे वाला वादिल्ल! कुमर, कहि किसि[3] मुहि झूझसि ।
गढ वीटिउं[4] चिहुं ठाइ, [5]सूर निवसंति खित्री वसि[5] ।
तूअ[6] विण पुत्र निरास, तुं हिज चलिउं[7] झूझण कसि[8]" ।
इम कहइ[9] माइ[10]-"वादिल सुणवि, वयणि[11] मोरउं[12] चित्त[13] धरी[14] ।
साहण समुंद सुलितांण दल, [15]"केम वच्छ अंगमि सुधरी[15]" ॥ ४४३ ॥

"हुं कित वालउं[1] माइ! मेछ[2] पॉखाँ[3] भरि[4] षिलुं ।
हुं कित वालउं[1] माइ! सपत पातालहि पिलुं[5] ।
वालइ[6] वासिग नाग, कान्हि आणीउं[7] भुजाँ वलि ।
वालइ[6] जाजइ[8] सूर, सीस जस दीध[9] साँमि[10] छलि[11] ।
वालइ[6] वलालि[12] एतउं[13] कीउं[14], दुरयोधन वंधवि लीउं[15] ।
सुलितांण[16] सेन विनडुं नही, तवहि माइ फुट्टउं[17] हीउं[18]" ॥ ४४४ ॥

॥ चोपई ॥

सुत नउं[1] सूर पणउं[2] संभली, माता मन महि[3] अति[3] खलभली[4] ।
माता[5] वचन न मानइ[6] रती, [7]माता माहि गई[7] विलवती ॥ ४४५ ॥

वात सहू वहूअर[1] नइ[2] कही-"जाई[3] राखउं[4] निज पति ग्रही ।
मुझनी[5] सीख न माँनइ[6] तेह, रहसी नेट[7] तुहारइ[8] नेहि[5] ॥ ४४६ ॥

सहु[1] सिणगार सजे[2] सावता, पहिरी[3] वस्त्र नवा[4] फावता ।
हाव भाव करि वचन विलास, जिण परि तिण परि घाले[5] पास" ॥ ४४७ ॥

एँम सुणी वहूअर[1] नीकली[2], झलकइ कंति[3] जिसी[4] बीजली[5] ।
सुकलीणी[6] सजि सोल सिंगार, आवी जिहाँ छइ[7] निज[7] भरतार ॥ ४४८ ॥

॥ ४४३ ॥ १ मनसि CD । २ आपणइ BCE, आपणै D । ३ किस BCDE । ४ वींट्यउ BE, वीट्यो C, विंटि D । ५ सूर नवि सुभट खत्रिवस BCDE । ६ तो BCDE । ७ चाल्या BCDE । ८ कस BCDE । ९ कहै D । १० माय C । ११ वयण BCDE । १२ मोरो BCDE । १३ चिति BCDE । १४ धरि खरो BCDE । १५ केम पूत दूतर तरो BCDE ।

॥ ४४४ ॥ १ वालो C, वालौ D । २ म्लेछ BCD । ३ पख BC, दल D । ४ ऊभा BCD । ५ असुर सहु (दल D) घाणी पिलु BCD । ६ वालै D । ७ आणीयउ B, आणियो C, आणियौ D । ८ जगदेव D । ९ दीस B । १० समछि BC, समथि D । ११ वलि BCD । १२ वलि BCD । १३ एतौ D । १४ कीयौ E । १५ लियो C, लीयौ D । १६ सुरताण ABCD । १७ फुट्टइ BC, फूटै D । १८ हीयउ BCD । A ४२६ । B ४८२ । C ४९२ । D ५२१ । E में नहीं है ।

॥ ४४५ ॥ १ नो CE, नौ D । २ सूरपणो CE, पणौ D । ३ माही BCDE । ४ कलमली E । ५ वरज्यो E । ६ मानै D, माने E । ७ तव गइ महिलामै E । E ६०२ ।

॥ ४४६ ॥ १ वहूयर BCE, वहूवर D । २ नाँ A, ने D, नै E । ३ जाइ नइ BCE, जायनै D । ४ राखो CE, राखौ D । ५ माहरी DE । ६ मानै D, माने E । ७ नेठि BCDE । ८ तुमारै D, तुम्हारे E ।

॥ ४४७ ॥ १ सवि E । २ करे BC । ३ पहिरण BCDE । ४ भला BCDE । ५ पाडे BC, पाडौं D, पाडो E ।

॥ ४४८ ॥ १ वहूयर BCE, वहूवर D । २ नीसरी BCD । ३ झबकती BCDE । ४ जाणे BCDE । ५ वीजुली DE । ६ सुकुलीणी BCDE । ७ तिहा बैठो D, बैठ जिहा E A ४३० । B ४८७ । C ४९७ । D ५२६ । E ६०६ ।

रूपइं[१] रंभ जिसी राजती, [२]ललित वचन बोलइ लाजती[२]।
नयणे निरमल दाखइ[३] नेह, साँमि[४] धरमि साची ससनेह ॥ ४४९ ॥

कोमल कमल-वदन कामिनी, दीपइँ[१] दंत जिसी दामिनी।
हसित[२] वदन[३] बोलइ[४] हितकरी, "साँमी[५]! वात सुणउ[६] माहरी ॥ ४५० ॥

आलिम दूठ[१] महा दुरदंत, कहि नइ[२] किसी[३] परि झूझसि कंत।
अरि बहुला नइ[४] तुं एकलउ[५], कहउ[६] किसी परि करिसउ[७] किलउ[८]" ॥ ४५१ ॥

बादिल बोलइ[१]-"सुणि कामिणी[२]! [३]जो ए जंग करूं जामिणी[३]।
गज बहुला नइं[४] एक ज सीह, तउ[५] पिण[६] नावइ[७] तसु मनि बीह ॥ ४५२ ॥

मयगल[१] माता मद बहु झरइँ[२], सीह थकी किम[३] नाठा[४] फिरइँ[५]।
सीह[६] सदाई[७] साँम्हो[८] धसइ[९], [१०]वाढ्यउ ई नवि पाछउ खिसइ[१०]" ॥ ४५३ ॥

सुंदरि बोलइ[१]- "साँमी[२]! सुणउ[३], खोटउ[४] म करउ[५] ए मंत्रणउ[६]।
करताँ वात अछइ[७] सोहिली, पिण[८] ते वेला अति[९] दोहिली" ॥ ४५४ ॥

बादिल बोलइ[१]- "सुंदरि सुणउ[२], भय म दिखाडउ[३] मुझनइ[४] घणउ[५]।
कायर वात करइ[६] हसि-हसी, वेला पडीयाँ[७] जाइँ[८] खिसी ॥ ४५५ ॥

ते हुं[१] पुरुष नही बादिलउ[२], जो ए जिणपरि झालुं[३] किलउ[४]"।
[५]वलती वनिता बोलइ वली[५], "कंता! वात न जायइ कली[६] ॥ ४५६ ॥

[१]हय हीसारव गज सारसी[१], [२]प्रबल करइँ मुंगल-पारसी[२]।
[३]गोला-नालि वहइँ ढीकली[३], [४]न सकइ को पेसी नीकली[४] ॥ ४५७ ॥

॥ ४४९ ॥ १ रूपैं DE। २ मृग-लोयणी (नयणी DE) सुंदरि गयगती BCDE। ३ दाखै DE। ४ स्वामि BC।

॥ ४५० ॥ १ दीपै DE। २-३ कर जोडै E। ४ बोलै DE। ५ स्वामी BC। ६ सुणौ D, सुणो E।

॥ ४५१ ॥ १ दुट्ठ BCDE। २ कहि न A, कहिनै DE। ३ किण DE। ४ नै D, ने E। ५ एकलो CE, एकलौ D। ६ कहो, कहौ D। ७ करिस्यो BC, करिस्यौ D। ८ किलु A, किलो BC, किलौ E, इसे मतै नवि दीसै मलौ D।

॥ ४५२ ॥ १ जंपइ BC, जपै DE। २ त्रिय मूढ E। ३ जौ D, सूरा तन गुण छै अति गूढ E। ४ नै DE। ५ तो DE। ६ पणि CD। ७ नावै DE।

॥ ४५३ ॥ १ मइगल BC, मैगल E। २ झरै DE। ३ सवि E। ४ न्हाठा E। ५ फिरै DE। ६ सिंघ BC। ७ सदाही D, सदा लगि E। ८ साम्हउ B। ९ धसै DE। १० वाढ्यो (BCD) ही BCD ..पाछो खिसै (D), घणा देखि मन माहै हसै E। D ५३१।

॥ ४५४ ॥ १ बोलै DE। २ स्वामी BC। ३ सुणो CE, सुणौ D। ४ खोटो CE, खोटौ E। ५ करो CE, करौ D। ६ मत्रणो CE, मत्रणौ D। ७ करै D, सवि E। ८ पिणि BCDE। ९ होइ D। A ४३६। B ४९२। C ५०२। D ५३१ क। E ६११,

कासु अटका बोलीया, कटका दूर थयाह।
भूडा भला पटंतरो, खापा छेह गयाह ॥ E ६१२ ॥

॥ ४५५ ॥ १ बोलै DE। २ सुणो CE, सुणौ D। ३ दिखाडे A, दिखाडइ B, दिखाडो C, दिखाडौ D, दिखाडिस E। ४ नै D, रिण E। ५ घणो C, घणौ D, तणो E। ६ कहै DE। ७ वणियाँ E। ८ जायइ BC, जाए D, जायै E।

॥ ४५६ ॥ १ हउ BC। २ बादिलो C, बादलौ D, बादलो E। ३ माडउ BC, माडु DE। ४ किलो CE, किलौ D। ५ बोलै D, वलती अरज करे वलि इसी E। ६ जायै D, जात नही छै जोदा जिसी E।

॥ ४५७ ॥ १ है हीसै गैवर सारसी E। २ गुदवद (-बुद D, गल वल E) मुगल बोलइ (वदै D, करै E) पारसी BCDE। ३. ढींकुली C,.. वहै . D, सोसै खिण इक माहि तलाव E। ४. कोइ.. BC,

चउंगढ-दा नितु चोकी फिरइ[1], शस्त्र घणा अरि अंगइ[2] धरइ[3] ।
तिहाँ तुं पइसिसि[4] किम एकलउ[5], ए आलोच नही छइ[6] भलउ[7]" ॥ ४५८ ॥
वादिल वोलइ[1] वलतउ[2] हसी, "तइं[3] ए वात कही मुझ किसी ! ।
हयवर[4] गयवर[5] पायक पूर, हेकणि[6] हाकि करूं चकचूर' ॥ ४५९ ॥
लाख सतावीस लसकर लूटि, केवी सगला नाँखुं[1] कूटि ! ।
माल घणउ[2] आणुं अरि मारि, तउ[3] मुझ माता झेलिउ[4] भार" ! ॥ ४६० ॥
कांता जंपइ[1]-"रहि हो[2] कंत ! मुझ मति माहि[3] न भाजइ[4] भ्रंत ।
अजे[5] न साजी[6] छइ[7] तइं[8] सेज, निज नारी सुं न रमिउ[9] हेजि ॥ ४६१ ॥
काम-युद्ध नवि जाणउ[1] करे[2], [3]निज नारी थी नासउ डरे[3] ।
वालक जेम अजे निकलंक, दे नवि जाणइ[5] अधरे डंक ॥ ४६२ ॥
ते तुं किणी[1] परि झूझसि सहि"? [2]वलतउ वादिल बोलइ नही[2] ।
नारी जंपइ[3]-"सुणि मुझ नाथ, मुझ तनि अजे न लायउ[4] हाथ ॥ ४६३ ॥

सकै कोइ पैसि D, मुख मऊड चित दुष्ट सुभाव E । B ४९५ । C ५०५ । D ५३४ । E ६१५ ।
पाडै वरजि वाथ एकला । मास-भखी वणै अणपला । D ५३५ ॥
अवता पखी आहडै । वड भोथाण भर्याहण हणै D ५३६ ॥

मुरज ढहावै दे-दे टला, मास-भखी वाणैं अलपला ।
ऊडता पखीआ हणै, वालै वाधी कवडी हणै ॥ D ६१६ ॥

मुख मकड चख मिरी, जूह काला गिर कथह ।
भुज जम दूठ दूरत, वलिठ जाणग जुध वथह ।
गल वही पारसी वरा, मद मैगल मद छक्कह ।
अजण वाण भुज भीम, करै मुख हक किलक्कह ।
असपति सेन अणगजीयत, तुम्ह नहि मानहु मगज भर ।
अनुमान काम आरमीयै, कहै नारि इम जोरि कर ॥ E ६१७ ॥

॥ ४५८ ॥ १ चो C, चिहु पाखै जिहा चोकी फिरै D । २ अगे A, अगै D । ३ धरै D । ४ पैससि D । ५ एकलौ D । ६ छै D । ७ भलौ D । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ ४५९ ॥ १ वोलै DE । २ वलतो C, वलतौ D । ३ तै D, ते E । ४ हैवर DE । ५ गैवर DE । ६ एकणि BCDE ।

॥ ४६० ॥ १ मारु E । २ घणा BCDE । ३ तो CDE । ४ झाल्यौ D । A ४४२ । B ४९८ । C ५०८ । D ५३९ । E ६१९ ।

सघण घटा जिम पवन, किरण तप जेम हिमालय ।
अरुण तेज अधियार, कुम पुत्तहि वरुणालय ।
मयद पिखि पिखि सिघली, वज्र जिम पिख गिरदह ।
गुरट पिखि जिम उरग, असुर टकारव नदह ।
उद्धभे वाग लगै हणु, भीम गयद जिम भ्रमवै ।
अरि-सेन लच्छि दातार जिम, खग्गि उडावहु विद्रवै ॥ E ६२० ॥

इम त्रिय सुणि वादल वयण, फिरि वोली तजि कानि ।
त्रीया सेज न गजिहि, किम गजहु सुलतांन ॥ E ६२१ ॥

॥ ४६१ ॥ १ जपै DE । २ रहो-रहो E । ३ एह E । ४ माजै DE । ५ अजी DE । ६ साधी BCDE । ७ छै DE । ८ तै D, तुम्ह E । ९ रम्यउ BC, रम्यौ D, रमिया E ।

॥ ४६२ ॥ १ जाणो CF, जाणी D । २ करी DE । ३ नासो C, ते नास्हौ D, सुरत विचित्रा नाजे चरी F । ४ अछइ BC, अछै D, अछो E । ५ जाणै D, जाणो E ।

॥ ४६३ ॥ १ किस BC, किण D । २ कूडि रिहाड (रोहाड C, मति D) कीजइ (कीजै D) प्री नही BCD । ३ जपै D । ४ लागउ BC, लागा D । E प्रतिमें–

खटग जुद्ध छै विसमो सही, कूडी हुम न कीजै कही ।
मुझ तन हाथ न घाली सको, भोगी स्वाद लहै जेह थिको ॥ ६२४ ॥

ते तुं अरि-दल भंजसि कैंम"? वलतउ[1] बादिल[2] जंपइ[3] ऍम ।
"सुणि सुंदरि! तुं म करे हेज, तिणि दिनि आविसु तुझनी सेज ॥ ४६४ ॥
जिणि दिनि जीपिसुं[1] वयरी[2] एह, तउ हुं रमस्युं रंग सनेह ।
ताहरी वात कही तईं[3] सही, पिण[4] हिव रमल करुं ए वही ॥ ४६५ ॥
ताँ लगि सेज न हेज न नेह, आलिम भाँजि करुं नहि खेह ।
ताहरइ[1] वचनें भाजउं[2] आज, गाजननंदन आवइ लाज ॥ ४६६ ॥
वलती[1] नारि पयंपइ[2] वली, सूरिम सगलइ[3] तनि ऊछली ।
"भलईं! भलईं! साँमी स्याबासि[4], भवि-भवि हुं छुं[5] थारी दासि ॥ ४६७ ॥
जिम बोलइ[1] छइ[2] तिम निरवहे[3], मत किणि वातइ[4] जायइ[5] ढहे[6] ।
लाज म आणइ[7] कुलि आपणइ, साँमी झुंबे[8] साहसि घणइ[9] ॥ ४६८ ॥
नेजइ[1] घाउ करे नरनाथ, [3]देखिसु हिवइ तुहारा हाथ[2] ।
खडग प्रहार खरा चालवे, आयुध[3] अंगि घणा झालवे ॥ ४६९ ॥

॥ ४६४ ॥ १ वलतो C, बलतौ D । २ बादलि BCD । ३ जपै D । E प्रतिमें नहीं है ।
॥ ४६५ ॥ १ जीपसी BCD । २ वइरी BC । ३ तो C, तौ D । ४ तै D । E प्रतिमें नहीं है ।
॥ ४६६ ॥ १ ताहरै D । २ भाजु D । A ४४७ । B ५०४ । B ५१४ । D ५४५ ।
E प्रतिमें—असपति घडा विसम वींदणी, भमुह चढावी मेले अणी ।
जरह कचुंकी भीडित अग, विलकुल मुख चख राते अग ॥ ६२५ ॥
मल्हपै मयमत नारी जेम, वचन विरस चित न धरे पेम ।
अमगल सींधू नद गावती, छल धरती डाकुल वावती ॥ ६२६ ॥
असपति गढ छै एहवी रुस, खोटी मन मै म धरो हुस ।
तेह सरिस रग रहसी केम, प्रिय बालक त्रिय प्रौढा जेम ॥ ६२७ ॥
भिडसो पिण वलि दाखो तेम, वलतो बादल जपै ऍम ।
सुणि सुदरि ! तु म करिस खेद, मुज्झ वचन मानें भ्रूचेद ॥ ६२८ ॥
पोरस तणो दिखालिस तेज, तिण दिन आविस ताहरी सेज ।
जा लगि प्रियजन वखानै नही, गुणीयण विरद न धै उमही ॥ ६२९ ॥
ता लगि केहा सूर सधीर, वल्लभ माने जेह सरीर ।
लोही साटै चाडै नीर, ते कुलदीपक बावन वीर ॥ ६३० ॥
तब नारी जपै कर जोडि, अवर नही कोइ ताहरी जोडि ।
भलो भलो कहसी संसार, साम-धरम रहसी आचार ॥ ६३१ ॥
॥ ४६७ ॥ १ वलतु A । २ पयपै D । ३ सगलै D । ४ साबासि BCD । ५ छउ BC, E प्रतिमें नहीं है ।
॥ ४६८ ॥ १ बोलै DE । २ छै DE । ३ निरवाहि BCD । ४ वातै DE । ५ जायै DE । ६ ढाहि BCD । ७ आपणै DE । ८ झूझै BCDE । ९ घणै DE । E ६३३/१ ॥
॥ ४६९ ॥ १ नेजै DE । २ हिवै D, जिम हु देखू ताहरा हाथ E । ३ आउध BCD । द्वितीय अर्द्धाली E में नहीं है । इसके आगे BCD प्रतियोंमें—

कुंडलिया

कता जूझसि कवणि परि, किम करवार गहति ।
देखसि दृढ मनि अगरी, किम तु प्री चाहति ।
किम तु प्री चाहति, तिख्य खग्गल रिण छूटइ ।
खग्ग-ताल वाजति, तेज अधाधट तूटइ ।
मनप्रिय कायर होइ तु, देखि मयगल मयमता ।
तव मुझ लज्जा होइ, जूझि जव भाजइ कता ॥

पाछा पाउ रखे[1] रणि दीइ[3], मरण तणउं[4] भय माऽऽणे[5] हीइ[6] ।
भलउं[7] भवाडे खित्री[8]-वंस, पुहवि करावे सबल प्रसंस ॥ ४७० ॥

खलदल खेत्र थकी खेसवे, आयुध अंगइ[1] राखे सवे ।
सुभटाँ माहि वधारे सोह, वाहे विकट छछोहा[2] लोह ॥ ४७१ ॥

नाम करे नव खंडे[1] नाथ, वाहि सकइ[2] तिम वाहे हाथ ।
सुभट सहू कहीइँ[3] सारिखा, परगट लाभइ[4] इम[5] पारिखा ॥ ४७२ ॥

जीवण मरणि तुहारउं[1] साथ[2], हुं नवि मुंकुं[3] जीवन-नाथ[4] ! ।
घणुं घणुं[5] हिव कासुं[6] कहुं[7] ! तेम[8] करे[9] जिम हुं गहगहुं[10] ॥ ४७३ ॥

भिडताँ[1] भाजइ[2] नासे[3] मूउं[4], कायर कंपि हूउं[5] जूजूउं[6] ।
एहवा[7] वचन ‘सुण्या मइ[8] काँनि, तउं[9] मुझ लाज हुसी[9] असमाँनि” ॥ ४७४ ॥

कंत कहइ[1]-“संभलि, कामिनी[2] ! [3]हिवइ सही तुं मुझ सामिनी[3] ।
बोल्या बोल भला तइँ[4] एह, [4]निज कुलवट नी राखी रेह[4]” ॥ ४७५ ॥

अस्त्री[1] आणि दिया हथियार, [2]साझिउं सुभट तणउं सिणगार[2] ।
[3]मिली गली[3] माता-पग वंदि, [4]असि चढि चालिउं वादिल भंदि[4] ॥ ४७६ ॥

॥ ४७० ॥ १ रखै DE । २ प्रिय BODE । ३ दीयइ BO, दियै DE । ४ तणो OE, घणो D । ५ माणिसि BOD, माणै E । ६ हीयइ BO, हियै DE (E ६३३/२) । ७ भलो OE, भलौ D । ८ क्षत्री BO । A ४५१ । B ५०९ । O ५२१ । D ५५० । E ६३४/१ ।

॥ ४७१ ॥ १ अगै D । २ सछोहा BO । E प्रतिमें प्रथम अर्धाली नहीं है । E ६३४/२ ।

॥ ४७२ ॥ १ खडै DE । २ सकै DE । ३ कहइ BO, कहीयै DE । ४ लाभै DE । ५ हिव BOD, रिण E । A ४५३ । B ५११ । O ५२२ । D ५५२ । E ६३५ ।

॥ ४७३ ॥ १ तुहारो D, सदा तु E । २ नाथ E । ३ मूक्यउ BO, मूकौ DE । ४ प्रीतम-नाथ BOD, प्रीतम साथ E । ५ घणउ-घणउ B, घणो O, घणौ D । ६ कास्यू B । ७ कहउ B । ८ तिम E । ९ करजे E । १० गहिगहउ BO ।

॥ ४७४ ॥ १ भिडतउं B, भिडतौ D । २ भाजी A, भाजै D । ३ निक्षइ BO, निसचै D । ४ मूवउं B, मूयो O, मूवौ D । ५ हूवउं B, हुवो O, हुवौ D । ६ जूजूवउं B, जूजवो O, जूजवौ D । ७ एह BOD । ८ जउं (जो O, जौ D) सुणीया BOD । ९ तो O, तौ D । A ४५५ । B ५१३ । O ५२४ । D ५५४ । E प्रति में नहीं है । इससे आगे D प्रतिमें—

धीरज नारि वधारै नेह, खित्रवटि माहि राखण रेह ।
उत्तमराय तणी कुवरी, खिसती मति किम आपै खरी ॥ ५५५ D ॥
भूखा घरनी आवै नार, कुमति घणी सुपै भरतार ।
पूछी ऊछी मति साजवै, तिणि सगला माहे लाजवै ॥ ५५६ D ॥

॥ ४७५ ॥ १ कहै (DE) । २ सुदरी E । ३ हिवै (D) , मोटा वस तणी कुयरी E । ४ तै D, तें E । ४ खेह BOD, हित वांछै सोइ ज ससनेह E । A ४५६ । B ५१४ । O ५२५ । D ५५७ । E ६३७ । E प्रतिमें इससे आगे—

ऊछा घरनी आवै नारी, कुमति दियै पूछ्या भरतार ।
तै कुलवती नारी तणो, महियल सुजस वधार्‌यो घणो ॥ ६३८ ॥
ताहरा सत्त तणौ परसाद, आलम तणो उतारु नाद ।
साम धरम नै कुलवट रीत, अजुआली निसुणु निज कीत ॥ ६३९ ॥

॥ ४७६ ॥ १ नारी DE । २ साज्यो BO तणो O , साज्यौ तणो D, सझि आयुध ऊठ्यौ तिणवार E । ३ हिलिगली BOD, विनय करी E । ४ अश्व BOD चाल्यो BO, चाल्यौ D, वादल BOD. , अस्व चढी चाल्यो आणदि । A४५७ । B५१५ । O५२६ । D५५८ । E६४० ।

गोरउ[1] रावत[2] आव्यउ[3] वही, "काका! हिव तुम्ह रहयो[4] सही[5]।
एक वार जोवुं[6] पतिसाह, [7]जोवुं आलिम कुं मनमाह[7]" ॥ ४७७ ॥
गोरउ कहइ[1]- "बादल सुणि वात, मुझ तुझ एक अछइ[2] संघात।
[3]तु जावइ हुं पाछउ रहुं[3], [4]तउ हुं रावत पणउ निज दहुं[4] ॥ ४७८ ॥
काका! कीजइँ काची वात, हुं जाऊं छुं मेलण घात।
रिणवटि अम्ह-तुम्ह[4] एको[4]साथ, [5]जे विहडइँ तसु दक्षण हाथ[5] ॥ ४७९ ॥
गोरइ रावत पूछी[1] करी[2], चालिउ[3] बादिल साहस धरी[4]।
सुभट सहू मिलिया छइँ[5] जिहाँ, बादिल चाली[6] आविउ[7] तिहाँ ॥ ४८० ॥
बादिल बोलइ[1]वहसे[2] इसुं[3]–, "कहउ[4] तुम्हे आलोचिउँ[5] किसुं[6]।
सुभट कहइ-"बादिल! सांभलउ[7], सवल मँडाणउ एकल किलउ[8] ॥ ४८१ ॥

॥ ४७७ ॥ १ गोरो BCD, गोरा E। २ पासै D। ३ आव्यो CE, आव्यौ D। ४ रहिय्यो C, रहज्यौ D, खमियो E। ५ रही E। ६ जोवो C, देखु E। ७ जोवों .को C, जोउ ..कौ...D, देखु कुअर तणो पणि माह E।

॥ ४७८ ॥ १ कहि C, कहै DE। २ अछै DE। ३ जावे पाछो रहो C, . जायइ .पाछौ रहु D। ४ तो पणो. दहो C, तौ पण . दहु D। द्वितीय अर्द्धाली E प्रति में नहीं है।

॥ ४७९ ॥ १ कीजै D। २ छउं BC। ३ तुझ-मुझ E। ४ एकौ D। ५ . विहडै D, इण वातें मुझ दक्षिण हाथ E। प्रथम अर्द्धाली E प्रति में नहीं है। E ६४३।

॥ ४८० ॥ १ राखी E। २ धरे E। ३ चाल्यो BCE, चाल्यौ D। ४ धरे E। ५ छै DE। ६ रावत BCDE। ७ आव्यो BC, आवै DE।

॥ ४८१ ॥ १ वोलै DE। २ वहसइ B, बहसे C, विहसे D, वहसी E। ३ इसउं B, इसो CDE। ४ कहो C, कहौ DE। ५ तुह्मे A, आलोच्यउं B, आलोच्यो C, आलोच्यौ DE। ६ किसउं B, किसो CE, किसौ D। ७ साभलउं B, साभलो CE, साभलौ D। ८ एकिल किलउ B(किलो C)किलौ DE। A ४५९। B ५२०। C ५३१। D ५६८। E ६४९।

D प्रतिमें–

साजि साजि स हुवौ असवार, रिप-दल गाहण सव झुझार।
बोलै बीर सम वालण वयर, गढमढ रखवालो जखु सयर ॥ ५६३ ॥
जाणे कुल-कीरति तनु धर्यौ, तेज-पुज जिम रवि अवतर्यौ।
साहसीक स्वामी भ्रम धीर, बाचा पालण सरण सुधीर ॥ ५६४ ॥
सहू सुभट सुर देखी भली, सूरातन सांमत अटकली।
कदे न आवै वादल सभा, अचिरज आज हुवौ दरलभा ॥ ५६५ ॥
सकै तो काई विमासी बात, गाजण-सुत ए सुर विख्यात।
सुभट राय-सुत वैठा जिहा, आव्यौ धाव्यौ वादल तिहां ॥ ५६६ ॥
उठी सभा सहु आसण दीयौ, तिही बयठो वादल द्रिढहीयौ।
पूछै सभा पयौजन आजि, कहौ वादल पधार्या किणि काजि ॥ ५६७ ॥

E प्रतिमें–

साम धरम सरणै साधार, रिप-दल गाहण सवल झूझार।
जाणे कुल-कीरति तन धर्यो, तेज-पुज सूरज अवतर्यो ॥ ६४५ ॥
सभा सहू देखी खलभली, सूरातन सामत अटकली।
वादल कद ही न आवै सभा, आस न लाभै नहि घर विभा ॥ ६४६ ॥
सके त काइ विमासी वात, गाजण-सुत ए सुर विख्यात।
सुभट-राइ सुत वैठा जिहा, कीयो जुहार आवीनै तिहा ॥ ६४७ ॥
उठी सभा वहु आदर दियै, वैठो वादल तव द्रिढ हियै।
पूछै सभी प्रयोजन आज, कहो पधार्या काहे काज ॥ ६४८ ॥

हठीउ[1] आलिम अमली माँण, राजा साही लीधउ[2] प्राँणि ।
गढ पिण हेवइँ[3] लेसी[4] सही, "जे इहाँ आविउ[5] छइ इम वही" ॥ ४८२ ॥

पद्मिणि द्याँ तउ[1] छूटइ[2] पास, नही तरि गढ नी केही आस ।
गढि जात'इँ[3] काँई नवि रहइ[4], वली कराँ हिव ज्युं तुं कहइ[5]"' ॥ ४८३ ॥

वादिल बोलइ[1]- "भलउ[2] मंत्रणउ[3], कीउ[4] तुम्हे[5] आलोचिउ[6] घणउ[7] ।
पद्मिणि देशाँ[8] 'आपे सही, पिण इक[9] वात सुणउ[10] मुझ कही ॥ ४८४ ॥

छाहुं पडसी सगलइ देसि, मस्तकि कोइ न रहसी केस ।
खित्रवट सहू लोपासी खरी, आ थें वात भली नादरी ॥ ४८५ ॥

[1]मांडा सुभट मरइँ गहगही[1], [2]पिण निज माँण न मेल्हइँ सही[2] ।
माँण पखइ[3] नर कहीइ[4] किसउ[5], कण विण ठाला[6] कूकस जिसउ[7] ॥ ४८६ ॥

काया-माया बे कारिमी, घडी एक[1] वाँकी घडी एक[1] समी ।
कायर हुउ अथवा हुइ[2] सूर, मरण किणइ[3] थी न टलइ[4] दूर ॥ ४८७ ॥

तउ[1] ले मरण समारी मरउ[2], [3]ढाँढा होई किसुं[3] ऊगरउ[4] ।
पद्मिणि दीधी कहीइ[5] कैम, पति[6] राखणसुं[7] जउ[8] छइ[9] प्रेम" ॥ ४८८ ॥

वीरभाण इम निसुणी भणइ[1]- "वादिल! बोलिउ[2] तुं वलि घणइ[3] ।
भाषी सहू भली तइँ[4] वात, पिण नवि प्रीछइ[5] तुं तिल मात्र ॥ ४८९ ॥

॥ ४८२ ॥ १ हठिओ OD, हठियौ E। २ लीधो OE, लीधौ D। ३ हिवडै D, हिवडा E। ४ लेस्यइं BO, लेसा DE। ५ आव्यउ B ,जेह मुगल दल आव्यौ वही D, दिली-पती बैठो हठ ग्रही E। A ४६० । B ५२१ । O ५३३ । D ५७० । E ६५१ ।

॥ ४८३ ॥ १ तो OE, तौ D। २ छूटे O, छूटै DE। ३ जाताँ BODE। ४ रहै DE। ५ कहै DE।

॥ ४८४ ॥ १ बोले O, बोलै DE। २ भलो OE, भलौ D। ३ मत्रिणो O, मत्रणो DE। ४ कियो OE, कियौ D। ५ तुहे A। ६ आलोच्यो BO, आलोच्यौ D, आलोचज E। ७ घणो OE, घणौ D। ८ देस्या BOD, देसा E। ९ एकु BODE। १० सुणो OE, सुणौ D।

॥ ४८५ ॥ BODE प्रतियोंमें यह नहीं है।

॥ ४८६ ॥ १ मरै D, सुहड मरे आणी उच्छाह। २ पणि वही BO, पणि मुकै वही B, पणि मुंकै राह E। ३ पखे A, पखै DE। ४ कहीयइ BO, कहियै DE। ५ किसो O, किसौ DE। ६ ठालउ B, ठालै OD। ७ जिसो O, जिसौ DE।

॥ ४८७ ॥ १ इक O, घडीयै-घडीय E। २ होइ BO, होय D, हुइ हुयै E। ३ किणी BO, किणै D, किण E। ४ टलै DE।

॥ ४८८ ॥ १ तो O, तौ D, तो पिण E। २ मरो OE, मरौ D। ३-४ किस्यु ऊवरउ B, उधरै-उधरो O, किस्युं उवरौ D, असत हुया थी नवि ऊवरो E। ५ कहीयइ BO, कहीयै DE। ६ कुलवट E। ७ स्युं BODE। ८ जौ D, जो E। ९ छै DE। A ४६६। B ५२६। O ५३७। D ५७४। E ६५६। इसके आगे DE प्रतियोंमें–

होसी वार्ता देस प्रदेस, माथै कोइ न रहसी केस।
छाट पडै सगले संसार, राय छुडायो देइ नार॥ D५७५, E६५७॥

॥ ४८९ ॥ १ भणै DE। २ बोल्यो O, बोल्यौ D, बोलै E। ३ घणै DE। ४ तै D, यै E। ५ प्रीछो BO, प्रीछौ D, प्रीछयो E।

आलिम ईस तणउ[1] अवतार, लसकर लाख सतावीस लार।
यवनी[2] सुभट वडा झूझार, हणइ[3] हेकीकउ[4] हेलि हजार ॥ ४९० ॥
साही लीधउ[1] वलि सिरदार[2], झूझंता आवइ[3] तसु भार[4]।
काई परि हिव[5] पुहचइ[6] नही, नही तरि म्हे वलि[7] झूझत सही" ॥ ४९१ ॥
वादिल बोलइ[1]- "कुंअर[2]! सुणउ[3], ए आलोच नही आपणउ[4]।
किसा आलोच करइ[5] केसरी[6]? मारइँ[7] मयगल[8] माथइ[9] धरी ॥ ४९२॥
इम करतां जे[1] मूआ[2] वली[3], [3]तउ पिण कीरति हुइ निरमली[4]।
काया साठइ[5] कीरति जुडइ[6], [7]तउ नवि मोलइँ मुंहगी पडइ[7] ॥ ४९३ ॥
काया चांबतणी[1] कोथली, [2]खिण इक मेली खिण ऊजली[2]।
तिण साठइ जउ कीरति मिलइ, तउ लेतां कुण पाछउ टलइ" ॥ ४९४ ॥
वीरभांण हिव बोलइ वली "वादिल! तुझ मति अतिनिरमली।
[1]अरजुण ते जे वालइ गाइ[1], करि जिम हिव तुझ आवइ दाइ[2] ॥ ४९५ ॥
राजा छूटइ[1] पदमिणि रहइ[2], इणि वातइँ[3] कुण नवि गहगहइ[4]"।
वादिल बोलइ[5]- "कुंअर! सुणउ[6]! करयो[7] ऊपर वांसइँ[8] घणउ[9] ॥ ४९६ ॥
हुं जाउं छुं लसकर माहि, आवुं[2] वात सहू अवगाहि"।
करि जुहार वादिल असि चडिउ[3], [4]साहसि सुरपति सांसइँ पडिउ[4] ॥ ४९७ ॥

॥ ४९० ॥ १ तणो OE, तणौ D। २ जुवनी BOD, मूगल E। ३ हणै DE। ४ एकेकी BOD, एकीको E।

॥ ४९१ ॥ १ लीधो O, लीधौ D, लीया E। २ रतनसी राण BODE। ३ आवै DE। ४ प्राण BODE। ५ तिण E। ६ पहुचै DE। ७ परि BOD।

॥ ४९२ ॥ १ कहै DE। २ कुमरजी BOD, कुअरजी E। ३ सुणौ D, सुणो BOE,। ४ आपणो OE, आपणौ D। ५ करे OE, करै D। ६ केहरी D। ७ मारै D, मारे E। ८ मइगल BO, मैगल D। ९ माथै D, पोरस E।

॥ ४९३ ॥ १ जै D, जो E। २ मूवा BD, आवा E। ३ कांम E। ४ कुलवट रहसी रहसी नांम E। ५ साटै DE। ६ जुडै DE। ७ तो पडै D, तो ते मोल न महुगी पडै E।

॥ ४९४ ॥ १ वाय O, सास E। २ माहे मइली (मैली DE) ऊपरि उजली BODE। BODE प्रतियोंमें द्वितीय अर्द्धाली नहीं है।

॥ ४९५ ॥ BOD प्रतियोंमें प्रथम अर्द्धाली नहीं है। E प्रतिमें यह अर्द्धाली ऊपर की द्वितीय अर्द्धाली इस रूपमें बनी है- कहै कुयर सुणि वादल राइ, जो इम तुम्हनें आवै दाइ॥ E ६६२। १ आजण BOD, वालै DE। २ करउ तेम जिम आवइ दाइ BOD, करो विचार जे रूडो थाइ E ६६३, १।

॥ ४९६ ॥ १ छूटै DE। २ रहै DE। ३ वातै DE। ४ गहगहै D, ऊगहै E। ६६३, २। ५ कहै DE। ६ कुमारजी BODE, सुणो OE, सुणौ D। ७ करिय्यो B, करिजो O, करिज्यो D, करियो E। ८ वासै DE। ९ घणो OE, घणौ D। पहिली मति सवि (उषी करी। आलम तेड्यो बांहि O माहे D) धरी D ५८३, १। E ६६४। इसके पश्चात् DE प्रतियोंमें-

मारण तणो न खेल्या दाव, गढ पणि दीठो वाध्यो राउ ॥ D ५८३, २ ॥

केवल D में (जहर कहर आलम असवार, आया माहे तीन हजार)।

छलिवलि दूध न पायौ वही, तो हिव सोव करी सही ॥ D ५८४। E ६६५।

केवल E प्रतिमें-

सूरातन चित धीरज ज्यांह, परमेसर त्या आवै वांह।
हिव आदर्यो सत भ्रम तणो, सुहडां धीरज देयो घणो ॥ ६६६ ॥

॥ ४९७ ॥ १ जावु BO। २ आउ D। ३ खड्यो E। ४ सासै पड्यो D, साहसनूर सूरातन चड्यो E। A ४७५। B ५३४। O ५४५। D ५८५। E ६६७॥

इसके पश्चात् BODE प्रतियों में-

सीहन जोवइ (जोवै DE) चढ वल, ना जोवइ (जोवै DE) घरि रिद्धि।

[दसमो खण्ड]

गढनी पोलि हुंति ऊतरिउ[1], वुद्धिवंत वहु[2] साहसि भरिउ[3] ।
निलवटि दीपइ[4] अधिकउ[5] नूर, प्रतपइ[6] तेज तणउ[7] वटि पूर ॥ ४९८ ॥
आयुध अगि सहू[1] सावता, पहिरणि[2] वस्त्र नवा[3] फावता ।
आवइ[4] एकलमल असवार, जाणे[5] अभिनव अगनि-कुमार[6] ॥ ४९९ ॥
आलिम दीठउ[1] ते आवतउ[2], सुभट घणउ[3] दीसइ[4] सावतउ[5] ।
आलिम मेल्ह्या साम्हा[6] दूत, "पूछउ[7], आवइ[8] किम रजपूत ॥ ५०० ॥
दूते जाई[1] पूछिउ[2] तेह, वोलइ[3] वादिल अति ससनेह ।
"'[4]हुं अविउं छुं करवा वात[4], पदमिणि आणि दीउं[5] परभाति ॥ ५०१ ॥
आलिम मांनइ[1] मुझ मंत्रणउं[2], तउं[3] उपगार करूं हुं घणउं[4]'" ।
दूते जाइ[5] धणी नइ[6] कहिउं[7], इम सुणि आलिम अति[8] गहगहिउं[9] ॥ ५०२ ॥
माहि तेडाविउ दे वहु मांन, दीठउ असपति अति असमांन ।
[3]तेज तपइ ज्यउं ही तनि घणउं[3], [4]आलिमसाहि दीउं वेसणउं[4] ॥ ५०३ ॥
वइठउ[1] वादिल वुद्धि-निधांन, असपति पूछइ[2] दे वहु मांन ।
"क्या तुझ नाम किणइका[3] पूत, अव किसका हइ[4] तूं रजपूत ॥ ५०४ ॥

एकलउ (एकलो OD, इकलो E) भजइ (भाजइ O, भजै D, भांजै E) गयघटा,
जिहँ साहस तहँ सिद्धि ॥ B ५३५ । O ५४६ । D ५८६ । E ६६८ ॥

केवल BOD प्रतियोंमें–
सीह सपुरिसा सत्तवल, वोलइं (वोलै D) ते परमांण (परिमांण D) ।
हरि हर ब्रह्मा नवि खिसइ (खिंसै D), ते पुरिसा सुविहांण ॥ B५३६ । O५४७ । D५८७ ॥

॥ ४९८ ॥ १ ऊतर्‌यो O, ऊतर्‌यौ D, नीसर्‌यो E । २ नइ BO, नै D, ने E । ३ मर्‌यो OE, मर्‌यौ D । ४ दीसइ O, दीपै D । ५ अधिको OE, अधिकौ D । ६ प्रतपै DE । ७ तणो OE, तणौ D ।

॥ ४९९ ॥ १ सज्या E । २ पहिर्‌या E । ३ सहू BODE । ५ जाणिक BO, जांणै DE । ६ कुवार D, कुआर E ।

॥ ५०० ॥ १ दीठो OE, दीठौ D । २ आवतो O, आवतौ D । ३ घणु AD, घणो C । ४ दीसै D । ५ सावतो O, सावतौ D । ६ मेल्ह्यौ साम्हौ D । ७ पूछइ O, पूछौ D । ८ आवै D । A ४७८ । B ५३९ । O ५५० । D ५९० ।
E प्रतिमें – आवत दीठो आलिम जिसै, ए आवै छै कारण किसै ॥
पूछण साम्हा मूक्या दूत, क्यु आवत है ए रजपूत ॥ E ६७१ ॥

॥ ५०१ ॥ १ आई E । २ पूछया BOD, पूछ्यो E । ३ वोलै D, वोले E । ४ आव्यौ D, आयो छै इक कहवा वात E । ५ दीयउ BO ।

॥ ५०२ ॥ १ मांनै O, मांनै DE । २ मन्त्रणो OE, मन्त्रणौ D । ३ तो OE, तो D । ४ घणो OE, घणौ D । ५ जाय D । ६ ते OE, ने D । ७ कह्यउ B, कह्यो OE, कह्यौ D । ८ मनि BODE । ९ गहगह्यउ B, गहगह्यो OE, गहगह्यौ D ।

॥ ५०३ ॥ १-तेडाव्यउ BO, तेडाव्यौ D, तेडाव्यो E । २ दीठो OE, दीठौ E । ३...(तपै D) तेहनउ BO (तेहनौ D) अति (घणो O, घणौ D), तेज देख दिनकरथी घणो E । ४. दीयउ B (दियो O, दियौ D), (वेसणो O वैसणौ D), हुकम कियौ खुस वैसण तणो E ।

॥ ५०४ ॥ १ वैठो DE । २ पूछै DE । ३ किसका तूं BODE । ४ है DE ।

"क्युं[1] अब आया हइ हम पासि, क्या हइ[2] तुझ कुं गढ महि ग्रास" ।
बोलइ[3] बादिल वलतउं[4] हसी, रोम राइ[5] सहु घटि ऊससी[6] ॥ ५०५ ॥
अवसरि बोली जाणइ[1] जेह, माणस माहि[2] गुंथाइ[3] तेह ।
[4]तिणपरि बादिल तब बोलीउ[4], [5]हरखिउ जिम आलिमनउ हीउ[5] ॥ ५०६ ॥
नाम ठांम सहु[1] निरतां[2] कह्या, [3]माहोमाहि बिहो गहगह्या[3] ।
बादिल बोलइ[4] आदर[5] करी[6], "सांमी! वात सुणउ[7] माहरी ॥ ५०७ ॥
पदमिणि मेल्हिउ[1] हुं परधान, सुभट[2] न मेल्हइं[3] निज अभिमान ।
[4]पदमिणि दीठो जब तुम्ह द्रेठि[4], [5]जीमंतउ निज[5] जाली हेठि ॥ ५०८ ॥
तिंणि दिन थी ते चिंतइ इसुं[1] कामदेव ए कहीइ[2] किसुं[3] ।
धनि ते[4] नारि तणउं अवतार, जेहनइ[6] आलिम छइ[7] भरतार ॥ ५०९ ॥
विरह-वियाकुल बेठी[1] रहइ[2], निसि-दिन[3] सुहिणे[4] तुझनइं[5] लहइ[6] ।
[7]कर ऊपरि मुख मेल्ही रहइ[7], नयणे नीर घणुं[8] तसु वहइ ॥ ५१० ॥
निपट घणा मेल्हइ[1] नीसास, अबला दीसइ[2] अधिक उदास ।
तुझ[3] सुं कोइ हूउं[4] अनुराग, [5]रातउं जाणी प्रवाली राग[5] ॥ ५११ ॥
पदमिणि नइ[1] मनि अधिकउं प्रेम, ते कहवाइ[3] मई मुखि[4] केम ।

॥ ५०५ ॥ १ क्यों DE । २ है DE । ३ बोलै DE । ४ वलतौ D, वलतो E । ५ °राय BODE । ६ उल्हसी BODE । A४८२ । B५४४ । O ५५५ । D५९५ । E६७६ ॥

॥ ५०६ ॥ १ जाणै DE । २ मुह A । ३ गुथावइ BO, गिणावै D, गिणयै E । ४ ..अति...BO, बोलियौ D । ५ हरख्यो हीयउ BO, आलमनो हियौ D ।
४-५ विनय करी कहे जोडी पाण, करहु आज पावु फुरमांण E ।
इसके पश्चात् BOD प्रतियोंमें–
बलथी बुधि अधकी कही, जे उपजइं ततकालि ।
वानिर वाघ विगोइयो (विणासियो D,) एकलडइ (डै D) सीयालि ॥ B५४७ । O५५८ । D५९७ ।

॥ ५०७ ॥ १ सवि BOE । २ विगते E । ३ ते सुणि आलिम मनि BOD, महरवान तब आलम थया E । ४ बोलै DE । ५ साहस E । ६ धरी E । ७ सुणोOE, सुणौ D ।

॥ ५०८ ॥ १ मेल्ह्यउ BO, मुक्यौ DE । २ सुहड E । ३ मुकै DE । ४.. तु ..A, पदमिन देख्या तुम-कु द्रेठि E । ५ भोजन करता E ।

॥ ५०९ ॥ १ इसउ B । २ कहियइ BO, कहियै DE । ३ किसउ B, किसो E । ४ तिस D । ५ तणो O, तणौ D, तणा E । ६ जेहनै D, जिसके E । ७ छै D, है E ।

॥ ५१० ॥ १ वइठी BO, वैठी DE । २ रहै DE । ३ अहनिश BODE । ४ सुहनइ BO । ५ तुझनै D, तुम्हको E । ६ लहै DE । ७ मुख ऊपरि कर देई रहई BOD । ८ घणउं BO, घणौ D । द्वितीय अर्द्धाली E में नहीं है ।

॥ ५११ ॥ १ मूकै DE । २ दीसै DE । ३ तुम्हसु D, तुम्हसे E । ४ हुवो D, हूयो OE । ५ रातो जेम पटोली BODE । A ४८९ । B ५५२ । O ५६३ । D ६०२ । E ६८२/१ ।

॥ ५१२ ॥ १ नै D, कै E । २ अधिको OE, अधिकौ D । ३ कहवायइ BO, कहवाये DE । ४ मुखसु (सै E) BODE । ५ रहै DE । ६ मुखस्यु वात (कहै D) BOD, मुख करि वात न तिण से कहै E । मुझ तेडी ए दाख्यो भेद । मूक्यो करवा विरह निवेद ॥ E६८३ ॥
इसके आगे E प्रति में–सुणि साहिब आलम! अरज, मैं पदमिनका दास ।
यह रुक्का तुम्हकुं दिया, है इसमे अरदास ॥ E६८४ ॥
ले रुक्का आलम सुहथ, वाचत धरत उछाह ।
तावी छाती विरहतें, मेटत हित-जल दाह ॥ E६८५ ॥

आलिम ! आलिम ! करती रहइ[२], 'मुझ सुं वात सहू ते कहइ[६] ॥ ५१२ ॥

BO प्रतियोंमें फारसी मिश्रित भाषा के ये 'बेत' हैं—

अजार दर्द वदिल मेर, खिञ्र दूर यार।
चि कुनम् सबुर कुनम् दिल एक औ दर्द हजार।
तनरा रवाब साजिम् रगहा सितार तार।
दीगर सरोज नेस्त व झूझुआर यार ॥

इसके आगे BODE प्रतियोंमें–जोखि (मैं E) देखू वदनछवि, हु (मैं E) वैकुठ न जाउ (चाहि E)। इंद्रपुरी किह काजिइ (किहि कामकी DE), तुय सीह नही जिह ठाम (मीत नही जिस माहि E)।

इसके आगे BOD प्रतियों में–

सोरठा– मइ (मैं D) मन दीन्हउ (दीन्होO, दीनो D) तोहि, जा दिन ते दरसन भया।
अव दोइ जिय नहि मोहि, प्रेम लाज तुम्हरी वहू (वही D) ॥ B ५५७ । O ५६८ । D ६०७ ॥
मइ मन दीन्हउं तोहि, सकइ तउ निरवाहियो।
ना तरि कहियउ (-यौ D) मोहि,
मइं (हुं D), मन वरजउ (-ज D) आपणउं (णौ D) ॥ B ५५८ । O ५६४ । D ६०८ ।

इसके आगे BODE में–

निस वासर आठों पहुर, छिन नहि विसरत (विसरै E) मोहि।
जिह जिह (जहाँ E) नयन (नैन E) पसारिहु, तिह तिह (तहाँ E) देखु तोहि ॥ E ६८७ ॥

इसके आगे BOD में–

धनि धनि आलमसाह तू, काम तणउं (तणो O, तणौ D) अवतार।
मन मोह्यो पदमिणि तणउं, अव करि हमरी सार ॥ B ५६० । O ५७१ । D ६१० ॥

इसके आगे D प्रतिमें–

मन हुतो सो तुम्ह लियो, सुक्ख गयो तजि गाम।
अब तो हम पै नाहि कछु, छोडि तुहारौ नाम ॥ ६११ ॥

DE प्रतियोंमें–

साहि तुम्हारे (तुहारे D) दरकु, अधर रह्यो जिय आइ।
कहो क्या आग्या देत हो, फिरि तन रहे कि जाइ ॥ D ६१२ । E ६८८ ॥

D प्रतिमें–

प्रीतम प्रीत न कीजियो, काहु सुं चितलाय।
अलप मिलण वहु वीछरण, सोचत ही जिय जाय ॥ ६१३ ॥
प्रीतम कु पतियाँ लिखु, जो कछु अतर होय।
हम तुम्ह जिवडा एक है, देखणकु तन दोय ॥ ६१४ ॥

E प्रतिमें–

प्रीत करी सुख लहनको, सो सुख गयो हराइ।
जैसे खछरि छछुदरी, पकरि साप पछिताइ ॥ ६८९ ॥

DE प्रतियोंमें–

वाती ताती विरह की, साहिव जरत सरीर।
छाती जाती छार हुइ, जो न वहत द्रग नीर ॥ D ६१५ E ६९० ॥

D प्रतिमें–

मुझ प्राणी तुझ पासि, तुझ प्राणी जाणुं नही।
जो कोइ विरहो नासि, पजरको विरहो नही ॥ ६१६ ॥
जिम मन पसरै चिहुं दिसां, तिम जो कर पसरंति।
दूर थकी ही साजना, कठा ग्रहण करति ॥ ६१७ ॥

E प्रतिमें–

कहै पदमिन सुनि साह, वाह तुम्ह रुप वडाई।
अहो काम अवतार ! अहो तेरी ठकुराई।
मुझ कारण दठि चढे, लडे ग्रहि खग्गउ नग्गे।
पकड्यो राण रतन, वचन विसवास उलग्गे।

[1]तुझ नउं आविउं सुणि परधांन[1], तेह प्रतइं[2] दीधउं[3] बहु मांन ।
सुभट कहइ[4] म्हे[5] मरस्यां[6] सही, पिण म्हे[5] पदमिणि देस्यां[7] नही ॥ ५१३ ॥

समझाया मइं [1]सुभट समेत, वीरभांण राजा जग-जेत ।
क्युं-क्युं[2] आज ढवइ छइ[3] वात[4], [5]तिणि जाणां छां मिलसी धात[5] ॥ ५१४ ॥

पदमिणि मेल्हिउं[1] हुं तुम भणी, विनय भगति [2]वीनववा घणी ।
वली जिका होइ[3] छइ वात, कहिस्यु आवी ते परभाति ॥ ५१५ ॥

सीख दीउं[1] हिव मुझनइं[2] सही, पदमिणि पासइ[3] जाउं[4] वही ।
जोती होसी[5] मुझनी[6] वाट, करती होसी[5] अति ऊचाट[7] ॥ ५१६ ॥

विरह-विथा न सहइ[1] विरहणी, काम पीड घटि[2] चालइ[3] घणी ।
तुझ[4] संदेस सुधा-रस जिसा, पाउं तु जाइ सुणाउं[5] जिसा" ॥ ५१७ ॥

॥ दूहा ॥

असपति[1] इणिपरि संभली[2], पदमिणि प्रेम-प्रकास ।
वयण बाणि वीध्यउं[3] घणउं[4], [5]मनि मेल्हइ नीसास[5] ॥ ५१८ ॥

अब वैठि रहे करि मौन मुख, कहा तुम्हारे दिल वसी ।
जिहि काम काज एते किये, सो क्यों न करहु अब ह्वै खुसी ॥ ६९१ ॥
मैं तेरी पय-दास, मैं हु तेरी गुण-वदी ।
तुम रहिमान रहीम, मैं हु त्रिय आदम गिंदी ।
मैं तो यह पण किया, सेज आलिम सुख माणु ।
नां तरि तजि हु प्रांण, अवर नर निजरि न आणुं ।
अब करहु मिहिर मानहु अरज, हुकम होइ दरहाल यह ।
मैं आइ रहुं हाजिर खडी, छोडि देहुं हिंदुवान पह ॥ ६९२ ॥

BOD प्रतियोंमें–
पंच (दस D) दुहा नइ (नै D) वेई वेत । माहीं लिखियउं (-यौ D) छइ (छै D) संकेत ।
लिखि ए पत्रि दीई (दई D) अम्ह साहि । पढि तुम्ह देखउ (देखो D) क्या हइ (है D) माहि ॥
B ५६१ । O ५७२ । D ६१८ ।

॥ ५१३ ॥ १ तुम्हनउं आयउं जव B, तुम्हनो आयो जव O, जव आयौ आलम .D, जव भेजे आलम... E । २ प्रतै D । ३ दीधो OD । २-३ धौ पदमनि छोडै राजान E । ४ कहै D, सुहड कहै E । ५ अम BO, हम D, वलि E । ६ परिस्या E । ७ आपा A, देसां E ।

॥ ५१४ ॥ १ मै D । २ किहु-किहु BOD । ३ छै DE । ४ कान E । ५ जाणीन्यु मेलसे भाति B, (तिण E) जाणु छु विणिसै वांन (वान D) DE ।

॥ ५१५ ॥ १ मेल्हउ हू B । २ वीनवी छइं घणी B । ३ होवइं छइ वात, आवी कहिस्यु ते B ।

॥ ५१६ ॥ १ दियौ DE । २ पत्री पढी BODE । ३ पासै D, पदमिन पासे E । ४ जावउ BO, जावौ D । ५ होस्यइ BO, होसै B । ६ माहरी DE । ७ औचाट D । A ४९४ । B ५६५ । O ५७५ । D६२० । E६९६ ।

॥ ५१७ ॥ १ सहै D, खमै E । २ घडि B, अति E । ३ चालै DE । ४ तुम्ह E । ५ पाउ जाइ कहू तिहा तिसा BODE ।

॥ ५१८ ॥ १ असिपति A, असुपति B । २ सामली E । ३ वेध्यउं B, वेध्यो ODE । ४ घणो OE, घणी D । ५ प्रबल मेल्हइ OD, मूकै सवल .E । इसके आगे BODE प्रतियोंमें–
पत्री वांची प्रेम करि (सु E), चतुराई सुविचार ।
कागल (कागद E) करि मेल्हइ (मेंल्हे O, मूकै E) नही, नैणा लग्गी (नयण लिगाई E) तार ॥
B ५६८ । O ५७८ । D ६२३ । E ६९९ ।

अलजउ[1] तनि[2] अति ऊपनउ[3], विलली[4] विरह विराल ।
अवसर देखी आपणउ[5], जागिउ[6] काम जटाल ॥ ५१९ ॥

काम-वाण कुण सहि सकइ[1], दाझइ[2] सगली[3] देह ।
सुंदरि तणा सँदेसडा, निपट वधारयउ नेह ॥ ५२० ॥

विरह-विथा सहि नवि सकइ[1], अलजउ[2] अंगि न माइ[3] ।
प्रेम सुणी पदमिणि तणउ[4], घट गलहल ज्यूं जाइ[5] ॥ ५२१ ॥

असपति थउ[1] अहि सारिखउ[2], साहि न सकतउ[3] कोइ ।
खीलिउ[4] वादिल गारुडी, पदमिणि मंत्र[5] परोइ ॥ ५२२ ॥

॥ चोपई ॥

असपति[1] वोलइ[2]- "वादिल, सुणउ[3], तुं अम्ह[4] आज[5] घरे [6]प्राहुणउ ।
भगति जुगति[8] तुझ[9] केही करां, [10]तई दीठइ मनमाहे ठरां[10] ॥ ५२३ ॥

पदमिणि सुं[1] हम[2] करयो[3] प्रीति, रूडी परि सहु[4] भाखे[5] रीति ।
जइ[6] हम हाथि चडी[7] पदमिणि, '[8]तउ मुझ घरि तु होइसि धणी[8]' ॥ ५२४ ॥

सुभट सहू समझावे[1] घणउ[2], थिर करि थापे ए मंत्रणउ[3] ।
दूध डांग दिखलावे घणी, वात विहांणी[4] आवे वणी" ॥ ५२५ ॥

ऍम कही निज करसुं[1] साहि, पहिराविउ[2] वादिल पतिसाहि ।
लाख सुनइया दीधा सार, हयवर[3] गयवर[4] वस्त्र अपार ॥ ५२६ ॥

॥ ५१९ ॥ १ अजलउ B, अलजो C, अलिजौ D । २ तिणि BCD । ३ E ऊपनो C, ऊपनौ D । ४ विलती C, विलल D । ५ आपणौ D । ६ जाग्यौ D । E में नहीं है ।

॥ ५२० ॥ १ सकै DE । २ दाझै DE । ३ सगलउ A । ४ वधारइ A, वधार्यो BC, वधारै DE ।

॥ ५२१ ॥ १ सकै DE । २ अजलउ B, अलजो C, अलिजो D । ३ माय D । ४ तणो C, तणौ D । ५ थलहलियो BC, (-यौ D) । E में नहीं है । इसके आगे BCDE प्रतियोंमें–

वार वार चुंवन करइ (करै D, करे E), रुक्के (-क्का DE) कुं (कौं E) मुखि लाइ ।
इलम (अजव E) पढी वहु (है E) पदमिणी (-नी E), खूव लिख्या इह (है E) माहि ॥
B ५७२ । C ५८२ । D ६२७ । E ७०१ ।

॥ ५२२ ॥ १ थो A, थौ DE । २ सारिखो ACD, सारिखौ E । ३ सकतो CE, सकतौ D । ४ खील्यो BCDE । ५ प्रेम A ।

॥ ५२३ ॥ १ असुपति BC । २ वोलै C, वोले D । ३ सुणो CE, सुणौ D । ४ हंम D, मेरे E । ५ आजु BC, आजि D । ५-६ वल्लभ E । ६ प्राहुणो C, प्राहुणौ D, पाहुणौ E । ८ युगति B । ९ तुम्ह D, कितियक कीजियै E । १० तौ दीठै D, तेरी अकल वसी मुझ हीयै E । A ५०१ । B ५७४ । C ५८४ । D ६२९ । E ७०३ ॥

॥ ५२४ ॥ १ स्यु BC, मैं E । २ अम्ह BC । ३ करिज्यो BC, करज्यौ D, कहियौ E । ४ स्युं BC । ५ राखे BCD । ६ जे BC, जै D, जो E । ७ चढही E । ८ तउ (तो C, तौ D) तुझ घरि होइ धरती धणी BCD, तो तुझकु हु धरती धणी E ।

॥ ५२५ ॥ १ समझाए BCE । २ घणुं AE, घणौं D । ३ मंत्रणौ D (-णो E) । ४ सवाहे BCD, सुधारे E ।

॥ ५२६ ॥ १ करस्यु BD । २ पहिराव्यो BCE, पहिराव्यौ D । ३ हैवर DE । ४ गैंवर DE ।
इसके आगे BCDE प्रतियोंमें–

रुक्का लिखि देवउ (देउ D, देहु E) तुम्ह हाथ,
माहि लिखउं (-खुं E) निज वहगी वात (प्रीतिम वात D, प्रीतम गाथ E) ।
रुक्का ल्यउ (ल्यु D, ल्यिउ E) नहीं आल्हिम तणउ (तणो C, तणौ D, तणी E),
वाचइ (वांचै DE) काइ भाजइ (भाजै DE) मत्रणउ (मत्रणो C, मत्रणौ D, मत्रणा E) ॥

ते लेई बादिल आवीउ[1], हरखिउ[2] माइ तणउं[3] तव हीउ[4] ।
निज नारी रूलियाइत थई, "दिन आजूणउ[5] दीधउ[6] दई" ॥ ५२७ ॥

गोरउ[1] रावत[2] मनि गहगहिउ[3], "करसी बादिल सगलउ[4] कहिउ"[5] ।
हरषित नारि हुई पदमिणि, "औ मेल्हेसी[6] सही मुझ धणी" ॥ ५२८ ॥

सुभट सहू संक्या[1] मन माहि, बादिल आगइं[2] अधिकी[3] आहि ।
सिगति[4] न छांनी राखी रहइ,[5] बाँधी अगनि हुई[6] तउ[7] दहइ ॥ ५२९ ॥

वादिल वइसी[1] किउं[2] मंत्रणउ[3], "कहुं वात ते सगला सुणउ[4]" ।
वि सहस सज्ज करउ[5] पालखी, [6]वात न जाणइ जिम को लखी[6] ॥ ५३० ॥

ऊपरि अधिक धरउ[1] ऑछाड[2], पागथियां[3] बांधउ[4] पटवाडि ।
दुइ-दुइ सुभट रहउ[5] त्यां माहि, [6]सहि संजूह घटे संवाहि[6] ॥ ५३१ ॥

साचा शस्त्र[1] घणा आदरी, बइसउ[2] मन महि साहस धरी ।
लारोलारि करउ[3] पालखी, कहिस्यां[4] माहे छइं[5] तसु सखी ॥ ५३२ ॥

विचि[1] पालंखी पदमिणि तणी, परठी सोभ करउ[2] तिणि घणी ।
साचउ[3] पदमिणि तणउ[4] सिंगार[5], ऊपरि थापउ[6] भमर गुंजार ॥ ५३३ ॥

मुखस्युं (सु D, सै E) वात कहुगा घणी,
विरह विथा सहु आलिम तणी ।
मुझकु दीजइं (दीजै DE) अवइ (अवहि E) रजाइ,
आलिम ऊठि (साहि E) दिया पहुंचाइ । B ५७९ । O ५८९ । D ६३४ । E ७०८ ॥

॥ ५२७ ॥ १ आवियो O, आवियौ D । २ हरख्यउ B, हरख्यो O, हरख्यौ D । ३ तणो O, तणौ D । ४ हीयउ B, हियो O, हियौ D । ५ आजूणो O (-णौ D) । ६ दीधो O, दीधौ D ।
E प्रतिमें–सोवन-पोट हमाला सिरे, है हीसे गै सारव करै ।
इण परि आयो चित्रगढ माहि, पूछै वात सहू परचाइ ॥ ७०९ ॥
रीझ मोकली निज घर ज्यार, माता हरषित थई ति वार ।
देखी साह तणो सिरपाव, देखी सूरातन दरियाव ॥ ७१० ॥

॥ ५२८ ॥ १ गोरो OE, गोरौ D । २ राउत B । ३ गहगयो BO, गहगह्यौ DE । ४ सगलो OE, सगलौ D । ५ कह्यो O, कह्यौ DE । ६ ए मेल्हेस्यइ BO, (मेलवसी D, मेलवसै E) । A ५०६ । B५८१ । O५९१ । D६३५ । E७११ ।

॥ ५२९ ॥ १ चमक्या E । २ आगै D । ३ इधकी D । ४ सक्ति BO, सकति D, सगति E । ५ रहै DE । ६ होइ BODE । ७ तौ D, तो E । इसके आगे BODE प्रतियोंमें–
जिहि घटि (ज्या बुधि E) गुण दियउ (दियो OE, दियौ D),
निंदउ (निंदो DE) मत मति (मिलि E) मद ।
ले कूडउ (कूडो O, जौ कुडै DE) जे ढाकियइ (करि छाइयै DE),
छिप्यो रहइं (रहै ODE) किम (कित E) चद ॥ B५८३ । O५९३ । D६३७ । E७१३ ॥

॥ ५३० ॥ १ वैसि DE । २ कियउ BO, कियौ D, कियो E । ३ मत्रणो OE, मत्रणौ D । ४ सुणो OE, सुणौ D । ५ करो OE, करौ D । ६ ..जाणे O, (जाणै D) .वात न जाये किण ही लिखी E ।

॥ ५३१ ॥ १ करउ B, करो OE, करौ D । २ ऊछाड BOD । ३ पाखतिया E । ४ वाधो OE, वांधौ D । ५ रहो OE, रहौ D । ६ सहु सजोध .BO, महु संजोव .D, वांधीं वस्त्र सिलह सन्नाहि E ।

॥ ५३२ ॥ १ सस्त्र OD, । २ वइसो O, वैसो D, ३ करौ D, धरौ E । ४ कहिसा E । ५ छै DE ।
E प्रतिमें प्रथम अर्द्धाली नहीं हैं ।

॥ ५३३ ॥ १ विचमइ पालखी O, वीचि पालखी D, विचै पालखी E । २ करो O, करौ D, धरौ E । ३ साचो OE, साजौ D । ४ नउ B, नो O, नौ D । ५ सिणगार BOD । ६ थापो OE, थापौ D ।

तिणि[1] महि[2] गोरउ[3] रावत रहइ[4], वात रखे को वाहरि[5] कहइ[6] ।
"इक प्रतिविंवउ पद्‌मिणि माहि[7], 'आलिम सकइ न जिम अवगाहि[8] ॥ ५३४ ॥

छेती[1] विचि[2] न राखउ[3] छती, लारोलारि करउ[4] लागती ।
गढनी पउलि[5] लिगावउ[6] लार, सेन समीपइ[7] आणउ[8] पार ॥ ५३५ ॥

ऍम करी हिव तुम्हि आवयो[1], वेला वहुली[2] पडखावयो[3] ।
हुं विचि जाइ करेसुं[4] वात, मेल्हिसु[5] सगली[6] धातइँ-धात[7] ॥ ५३६ ॥

हुं जाई[1] आणिसुँ[2] राजान, पुहचाडेस्यां[3] नृप निज थांन ।
पछइ करेस्यां[4] सवलउ[5] किलउ[6], ए आलोच अछइ[7] अति भलउ[8]" ॥ ५३७ ॥

सगले सुभटे थापी[1] वात, परठउ[2] करतां[3] हूउ[4] प्रभात ।
सीख सहू समझावी करी, चालिउ[5] वादिल चंचल चडी ॥ ५३८ ॥

पहुतउ[1] तिमइ ज[2] लसकर माहि, जिहां वइठउ[3] छइ[4] आलिमसाहि ।
जाई वादिल कीउ[5] सिलांम, हरषित हूउ[6] असपति तांम ॥ ५३९ ॥

"वादिल, साचा कहि संदेस, दिउं[1] घणा जिम[2] तुझनइ[3] देस ।"
वादिल वात[4] कहइ[5] परगडी, "साँमी! वात सिराडइ[6] चडी ॥ ५४० ॥

सुभट सहू समझाव्या[1] नीठ, पद्‌मिणि आणी गढनी पीठि ।
सुभट सहू भाषइ[2] छइ[2] ऍम, निसुणउ[3] साँमी विनती तेंम ॥ ५४१ ॥

पद्‌मिणि सुं[1] जउ[2] छइ[3] तुम्ह कांम, तउ[4] हिव राखउ[5] मामउ माम[6] ।
ऊपावउ[7] अम्हनि[8] वेसास[9], पद्‌मिणि आणाँ जिम तुम्ह[11] पासि" ॥ ५४२ ॥

॥ ५३४ ॥ १ तिणि BOD । २ मै E । ३ गोरो ODE । ४ रहउ B, रहो O, रही D, रहे E । ५ वाहिरि O, वारै E । ६ कहउ B, कहो O, कही D, कहे E । ७...प्रतिव्यवउ B, एक प्रतिव्यावो O, एक प्रतिविंवो D । ८ आलम न सकै...D । E प्रतिमें द्वितीय अर्द्धाली नही है । A ५१२ । B ५८८ । O ५९९ । D ६४२ । E ७१७ ।

॥ ५३५ ॥ १ छेकी A । २ विचइ A । ३ राखो OE, राखौ D । ४ करो OE, करौं D । ५ पोलि OE, पौलि D । ६ लगाडो BO, लगाडौ D, लगाडो E । ७ समीपै DE । ८ आणो OE, आणौ D ।

॥ ५३६ ॥ १ आवज्यो BO, आवज्यौ DE । २ वहुती BODE । ३ पडखापिय्यो BO, पडखावज्यौ DE । ४ करेशुं A, करेस्युं B । ५ मेल्हसि BO, मेलसि D, मेलिस E । ६ घागडि B, जिमतिम DE । ७ धाता-धात BO, धाती धात DE ।

॥ ५३७ ॥ १ लेई E । २ आणिसि BO, आविस E । ३ पहुचाडेसुं BOD, पहुंचावेसुं E । ४ करेसां AE । ५ सवलो OE, सवलौ D । ६ किलो OE, किलौ D । ७ अछे DE । ८ भलो OE, भलौ D ।

॥ ५३८ ॥ १ मानी BODE । २ परठ DE । ३ करता DE । ४ थयो BODE । ५ चाल्यउ BO, चाल्यो DE

॥ ५३९ ॥ १ पहुतौ DE । २ तिमैंज D, जाई E । ३ वेठो AO, वयठो D, वैठो E । ४ छै DE ५ कियउ BO, कियौ DE । ६ हूयो O, हूयौ D, वोलै E ।

॥ ५४० ॥ १ घउं BO, देउं D, वगसु E । २ ज्यु BO, जुं D, वहुला E । ३ तुझने O, तुझनै D । ४ अरज E । ५ कहै D, करे E । ६ सराडे D, सिराटै E ।

॥ ५४१ ॥ १ कटक सहू समझावी E । २ भाखे छै DE । ३ निसुणो DE । A ५१८ । B ५९४ । O ६०४ । D ६४८ । E ७२२ ।

॥ ५४२ ॥ १ स्युं B । २ जो ODE । ३ छै DE । ४ तो ODE । ५ राखे B, राखां E । ६ मांमोमांम BODE । ७ ऊपाटउ B, ऊपावो ODE । ८ अम्हनइ B, हमने D, हमसुं E । ९ विसवास E । १० आंणउ B, आणु DE । ११ तुह्म A ।

असपति[1] बोलइ[2] वलतउ[3] ऍम, "कहु वेसास[4] हुइ[5] तुम्ह कैंम" ।
[6]बादिल बोलइ- "साहिब सुणउ[6], "[7]चलवउ लसकर सहु तुम्हतणउ[7] ॥ ५४३ ॥

[1]जउ वलि बीहउ तउ असवार[1], तीरइ[2] राखउ[3] सहस बि-च्यार[4] ।
अवर सहू आघा चालवउ[5], [6]जिम वेसास हुइ अभिनवउ[6] ॥ ५४४ ॥

ऍम सुणीनइ[1] ऊतावलउ[2], बोलइ[3] आलिम अति बावलउ[4] ।
"हमे हिवई[5] बीहाँ[6] किण[7] थकी, बादिल वात[8] भली[8] तइँ[8] वकी" ॥ ५४५ ॥

हुकम कीउ[1] असपति हुसियार, कूच करायउ[2] लसकर सार ।
सहस बि-च्यारि रहुउ[3] हम पास, हिंदुआंनइ[4] जिम हुइ[5] वेसास ॥ ५४६ ॥

लसकरिए[1] जब लाधउ[2] दूअउ[3], हरष घणउ[4] मन माहे हूउ[5] ।
लसकर कूच कीउ[6] ततकाल, चाल्या सुभट सहू[7] समकाल[7] ॥ ५४७ ॥

साऊ-साऊ सहस बि-च्यार[1], असपति[2] पासि रह्या असवार ।
बोलइ आलिम-"बादिल[3], सुणउ, कहिउ[4] कीउ[5] हइ हमि तुम्ह[6] तणउ ॥ ५४८ ॥

वेगि अणावउ[1] हिव पदमिणि, पालउ[2] वाचा आपापणी[3] ।
[4]लाख सुनइया वलि तसु दिया[4], [5]पहिराव्या वलि वागा विया[5] ॥ ५४९ ॥

ते लेई बादिल आवीउ[1], [2]हरषिउ माइ तणउ वलि हीउ[2] ।
[3]निज सुभटांसु कीउ सँकेत[3], "हिव जगदीसइँ दीधउ[4] जेत्र[4] ॥ ५५० ॥

॥ ५४३ ॥ १ असुपति BO । २ वोलै DE । ३ वलतो OE, वलतौ D । ४ बिसवास E । ५ हुवइ BO, होइ D, हुयै E । ६ ...वलतो O,...वोलै...सुणो D, कहै श्री आलम सुंणो E । ७ चलावउ... तुम्हा ..BO, लसकर विदा होइ तुम्हतणो D, बिदाकरो लसकर आपणो E ।

॥ ५४४ ॥ १ जो वलि (वलि BDE) बीहो तो ODE । २ तीरे O, पासै DE । ३ राखो OE, राखौ E । ४ वे च्यार D । ५ चालवो O, आगै चालवौ D, अवर दियो सहु आगे चलाइ E । ६.. हुवइ (BO)अति भलो O, ...हुवे अभिनवौ D, जिम विसवास अम्हा मनि थाइ E ।

॥ ५४५ ॥ १ ने DE । २ ऊतावलो O, ऊतावलौ DE । ३ वोलै DE । ४ वावलो O, वावलौ D, वाउलो E । ५ हम अवीह BODE । ६ वीहै E । ७ किंस E । ८ अैसी ते क्या E ।

॥ ५४६ ॥ १ कीयउ B, कियो OE, कियौ D । २ करावउ B, करावो ODE । ३ रहो ODE । ४ हिंदुवानइ BO, नै D, हिंदूकौ E । ५ हुवइ B, होइ OE होयै विसवास E । A ५२४ । B ६०१ । O ६११ । D ६५५ । E ७३० ।

॥ ५४७ ॥ १ लसकरिया BE, लसकरियै O । २ लाधो OE, लाधौ D । ३ दूयो OE, दुवौ D । ४ घणो OE, घणौ D । ५ हूयो OE, हुवौ D । ६ कीयउ B, कियो OE, कियौ D । ७ विकटविकराल E । इसके आगे E प्रतिमें .—

मीर मलक कोइ खांन निवाव । मुगल पठाण घणी जस आव ।
पदमिन सनस करे जेह भणी । आगै चलाए दिल्ली धणी ॥ E ७३२ ॥

॥ ५४८ ॥ १ विचार B, विच्चारि E । २ असुपति E । ३ वादल सुणो B । ४ कह्यो हमे B । ५ कीयो B, कीयउ E । ६ तम तणो B ।

॥ ५४९ ॥ १ अणावो OE, अणावौ D । २ पालो OE, पालौ D । ३ आपा- E । ४ लाखमोहर तसु (महुर तव E) रोकड दिया DE । ५ पहिरावणि BOD किया O (लिया D), पहिरामणि वागा समपिया E ।

॥ ५५० ॥ १ आवियो OE, आवियौ D । २ हरख्यो BCD तणो तव हियो OE (हीयउ B), हरख्यौ माय तणौ तव हियौ D । ३ वलि कीयउ .B (कियो CD), तव सुहटासु...E । ४ कीयउ छइ जेत्र B, कियो...O, कियौ छै D, दियो छै E ।

ले[1] पालखी[2] तुम्हे आवयो[3], लारोलारि खरी राखयो[4] ।
मत किणि वातइँ हूउं[5] आखता, [6]खित्रवटि काँइ न आँणिसु खता[6]" ॥ ५५१ ॥
ऍम कही आघउ[1] संचरिउं[2], पालंखिए[3] पूढि[4] परिवरिउं[5] ।
दीठउं[6] असपति आविउं[7] वली, वादिल वात कहइ[8] निरमली ॥ ५५२ ॥
"साहिब ! संभलि[1] मुझ वीनती, पदमिणि ऍम कहइ[2] हितवती[3] ।
[4]हुं आवी हिव सही तुम्ह गेह[4], [5]साहिब हिव तुं हुए ससनेह[5] ॥ ५५३ ॥
साचउं[1] राखे मुझ सोहाग, मागुं मान मुहतसुं[2] राग ।
तुझ[3] घरि हरम हजाराँ गमे, त्याँसुं पिण[4] तु रंगइ[5] रमे ॥ ५५४ ॥
पिण[1] सोहागिणि[2] मुझनइ करे, जउं[3] आणइ[4] छइ[5] पदमिणि घरे" ।
[6]ऍम सुणी वलि आलिम कहइ[6], "पदमिणि आपे[7] आदर लहइ[8] ॥ ५५५ ॥
पदमिणि नारि तणउं[1] नख एक, ते[2] सम[3] नावइ[4] नारि अनेक ।
पदमिणि कारणि मइँ[5] हठ कीउं[6], वाच[7] लोपि राजा ग्रहि लीउं[8] ॥ ५५६ ॥
मुझ मनि पाँति[1] अछइ[2] अति घणी, [3]साँमिणि होसी मुझ पदमिणी[3] ।
अवर[4] हरम सहु[5] करसी सेव, पदमिणि जइ[6] पधरावउं[7] हेव" ॥ ५५७ ॥
ऍम कही वलि वादिल भणी, परिघल दीधी पहिरावणी[1] ।
ते लेवी[2] वादिल आवीउं[3], हरपिउं[4] माइ[5] तणउं[6] वलि हिउं[7] ॥ ५५८ ॥

॥ ५५१ ॥ १ लेई E । २ पालखी । ३ आवज्यौ D । ४ लावयो B, लावज्यो CE, लावज्यौ D । ५ हूवउं B, हुवो CE, हुओ D । ६...नाणिसु...BC, . नाणसि...D, रखे लिगावो काइ खता E ।

॥ ५५२ ॥ १ आघो CE । २ संचरयउं B, सचरयो C, संचरयौ DE । ३ पालखी BCD, पालखिया E । ४ पूठइ BC, पूठै DE । ५ परिवरयउं BC, परवरयौ DE । इसके आगे E प्रतिमें:—
राघव व्यास हुता बुधिवान। सामद्रोहथी नाठौ ग्यान ।
छल कल ए न लिखाणी काइ । लूणहराम तणै परमाइ ॥
६ दीठो CE, दीठौ D । ७ आवै BCD, आवह E । ८ कहे C, कहै D, कहो B । A ५२० । B ६०७ । C ६१७ । D ६६१ । E ६३८ ।

॥ ५५३ ॥ १ सामलि E । २ कहे DE । ३ गुणवती DE । ४ हु आवी सही तुम्ही गेह BC, आवी हु अवही तुम्ह गेह D, आवु छु हजरत तुम्ह गेह E । ५ आलम धरयो अधिक सनेह E ।

॥ ५५४ ॥ १ साचो C, साचौ DE । २ मुहतस्यु BCD, महत अनुराग E । ३ तुम्ह BCDE । ४ पणि BCDE । ५ रमै DE ।

॥ ५५५ ॥ १ पणि BCDE । २ सोहागनि BC, सोहागणि D, सोहागिण E । ३ जइ BCD । ४ आणौ D । ५ तु BCD । ३-५ एह अरज मन माहि धरे E । ६" कहे D, सुणीनै आलम कहै E । ७ आपै E । ८ लहै DE । इसके आगे E प्रति में .—
यदुक्त—क्यु कामण क्यु करम गति, क्यु पुरवलो लेख ।
मारो साहिब मा वलु, क्यु माहि माहि वसेख ॥ ७४२ ॥

॥ ५५६ ॥ १ तणौ D, तणा E । २ तिण E । ३ समान BCD, सारिखी E । ४ नही BCDE । ५ मैं E । ६ कीयउं B, कियो CE, कियौ D । ७ वयण E । ८ लीयउं B, लियो CE, लियौ D ।

॥ ५५७ ॥ १ खति BCD । २ अछै DE । ३ "होसइ"'B, होसी" CD, मानीती करसु पदमिनी E । ४ अउर BC । ५ हम BCD, सहु E । ६ जाइ BC, जाय D, कु E । ७ पधरावो DE ।

॥ ५५८ ॥ १ पहिरामणी BE । २ लेई BCDE । ३ आवियउं B, आवियो CE, आवियौ D । ४ हरख्यो BC, हरख्यौ D । ५ गोरा BCD । ६ तणों D । ७ हियो C, हियौ D । ४-७ पदमिण नारी वाधा-वीयो E । A ५३६ । B ६१३ । C ६२३ । D ६६८ । E ७४५ ।

सुभटाँसुं[1] वलि भाषी वात, "[2]जइ मेल्हुं छुं घातइँ घात[2] ।
तुम्ह सहु थाहरि[3] रहयो[4] इहाँ, वात रखे को[5] काढउ[6] किहाँ" ॥ ५५९ ॥
आविउ[1] बादिल वलि असि[2] चडी[3], नव-नव[4] वात कहइ[5] मनि घडी ।
होठें[6] बुद्धि वसइ[7] जेहनइ[8], किसुं[9] दुहेलुं[10] छइ[11] तेहनइ[12] ॥ ५६० ॥
वाता करतां लावइ[1] वार, [2]फिरीउ बादिल वार वि-च्यार[2] ।
बोल बंध सहि साचा किया, लाख वि-च्यार सुनइया लिया ॥ ५६१ ॥
असपति अति ऊतावलि करइ, बादिल तिम-तिम मन महि ठरइ ।
परगट आणि धरी पालखी, आलिम देखइ[1] सहु सारिखी ॥ ५६२ ॥
बादिल वलि-वलि विच महि[1] फिरइ[2], पदमिणि नइ[3] मिस वातां करइ[4] ।
रहिउ[5] पुहर दिन इक पाछिलउ[6], लसकर आघउ[7] गउ[8] आगिलउ[9] ॥ ५६३ ॥
किला तणी हिव[1] वेला थई, तव वलि[2] बादिल बोलइ[3] जई ।
"साँमी[4] एम कहइ[5] पदमिणी, मुझ ऊभां हुइ[6] वेला घणी ॥ ५६४ ॥
मुझनी[1] एक सुणउ[2] अरदास, ज्युं[3] हुं आवुं[4] तुझ[5] आवास ।
रतनसेंन मेलउ[6] इकवार[7], तिससुं[8] वात करां[9] दो-च्यार[10] ॥ ५६५ ॥
लेइ राजा आवुं[1] दरबारि, ज्युं[2] मुझ[3] अधिक[4] रहइ[5] आचार" ।
आलिम बोलइ[6]-"सुणि बादिला!, पदमिणि बोल कहावइ[7] भला ॥ ५६६ ॥
इणि[1] बोलइं[2] हम हुआ[3] खुसी, पदमिणि न्याइ[4] कहीजइ[5] इसी" ।
हुकम कीउ[6] आलिम ततकाल, "छोडउ[7] रतनसेंन भूपाल" ॥ ५६७ ॥

॥ ५५९ ॥ १ नइ BO, नै DE । २ जाई मेलविसि धाता धात B (मेलवस्या O, जाय मेलवी D, मेलविसुं E ।) ३ बाहरि E । ४ रहय्यो B, रहिय्यो O, रहैल्यो D, रहियो E । ५ कोइ E । ६ काढो D, काढौ E ।

॥ ५६० ॥ १ आव्यो BO, आव्यौ D, आयो E । २ अश्वि B, अश्व OD । ३ चढी B, चडही E । ४ वलि-वलि BOD । ५ करइ BO, करै D, करे E । ६ होठै E । ७ वसै DE । ८ जेहनै DE । ९ किसउ BO, किसी E । १० दुहेलो BO, उणारत E । ११ छै DE । १२ तेहनै DE ।

॥ ५६१ ॥ १ लागइ BO, लागै DE । २ फिरि तव बादल आव्यउ मनि ठार B (आव्यो O), फिरतो बादल आव्यौ त्यार D, फिर वलि बादल आयो तार E । द्वितीय अर्द्धाली BODE प्रतियों में नहीं है ।

॥ ५६२ ॥ प्रथम अर्द्धाली BODE प्रतियों में नहीं है । १ देखे O, देखै DE ।

॥ ५६३ ॥ १ मा E । २ फिरै DE । ३ नै DE । ४ करै DE । ५ रह्यउ B, रहयो O, रहंयौ DE । ६ एक OD, पाछलो O, पाछिलै DE । ७ दूरि BODE । ८ गयो BO, गयौ DE । ९ आगलो O, आगिलौ DE ।

॥ ५६४ ॥ १ तव BO, जव DE । २ तिहां BODE । ३ बोलै DE । ४ हजरत E । ५ कही BO, कहै DE । ६ थई E । A ५४२ । B ६१४ । O ६२४ । D ६६९ । E ७४७ ।

॥ ५६५ ॥ १ माहरी DE । २ सुणो O, सुणौ DE । ३ जो O, जिम E । ४ आउं D । ५ तुम्ह BODE । ६ मेल्हइ B, मेलो O, मूको DE । ७ एकवार OD । ८ -स्युं B, तिणसु D, तिणसै E । ९ करुं E । १० दोइच्यारि ODE ।

॥ ५६६ ॥ १ आवउं B, आवो O, आउ D । २ ज्यउ B, जू O, जिम E । ३ हम BODE । ४ कुलवट E । ५ रहै DE । ६ बोलै DE । ७ कहावै DE ।

॥ ५६७ ॥ १ यह E । २ बोलै DE । ३ हूवा BD, हूयें E । ४ नारि E । ५ कहावइ O, कहीजै DE । ६ हुवउ B, कियो O, कियौ D, दियौ E । ७ छोडौ DE ।

वादिल माहि छोडावण[1] गयउ[2], राजा रूसि[3] अपूठउ[4] थयउ[5]।
"फिट रे वादिल! मुह म दिखालि, सवल लिगाडी[6] तइँ[7] मुझ[8] गालि ॥ ५६८ ॥
वयरी[1] वयर[2] घणउं[3] तइँ[4] कीउं[5], पदमिणि साटइ[6] मुझ नइ[7] लीउं[8]।
खिभवट माथइ[9] घाली[10] खेह, "निसत सुभट हूआ निसनेह[11]" ॥ ५६९ ॥
वादिल बोलइ[1]- "सांमी सुणउं[2], अवर कीउं[3] छइ[4] ए मंत्रणउं[5]।
मुघि करीनइ[6] आघा[7] चलउं[8], भागि तुहारइ[9] होसी[10] भलउं[11]" ॥ ५७० ॥

॥ ५६८ ॥ १ छुडावण BODE। २ गयो ODE। ३ रूठि BOD। ४ अपूठो OE, अपूठौ D। ५ थयो OE, थयौ D। ६ लगाडी BO, लगावी D, लिगाइ E। ७ ते O, ते D। ८ E मुझि D। ७-८ मुझनै।

॥ ५६९ ॥ १ वइरी O, वयरी D। २ वइर O, वैर D। ३ घणो OE, घणौ D। ४ ते O, तैं DE। ५ कियो O, कियौ DE। ६ साटै DE। ७ नै D E। ८ लियो O लियौ DE। ९ माथै DE। १० नाखी E। ११ खित्री निसत थया सविसेह E।

॥ ५७० ॥ १ बोलै D। २ सुणो O, सुणौ D। ३ कियउ B, कियो O, कियौ D। ४ छै D। ५ मंत्रणो B, मत्रणौ D। ६ -नै D। ७ अव तुम्हि BD, तमे O। ८ चलो BO, चलौ D। ९ तुम्हारइ BO, तुहारै D। १० होसइ B, होस्यइ O। ११ भलो DE। A ५४८। B ६२६। O ६३६। D ७८१। E प्रतिमें नही है। इसके आगे A प्रतिमें चो सं. ५६१ के वाद तथा BOD प्रतियों में-

कवित्त-कीउं कूट वादिल्ल, लेइ पालिखी पहुत्तउं, तसु महि राखिउं वाल, नाम पदमिणि दियत्तउं ॥
हूउं हरप सुरताण, जवहि सुणि आवत नारी। गोरी तव पूछीउं, वोल मोलइ विचारी ॥
"अल्लावदीन सुणि वीनती, एक वात मोरी कलइ"।
पदमिणि नारि इम उच्चरइ "एकवार राजा मिलइं" ॥ A ५४९। B ६२२। O ६३२। D ६७७।

पाठान्तर—कीयउं B, कियो O, कियौ D। पालखी BD, पालखी O। पहूतो O, पहूतौ D ॥ तसु मांहि गोरो राउ BOD, दित्तउं BO, दीतो D ॥ हुवउं B, हुयो O, हुवो D। आवती राणी BOD ॥ पदमिणि तव BOD, वोलि सुललित वाणी BOD ॥ कलै D ॥ ऊचरै D। मुझ रतनसेन राजा मिलइं (मिलै D) BOD ॥

कवित्त-वादिल तिहा आविउं, राउ जिहा वंधणि वद्धउं। ले मस्तक आपणउं, चरण ऊपरि तसु दिद्धउं ॥
हूउं कोप राजान, वइर तइ सारिउं वेरी। एहं दई न लोभिउ, नारि आणी क्यु मेरी ॥
वादिल्ल ताम मनिमहि हसिउं, कृपा करउं सांमी सही।
वाल रूपि पदमावती, राउं नारि तोरी नही ॥ A ५५०। B ६२६। O ६३६ D। ६८०।

पाठान्तर—आवियो OD। वांधण O। वाधियउं B। वाध्यो O, वध्यौ D ॥ आपणो OD, चरण राज लेइ दीधउं B। (दीधो O, दीधौ D) ॥ हूवउं B, हूयो O, हुवौ D, तै D, वयरी D ॥ मुझ वचन लोपियउं (लोपियो OD) BOD ॥ हस्यउं B, हस्यो O, हस्यौ D, करो O करी D, वालिका BOD, राव D। यह कवित्त BOD प्रतियों में चो स ५६३ के वाद दिया गया है। E प्रतिमें।

कवित्त—फिट वादल कहि राव, वाच चुक्को हिंदुवानह। खित्री भ्रम लज्जयौ, मिट्यौ भडमान गुमानह ॥
साम भ्रम लुप्पियौ, लुण तासीर न किन्ही। जी तव प्यारौ कीयौ, नारि असपतिकु दिन्ही ॥
कहा करुं मैं त'परवस पर्यौ, वाच लोप आलम भयो।
सत छोडि कितौ अव जीवि हैं, जव ही नीर उतरि गयो ॥ ६५६ ॥
कहै वादल सुणि राव, वाच हिंदुवान न चुक्कहिं। खित्री भ्रम्म उज्जलौ, सुहडन न धीरज मुक्कहिं ॥
साम भ्रम्म रखि है सदा, जस्स सव ही कौं प्यारौ। भुगतहु गढ चीत्तोड, इला जस वास उवारौ ॥
मैं करहुं सेव अस साभि की, असपति सहि लहि मैं लह्यौ।
महिमान मान दिज्जै सदा, करहु यादि पुव्वहि कह्यौ ॥ ६५७ ॥
दूहा-महिल अगजित गढ सधर, ग्रहि सत राज गहिल्ल। उस आलिमकी महिर सौं, सव ही होहि सहिल्ल ॥ ६५८ ॥
राखि रजा सिर रामकी, धरि मन उमँग उछाह। राज पधारहु चित्रगढि, सवविधि होहि भलाह ॥ ६५९ ॥
कवित्त-राव करहु मनि ध्यान, जवनपति हट्ठ हमीरह। गमर किये रस नाहि, ढलकि है अजलि नीरह ॥
परा लेख जौ कछ्छ, धाता त्रिम्यौ निस छट्ठी। रोस मोस विनु न क्यु, लोक वाइक नहु झुट्ठी ॥
हनरत रजा सिरि परि धरहु, उत्तम रीत न छांटीयै।
टाव विण घाव हे है नहीं, वाचहुं पढहु मरम हीयै ॥ ६६० ॥

[1]प्रीछिउं भूप चलि ततकाल[1], [2]आलिम वोलइ इम असराल[2] ।
"पदमिणि नइं[3] मिलि आवउं जाइ[5], [6]जिम तुझ सीख दिउं सदभाइ[6]" ॥ ५७१ ॥
राजा चालिउ[1] पदमिणि भणी, [2]सिवका श्रेणि घणी साँघणी[2] ।
राजा पेठउ[3] महि पालिखी[4], वात सहू तव साची लखी ॥ ५७२ ॥
वादिल वोलइ[1]- "साँमी सुणउ[2], अवसर नहि ए वातां तणउ[3] ।
एक थकी वीजी अवगाहि, गढि लगि जावउ[4] सिवका माहि ॥ ५७३ ॥
साँमी थावउ[1] हीइ[2] सचेत[3], माहि जई करयो[4] संकेत ।
साचउ[5] करयो ए सहिनाण, [6]वाजावेयो ढोल-निसाण[6]" ॥ ५७४ ॥
एम सुणी राजा रंजीउ[1], [2]हरख संपूरित हूउ हीउ[2] ।
कुसले-खेमे पुहतउ[3] माहि, जाणि क[4] सूरिज[5] मुंकीउ[6] राहि ॥ ५७५ ॥
कुसल तणा वाजा वाजिया, तव ते सुभट सहू गाजिया ।
नीकलिया[1] नव हत्था जोध[2], [3]वड दूसासण वहइँ विरोध[3] ॥ ५७६ ॥
साँमि-काँमि[1] समरथ अति सूर, [2]गोरउ रावत अतिहि करूर[2] ।
अरि-दल देखी अति[3] ऊससइँ[4], सुभट सहू मन माहे हँसइँ[5] ॥ ५७७ ॥
सूरिम सगलइ[1] तनि ऊछली, सोहइ सुभट तणी मंडली ।
साचा पहिरया सुघट[2] सनाह, रुक-हत्था दीसइँ[3] रिम राह ॥ ५७८ ॥

॥ ५७१ ॥ १ प्रीछ्यउ...चल्यउ...B, प्रीछ्यो ...C, प्रीछि भूपति चलौ...D, भूप प्रीछि ऊठ्या तिण वार E । २... मनि...BC,...वोलै ननि...D, असपति वोलैं अति चितप्यार E । ३ नै E । ४ आवी DE । ५ जाय D । ६...तुम्ह...दीयउं B, दियो CD, पीछै सीख, दियै सतभाइ E । A ५५१ । B ६२८ । C ६३८ । D ६८२ । E ७६१ ।

॥ ५७२ ॥ १ चाल्यो BC, चाल्यौ D, चाल्या E । २... सेण घणुं साघणी B, घणास्युंघणी C, श्रेणि घणी स्याघणी D, सुखपाला देखो घणघणी E । ३ पइठा BC, पयठो D, पैठा माहि जिसे E । ४ पालखी BCDE ।

॥ ५७३ ॥ १ वोलै DE । २ सुणो C, सुणौ DE । ३ तणो CDE । ४ जाए BCD, पहुंचौ E ।

॥ ५७४ ॥ १ थाज्यो BC, थाइज्यो D, थाज्यौ E । २ हिवइ BC, हिवै D, घणुं E । ३ सजेत B । ४ करिज्यो BC, करज्यौ D, कीयी E । ५ साचो C, साचौ DE । ६ वजाडी ढोल अनइ... BC, ढोल वजाय अनै नीसाण D, दीजौ डंका जैत निसांण E । इसके आगे DE प्रतियोंमें–

D—एक चरित देखहु सविचार, मन्त्रभेद नवि हुवो लगार ।
स्वामि धरम नो ए सुपसाय, गढ राख्यौ नै छूटो राय ॥ D ६८६ ॥

E—रतन तुहारै वखतै सही, मंत्रभेद पिण हूयौ नही ।
साम-धरम नैं सत परमाण, गढ रहियौ नै छूटा राण ॥ E ७६५ ॥

॥ ५७५ ॥ १ रजियउ B, रजियो C, रजियौ DE । २ हरखि हवउ हीयउ BC, हरिख संपूरित हूयो हियो D, साई सफल मनोरथ कियौ E । ३ कुशल-खेम पहुतउ गढ माहि B (पहुतो C, पहुतौ D, पहुता E ।) ४ कि E । ५ सूरज E । ६ मूंक्यउ B, मूक्यो C, मूक्यौ DE ।

॥ ५७६ ॥ १ नीसरिया BCDE । २ योध B । ३ वडरूसासण B, महै D, माण दुसासण वैर विरोध E । A ५५५ । B ६३३ । C ६४१ । D ६८८ । E ७६७ । इसके वाद DE प्रतियों में.–

DE—राघव तणो (चेतन D) हुयौ मुख स्याम । कूड कियौ पणि सक्यौ न काम ॥
D—पातिसाहि नै पासै रह्यौ । ना काइ जाण्यौ ना काइ कह्यौ ॥ ६८९ ॥
E—साम-द्रोह पातिग परगट्यौ । अकलि गई पोरस पिण मिट्यौ ॥ ७६८ ॥

॥ ५७७ ॥ १ साम-काम E । २ गोरो C, गोरौ D, गोरो रावत चडहीयौ नूर E । ३ तनि DE । ४ ऊससै D, उल्हसै E । ५ माहै हसै DE ।

॥ ५७८ ॥ १ सगलै D । २ सबल D । ३ दीसै D ।

E प्रतिमें—सूरातन चडिया सिरदार, डडा पग झलहल जुझार ॥
दलां दुमाडण दूठ दुवाह, रुक-हत्था दीपै रिमराह ॥

च्यारि[1] सहस नीसरिया सूर, एक एक थी[2] अधिक[3] करूर।
आगलि[4] गोरउ वादिल बेउ[5], [6]पूठई चाल्या सुभट सवेउ[6] ॥ ५७९ ॥

घाघरटइँ[1] दीसइँ[2] भट[3] घणा, पार न लाभइँ[4] पुरुषाँ[5] तणा।
त्रूट्या[6] धाया ले तरवारि, हलकारे लागा हलकार ॥ ५८० ॥

"रे! रे! आलिम[1] ऊभउ[2] रहे[3], हिव नासी[4] मत जाइ[5] वहे[6]।
पदमिणि आणी छइँ[7] अम्हि[8] जिका, तोनइ[9] हिवइ[10] दिखाडाँ तिका ॥ ५८१ ॥

तोनइ[1] खांति[2] अछइ[3] अति घणी, [4]अम्ह ऊभाँ ते देवा तणी[4]।
हठीउ छइ तउ करि हथियार[5], [6]हिव आलिम मनि हुइ हुसियार[6]" ॥ ५८२ ॥

ऍम कहीनइ[1] आव्या जिसइँ[2], दीठा आलिम अरीयण तिसइँ[3]।
रण-रसीउ[4] ऊठिउ[5] रिम राह, विणठी वात करइ[6] पतिसाह ॥ ५८३ ॥

"रे! रे! कूड कीउ[1] वादिलइँ[2], [3]आवउ सुभट सहू हिव किलइँ[3]"।
हलकारया असपति निज जोध, धाया किलली करताँ[4] क्रोध ॥ ५८४ ॥

माहोमाहि मँडाणउ[1] किलउ[2], [3]वडवी वोलइ इम वादिलउ[3]।
"पातिसाह! मंति छंडइ[4] पाउ[5], [6]जउ तु अधिरु अछइ रणराउ[6] ॥ ५८५ ॥

॥ ५७९ ॥ १ च्यार E। २ तै D। ३ अतिहि DE। ४ आगल O, आगै D। ५ वेइ BOD, वेह E। ६...सवेय B,...सवेह O, पूठै ..D, पूठि सामंत थाट सवेह E।

॥ ५८० ॥ १ घाघरटे BODE। २ दीसै DE। ३ भड BODE। ४ लाभै D, सिलह-टोप करि रूद्रांमणा E। ५ सुभटा BOD। ६ तूटी D, धाया छूटी. .E।

॥ ५८१ ॥ १ असपति BE। २ ऊभो OE, ऊभौ D। ३ रहइ B, रहै E। ४ न्हासी E। ५ जायइ BOD, जायै E। ६ वहइ BOD, वहै E। ७ छै DE। ८ अम्हे BOD, मे E। ९ तौ नै D, तोह नै E। १० हिवै D, हिवैं E।

॥ ५८२ ॥ १ नै DE। २ खति BO। ३ अछै DE। ४...लेवा...ABOD, पदमिणि नारि निहालण तणी E। ५ हठियौ छै D, हठी हमीर जाणा तुझ सही E। ६ ..होई ..BO, होज्यो D, लडै अम्हासुं असमर ग्रही E। A। ५६२ । B ६३९ । O ६४७ । D ६९५ । E ७७४।

॥ ५८३ ॥ १ कहीनै D, कहंता E। २ जिसै DE। ३ तिसै DE। ४ रसियो OE, रसियौ D। ५ ऊठ्यो O E, ऊठ्यौ D। ६ कहइ BO, कहै DE।

॥ ५८४ ॥ १ कियउ B, कियो O, कियौ DE। २ वादिलै D, वादलै E। ३ आवी मुगल सहू को मिलइं BOD, हींदू आय वाल्या सांकडै E। ४ करि धरि E।

॥ ५८५ ॥ १ मडाणो OE, मडाणौ D। किलो O, किलौ DE। ३ पिहसी...B, वोलै...वादिलौ D, वोलै असुपति सु वादिलो E। ४ छंडौ D, छडिस E। ५ पाव DE। ६ जे.. B, तेरा कूड अम्हीणा घाव E। इसके आगे E प्रतिमें

कवित्त—सुणि कहि साह, वाह तुम्ह वोल भलाई। मुख मीठा दिल कूड, इहै हींदू न कराई॥
पदमिन करी कवूल, तुझै सिरपाव दिवाया। छोड्या राण रतन, सवै दल दूरि चलाया॥
अव लडहु खग्गि झुल्हहुं अकथ, काफर गुंडाई धरहु।
हम सरिस चूक देखहु सु तौ, मूरिख अणखुट्टी मरहुं॥ ७७८॥
कहै वादल सुणि साह, राह तुम पहिल हि चुक्के। दे वाचा गढ देखि, वहुरि तुम राव हि रुक्के॥
हम हींदू कै मीर, नीरखत हीं कुलवट्टह। पदमिन दै लै धणी, इहै हम लाज विपट्टह॥
अव करहु मुछि झूठा नि कहु, कहा रखो रस हम तुम्हहि।
ग्रहि खग्ग लडहु म धरहु ग्रव्व, वत्त-रस नहि अवसान इहि॥ ७७९॥

दूहा—कहै वादल असपति सुनहुं, कहा वहुत वकवाद। साम-धरम अरु द्रिढ चित्त, इहै वडौ रिणस्वाद॥ ७८०॥
तुम दिल लालच पदमिनी, हम लालच रिणवट्ट। साईं न्याव निवेरि है, खेलहु रिण खग झट्ट॥ ७८१॥

तुं आयउ ढीली थी[1] धसी, हिव मत जाई पाछउ[2] खिसी ।
सूर अछइ[3] तउ[4] करि संग्राँम, [5]नहि तरि रहसी नहि तुझ माँम[5]" ॥ ५८६ ॥

[1]आलिमना चडिया असवार[1], [2]जिम-दल सरिखा जोध झुझार[2] ।
[3]भिडईं भली परि भारथ भीम[3], सुभट न चापईँ पाछी सीम[3] ॥ ५८७ ॥

धसबस धूलि विधूसइँ[1] धरा, माहोमाहि भिडइँ[2] आकरा ।
खेहा डंबर ऊडिउं[3] खरउं[4], [5]सूझइ सूर नही पाधरउं[5] ॥ ५८८ ॥

वाण विछूटइँ[1] विहुं[2] दिसि घणा, [3]वाजइं लोह घणा साँघिणा[3] ।
खडग[4] विछूटइ[5] करता खीज, जाणि कि[6] बादलि झबकइ[7] बीज ॥ ५८९ ॥

॥ ५८६ ॥ १ सै D । २ पाछो C, पाछौ D । ३ अछै D । ४ तो CD । ५ "तुझ धिप माम BC, नहीत जासी ताहरी माम D । E प्रतिमें नहीं है ।

॥ ५८७ ॥ १ आलिम इम चढियो असिधार BCD, आलम ताम हुआ असवार E । २ जिमिदिमि'''BCD, जम जेहा मूगल झूंझार E । ३ भिड्या खाग रिण मचियौ दूठ, सुभट न दाखै कोई पूठ E

॥ ५८८ ॥ १ विधसै D । २ मिलइ BC, मिलै D । ३ ऊड्यउ B, उड्यो C, उड्यौ E । ४ खरो C, खरौ D, इसौ E । ५ ..पाधरो C, सूझै.. पाधरौ D, सूरिज पान वघूल्या जिसौ (?) E । A ५६८ । B ६४५ । C ६५३ । D ७०१ । E ७८३/१ ॥

॥ ५८९ ॥ १ विछूटै DE । २ चिहु C । ३ वाजै . D, रूडै नगारा सींधू तणा E ७८३/२ । ४ खगा C । ५ विछूटै D । ६ वि B । ७ चमकीCD ।

E प्रतिमें —खडग भलक्कै ऊजलधार, जाणिक बीजुल घण अधार ।
सन्नाहै तूटै तरवार, जागै जाल-अगनि अणपार ॥ ७८४ ॥
कुंत अणी फूटै सुसरा, तूटै कालिज ने फीफरा ।
ऊडैं वूर वहै रत-खाल, गूंजै सीगणि गुण असराल ॥ ७८५ ॥
वहै तीर चणणाट पखाल, झडमातौ तातौ रिणकाल ।
पडै मारि गूरज गोफणी, फोजा फूटै तूटै अणी ॥ ७८६ ॥
मारि मारि कहि वाहै लोह, रिणलुधा सामंत सछोह ।
खांन निवाव गहूयल खाइ, हजरत करै खुदाइ खुदाइ ॥ ७८७ ॥
नारद किलकै करि करि हास, गिरझणि मास तणा ले ग्रास ।
धड ऊपरि धड ऊथलि पडै, किता कमंध कध विण लडै ॥ ७८८ ॥
रिणचाचरि नाचै रजपूत, धुकल नाचवियौ रिणधूत ।
धनि-धनि कहि सूरिज धीरवै, अपछर वरमाल कंठ ठवै ॥ ७८९ ॥
ऊपरिं सुर तेत्रीसा साथ, देखे राणीजाया हाथ ।
सामत साम्हे लोहै लडै, असपति हाथै नवि ऊपडै ॥ ७९० ॥
वलि कहै वादिल,-"सुणि पतिसाह ! तुम्हकौं पदमिणकी है चाह ।
सो तो रतनसेनके हाथ, हमसै दी नहि जायै नाथ ॥ ७९१ ॥
देखो झिलमिल खग-दामिनी, हाथ हमारे ए पदमिनी ।
अहनिस तुम्हकुं करती याद, चाखण असुर-रगतका स्वाद ॥ ७९२ ॥
सो तो हाजर कीधी आणि, कही हती मैं तुम्हसै वाणि ।
इस पदमिणका इहै सुभाव, पहिली मारै विष-क्रन्याव ॥ ७९३ ॥
पछै अमरपुर हाजर करै, जहा अपछरा सेवा करै ।
उस पदमिनथैं इह पदमिनी, हमकौं प्यारी लागै घणी ॥ ७९४ ॥
जिस खातर तुम्ह आए अही, सो तो पदमिण गढमें रही ।
ऐसा क्या तुम्ह महुरत लिया, कहँ ओ वाभण जिण तुम्ह दिया ॥ ७९५ ॥
पूछौ फिरि कहँ राघव व्यास, उसने किया तुम्हारा हास ।
तुम्ह हो अल्लाके फिरस्ते, पाच निवाजु गुदारावस्ते ॥ ७९६ ॥
सेवा समरण करते सही, अब खुदाई कहँ छिपि रही ।
राघव कहा गया सैतान, उसके घर पदमिण असमान ॥ ७९७ ॥

वहोत रूप खूब वभणी, उह सिंघलकी है पदमिणी ।
उसकु रक्खहु तुम्ह अवास, हजरत चेला हैगा व्यास" ॥ ७९८ ॥
इण परि मोसा वोलै घणा, हलकारे सामंत आपणा ।
कोटि चड्या जोवै राजान, पदमिण दै आसीस प्रधान ॥ ७९९ ॥
कोटि चड्या जोवै सव लोइ, जैत जैत भाषै सहु कोइ ।
मुगल सुहड लथोवथ होय, गज जेठी नवि भाजै कोइ ॥ ८०० ॥
अपछर हूर करै आरती, जोगिण पत्र भरैं मदमती ।
रुद्र करै गूथी रुंडमाल, रथ-थंभ्यौ देखे किरणाल ॥ ८०१ ॥
धड वेहड करि मुगल तणा, ढीग करकड मचिया घणा ।
आवट फूट हूयौ रिण इसौ, असुरा प्रलैकाल सारिसौ ॥ ८०२ ॥
वादलडो है रिण दरियाव, माड्या वासिग नै सिर पाव ।
जीभ वही जिणपरि रिणकाज, वाहे हाथ दुणा तिण लाज ॥ ८०३ ॥
वडा पूर मद सेर जुवाण, पोरस रस भरियो अभिमांण ।
वाहै इसौ निचीतौ रूक, हेके घात करे दोइ टूक ॥ ८०४ ॥

दूहा–उत आलम तोवा कहै, इत हलकारै राण । त्या वेला वादल तणा, अडिया भुज असमाण ॥ ८०५ B
करि सींधू दूहा कहै, तिण वेला कवि 'पात' । सूरा सूरातन चडै, वदै विन्है दल वात ॥ ८०६ ॥
कुण तोलै जल साइरा, कुण ऊपाडै मेर । वादल तो विण साहसिउं, कुण झालै समसेर ॥ ८०७ ॥
दला विभाडण साहरा, ऊपाडण गयदत । तुज्झ भुजां गाजणतणा, वलिहारी वलवत ॥ ८०८ ॥
जावै असपति रीझियौ, सुहडा खमी सवाव । खागै खान निवावरी, तैं ऊतारी आव ॥ ८०९ ॥
हसियौ आलम जाव सुणि, खग खसियो खित्रखार । तु वेधालग वादला, अगदरो अवतार ॥ ८१० ॥
वाका खान निवावरा, फाटा ऊवा केह । वाका सुणिया जगसिरे, वाजते डाकेह ॥ ८११ ॥
मह्रि डोलै सायर सुखै, पच्छिम ऊगै भाण । वादल जेहा सूरमा, क्यु चुक्कै अवसांण ॥ ८१२ ॥
रिणडोहै फिरि फिरि खला, धडा भ्रपावै धार । पारीखै पडिहार परि, न भूलै मनुहारि ॥ ८१३ ॥
तव गोरो रावत कहै, "सुणि, वादल भत्रीज । खागै खडियौ खेतरिण, हिव वावा जस-वीज ॥ ८१४ ॥
गढपति साही वींदणी, मद जोवण मैमत । मुझ मन परणेवातणी, खरी विलग्गी खंत" ॥ ८१५ ॥
"सुणि गोरा!" वादल कहै, "तु सामंत सकाज । तु दल-नायक हींदुआ, तुज्झ मुझै रिणलाज ॥ ८१६ ॥
तुं सिंघ चाडण सूरिमा, अजुआलण कुलवट्ट । तु वांधै पतिसाहसु, पै तौडर रिणवट्ट ॥ ८१७ ॥
वांधौ मौड महावली, वाधौ असि गजगाह । सिर तुलछीदल घालिया, डहिया खाग दुवाह" ॥ ८१८ ॥
केसरियां वागा किया, भुज डंवाणै खाग । जाणि क भूखो केहरी, झुडमा न्हाखै झाग ॥ ८१९ ॥
सूरिज हूत सलाम करि, वलि वलि मूछा घालि । सुरपति साहा समचडै, आयौ झडलग झालि ॥ ८२० ॥
भरै डांण दाइ वाण भति, राम राम मुखि रट्ट । ऊकलतै रिण ओधियौ, माझी लोह मरट्ट ॥ ८२१ ॥
रुडै नगारा सींधुआ, रिंडै सुरातन रस्स । मदि भायो गोरो मरद, अडियौ सीस अरस्स ॥ ८२२ ॥
आवै असपति आगलैं, इसो उडायौ खाग । पाधरि पाखल पाधरै, जाणि क हणमत वाग ॥ ८२३ ॥
करि हाका किलकै हसै, डसै रिमा जिम नाग । तिण वेला त्रिजडा हयौ, दीयै अदगा दाग ॥ ८२४ ॥
पक्कै दीहै गोरिलौ, दियै रिण पक्का दाव । पक्का खान निवाव सिर, परै पकंदा घाव ॥ ८२५ ॥
ज्या घटि सूरातन नही, त्या जोवन अप्रमाण । केहरि पचासै हुयै, तौ ही सेर जुवाण ॥ ८२६ ॥
आडा खल भांजे अनड, फुरलतो गज भार । आयौ असपति ऊपरै, मुख कहतौ हुसियार ॥ ८२७ ॥
तौ लै खग तारां लगै, गोरै कीधौ घाव । असपतिजीव उवेलवा, पाछा दीधा पाव ॥ ८२८ ॥
कहै वादल "गोरा सुणौ, सकजां एह सुभाव । आपा आगमी आप छै, कुण राजा कुण राव ॥ ८२९ ॥
तोनै रिणवाही घणौ, वदसी जगत वसेख । दीलेसर परमेसवर, त्या सु केहो तेष" ॥ ८३० ॥
घट घट नै जै घाव करि, लडै भिडै ले वोह । गोरो रिणवट पोढियौ, वाहि वहावै लोह ॥ ८३१ ॥
खमा-खमा कहि अपछरा, हरि औडै मिर हाथ । गिलै डला मख भ्रीधणी, भुजा वदै दिन नाथ ॥ ८३२ ॥
आवै वादल ऊपरै, करै हथाली छांह । दिलिपति साहे डोहिया, भागी तुज्झ मुजाह ॥ ८३३ ॥
अइयौ सूरातन तणौ, अजै अँतमाण अथाग । भुज वेवे रूध्या भला, इक मूछा इक खाग ॥ ८३४ ॥
मुख देखे काका तणौ, वादै मूछा वाल । वादल आयौ साहसु, चौरग वाधै चाल ॥ ८३५ ॥
हलकारे भड आपरा, वाकारे रिम थाट । पडियौ कासै वीज परि, झाडतो खग झाट ॥ ८३६ ॥
लोह चकारी ऊडवै, इसा लगाया हाथ । पाघ रखै तव छाडियौ, सारो असपति साथ ॥ ८३७ ॥
रहया वै सारा खद, ऊभो असपति आप । जाणि विखेरयौ वानरे, करि गुंजाहल ताप ॥ ८३८ ॥

सन्नाहे तूटई[1] तरवारि, तिणगा ऊडइ[2] अधिक[3] अपार।
अगनि-झाल झलकइ[4] असिधार, घण जिमि हूउ[5] घोर अंधार ॥ ५९० ॥

खलक्या खलहल लोही-खाल, पावस जेम वहइ[1] परनाल[2]।
रज रुंधाणी थयउ[3] प्रगास, गिरझणि मंस तणाँ ले ग्रास ॥ ५९१ ॥

पूरइ पत्र रुहिर जोगिणी, मुण्ड माल ले ईसर धणी।
झडवड झडप[1] भरइ[2] सींचाण, अंवर[3] जोवइँ[4] अमर विमाण ॥ ५९२ ॥

सूरिज निज रथ खंची रहइ[1], रगति-विगति नवि कांई लहइ[2]।
इणि अवसरि गोरउ[3] गजगाहि[4], धाई आविउ[5] जिहाँ पतिसाह ॥ ५९३ ॥

मेल्ह्यउ[1] खडग महावलि जिसइँ[2], असपति अलगउ[3] नाठउ[4] तिसइँ[5]।
घोलइ[6] वादिल-"बे कर जोडि, नासंताँ मार्‍याँ छइँ[7] खोडि" ॥ ५९४ ॥

खलि गलिया वादलि खगै, खूरह सम खुरसांण। सामंद जाणिउ ताण सुत, पीधा चलू प्रमाण ॥ ८३९ ॥
पकड्यौ असपति वादलै, एकलमल्ल अबीह। मैगल हूदा मद गलै, गाल वजाडै सीह ॥ ८४० ॥
फिरि छोडै पकडै फिरै, नाच नचावै तेम। रस लागौ रांमति रमै, भोला वालक जेम ॥ ८४१ ॥
कवित्त-"सुणि वादल"-कहै साह, "राह हींदु भ्रम रक्खौ। साम धरम सुरतान, अकलि उसताद परक्खौं ॥
तु सामत समत्थ, बुधि वल अकल दुवाही। तुं ही ढाल हिंदुआन, तुही रावत खग वाही ॥
गोरिल सरग-अपछर वरी, तुम्ह दुनिया महि जस सुनहु।
पतिसाह दलां लाई धरा, बहुत हुई अब बस करहु" ॥ ८४२ ॥
दूहा-"भ्रम राख्यौ राख्यौ धणी, पदमिण रक्खी पुट्ठ।
अब रक्खहु मेरी अदब", कहै आलम सुणि "दुट्ठ" ॥ ८४३ ॥
मरै लाज झूझै खरो, इह दुनिया न ढकन्ति।
भत्रीजै-काकै सिडै, दीधो न्याव विगत्ति ॥ ८४४ ॥

॥ ५९० ॥ १ तूटै D। २ ऊडै D। ३ झाल D। ४ झलकै D। ५ होवइ BCD।

॥ ५९१ ॥ १ वहै D। २ पडनाल D। ३ थयो C, थयौ D। E में नहीं है।

D प्रतिमें-तूटै धड सिरि फूटै फार, जरकै फेफर हाड दुधार।
कडकै कध महा विकराल, बडकै जोसण जोध कधाल ॥ ७०५ ॥
हाकि हाकि धावै नर धसी, तूटै जो वड मुगला दिसी।
इला-विला क्या किया खुदाय, कहर दिया वादल वहकाय ॥ ७०६ ॥
किहा डेरा किहा वीवी साथ, लागा राणीजाया हाथ।
धड ऊपरि धड ऊथलि पडै, ग्रहि करवाल सुड विणु लडै ॥ ७०७ ॥
रिणचाचरि नाचे रजपूत, पाडै पडै विहाडै भूत।
नवि चीतारै घर सुख-सोह, वाहै वहकि छछोहा लोह ॥ ७०८ ॥
"रे ! रे ! मुगल अधा ढोर", इम कहि वाहै खग्ग अघोर।
पदमणि ले करमै करवाल, किहा दिलीधर धन संभालि ॥ ७०९ ॥
कित ते वाभणि वुद्धि विहीण, जिणि ए वाट दिखाडी खीण।
पदमणि विणि आधौ मति जाय, ढाहे ढीच सु आलमसाहि ॥ ७१० ॥
कोटि चढ्यौ जोवै राजान, पदमणि दे आसीस प्रधान।
कोटि चढ्या जोवै सव लोय, मुगल सुहड सव लथवथ होय ॥ ७११ ॥

॥ ५९२ ॥ १ झडफ BD, झडपि C। २ भरै D। ३ अवरि D। ४ योवइ B, जोवै D। E में नहीं है।

॥ ५९३ ॥ १ रह्यौ D। २ लह्यौ D। ३ गोरो BCD। ४ गजगाह BC। ५ आयो BCD। A ५७३ B ६५० । C ६५८ । D ७१३ । E में नहीं है।

॥ ५९४ ॥ १ मेल्ह्यो BC, मूक्यौ D। २ घणइ BC, घणै D। ३ अलगो C, अलगौ D। ४ नाठो CD ५ पणइ BC, पणै D। ६ वोलै D। ७ छै D। E में नहीं है।

[१]रतनसेंन राजा अति भलउ[१], [२]गढ ऊपरथी देखइ किलउ[२]।
जोवइ[३] वादिल गोरा तणाँ, हाथ महावल अरिगंजणाँ ॥ ५९५ ॥
पद्मिणि ऊभी द्यइ[१] आसीस, 'जीवे[२] वादिल कोडि[३] वरीस।
धन्य! धन्य वलिहारी तूझ, [४]तइँ मुझ राखिउं सगलुं गूझ[४] ॥ ५९६ ॥
सुभट घणा छइं[१] ऊभा एह, ते सगला नीसत निसनेह।
वादिल एक महावल सही, सत्य थकी[२] जो चूकइ[३] नही ॥ ५९७ ॥
साँमि-धरम[१] साचउ [२]ससनेह[३], राखी वादिल रणवट[४] रेह।'
गोरउ[५] रावत रणमहि[६] रहिउ[७], आलम-सेंन सहू[८] लहु[९] वहिउ[१०] ॥ ५९८ ॥
[१]लूटी लीधुं लसकर सहू[१], [२]के नाठ्या के मारया वहू[२]।
इणपरि अरियण सहु एकलइ[३], वहसि करे जीता वादिलइ[४] ॥ ५९९ ॥
पातिसाह साही मुंकीउ[१], [२]इक वलि मोटउं ए जस लीउं[२]।
साहि कहइ[३]-"संभलि[४] वादिला, किया पवाडा तइँ[५] अति भला ॥ ६०० ॥

॥ ५९५ ॥ १...भलो O,...भलौ D, ऊभै रतनसेंन राजान E। २...देखै किलौ D, दीठो जुद्ध महा असमान E। ३ जोवै D, जोया E। A ५७५। B ६५२। O ६६०। D ७१५। E ८४४।

॥ ५९६ ॥ १ दे D, दिये E। २ जीवउ B, जीवो O, जीवौ DE। ३ घणा D। ४...राख्यो...B,...सगलो ..O, तै मुझि राख्यौ सगलौ गूझ D। E प्रतिमें द्वितीय अर्द्धाली नहीं है।

॥ ५९७ ॥ १ छै O। २ थकउ BO, थकी D। ३ चकै D। E प्रतिमें नहीं है।

॥ ५९८ ॥ १-३ सामि-धरम साचव्यो सनेह BO, साचव्यौ DE, सनेह BOD, सवेह E। ४ खित्रवट BODE। ५ गोरो BODE। ६ माहि BOD, भै E। ७ रह्या BOD, रह्यो O, रह्यौ E। ८ सवे E। ९ लहि D, खग E। १० वह्या BD, वह्यो O, वह्यौ E।

॥ ५९९ ॥ १...लीधउ...BO, लीधौ D, लूटाणौ लसकर जूजूयौ E। २...नाठा...D, साकावंधी भारथ हुयौ E। ३ एकलै D। ४ वादिलै DE।

॥ ६०० ॥ १ मूंकीयउ B, मूकीयो O, मूकीयौ D, मुंकीयौ E। २ एक वली मोटउं जस लीयउं B (मोटो ODE, लीयौ DE)। ३ कहै DE। ५ सामलि E। ६ तै DE। A ५८१। B ६५७। O ६६५। D ७२०। E ८४७॥

कवित्त–वादिल तिहा ले चलिउं, राव अरि राव वत्तीसह। खडग काढि सनमूख, भिडिउं सुरताण सरीसह॥
करि पारसी मुगल्ल, तेण तहा कूड कमायउं। लंका मणि उद्धरिउं, तुरक भर तुरक सवायउं।
हाइ-हाइ करता ऊठिया, वादिल तह्वा सइं मुह सरिउं।
जव लगइ जूझदल विहुं हुउ, तव लगि हयवर पाखरिउं॥ A ५८३। B ६५९। O ६६७। D ७२२॥

पाठान्तर–चल्यो BO, चलियो D, प्रगटि डोला सइ वीसह BOD। वध्यउ B, वधो O, वधौ D, सुलताण D। तेणि तण कूड उपायो B (कूडो पायो O, पायौ D)। सुभट सेन (-नि O) ऊधरयउ B (ऊधरयो O, ऊधरयौ D), 'तुरक वलि हिंदु सवायो (-यौ O) BOD। मार करता ऊठिया BOD, तिहा BOD, मुखि करयो BOD। लगै D, व्यहु BO, हुवउ B, हुवौ OD, हैवर D, पाखरयउ B, पाखरयो O, पाखरयौ D। E में नही है। इसके आगे B प्रतिमें ६६० से ६७१ तक, O में ६६८ से ६७९ तक, D में ७२३ से ७३४ तक और E में ८४९ से ८६५ क्षेपक हैं–

आलिम एक अनइ जु खवासि, दिन दुहु पहुता लसकर पासि।
निमा साम जव वेला थई, खवरि कराई लसकरि जई॥ B ६६०। O ६६८। D ७२३। E ८४८।

पाठ०–जो O, अनै हु खवास D, आलम साथैं एक खवासि E। हुई E। करावै D। दिराई E।

मुगल पठाण अनइ उमराउ, ततखिण आइ नम्या पतिसाहु।
ऊभा खोजा खान तफीम, तसलीमें लागी तसलीम॥ B ६६१। O ६६९। D ७२४। E ८५०।

पाठ०–मुगल E, अनै DE, उमराव DE। आयि D, साहिपाद D, पतिसाहि E। तसलीमैं E।

"आलिम वीबी पदमिणि किहा, तुम्ह इकले आये क्युं इहा।
किहा लसकर किहां सहु साथ, किणपरि वात हुई धरनाथ" ॥
B ६६२ । O ६७० । D ७२५ । E ८५१ ।

पाठा०—एकलो DE । किहा भड जोधा साथ E । किस विधि...कहौ नाथ E ।
"खुदाई करू वडा हिंदुराण, लसकर मारि किया कचघाण।
हम हश्याति खुदाई दई, मुसकल वहुत हमाकुं भई ॥
B ६६३ । O ६७१ । D ७२६ । E ८५२ ।

पाठा०—खुदाय E । घमसाण DE । खुदानै E । मुसकलि D, बोहोत D ।
वादल राघो निपट वडा सइतान, हम पणि भूलै वडइ गुमानि।
हमस्युं कूड किया परपंच, पदमिणि मिस मेल्या सहु सच ॥
B ६६४ । O ६७२ । D ७२७ । E ८५३ ।

पाठा०—सैतान DE । वडै D, हमकुं भूलाए करि तान E, कियो D, रूका दिखाया करि परपंच E ।
डोला माहथी कहरि गुमानि, दोई निकल्या सेर जुवान।
वहुत लडाई हमस्यु किई, हमकु पनह खुदाई दिई ॥
B ६६५ । O ६७३ । D ७२८ । E ८५४ ।

पाठा०—महिथी DE, वडे असमान E । दोदो OE, दोइ दोइ D । हमसूं O, अैसे E, भई DE । दई D, जीत पणाह खुदानै दई E ।
हमकु पदमिणि किया कछु टोण, नहि हम आगलि हींदू कोण।
करो कूच नहु लावउ वार, अब हम सइ होवइ असवार" ॥
B ६६६ । O ६७४ । D ७२९ । E ८५५ ।

पाठा०—पदमिन हम सै कीन्हा टौंण E । हींदू हम आगै है कौन E । करहु E, लावो O, लावहु B । इम य कहि साह हुआ असवार E ।
लसकरि कूच कियउ तिह थकी, अनुक्रमि पहुता दिल्ली ढकी।
रातें पहुतउ महल मझारि, लसकर सहू गया घरवारि ॥
B ६६७ । O ६७५ । D ७३० । E ८५६ ।

पाठा०—कियो O, कियौ D । थकी D । राति OD, पुहता O, पहुतो D ।
वडे पयाणै लाघी मही, अनुक्रमि आए दिल्ली वही।
लसकर सबै विदा करि तार, रातैं आए महल मझार ॥ E
वीबी वहुत आइ वेगमा, "पदमिणिको दिखलावो हमा"।
"पदमिणिका मुहु काला किया, हमकुं जीवु खुदाई दिया" ॥
B ६६८ । O ६७६ । D ७३१ । E ८५७ ।

पाठा०—हुं D, कु E, दिखलावौ DE । जी तब हमे खुदानै दिया E ।
"खिमा कीजइ, तुझ कु पतिसाह, लागइ तुम्हकी हमा वलाइ"।
"वेटा तुझ कु वहुत गुमान, वाता मा तू नही सुजान ॥
B ६६९ । O ६७७ । D ७३२ । E ८५८ ।

पाठा०—कीजें तुम्ह कुं D, खमाखमा E । लागै तुमारी D, लगैं तुम्हारी हमें E । एता कीजे नहि अभिमान E ।
मिहरी कारण कलमथ हूआ, राणा राउण सहु खय गया।
काहे पूत कहीं कु फिरउ, वइठा जउंखि दिल्ली महि करउ ॥
B ६७० । O ६८८ । D ७३३ । E ८५९ ।

पाठा०—मिहरीकु वहु D, किया E । राणा रावण वहु कुल गया D, उस खातर रामण सिर दिया E । कौं E, फिरो O, फिरौ DE । वयठा D, वैठा E, जौखि DE । इसके आगे E प्रतिमें :—
करि आरती उतारै लौण, पदमिनका है गया टोण।
खैर करैगा आलमपना, क्या है कमी इक पदमिन विना ॥ E ८६० ॥
दूहा—करि कागद वादल लिखी, हजरत रखहि पास।
इक तेरे मुख मूछ है, भई हींदू सावास ॥ E ८६१ ॥

आगे BODE प्रतियोंमें—
पातसाह दिल्ली गया, वादल की सुणो बात।
वादिल रिण सोध्यो तिहा, जइ जइ हुवउ विख्यात ॥
B ६७१ । O ६७९ । D ७३४ । E ८६२ ।

जीवि[1] दान दीयउं[2] मुझ भणी, किसी[3] करौं हिव कीरति घणी"।
[4]आलिम साहि गयउ एकलउ[4], गोरइ[5] वादिल जीत्यउं[6] किलउं[7] ॥ ६०१ ॥
जयजयकार[1] हुउ[2] जस लीध, करणी वादिल अधिकी कीध।
ऊघडीया[3] गढना बारणा, विरद हूआ[4] बादिलनइ[5] घणा ॥ ६०२ ॥
राजा साँम्हउ[1] आविउं[2] रंगि, मिलिया बेही अंगोअंगि।
महामहोछवि माहे[3] लीउं[4], अरध देस[5] वादिल नइ दीउं ॥ ६०३ ॥
[1]पदमिणि वली पयंपइ एम[1], [2]"न करइ वादिल को तो जेम[2]?।
[3]तइँ दीधउं मुझनइ अहिवात[3], [4]सीतल कीधा तइँ मुझ गात[4] ॥ ६०४ ॥
[1]धन्य! धन्य! तो माता सार[1], [2]तुज्झ तणउं जिणि झेलिउं भार[2]।
[3]धन्य! धन्य! ते नारी सार[3], जेहनइ[4] वादिल छइ[5] भरतार" ॥ ६०५ ॥
मस्तकि तिलक करी[1] सुविसाल, वद्धावइ[2] मोती भरि थाल।
निज भाई[3] करि थाप्यउं[4] तेह, पुहचाडिउं[5] वादिल निज गेह ॥ ६०६ ॥
सुभटाँ[1] माहि चिहुं पाखती, देखण नारि मिली[2] आखती।
ठउडि-ठउडि[3] मोती ऊछलइँ[4], सगा सणीजा आवी मिलइँ[5] ॥ ६०७ ॥

पाठा०—गए E, सुणि OD, भई दुनी सिर वात E। सोध्यौ D, वादल भड रिण सोझियौ E, जय जय हूयो O (हुवौ D), ऊवारी अखियात E। इससे आगे E प्रतिमें :—

हसम खजाना लूटिया, ग्रही मुक्यौ पतिसाह। वोल्यौ त्यु निरवाहियौ, अइयौ भीछ दुवाह ॥ E ८६३ ॥

॥ ६०१ ॥ १ जीवत E। २ दियो O, दियौ D। ३ किसुं D। ४ गयो एकलो O (एकलौ D), आलम नीसरियौ एकलो E। ५ गोरै D। ६ जीतउं B, जीतो O, जीतौ DE। ७ किलो O, किलौ DE। इसके आगे ABOD प्रतियों में—

ऊघाड्यौ चित्रकोट गढ, साम्हा आया राण। मिलिया वादल रतनसी, करै वखाण खुमाण ॥ E ८६४ ॥
साम्हे लै आया सकल, घुरिया जैत निसाण। वाधायौ गजमोतिया, गुणियण करै वखाण ॥ E ८६५ ॥

॥ ६०२ ॥ १ जइजइकार B। २ हूवउ B, हूयो O, हुवौ D। ३ ऊघाड्या B, ऊघाडा D। ४ हूवउं B, हूयो O, हुवौ D। ५ ने O, नै D। E में नहीं है।

॥ ६०३ ॥ १ साह्मो O, साम्हौ D। २ आयो BODE। ३ माहै D। ४ लीयउ B, लियो O, लियौ DE। ५ राज E।

॥ ६०४ ॥ १.. पयपै...D, पदमिणि नारि लियै वारणा E। २ . करे तइ कियउं...B (कीयो O, करै...तै कियौ D), हरषित आसू छूटै घणा E। ३...दीधो...D तै दीधौ मुझिनै अहिवात DE। ४ ..कीधउं. B (कीयो O, कीधो ते D), तू माहरौ भव भव नौ भ्रात E।

॥ ६०५ ॥ १ धनि-धनि तुझ माता जगि सार BODE। २.. झाल्यउं . B (तणो झाल्यो O), जिणि झाल्यो वादल भौ (नौ) भार DE ३ (धनि-धनि ते नारी अवतार BODE) ४ चेहनै D। ५ छै D।

॥ ६०६ ॥ १ कियउं B, कियो O, कियौ DE। २ वाधावइ BO, वाधावै D, वाधाव्यौ E। ३ वधव BODE। ४ थाप्यो BO, थाप्यौ DE। ५ पुहचाव्यो B, पहुचाड्यो O, पहुचाडौ D, पहुचावी E। A ५८८। B ६७६। O ६८४। D ७३९। E। ८६८।

॥ ६०७ ॥ १ चउहुटइं BO, चहुटा D। २ मिलइ B। ३ ठोडि-ठोडि O, ठाम-ठाम D। ४ उछलै D। ५ मिलै D।

E प्रतिमें :—मोती-हार सींघल-गै तणो। पीहर दीधो मुहगौ घणो।
सो पदमणि वादल नै दियौ। माथै चाढी नै तिण लियौ ॥ ८६९ ॥
घोडा हाथी दे सिरपाव। खटग कटारा ढाल जडाव।
घोडवहिल सुखपाला घणी। करे मुद्रटी जवहर तणी ॥ ८७० ॥
इण परि परिघल पहिरामणी। कुची अरथभडारह तणी।
सूपीनै पहुचवीया घरै। वाजित्र धंमल मगल वहु करै ॥ ८७१ ॥
चहुटा मारि गली-ए गली। देखै नर-नारी वहु मिली।
सुभट सहू आवीनै मिलै। करि जुहार मुह आगलि पुले ॥ ८७२ ॥

इणिपरि आविउ[1] महल[2] मझारि, [3]वइरी-वरग घणा संघारि[3] ।
[4]जइ लागउ मातानइ पाइ[4], [5]माता द्यइ आसीस सुभाइ[5] ॥ ६०८ ॥
निज नारी ओढी[1] नव घाट, लांवु[2] ताणी तिलक ललाटि[3] ।
अरघ अभोखउ[4] लेई[5] करी, [6]थाल भरी साँम्ही[6] संचरी ॥ ६०९ ॥
कीया[1] विविध वधावा घणा, कुसले-खेमे आव्या तणा ।
हिव गोरानी[2] अस्त्री कहइ[3], "काकउ[4] कँम[5] रणंगणि[6] रहइ[7] ॥ ६१० ॥
कहउ,[1] किसीपरि वाह्या हाथ, किम[2] संघारिउ[3] सत्रुसँघात[4]" ।
वादिल वोलइ[5]-"माता सुणउ[6] । किसउ[7] वखाण करुं[8] ते तणउ[9] ॥ ६११ ॥
[1]गोरइ ढाह्या गयवर घणा[1], [2]पार न पामुं सुभटाँ तणा[2] ।
आलिम साहि कीउ[3] एकलउ[4], इणिपरि गोरइ[5] कीउ[6] किलउ[7] ॥ ६१२ ॥
तिल-तिल छेदी तनु आपणउ[1], अमरपुरी पुहतउ[2] प्राँहुणउ[3] ।
कुल अजुआलिउ[4] गोरइ[5] आज, सुभटाँ तणी उतारी लाज" ॥ ६१३ ॥

॥ ६०८ ॥ १ आयउ B, आयो C, आयौ DE । २ महिल DE । ३...सिंहार BC, सिघारि D, वदीजण वोलै जयकार E । ४ जाय लागौ मातानै पाय D, आवी लागो माता पाइ E । ५...सवाइ BC, दे' 'सवाय D, मात दियै सवाइ E ।

॥ ६०९ ॥ १ उनठी D । २ लावउ BC, लावो D, सजि सिंगार करि तिलक E । ३ निलाट BCDE । ४ अभोंखो BCD, अभोखौ E । ५ देई E । ६ मोती थाल भरी E ।

॥ ६१० ॥ १ कीधा BCDE । २ गोरिलरी E । ३ कहै DE । ४ काको CD, काकौ E । ५ किम BCD, किणविध E । ६ रण अगणि B, रिण अगणि CD, रिण भै E । ७ रहै DE ।

॥ ६११ ॥ १ कहो CD, कहौ E । २ किता E । ३ सिंहारथा BC, संघारथा DE । ४ अरियण साथ BCDE । ५ वोलै DE । ६ सुणौ DE । ७ किसो C, किसु D । ८ करौ B । ९ तणो C, तणौ D । ७-९ किसुं वखाणुं काकातणौ । इसके आगे E प्रति में :-

भिडते इसौ उडायौ रीठ, अवर ऊडी सघलै दीठ ।
चौडै खेत वजायौ सार, ढाया मुगल वडा जुझार ॥ ८७७ ॥
चूरै फौजां गैदल तणी, आलम लगै गयौ तुझ धणी ।
खाग वजाडि करतौ खड, एहा पोरसिया भुजडड ॥ ८७८ ॥
पणि असपति पग पाछा दिया, जैत तणा ढाका वाजिया ।
किता विछाया खान निवाव, कै औसीकै कै पयताव ॥ ८७९ ॥
ऊपर गोरिल भट पोढियौ, अंवर सुजस तणौ ओढियौ ।
तन वीखरियो तिल तिल होय, मूछा-मरट न मिटियो तोय ॥ ८८० ॥
आलमसाहि कियौ एकलौ, गोरै इण परि कीधो कीलौ ।
तिल तिल तन करै आपणौ, सरगापुर हूयौ प्राहुणौ ॥ ८८१ ॥
कुल अजुआल्यौ गोरै आज, सुहडा सींव चढावी राज ।
रिण खेती गोरे भोगवी, मैं तो किलो कियौ पूठि थी ॥ ८८२ ॥
घडा वींदणी गोरै वरी, वाधै मोड महारिण करी ।
मै तौ जानी थकी झूबिया, विरद भुजा वल गोरिल लिया ॥ ८८३ ॥

॥ ६१२ ॥ १ गोरे C, काकै ढाया गैवर घणा । २ पामइ. BCD, मुगल जोध सघारथा वण्या D । ३ कीयउ B, कियो C, कियौ D । ४ एकलो C, एकलौ D । ५ गोरै D । ६ कीयो C, कीधौ D । ७ किलो C, किलौ D । A ५९४ । B ६८२ । C ६९० । D ७४५ । E में नहीं है ।

॥ ६१३ ॥ १ आपणो C, आपणौ D । २ हूवउ B, हूयो C, हुतौ D । ३ पाहुणौ D । ४ ओजवाल्या B, उजवाल्यो CD । ५ गोरै D । E में नहीं है । इसके आगे BCDE प्रतियोंमें :-

कुडलिया- गोरिल त्रिय इम उच्चरइ, "सुणि बादिल समरत्थ ।
मो प्रिय रण महि जूझतइ, कहि किम बाह्या हत्थ॥

ऍम सुणीनइ[१] अस्त्री[२] तेह, विकसित वदन हुई ससनेह।
रोमि-रोमि[३] सूरिम ऊछली, मुलकी महिला वोलइ[४] वली॥ ६१४॥
"संभलि[१] बेटा हिव[२] वादिला! ठाकुर दोहा[३] ह्वई[४] एकला।
पथइँ[५] विचइँ[६] छेटी[७] हुइ घणी, रीस करेसी मुझनइँ[८] धणी॥ ६१५॥
[१]वहिलउं हो हिव वार म लाईं[१], [२]काकीनइ पुहचाडउं ठाईं[२]"।
ऍम सुणी वादिल हरखिउ[३], "धन्य! धन्य! माता तुझ हीउं[४]"॥ ६१६॥
[१]घणउं वित्त ते विहची करी[१], करि शृंगार चढि तीखइँ[२] तुरी।
'जय-जय[३] राम' करी[४] नीसरी, [५]अगनिसनान कीउं सुंदरी[५]॥ ६१७॥
पति पासइ[१] जइ[२] पुहती जिसइ[३], [४]अरधासण दीउं इंद्रइँ तिसइ[४]।
अमरपुरी पुहुता[५] अवगाहि, जयजयकार हुउं[६] जगमाहि॥ ६१८॥

कहि किम वाद्या हत्थ, वत्थ दे सुहड पछाडिउं।
भाजिउं गय घडघट्ट, पाउं दे सीस विभाडिउं॥
सुहड सूर संहारि, जोध वहु कीधा धोरिल।
वादल कहि-"सुणि मात, रणहि इम पडिउं गोरिल"॥

पाठान्तर-उच्चरइं B, ऊचरइ C, उचरै DE, ससमत्थ BCDE। रिणमइं BC, मे CE, झूझतां BC, झूझतै DE, किणपरि BCDE। वछ तुझ सुहड सपुच्छउं BCD, वथभरि सुहड पछाड्या E। भाजै है गै थट्ट DE, रोस भरि सहु रिण मूछउं BCD, जाइ नेजै असि चाड्या E। रूंड-मुंड भट मारि D, गलिया खान निवाव E, सीस असपति खग झोरिल E। कहै DE, झूझ्या E। A ५९६। B ६८४। C ६९२। D ७४७। E ८८४।

॥ ६१४॥ १ नै DE, २ कामिनि BC, कामणि DE। ३ रोम E। वोलै DE।

॥ ६१५॥ १ सांभलि E। २ रिण BCDE। ३ दुहिला B, दुहेला C, दोहिला DE। ४ होइ BCD, है E। ५ पाछइं BC, पाछै D, पडै E। ६ विचि BCD, विचै E। ७ छेती BC। ८ अम्हनइ B, अमने C, अम्हनै DE।

॥ ६१६॥ १ वहिलौ होजे वार म लाय D, वहिला हुओ म लावो वार E। २ -नै पहुचाडी ठाय D, भेला करि काकी भरतार E। ३ हरखियउं B, हरखियो C, हरखियौ DE। ४ धन-धन मात तुम्हारो हीयो B (हियो C, हियौ DE)

॥ ६१७॥ १ घणो BCD, दान पुन्य तव वहुला करी E। २ तीखे D, चडी भल E। ३ जइ-जई B, जै-जै E। ४ कही E। ५ कियो BCD, श्रीफल लेई हाथै धरी E। इससे आगे E प्रतिमें :-
ढोल धुरै गूजै चीतौड। वाधो सुजस तणो सिर मोड।
इण परि आखा ऊछालती। आवी खेते रिण मल्हपती॥ ८८९॥
पूजि गवरि वलि करिय सनान। पहिरी धवल वस्त्र परिधान।
'खमा खमा' कहि धनि भरतार। रिणसामद्र हिलोलणहार॥ ८९०॥
कठमदिर प्रिय खोहले धरी। अगनिसरण कीधो सुदरी।
पति पासै जइ पहुती जिसै। अर्द्ध सिंघासण दीधो तिसै॥ ८९१॥

॥ ६१८॥ १ पासै DE। २ जाय D,। ३ जिसै D। ४ अर्धासन दीधउं इंद्रे B (दीधो CD, तिसै D)। ५ पुहुती BC, पुहती D। ६ हुवउं B, हूयो C, हूयौ D। A ६०२। B ६८९। C ६९७। D ७५२।
E प्रतिमें :-
अमरापुर वसिया उच्छाहि, जै जै कार हुयौ जगमाहि।
चंद सुरिज वे कीधा साखि, गढ चीतोड दिली-दल साखि॥ ८९२॥
करि मृतकृत देई संसकार, आयौ वादल निज घरवार।
रजपूता ए रीत सदाइ, मरणै मगल हरपित थाई॥ ८९३॥
यथोक्त—रिण रचिया म रोइ, रोऐ रिण भाजै गया।
मरणै मगल होइ, इण घरि आगा ही लगै॥ ८९४॥

विरद वुलावइ[१] वादिल घणा, [२]साँमि-धरम सतवंताँ तणा[२] ।
इसउ[३] न कोइ हूउ[४] सूर, [५]त्रिहुं भवणे कीधउ जसपूर[५] ॥ ६१९ ॥
पदमिणि राखी राजा लीउ[१], गढनउ[२] भार घणउ[३] झीलीउ[४] ।
[५]रिणवट करीनइ राखी रेह[५], नमो नमो वादिल गुण-गेह ॥ ६२० ॥

* * *

॥ ६१९ ॥ १ वुलावे DE । २ स्वामि···BOD, साम सनाह सुहडाइ तणा E । ३ इसो BODE । ४ हूवउ B, हूयो OE, हूवौ D । ५ कीधो OD, त्रिंहुं भवने प्रगट्यौ' E ।

॥ ६२० ॥ १ लीयउ B, लीयो O, लीयौ DE । २ नो OD, नौ E । ३ घणो OD, भुजे E । ४ झालियो OD, झालियौ E । ५ ने C, नै D, रिण भिडता राखी सवि रेह E । A ६०४ । B ६९१ । O ६९९ । D ७५४ । E ८९६ ॥ इसके आगे BODE प्रतियोंमें :-

कवित्त—"जय वादल जय पत्ति, विरद वादिल अरिगजण ।
संकट सामि सनाह, ते ज मोड्यो गय वधण ॥
मलिउ गयदा माण, हण्या हत्थी मयमत्तह ।
आणिउ मोरउ कंत, तुहि ज दीधउ अहिवत्तह" ॥
पद्मिणि नारि इम उच्चरइ, "तुम्ह सरिस नहु अवर हुय ।"
आरति उतारहि वर तरुणि, जय वादल जय पत्ति तुय ॥

पाठान्तर—जै E, जय पत्त BOD, जैवत E । संकटि D, सगटि E, भजण BOD, भिडै पतिसाहा भजण E । मुल्यउ मल्लका B, मिल्यो मल्लको O, मिलियो मिलका D, मलल मल्लिका E । आण्यो मोस्यो B, आण्यौ मोरो D, साम-वद छोडावण E, तै ज दीधो D, दियण वहिनी E । ऊचरै D, श्रीमुख कहै E, तुझ सरिखउ नहि B (सरिखो ··हूअ OD), इसो अवर नह कोइ हूअ E । उतारे O, उतारै DE । A ६०५ । B ६९२ । O ७०० । D ७५५ । E ८९७ ।

कवित्त—करि प्रपच वादिल्ल, नारि ऊगारी वलि छलि ।
सहि न सक्यउ सुरिताणि, काजि जस एह भुजा वलि ॥
मलिउ गयंदा माण, सामि आणिय उवेलियउ ।
भजि ढाल पाडीय सिलार, मलिका दल मेलिउ ॥
इम सुणवि माय आणद कीउ, पुत्रइ परदल पेलीउ ।
उच्चरी वात वादिल्ल की, पदमिणि-कत उवेलीउ ॥

पाठान्तर—वादल O, सक्यो BO, सक्यौ D, मल्यो BO, मल्यौ D, स्वामी आणीयो उवेलीय BOD । पाडिया BOD । सिलार सकदल मेलीय BOD । सुणिवि माइ आणद हियइ BO (हिय D) पुत्र परद्दल पउलीयउ BO (पोलीयो D) । वादलतणी BOD, उवेलीयउ BO, ऊवोलीयो D
E प्रति में -

कवित्त—कहै मात-"वादला, भलै मुझ उयरि उपनौ ।
कुलदीपक कुल-तिलक, रक-घरि रयण सपनौ ॥
ग्रहियो खल पतिसाह, एक वलि गजण अरिदल ।
जैत हत्थ जग जेठ, तुझ वलिहार भुज्ज-वल ॥
मुख मुछ तुहि ज कुल-लाज, तुहि मारी छै लोकीय भडा ।
चीतोडमोड वाध्यो सिरै, दिल्लीपति चाडै तडा ॥ ८९८ ॥

चौपई—राम तणै भाई हणमान, तिम वादल रतनसी राण ।
पदमिणि सती सीता सारिखे, वादल भड लंगा आरिखे ॥ ८९९ ॥
सेवा कीधी अवसर तणी, तिण सोभा वाधी घणघणी ।
करि दिखाले इसी इक कोइ, अवराइ सुहडा आधार होइ ॥ ९०० ॥
A ६०६ । B ६९३ । O ७०१ । D ७५६ । E ९०० ।

ग्रन्थान्त

[1]A प्रतिकी प्रशस्ति—

वादल राउतनी ए कथा, सुणतां नावइ निज घटि व्यथा ।
रोग सोग दुख दोहग टलइ, मनना सयल मनोरथ फलइ ॥ १ ॥
पूनिम गछि गिरूआ गणधार, देवतिलक सूरीसर सार ।
न्यानतिलक सूरीसर तास, प्रतपइ पाटइं बुद्धिनिवास ॥ २ ॥
पदमराज वाचक परधांन, पुहवी परगट बुद्धिनिधांन ।
तास सीस सेवक इम भणइ, हेमरतन मनि हरषइ घणइ ॥ ३ ॥
संवत सोलइ सइं पणयाल, श्रावण सुदि पंचमि सुविसाल ।
पुहवी पीठि घणुं परगडी, सवल पुरी सोहइ सादडी ॥ ४ ॥
पृथवी परगट राण प्रताप, प्रतपइ दिन दिन अधिक प्रताप ।
तस मंत्रीसर बुद्धिनिधांन, कावेड्या कुलतिलक निधांन ॥ ५ ॥
सांमि धरमि धुरि भामुं साह, वयरी वंस विधुंसण राह ।
तसु लघु भाई ताराचंद, अवनि जाणि अवतरिउ इंद्र ॥ ६ ॥
ध्रूय जिम अविचल पालइ धरा, शत्रु सहू कीधा पाधरा ।
तसु आदेश लही सुभ भाई, सभा सहित पांमी सुपसाइ ॥ ७ ॥
वात रची ए वादिल तणी, सांमि धरमि ए सोहामणी ।
वीरारस सिणगार विशेष, रस बेरस अछइ सविसेष ॥ ८ ॥
सुणता सवि सुख संपद मिलइ, भणतां भावटि दूरइं टलइ ।
ऊजम अंगि हुई अति घणउं, मुहकम जाणइ करि मंत्रणउं ॥ ९ ॥
पटसित पोडस गाथा वंधि, सुणिउं तिसु भाप्यउं संवंधि ।
अधिक ऊन जे हुइ उच्चरिउं, सयण सुणी ते करयो खरुं ॥ १० ॥
सांमि रम पालंतां सदा, सगली आवइ घरि संपदा ।
सुर नर सहू प्रसंसा करइ, वरमाला ले लखमी वरइ ॥ ११

॥ इति श्री गोराबादिलचरित्रे, बादिलजयलक्ष्मीवर्णनो नाम
प्रथमखंडः । संवत १६४६ वर्षे मगशिर सुदि १५ ॥

---

1 यह प्रशस्ति A प्रतिकी है जो संवत् १६४६ में लिखी गई है ।

BC प्रतियोंमें उपलब्ध प्रशस्तिका पाठ—

गोरा वादिल तणी ए कथा, सुणतां नासइ निज घरि वृथा।
मनना सयल मनोरथ फलइ, रोग-सोग-दुख-दोहग टलइ ॥ १ ॥
पूनिम गछ गरुवा गणधार, देवतिलक सूरीसर सार।
न्यानतिलक सूरीसर तासु, प्रतपइ पाटइ बुद्धिनिवास ॥ २ ॥
पदमराज वाचक परधान, पुहवी प्रगटा बुद्धिनिधान।
तासु सीस वाचक इम भणइ, हेमरतन मन रंगइ घणइ ॥ ३ ॥
संवत सोलइ सइ पणयाल, श्रावणधुरि पंचमि सुविशाल।
पुहवी पीठ घणी परगडी, सवल पुरी सोहइ सादडी ॥ ४ ॥
पृथ्वी प्रगटा राण प्रताप, प्रतपइ दिन दिन अधिक प्रताप।
तसु मंत्रीश्वर बुद्धिनिधान, कावेड्याकुल तिलक समान ॥ ५ ॥
स्वामि धरम धुरि भामउ साह, वइरी वंसि विधूसण राह।
तसु लघु भाई ताराचंद, अवनि जाणि अवतरिउ इंद ॥ ६ ॥
ध्रू जिस अविचल पालइ धरा, सित्रु सवे कीधा पाधरा।
तसु आदेस लही सुभ भाउ, सभा सहित पामियउ पसाउ ॥ ७ ॥
वात रची ए वादिल तणी, सामि धरम अति सोहावणी।
वीरा रस सिणगार विसेष, अउर रस अछइ सविशेष ॥ ८ ॥
सुणतां सुख सवि संपद मिलइ, भणतां भावठि दूरइ टलइ।
उज्जम घटि होवइ अति घणउ, मुहकम जाणइ करि मंत्रणउ ॥ ९ ॥
षट सित षोडस अंके वंधि, सुण्यउ तिसउ भाष्यउ परबंध।
अधिकउ ऊछउ जे उच्चरयो, सयण सुणी ते करिय्यो खरो ॥ १० ॥
स्वामि धरम पालंता सदा, सयली आवइ घरि संपदा।
सुर नर सई प्रशंसा करइ, वरमाला ले लक्ष्मी वरइ ॥ ११ ॥

॥ इति श्री पदमिणी गोराबादल कथा चतुष्पदी समाप्तः ॥

D प्रतिकी प्रशस्तिका पाठ ।

गोरा वादलनी ए कथा, सुणतां नासै घटनी व्रथा ।
रोग-सोग-दुख-दोहग टलै, मनना सदा मनोरथ फलै ॥ १ ॥
सीलधरम सुणतां सुख होय, स्वामिधरम सुणतां जस लोय ।
सीलै मन वंछित फल लहै, स्वामिधरम सापुरिसा वहै ॥ २ ॥
धनि धनि पदमणि नारि सुसील, जिणि पाम्यौ संकट महि सील ।
सील प्रसादै छूटो राय, गढ राख्यौ जस हुवौ सवाय ॥ ३ ॥
स्वामिधरम यिणि सँपुरणाचरी, तिणि सांभलतां सहु सुख वरी ।
उत्तिम पुरिसां चरित सुव्रंद, सुणतां लहियै परमाणंद ॥ ४ ॥
पूनिम गछ गिरुवा गणधार, देवतिलक सूरीसर सार ।
न्यानतिलक सूरीसर तास, प्रतपै पाटै बुद्धिनिवास ॥ ५ ॥
पदमराज वाचक परधांन, पोहवी प्रगटा बुधिनीधांन ।
तासु सीस इम वाचक भणै, हेमरतन मंन रंगै घणै ॥ ६ ॥
वात रची ए वादलतणी, स्वामि धरम अति सोहांमणी ।
वीरा रस सिणगार विसेष, सील सबल पदमणिनो वेष ॥ ७ ॥
सुणतां सुख-चतुराई मिलै, भणतां भावटि दूरी टलै ।
ऊजम घटि होवै अति घणौ, मोहोकम जांणै करि मंत्रणौ ॥ ८ ॥
स्वामिधरम पालंता सदा, सबली आवै घरि संपदा ।
सुरनर सहू प्रसंसा करै, वरमाला लै लिखमी वरै ॥ ९ ॥

॥ इति श्री रांणा रतनसी तसु प्रिया पदमनी चोपई संपूर्णम् ॥